

खोज की कहानियां

शम्भु सहाय सबसेना

डाइरेक्टर ऑफ़ कालेज एडुकेशन राजस्थान
मूलपूर्व प्रिंसिपल महाराणा मुपाल कालेज उदयपुर

नवयुग ग्रन्थ कुटीर

बीकानेर

पहला संस्करण

प्रकाशक	गणपुग ग्रन्थ श्रुटीर बीकानेर
मुद्रक	एन्क्रेयनस प्रेस बीकानेर
मूल्य	१०० नए पैसे

जिनकी मूक साधना नीर प्रेम मे मेरे
बीजल पत्र का आलसिष्ठ किया
है अपनी उम्मी दिव स्नेह
का स्याम मेरु

—राकेश

विषय-सूची

भूमिका

१	एशिया की खोज : मार्कोपोलो	..	१
२	इब्न बतूटा की यात्रा	---	२७
३	भारत की खोज : वास्कोडीगामा		४२
४	नई दुनिया की खोज : कोलम्बस		६
५	बिस्वाप्पो की प्रशासक महासागर की खोज	..	७५
६	मैगलान की पृथ्वी-परिक्रमा		५३
७.	मैक्सिको की खोज और विजय	हरनाडो कोर्टेस	६६
८.	बदलाय अमेरिका की खोज	..	१११
९	स्पेनों का खोज अभियान	..	१२२
१०	ड्रैक की पृथ्वी-परिक्रमा	---	१३५
११	कनाडा की खोज	..	१३३
१२	डैविड की उत्तरी ध्रुव की यात्रा		१६१
१३	बार्नेट की स्पिट्स्बर्ग की यात्रा		१६५
१४	हडसन द्वारा हडसन खाड़ी की खोज		१-
१५	पेरी और डेकलिन की उत्तर यात्रा	..	१८६
१६	फ्रूट की यात्राएं		२०७
१७.	बैकलिन की उत्तर की ओर यात्रा		२२५
१८.	गानसेन की उत्तरी यात्रा		२४३
१९	उत्तरी ध्रुव पर विजय	..	२५६
२०	रजिस्ली ध्रुव की यात्रा		२६३
२१	ईविता मिबिस्टम की ध्रुवीय की खोज		२७६
२२	तिरवत की खोज		३ ९

भूमिका

मृगश मेरा प्रिय विषय रहा है। उसे पढ़ने में मुझ उपास्य और कहानी तथा आनन्द आता है। जब मुझे अपने प्रिय महाविद्यालय महाराजा भूपाल कालेज से हटना पड़ा और मैंने बावरेकर आर एल्लेयान का कायमार सहायता ता मेरा अविश्रम समन रेल में करने लगा। बीकानेर कमी एक घण्टा चार दिन भी रह सकता कठिन होता। बीकानेर में रहने पर तथा बीरे पर जहां भी जाता जहां लिखने पढ़ने का अचर मिश्रण कठिन हो गया। रेल-यात्रा में भी पढ़ने का काम चलता रहा। मैंने पूष्पी की खोज का इतिहास पढ़ना प्रारम्भ किया। मुझे वह बहुत रुचिकर प्रतीत हुआ। एक के बाद दूसरी पुस्तक पूष्पी का खोज के सम्बन्ध में पढ़ा गया। उन साहसी बीरों की खोज मरी यत्राओं का कथन पढ़कर मैं रोमांचित और आत्मविमोह हो उठता। मानव की निवास-भूमि पूष्पी का खोज निकालनेवाले उन साहसी बीरों के प्रति अज्ञा और आत्मीयता उत्पन्न हुई और मेरे मन में वह भाव जागृत हुआ कि हमारे बालक और युवक भी इस प्रेरणादायक इतिहास को पढ़ें। हिन्दी में पूष्पी का खोज सम्बन्धी इतिहास अद्यतन नहीं है अस्तु मेरे हृदय में हिन्दी में एक छापीली पुस्तक इस विषय पर लिखने का विचार उत्पन्न हुआ। समय का अभाव

हाने के कारण उस विचार को कायरूप में परिष्कृत करने में मुझे देर लगी परन्तु पुस्तक लिख गई इसका मुझे शोच है ।

जो वो भारतवासियों ने अत्यन्त प्राचीन काल में तथागत भगवान् बुद्ध का मंगलकारी संदेश लेकर एशिया के समीपवर्ती देशों में प्रचलित किया था । तुर्किस्तान तिब्बत चीन जापान, बर्मा श्रीलंका पूर्वीय द्वीप समूह और पश्चिमी एशिया के देशों में बौद्ध भिक्षुओं ने तथागत भगवान् बुद्ध के उस मंगलकारी संदेश से मानव के हृदय को सम्भावनाओं और स्नेह की सलिल-धारा से मर सिक्काया । परन्तु उसके बाद जैसे भारत अपने में ही बन्द होकर रह गया और उसका पतन होने लगा । इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो जाति यह देश अपने का कृपमण्डक की भाँति अपनी मान्यताओं अपना देश की भौगोलिक सीमा के अन्दर ही बन्द कर लेता है वह पतनोन्मुख हो जाता है । भारत का भी वही हाल हुआ । पृथ्वी के राज क इतिहास को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि योरोप के जातियों ने पृथ्वी का राज निकालने में पहल की । मार्कोपोलो से लेकर आधुनिक काल तक योरोप के साहसी साधियों ने एक के बाद दूसरे पृथ्वी के भूगोल को राज निकाला । जैसे जोशिम और साहस का काम था । मितने व्यक्ति लाख अभियान में आठ उनमें स अपिनाश मर जाते परन्तु फिर भी उन आत्मिक भारी शत्रुओं के लिए स्वयंसेवकों की कमी नहीं रहती । इसमें कोई संदेह नहीं कि कंप (चीन) और भारत देश के जातियों का राज निकालना ही इन साहसी योद्धियों का मुख्य उद्देश्य था क्योंकि भारत

और चीन ही उस समय का पाप मे भरे पूरे देश थे । इन देशों के लिए समुद्री मार्ग खोज निकालने के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही पृथ्वी के अधिकांश भागों की खोज हुई । परन्तु उन कठिन यात्राओं में इन याहसी साहिबां ने ब्रिज उत्साह, साहस शौर्य, योग और ब्रह्म विष्णुता का परिचय दिया वह इस बात का प्रमाण था कि उनमें अपने देश के लिए सब कुछ बलिदान कर देने की भावना सर्वोपरि थी । अपने देश के साम्राज्य को स्थापित करने, विभिन्न देशों के व्यापार से सबका सोने से अपने देश को मालामाल कर देने की योजना ही उन्हें अपने प्राणों की परबाह न कर ऐसी जोखिम भरी यात्रा पर जाने के लिए उत्साहित करती थी । उस यात्राओं का शौर्यकारी बर्णन पढ़ने पर हृदय के हृदय में रह रह कर वह भावना उत्पन्न होती थी कि काश हम भारतीयों में भी ऐसा उत्कृष्ट देश प्रेम होता ।

हमारा देश-प्रेम कितना विकसित है यह तो माया धर्म, व्यक्ति को लेकर आए विभे होने वाले सभ्यजनक भ्रमों से ही स्पष्ट है । हम स्वतंत्र हो गए किन्तु अभी तक हममें भारतीयता का अभिमान जागृत नहीं हुआ । वह हममें भारत के मान वैभव और समृद्धि को बढ़ाने के लिए बलिदान और त्याग की भावना कैसे उत्पन्न हो सकती है ।

‘पृथ्वी की जोख की कशानियां’ को हिन्दी में लिखने का कैम्प एक ही अभिप्राय है कि हमारे चरचरों में देश के लिए जोखिम उठाने

और अपना सब कुछ मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर देने की मायना उत्पन्न हो ।

— शंकर सहाय सक्सेना

प्रथम परिच्छेद

एशिया की स्त्रोज

मार्षो-पोलो

सात सौ वर्ष पहले की बात है। इटली का बनिस नगर योरोप में सबसे प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। बेनिस के व्यापारी बड़े साहसी थे वे दूर दूर देशों में व्यापार करने के लिए घणत समुद्री जहाजों में नास नर कर से जात और एशिया के देशों से व्यापार करते थे। इस व्यापार से उन्हें बहुत अधिक लाभ होता था। यही कारण था कि बेनिस उस समय योरोप का सबसे अधिक धनी और समृद्धिवासी नगर बन गया था।

इसी बेनिस नगर में दो जाई रहते थे जिनका नाम था मैन्चियो पोमी और निकोलो पोमी। दोनों योग्यो भाई बहुत साहसी और सफल व्यापारी थे। उन्होंने सुन रक्खा था कि पूर्व में रहस्यमय लीके देश है जहां सोने चांदी के बहुत भंडार हैं जहां की जन-जम्पति का कोई नार नहीं है और जहां का शासक महान-शान संतार का सबसे अधिक धनवान और ऐश्वर्यशाली राजा है। बात यह थी कि बेनिस के व्यापारी एशिया के अन्दर तो घुसते नहीं थे। वे केवल एशिया और योरोप के मिलाज मिला एशिया माधनर के समुद्र तट

के बन्दरगाहों तक जाते थे और उन मद्रियों में कारवाओं के द्वारा चीन भारत ईरान तुर्किस्तान इराक इत्यादि एशियाई देशों से लाए हुए बहुमूल्य पदार्थों को खरीदते थे। एशिया के देशों से लाई हुई उन कीमती वस्तुओं को खरीद कर वे योरोप के बाजारों में बेचते थे। उसी व्यापार के कारण बेनित क व्यापारी मालामाल हो गए थे। जब बेनित के व्यापारी इन एशिया मायगर के समुद्री तट पर बने बन्दरगाहों के बाजारों में उन कारवां व्यापारियों से मिले थे जो कि चीन भारत तुर्किस्तान ईरान और इराक से माल लाते थे तो उन देशों की रहस्यमय बातों घूँट मन-बीलत और वहाँ के साम्राज्यों के ऐश्वर्य को जानते नहीं सकते थे। इन्हीं व्यापारियों के द्वारा एशिया के देशों से मन-बीलक की कहानी योरोप भर में फैल गई थी।

पोलो वस्तुओं ने सोचा कि क्यों न एक बार इस रहस्यमय बीमबसामी और ऐश्वर्यशाली महादेश के घग्गर पुत कर पूर्व में खींचे (चीन) तक जाया जाये और उन देशों के बीमब को धाँक से देखा जाये। दोनों भाइयों ने निश्चय कर लिया और वे अपने बहाजों से माल भर कर निकल पड़े।

पोलो वस्तुओं का एशिया की खोज करने का निश्चय बड़े साहस और बौद्धिक का काम था। एशिया खींचे महादेश को उन दिनों पार कर सुदूर पूर्व में चीन देश तक पहुँचना कोई काम नहीं था। हजारों मील तक खींचे हुए जल रहित रेगिस्तान घाकाला घूमे जाने ऊँचे पहाड़ हितक वस्तुओं से भरे हुए भयानक सपन बन बर्ष

ने छठे हुए पठार भयंकर बंध से बहने वाले नव विशाल मैदानों को पार करते हुए तथा डाकूओं घोर बटमारी से घपने को पचाते हुए, बीच में पड़ने वाले देशों में छिड़े हुए भयंकर युद्धों में से बचकर निराल ज्ञाना कोई सरस कार्य नहीं था। लेकिन दोनों पोतो बन्धु उन लोगों में से नहीं थे जो कठिनाई घोर विपत्ति से घबरा उठते हैं। जोरन में जो लोप विपत्तियों घोर कठिनाइयों से घबरा उठते हैं वे कोई बड़ा काम नहीं कर सकते। पोतो बन्धुओं के मन में पूर्व के उन देशों की छोज करने की तीव्र साहसा थी इसलिए कठिनाइयों घोर विपत्तियों को परबाहू न कर घे घपने जहाजों को लेकर चल पड़े।

भाय्य ने नाव दिया बाधु अनुकूल थी इसलिए मूमध्य सागर पार करने में उन्हें कोई भी कठिनाई नहीं हुई। दोनों भाई सजुअन कार्टेनटिनोपिल पहुँच गए। वहाँ उनका एक पैतृक मकान था जहाँ उनका एक तीसरा भाई हीरे जवाहरात का ध्यापार करता था। कार्टेनटिनोपिल में घपने माल को बैलघर उग्होंने घष्या नाम कनाया घोर उतकी हीरे जवाहरात में परिणत कर लिया। घब उग्होंने काले जामर की पार कर भीमिया में प्रवेश किया। पोतो बन्धु घब एशिया में पुन बुके थे। वहाँ उग्होंने उत प्रवेश के स्वामी बकराजी के दरबार में जाने का निश्चय किया। बकराजी ने बेनित के उन दोनों व्यापारियों का घपने दरबार में घष्या स्वागत दिया। वहाँ की रीति के अनुसार दोनों पोतो बन्धुओं ने उनके पास जो भी हीरे जवाहरात थे सब बकराजी को भेंट कर दिए। बकराजी

के बन्दरगाहों तक जाते थे और उन मंडियों में कारवायों के द्वारा चीन भारत ईरान तुर्किस्तान इराक इत्यादि एशियाई देशों से लाए हुए बहुमूल्य पदार्थों को खरीदते थे। एशिया के देशों से लाई हुई उन कीमती वस्तुओं को खरीद कर वे मोरोप के बाजारों में बेचते थे। उसी व्यापार के कारण बेनित का व्यापारी मालामाल हो गए थे। जब बेनित के व्यापारी इन एशिया भाग्यर के समुद्री तट पर ससे बंदरगाहों के बाजारों में उन कारवायों से मिलते थे जो कि चीन भारत तुर्किस्तान ईरान और इराक से माल जाते थे तो उन देशों की रहस्यमय बातों झूट धन-हीनता और वहाँ के सम्राटों के ऐश्वर्य की बातें करते नहीं बरते थे। इन्हीं व्यापारियों के द्वारा एशिया के देशों के धन-बैभव की कहानी मोरोप भर में फैल गई थी।

पोलो बन्धुओं ने सोचा कि क्यों न एक बार इस रहस्यमय वैभववाली और ऐश्वर्यवाली महादेश के सम्बर प्राप्त कर पूर्व में चँदे (चीन) तक जाया जाये और उन देशों के वैभव को प्राप्त ले देला जाये। दोनों भाइयों ने निश्चय कर लिया और वे अपने बहाजों में माल भर कर निकल पड़े।

पोलो बन्धुओं का एशिया की खोज करने का निश्चय बड़े साहस और जोशिल का काम था। एशिया जैसे महादेश को उन दिनों पार कर सुदूर पूर्व में चीन देश तक पहुँचना कोई खेल नहीं था। हजारों मील तक चँदे हुए जल रहित रेगिस्तान घाकाम झूने जाने ऊँचे बहाड़ हितक बन्धुओं से भरे हुए नवानक सपन बन बर्क

से ठठे हुए पठार अर्धकर बेग से बहने वाले नद विनाम घंटाओं की पार करते हुए तथा डाकुओं घोर बन्मारों से अपने को घबराते हुए, बीच में पड़ने वाले बेगों में लिड़े हुए भयानक पुरों से बचकर निरुत्त जामा कोई तरल काव नहीं था। लेकिन दोनों बोलो बगु उन लोगों में से नहीं थे जो कठिनाई घोर विपत्ति से घबरा उठते हैं। जीवन में जो लोग विपत्तियों घोर कठिनाइयों से घबरा उठते हैं वे कोई बड़ा काम नहीं कर सकते। बोलो बगुओं के मन में पूर्व के उन बेगों की भोज करने की तीव्र सात्ता थी इसलिए कठिनाइयों घोर विपत्तियों की परबाह न कर वे अपने बहानों को लेकर बन पड़े।

भाग्य ने सब बिना बापु अनुभूत की इसलिए भूमध्य सागर पार करने में उन्हें कोई भी कठिनाई नहीं हुई। दोनों भाई तदुग्रम कास्टैन्टिनोपिल पहुँच गए। वहाँ उनका एक वयस्क मकान था जहाँ उनका एक तीवरा भाई हीरे बबाहरात का व्यापार करता था। कास्टैन्टिनोपिल में अपने माल को बेचकर उन्होंने प्रथम मात्र कमाया घोर उसको हीरे बबाहरात में परिशुद्ध कर दिया। वह उन्होंने काले सागर को पार कर सीमिया में प्रवेश किया। दोनों बगु अब एशिया में घूम चुके थे। वहाँ उन्होंने उन प्रेग के मन्त्री बकराबा की बेरबार में जाने का निश्चय किया। बकराबा ने बेजित के उन दोनों व्यापारियों का अपने दरबार में एक-दूसरे दिया। वहाँ की रीति के अनुसार दोनों दोनों बगुओं के उनके पत्र को भी हीरे बबाहरात ने सब बकराबा की संवेदना में। बकराबा

ने उस जेठ को स्वीकार कर लिया और उन दोनों भाइयों को दुगने
 मूस्य के हीरे बबाहरात लेकर अपने दरबार से बिदा किया। उसी
 समय बबरा का और हुसायू में कुछ छिड़ गया। दोनों भाइयों के
 लिए अब पीछे लौटना सम्भव नहीं था। इसलिए दोनों भाइयों ने
 सोचा कि पूर्व की ओर बढ़ा जावे। उन्हें धारणा थी कि पूर्व से उन्हें
 हेम लौटने का कोई न कोई रास्ता अवश्य ही मिल जावेगा। वात्सा
 नदी के मार्ग से वे इजिप्त की ओर गए और वहां से पैकिस्तान
 की पार कर बुजारा पहुँच गए। बुजारा अत्यन्त बंजरप्राणी और
 सुंकर नगर था। यौनो बन्धु वहां तीन वर्ष तक ठहरे रहे और वह
 प्रयत्न करते रहे कि किसी तरह अपने घर वापस सीट तक पैकिन
 उनकी सारी काशिशें बेकार हो गईं। उसी समय हुसायू का एक
 सामन्त जो बुबसेका के दरबार में बूत के रूप में जा रहा था बुजारा
 घाटा और उसने उन्हें बुबसेका के दरबार में चलने की कहा।
 दोनों भाई घुमझूड़ तो थे ही पश्चिमा के देशों के बंजर को घाँकों
 से देखने की उनकी जानसा तीव्र थी और हृदय में साहस था।
 दोनों भाइयों के बुबसेका के दरबार में चलना स्वीकार कर लिया
 और उसका साथ ही लिए। तत्पश्चात् सामन्त के साथ दोनों भाई उत्तर
 पूर्व की ओर बढ़े। मार्ग बिजट था। कहीं बर्फ के पिरेने के कारण
 रकना पड़ता तो वहीं नदियों की प्रबल बाढ़ उनके मार्ग को रोक
 देती। इसी तरह लगातार एक वर्ष तक चलते रहने के बाद वे
 पैकिन पहुँचे जो उस समय पूर्व का और समथ्र जाता था। महान
 काम ने उनका अचछा स्वागत किया और दोनों भाइयों से उनका देना

के सम्बन्ध में बहुत सी बातें सुनीं। दोनों भाइयों ने इन चीजों
 तानारो भाषा बोलते बोलते सोच सी थी इन कारणों उन्होंने तानारो
 भाषा में ही बुकसेला को अपने दण्ड का सब हाथ सुनाया। उनकी
 अनुराई से बुकसेला बहुत कुछ हुआ और उसके दरबार में दोनों
 भाइयों की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। बुकसेला इन दोनों भाइयों के
 ईसाई धर्म के बर्तन से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उनको अपना
 दूत बनाकर पोप के पास इसलिए भेजा कि पोप चीन में ईसाई धर्म
 का उपदेस देने के लिए सी बिहान जाओपदेशक भेजे। महान छान
 ने दोनों भाइयों को पोप के भाग पत्र लेकर एक सोने की मुहर दी जो
 उसका राजचिह्न थी। साथ में सभी प्राप्ती के शातकों को एक
 धागा-पत्र था कि दोनों भाइयों को मान में सभी तरह की सुविधा
 और धारण का प्रबंध किया जावे। दोनों जाई देश की ओर सीते
 तीन वर्ष तक चलत रहने के बाद वे जब वेग पहुँच तो उन्हें नामुम
 हुआ कि पोप मर चुका है। इसलिए वे अपने घर बेनिंस चले आए
 और वहाँ इसलिए ठहरे रहे कि जब नये पोप का चुनाव हो जावे
 तो उससे बुकसेला का संदेस कहा जावे।

दोनों पोली बन्धु पंद्रह वर्षों के बाद अपने घर पहुँच। जिस
 वर्ष वे इस लम्बी यात्रा को निकल के उसी वर्ष निकालो की पत्नी
 की मृत्यु हो गई थी और उसने एक पुत्र को जन्म दिया था। यह
 बच्चा प्रसिद्ध यात्री मार्को पोली था।

उन समय मार्को पोली पंद्रह वर्ष का ही चुका था। बाप
 मार्को पोली अपने पिता और चाचा से चीन के बीच और महान

ने उस भेंट को स्वीकार कर लिया और उन दोनों भाइयों को अपने
 मुख्य के हीरे जवाहरात बेकर अपने दरबार से बिदा किया। उसी
 समय बकरा लौ और हलाकू में पुठ छिड़ पया। दोनों भाइयों के
 लिए अब पीछे लौटना सम्भव नहीं था। इसलिए दोनों भाइयों ने
 सोचा कि पूर्व की ओर बढ़ा जावे। उन्हें धाजा भी कि पूर्व से उन्हें
 बेघ लौटने का कोई न कोई रास्ता अवश्य ही मिल जायेगा। वास्ता
 नदी के मार्ग से वे बसिया की ओर गए और वहां से रेगिस्तान
 को पार कर बुनारा पहुंच गए। बुनारा अत्यन्त बंमबघाली और
 सुंदर नगर था। योनी बन्धु वहां तीन वर्ष तक ठहरे रहे और यह
 प्रयत्न करते रहे कि किसी तरह अपने घर वापस लौट लें किन्तु
 उनकी सारी कोशिश बेकार हो गई। उसी समय हमलू का एक
 सामन्त जो बुबलेबा के दरबार में बूत के रूप में था रहा था बुनारा
 आया और उसने उन्हें बुबलेबा के दरबार में चलने को कहा।
 दोनों भाई घुमड़ड़ तो ये ही एशिया के देशों के बंमब को धाजों
 से बेचने की उनकी लालसा तीव्र थी और हृदय में साहस था।
 दोनों भाइयों ने बुबलेबा के दरबार में चलना स्वीकार कर लिया
 और उसके साथ ही गए। तातार सामन्त के साथ दोनों भाई उत्तर
 पूर्व की ओर बढ़े। मार्ग बिकट था। कहीं बर्फ के गिरने के कारण
 चलना पड़ता तो कहीं नदियों की प्रबल बाढ़ उनके मार्ग को रोक
 देती। इसी तरह लगातार एक वर्ष तक चलते रहने के बाद वे
 रकिंग पहुंचे जो उस समय पूर्व का लौर सम्भव जाता था। महान
 खान ने उनका अचछा स्वागत किया और दोनों भाइयों से उनके बेघ

के सम्बन्ध में बहुत सी बातें पुरानी । दोनों भाइयों ने इन बीच तातारी भाषा बोलते-बोलते लीन भी को इस कारण उठोमि तातारी भाषा में ही बुबलेखा को धपने देना का सब हास मुनाया । उनकी चतुराई से बुबलेखा बहुत कुछ हुमा और उसका दरबार में दोनों भाइयों की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई । बुबलेखा इन दोनों भाइयों के ईसाई धर्म के चलान से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उनकी धपना दूत बनाकर पोप के पास इसलिए भेजा कि पोप लीन में ईसाई धर्म का उपदेश देने के लिए सी बिद्वान चाँपिरोशक भेजे । महान धर्म में दोनों भाइयों को पोप का नाम पत्र लेकर एक साले की मुहर दी जो उसका राजबिद्वान थी । साथ में सभी प्रार्थनों के शासकों को एक धागा-पत्र था कि दोनों भाइयों को मार्ग में सभी तरह की मुचिया और धाराम का प्रबंध किया जावे । दोनों भाई देश की ओर लीटे । तीन वर्ष तक चलते रहने के बाद वे जब देश पहुँच तो उन्हें मान्य हुआ कि पोप बर बुका है । इसलिए वे धपन घर बेनिम जाते आए और वहाँ इसलिए ठहरे रहे कि जब कबे पोप का बुनाब हो जावे ता उससे बुबलेखा का लैडिय कहा जावे ।

दोनों पोपों बन्धु पड़ह बनों के बाद धपन घर पहुँच । त्रिभ वर्ष के इस लम्बी यात्रा को निकलने के उसी वर्ष निकोलो की पत्नी की मृत्यु हो गई थी और उसका एक पुत्र को जन्म दिया था । एते बच्चा प्रतिष्ठ पायी पाकी पोपों था ।

उस समय मार्को पोपों बड़ह वर्ष का हो बुका था । बन्धु मार्को पोपों धपन पिता और चाचा ने लीन के बन्दर टैर काज

ज्ञान के दरबार की शान-शौकत की कहानी सुनते नहीं सकता था। उसके मन में यह इच्छा बनवती होती जा रही थी कि वह भी उस महान देश की धामा करे।

पोलो बंधुओं को बेनिस में ठहरे हुए दो वर्ष हो गए लेकिन पोप का चुनाव नहीं हो सका। यह सोचकर कि कहीं कुबलेर्जा यह न सोचे कि उन्होंने बोझा दिया वे चल पड़े। इस बार उनके साथ सत्रह वर्ष का पुत्र मार्को पोलो भी था। वे प्रयास के बन्दरगाह से बोझा ही धागे बड़े थे कि खबर मिली कि पोप का चुनाव हो गया है। वे पोप की राजधानी आकरे लौटे। पोप ने उन्हें कुबलेर्जा के नाम एक पत्र दिया तथा दो पारदरियों को उनके साथ कर दिया। लेकिन जैसे ही पोलो बन्धु धागे बड़े पारदरियों का साहस छूट गया वे मार्ग की कठिनाइयों से घबरा गए और वापस लौट गए। अब दोनों भाई पुत्रक मार्को पोलो को साथ लेकर चीन देश की ओर चल पड़े।

अब तीनों यात्री आरमीनिया में घुसे। उस समय वहां भयंकर मुठ छिड़ा हुआ था। आने बड़ना पान को खतरे में डालना था। लेकिन पोलो बन्धु जीबट के आदमी वे विपत्तियों से लड़ना उन्होंने सीख लिया था। इसलिए वे घबराए नहीं। आरमीनिया में स्थित माऊंट अरागत पर्वत को पार कर कास्पियन समुद्र तथा उसमें पिरने वालो पूर्वदिक् ओर बाइबोड नदियों को पार करते हुए, वे बरबाद पहुँचे। बरबाद उस समय अत्यन्त बमबसाली और समृद्धिवाली नगर था। इस्लाम धर्म उस समय समस्त दक्षिणी एशिया और अफ्रीका में फैल चुका

था। बघदाद इस्लाम के महान खलीफा की राजधानी था। परन्तु जिस समय यह पोली यात्री बघदाद पहुँचे उस समय उस की शान मिट चुकी थी। बर्बर हमाकू के नेतृत्व में तातार सेना ने उसको विध्वंस कर दिया था और अस्तित्व खलीफा की निर्दयतापूर्वक हत्या करदी गई थी। किन्तु पोली यात्री किसी तरह बचते हुए ईरान में हुसे और ईरान की मरुभूमि को पार करते हुए घोरमुज के शम्बरपाह पहुँचे। उनका विचार वहाँ से अहान तैबर समुद्र के रास्ते चीन जाने का था। संश्लि अहान का प्रबंध न हो सका और उन्हें अपना विचार बदलना पड़ा। अतएव वे फिर स्पल-मार्ग से उत्तर हुए की घोर बढ़े।

पोली यात्री अब ईरान की विस्तृत मरुभूमि क बक्षिरुही किनारे पर पहुँच गए। यह बड़ा रेगिस्तान घाट ली मील तक तेहरान से मरुभूमिस्तान तक फैला हुआ है। मार्को पोली ने इस सूखे प्रदेश का नीचे लिखे शब्दों में वर्णन किया है—

“कई दिनों तक इस सूखे रेगिस्तान में ऊँट पर चलना पड़ता है। पेड़ या फलों के पृष्ठों का कहीं निशान भी नहीं दिखलाई पड़ता। सारा प्रदेश बीरान है। पानी बहुत कम मिलता है और जो जोड़ा बहुत मिलता है वह इतना कड़वा है कि उसको कोई पी नहीं सकता। यदि कोई जोड़ा भी पानी पी ले तो उसको बस्त नष्ट आये। इस प्रदेश में पशु और पत्नी भी नहीं दिखलाई पड़ते। इन प्रदेश में कभी कभी जहरीली हवा भी बसती है। जो उस हवा में पड़ जाता है वह वहीं मर कर गिर पड़ता

है। बाल्य में, यह मृत्यु का बेग है?।

इस प्रवेश को पोली परिवार पार तो कर गया किन्तु पुष्क मार्को पोली को स्वर रहने लगा। इस कारण उन्हें बरकजान में एक वर्ष तक ठहरना पड़ा। बरकजान के पहाड़ों पर बड़ी उल ऊँचे प्रवेस पर ठंडी हवा और हरियाली भी रहने के कारण मार्को पोली का स्वर जाता गया। एक वर्ष बहाँ ठहर कर वे ठिठक बन पड़। अब वे पामीर के ऊँचे पठार पर थे। यह 'पृथ्वी की छत' कहलाता है। पामीर के पठार से अब वे उतर कर लोतान आए तो उनके सामने बिस्माल पोली का रेगिस्तान दूर दूर तक फैला हुआ था।

तीस दिन तक लगातार पोली परिवार इस रेगिस्तान में बसता रहा। सारा प्रवेश रेतीला बनस्पति का नाम नहीं और समस्त प्रवेस में मृत्यु की निस्तब्धता छाई हुई थी। जीवन का कोई चिह्न नहीं था। उसको पार करके पोली परिवार तांगुत प्रान्त के एक नगर में पहुँचे। बहाँ उन्हें महान सम्राट कुबलेखा के भेजे हुए आदमी मिल गए। सम्राट कुबलेखा के बिजान और दूर दूर फैले हुए साम्राज्य में डाक का प्रणय प्रबंध था। साम्राज्य के हर एक हिस्से से सम्राट के पास समाचार के जाने वाले संदेश-बाहक रहते थे। इन्हीं संदेश बाहकों के द्वारा सम्राट को पोली परिवार के जाने की सूचना पहले ही मिल चुकी थी। पोली बन्धुओं को कोई कष्ट न हो इसलिए सम्राट ने अपने आदमी भेज दिए थे। पोली परिवार सब बिना किसी कठिनाई के यात्रा करने लगा। बीस दिन यात्रा करने के बाद वे प्रापद पहुँचे जो सम्राट कुबलेखा की दीप्तिमान

राजधानी थी। लघातार २५०० लख घाघा करने के बाद तीनों समुदास भीन पधुंढ गए।

अब पोसो परिवार कुबसेला के दरबार में कहुंया लो सम्राट ने उनका स्वापन किया। मार्को पोसो को बेजत ही सम्राट ने पुन्ना यह पुबक कोन है। निडोला पोसो ने उत्तर दिया— 'प्रभो बहु मेरा लड़का धीर घाघका सेबक है।' सम्राट म उसको देखकर बहुत प्रसन्नता प्रकट की। तीनों पोसो बड़े सम्मान के साथ सम्राट कुबसेला के दरबार में रहने लगे।

घारम्भ से ही पुबक मार्को पोसो सम्राट कुबसेला के मन में बस गया। बहु मार्को पोसो से बहुत अधिक प्रसन्न था। इसका एक बड़ा कारण यह था कि मार्को पोसो ने बड़ी बस्ती ही उस देश की भाषाओं को सीख लिया। धीरे धीरे मपोसों के रीति रिवाजों धीरे धीरे लहने को जान लिया। सम्राट राजकीय कार्य से मार्को पोसो को विद्य विद्य भाषों में भजता था। मार्को अब घाघा से लौट कर घाघा लो सम्राट के सामने उस देश का देता समीच धीरे जानकारी से पूर्ण विद्य खोजता कि सम्राट मुग्न हो जाते। इसका परिणाम यह हुआ कि लमी कठिन धीरे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए सम्राट मार्को पोसो को ही भेजता था। सम्राट की कृपा से मार्को पोसो को दुर्ब के धानी देशों को जानने तथा देखने का प्रपूर्व व्यवसर मिला और उसने समुचे एसिया की खोज निकाला।

मार्को पोसो सम्राट कुबसेला के व्यक्तित्व धीरे उसके बीमब से बहुत अधिक प्रभावित था। सम्राट की जीवनकालीन राजधानी

शादुप के महलों का वर्णन करते हुए मार्को कहता है 'सम्राट के महलों का घेरा सोसह मील में है जिसके घम्बर अनेक करने लबिबा और सुंदर बरागाह और उद्यान हैं ।'

परन्तु सम्राट कुबलेसा का वास्तविक शंभव उसकी मुख्य राजधानी वंकिग के बर्खन में मिलता है । यह साम्राज्य की राजधानी है । यह नगर बीकोर बसा हुआ है । उसकी सम्बाई और बीड़ाई ६ मील है और चारों ओर नगर परकोटा है । चारों कोनों पर चार बड़े महल हैं और प्रत्येक चार बीच में एक बड़ा महल है । इन घाटों महलों में पुड की घामबी भरी रहती है । नगर की बाहरी शोबार के अन्दर एक और शोबार या परकोटा है । उसमें भी घाट महल हैं । उनमें भी पुड सामग्री लरी रहती है । इनके बीचों बीच एक बहुत बड़ा महल है । मार्को का कथन है कि ऐसा विमान और भव्य महल पृथ्वी में कहीं नहीं है । उस महल के घम्बर की शोबारें लोहे और चांदी से मड़ी हुई हैं । उन स्वरुह और रजत से ढकी हुई शोबारों पर बिबों बीरों पशुओं और पक्षियों के चित्र अंकित हैं । बीच का बड़ा हाल इतना बिसाल था कि उसमें ६ हजार घादमी बैठ कर नीजिन कर सकते थे । वह हाल इतना विमान और भव्य था कि पृथ्वी पर बीसा दूसरा हाल नहीं बनाया जा सकता । उसकी ऊंची छत लाल हरे नीले तथा अनेक रंगों से पोती गई थी । वह ऐसी कमकवार थी कि मानो छोटा बनकता हो । बड़े महल के पीछे बड़े बड़े मकान और हाल थे जिनमें सम्राट की पत्नियाँ और हीरे जवाहरात रहते थे ।

नगर में बाटू बड़े फाटक थे । सड़कें सीधी थीं इतनी चौड़ी थीं कि एक फाटक से दूसरा फाटक दिखसाई देता था । प्रत्येक फाटक पर एक हजार और सन्निक पहरा बैठे थे ।

सम्राट के बिनास महस के सामन एक विस्तृत उद्यान था जिसमें फल फूलों के वृक्षों के अलावा गिकार भी प्रचुर मात्रा में मिलता था ।

जब सम्राट कोई भोज बैठे थे तो हजारों कीसट्या में प्रतिधि निमंत्रित होते थे । हर एक प्रतिधि को सोने का एक प्याला दिया जाता था जिसमें सोने की सुराहियों से शराब डाली जाती थी । प्रत्येक प्रतिधि को मेज पर शराब से भरी हुई एक सोने की सुराही रखी जाती थी ।

नव वर्ष के दिन जो फरवरी में होता था प्रत्येक दरबारी लकड़े पोशाक धारण करता था । ज्ञान की प्रज्ञा उस दिन अपने सम्राट को सोना चांदी मोती हीरे अवाहुरात की भेंट देती थी । उस दिन सम्राट को एक लाख बड़िया अण्डी गस्त के घोड़े भेंट किए जाते थे । उस दिन सम्राट के पाँच हजार हाथी जिन पर कारबोबी की नूमें पड़ी होती थीं लाए जाते थे । उनक प्रतिरिक्त अर्धस्य अंठों पर भोज की सामग्री लाह कर साई जाती थी ।

मार्को पोलो ने अपने वर्णन में लिखा है कि उस समय चीन में कागजी मुद्रा प्रचलित थी । सम्राट बुबलेसां ने कागजी मुद्रा लेकर देश का समस्त चीना और अवाहुरात लीर लिए थे । सम्राट की विघ्नत सेना को कागजी मुद्रा में ही वेतन दिया जाता था ।

माफ़ी पोलो अपने स्वामी कुबसेका क बंभव घोर ऐश्वर्य का दर्शन करते नहीं सकता । नव वर्ष के मौज का दर्शन वह इस प्रकार करता है ।

सम्राट क भोजों में चालीस हजार प्रतिनि एक ताब भोजन करते थे । सम्राट सबसे ऊँचे स्थान पर बैठता था । उसके पुत्र और पुत्रियों की मैजे इस तरह रखी जाती थी कि उनके सिर सम्राट के पैरों तक पहुँचते थे । कुबसेका को भोजन उसके सुबेदार और बड़े सामन्त ही परसते थे । उनके मुँह पर कीमती कारखोबी के काम का कपड़ा सिपटा रहता था जिससे कि उनकी सांस सम्राट के भोजन को स्पर्श न करे ।

सम्राट कुबसेका का साम्राज्य बीतीस सुबों में फैला था । उसका शासन बाएह बड़े सामन्तों के द्वारा होता था जो कि राजधानी में रहते थे । इतने बड़े साम्राज्य के समाचार जानने के लिए डाक का बहुत प्रबन्ध प्रबंध था । सभी सुबे सड़कों द्वारा राजधानी से जुड़े हुए हैं । प्रत्येक सड़क पर हर पञ्चीस मील पर एक बिभान घर है जहाँ सबिख-बाहक के टहरने का सभी प्रबंध होता है । उनके बिछीने मुमाबम पैगम क होते हैं और उनक जाने-बीने का बहुत सुंदर प्रबंध रहता है । इन बिभान-घरों में बहुत तेज घोड़े रखे जाने हैं । इस प्रकार सभी महत्वपूर्ण मार्गों पर बिभान घर और घोड़े रहने हैं जिन्हा यह सबिख बाहक उपयोग करते हैं । इन स्वानों के बीच हर तीन मील पर हरकारों क घर होते हैं । यह हरकारे सरकारी बत्तों की लेकर बीड़ते हैं । उनकी कमर में एक बेटी

होती है जिसमें घंटियां बंबी रहती हैं जो बजती हैं और दूर से उनकी धाबाज सुनाई देनी है। जब यह हरकारे सभ्यकारी पत्र लेकर बीड़ते हुए एक पांव से दूसरे गांव तक जाते हैं तो घंटी की धाबाज सुन कर वहां का हरकारा तैयार रहता है और धाबाज को लेकर सुरत घग्ने स्थान पर पहुँचा देता है। सुबसेवा को इन पैरान बौढ़ने बासे हरकारों से उन स्थानों के समाचार जिन तक पहुँचन में सामारण पात्री को बस बिना भगन है एक दिन और रात्रि में बिस बसे है।

मार्को पोलो की पहली यात्रा सम्राट कुबसेपा क घारेन मे बसित पबिसन मुहुर पुनान प्रान्त की और हुई। पार महीने बनकर वह पुनान पहुँचा। राजधानी मे बस मीम पर सान-बान नबी पर घन हुए संयमरमर के सुंदर पुन को जगने बहुत अधिक प्रशंसा की है। पुनान प्रान्त क मुख्य नगर तैयूमान तक मार्को पोलो को बहुत से सुंदर बसवशापी नगर व्यापारिक केन्द्र कादीपरी के स्थान बिसतृत हरे भरे घेत और घगुर की घेलों मे भरे हुए बाग बिसलाई दिए।

हांगहो महानर को देखकर मार्को पोलो मे सिजा कि यह नबी इतनी खीड़ी है कि उस पर पुस नहीं बन सकता।

प्रान्ती प्रान्त में जब मार्को पोला पहुँचा तब उस यह देखकर घाबघय हुआ कि उस प्रान्त में रेघम बहुत अधिक उत्पन्न किया जाना है तथा रेघम और सोने के तार बिसाकर बसत बहुमुख्य रूपका बनाया जाता है। सारे प्रान्त में जीवन की घाबस्थिता की सभी

बीजे बहुत बड़ी भाषा में और बहुत लम्बे शायों में मिलती है ।

इसके बाद मार्को पोलो चीन के पहाड़ी प्रदेश हांगचुंग में गुला ।
जहाँ जंगलों में और भाग्य तथा सम्य जंगली जानवर बहुत बड़ी
लंघा में थे ।

बीस दिन जयास्तार थोड़े पर उस पहाड़ी प्रदेश में चलने के
बाद पोली मार्को प्रान्त के ज्येत-नगर में पहुँचा और उसको पार
करने के उपरांत बीस दिन फिर पहाड़ी प्रदेश को पार करता हुआ
पोली 'बेंगलु' पहुँच गया । यह नगर धार्मिकी विभाग नदी पर
स्थित था और समुद्र से सौ दिन की यात्रा की दूरी पर था । पोली
लिखता है कि यह नदी इतनी बड़ी थी जिसकी कोई कल्पना भी नहीं
कर सकता । 'बेंगलु' तक सँकड़ों बहाव समुद्र के राते धाते थे ।
इस कारण यह नगर एक बहुत बड़ी मंडी बन गया था ।

मार्को चीन के इन उपजाऊ प्रान्तों को पार करता हुआ तिब्बत
में पहुँचा । उसने लिखा है धान के युद्धों के कारण तिब्बत बीरल
प्रदेश बन गया है । वहाँ जाने पीने की वस्तुओं का भी अभाव है ।
तिब्बत में उसने शिबों को तथा शैव मूर्तियों को कीड़ी का वेध
पहने देखा जो वहाँ शोभा की वस्तु समझी जाती थी । समुद्र से
इतनी दूर देश में कीड़ियों की इतनी बहुतायत पोली के लिए एक
अचम्बे की बात थी । इसके बाद पोली पामीर और काश्मीर भी
घरा । पामीर और काश्मीर की सुन्दरता को उसने अपनी पुस्तक में
बहुत अधिक सराहना की है । परन्तु उसने लिखा है कि वहाँ यात्रा
करना मानो अपने प्राणों से खिलना है । धानचुम्बी पहाड़ पतली

पपड़ेंदियां घीर घरे बहुत तनिक वर फितलने पर घात्री की हड्डियों का भी बसा नहीं सव लकटा । इनको बार कर माटों पोसो पूर्वी सिखत में पुसा बहां चीनबाय प्रवेश में उसे नमक की भीम मिमी । बहां उसने देखा कि नमक की गोल रोटियां जिन पर बुबलेका की पुहर होती थी सिक्के के रूप में चलती थीं । उस प्रवेस में सोने की बहुतायत थी । नदी के रेत में सोना निकसता था ।

बनते बसते पोसो पुनाम के प्रान्त में पहुँचा । वह सिखता है कि यह प्रान्त सात राज्यों के बराबर बड़ा है । बहां उसने एक बिनास भीम देवी घोर जीवन में पहली बार मगर देखा । मगर को देख कर वह घबड़ा गया । उसने लिया है कि वह साँप जितना बड़ा था व उसकी साँस बड़ी रोटी के घगघर थीं और मुँह इतना बड़ा था कि वह लपूके आबनी को नियम जाता था । पश्चिम की तरफ बढ़ते हुए वह पुनाम प्रान्त में पहुँचा । बहां उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि हर एक की पुस्य अपने बानों को सोने से मढ़ाता था । पुनाम से दक्षिण चलकर पोसो बर्मा पहुँचा । बर्मा के सम्बन्ध में उसने लिखा : 'दो पंद्रह दिन तक उस कठिन मार्ग पर चलता रहा इस देस में घने वन हैं जिनमें हाथियों की भरमार है । इस देस की राजधानी व मंदिरों के स्तूप घीर बुम्बज सोने-बाँदी से हैं । बर्मा को भी बंगोनों ने बिजय कर लिया था घोर यह सभ्राह बुबलेका का एक प्रान्त था ।

साहनी भाकों पोसो कंचे (चीन) की छोड़कर माँकी की तरफ मुड़ा । उस प्रान्त को राजधानी 'हांगकाऊ' भी बिते स्वर्ग की

राजधानी कहते थे। मार्को ने उस नगर का वर्णन इस प्रकार किया है 'नगर के एक ओर कुछ मोटी घाट की एक सुंदर भीम है। दूसरी ओर एक बहुत बड़ी नदी है। उससे निकाली गई नहरें नगर के प्रत्येक भाग में बहती हैं। नगर के बराबर चौकोर भाग हैं जो एक भीम लम्बे चौड़े हैं। उनके सामने मुख्य सड़क है जिसकी चौड़ाई आसीस गज है। वह सड़क नगर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाती है।

मार्को पोलो ने लिखा है कि पृथ्वी पर यह सबसे बड़ा नगर है। इस नगर का घेरा सी भीम का है। नहरों पर इतर से उभर जाने के लिए बारह हजार पत्थर के पुल हैं। इनमें से प्रबिकारा पुल इतने बड़े और ऊँचे हैं कि उनके नीचे से बड़ा जहाज निकल सकता है। नगर राग का सारा नहरों के बिनारे घसा है और नगर के चारों ओर पानी है। बनिन की भांति ही वह नगर भी पानी के किनारे बसा है। यहाँ के भीषामर इतने बनी हैं कि उनके बन के बारे में न बताया जा सकता है और न कोई उस पर बिस्वास ही कर सकता है। फिर ऐसे बनी ब्यातारी इने-गिने नहीं बहुत बड़ी संख्या में हैं। ये नया उनकी किया हाप से कोई काम नहीं करते और राजाओं की भांति घाल-घीसत से रहते हैं। उनकी महिसार्य अनुपम सुंदरी हैं और उनके सौंदर्य और बसब की बात कर बकित रह जाना पड़ता है। यहाँ के सोम पूर्णिपूजक हैं। कायत्री मुहा का यहाँ बसत है। सम्राट कुजसेन्ना ने कुछ समय पूर्व इस प्रदेश को बिक्रय कर अपने साम्राज्य में मिला लिया है। नगर में चार हजार

हम्माम (स्नान-गृह) हैं जहाँ की पुरुष प्रति दिन स्नान करते हैं। पृथ्वी भर में कितनी बेस में इतने बड़े और सुंदर स्नान-गृह नहीं हैं। एक एक स्नान-गृह इतना बड़ा है कि उसमें ती री या पुरुष एक साथ स्नान कर सकते हैं। इस नगर के अधिकांश निवासी शरैब रेशमी बस्त्र पहिनते हैं। इसका कारण यह है कि रेशम का बपड़ा यहाँ बहुत बड़ी मात्रा में तयार होता है। इस नगर में कारीगरी बहुत उन्नत अवस्था में है। कारीगरों के बाण्डू बड़े संघ हैं। प्रत्येक मुख्य उद्योग का एक बड़ा कारीगर संघ है। यहाँ के कारीगर अपने उद्योग की बड़ी कुशलता और ईमानदारी से करते हैं। प्रत्येक कारीगर-संघ में चारह हजार कारखाने हैं और हर कारखाने में कम से कम दस कारीगर काम करते हैं। इस नगर की संख्या के बारे में मार्को पोलो कीईं धम्बाज न कर सबा। उसम लिखा है कि उम नगर की आबादी बीस पचीस लाख से भी अधिका थी। उत नगर से राज्य को दो करोड़ सोने के सिक्कों का राजस्व निभता था। मार्को पोलो ने लिखा है इसमें कोई भी सबिह नहीं कि यह नगर पृथ्वी पर सबसे बनी सम्य तथा सुंदर है। इस नगर मे २५ मील दूरी पर रामुद है जहाँ एक अत्यन्त सुंदर धररगाह (निमपो) है जहाँ भारत तथा अन्य देशों से प्रति दिन सैकड़ों की संख्या में जहाज आते हैं जिनमें बहुमुख्य वस्तुएं मरी होती हैं।”

मार्को पोलो द्वारा चीन का यह वर्णन अत्यन्त आकर्षक है। उसको पढ़कर ऐसा आनन्द आता है कि इतने का मत ही नहीं करता। सोयते के बारे में मार्को पोलो ने लिखा है ‘समस्त चीन

में एक प्रकार का काला फव्वार होता है। जो पृथ्वी के समुद्र से निकलता है और सफ़ी की तरह चलता है। उसकी गाय लकड़ी की भाय से लेज और बेर तक रहती है। यदि रात्रि को कोयले जला दिए जायें तो वे प्रातःकाल तक चलते हुए मिलेंगे।

जान यह भी कि मार्को पोलो ने योरोप में तो कोयला बेचा ही नहीं था। तब तक योरोप वाले जिनको कोयले को जानते ही नहीं थे। इसी प्रकार मार्को ने नदी के ऊपर कुछ संगमरमर के अद्भुत पुन का वर्णन किया है जिसमें बीबीत महाराजों हैं और जो इतना चौड़ा है कि उस पर बस बुढ़तबार एक साथ चल सकते हैं। वह कहता है कि यह पुन पृथ्वी की अत्यन्त सुंदर और महत्त्वपूर्ण वस्तु है। 'हांसहो' नदी की विघ्नता का वर्णन करते हुए मार्को पोलो लिखता है कि वह इतनी चौड़ी है कि उस पर कोई पुन ही नहीं बन सकता। वह अपनी पुस्तक में अद्भुत के अर्थात् बुजों का अत्यन्त विषय वर्णन करता है जिन पर रेशम के कीड़े पामे जाते हैं और जिनसे चीन का प्रसिद्ध रेशम तैयार होता है। चीन में रेशम की बहुतायत का कारण यही अद्भुत के बड़े हैं जो कि देश भर में पाये जाते हैं। पोलो ने चीनी मिट्टी के बर्तनों की भी बहुत प्रशंसा की है। उसने लिखा है कि चीनी मिट्टी के डेर के डेर इकट्ठे कर दिए जाते हैं। जामीन साल तक उस मिट्टी को घुमा नहीं जाता। इस तरह उसको पड़ा रखने के बाद उसके सुंदर चीनी के बर्तन बनाए जाते हैं। हुआ और जामीन में जामीन साल तक पड़ी रहने के कारण यह मिट्टी इतनी सफ़ी बन जाती है।

पोलो को जापान का भी पता था। वह पहला योरोप निवासी था जिसने जापान का पता लगाया। जापान के सम्बंध में लिखते हुए उसने कहा है यह द्वीप चीन से दूर है। यहाँ के निवासी गोरे धीरे सम्य हैं। इस द्वीप में सोना धीरे चाँदी बहुतायत से मिलता है। जापानी मूर्तिपूजक हैं धीरे उनका एक राजा है। कुबलेजा ने इस द्वीप पर वहाँ के सोने के लिए घातमण किया परन्तु वह वहाँ से सोना न सा सका।

इस प्रकार अपने स्वामी के आदेश से एक के बाद दूसरी लम्बी यात्रा करते हुए मार्को पोलो ने लगभग वर्ष तक कुबलेजा की सेवा की। कुबलेजा मार्को पोलो से बहुत प्रसन्न था। उसके दरबार में मार्को की बहुत इज्जत थी। उसके पास समस्त ज्ञान सम्पत्ति इकट्ठी हो गई थी क्योंकि कुबलेजा ने उसको बहुत कुछ दिया था। जब पोलो लोग अपने देश को लौटने की बात सोचने लगे। बात यह थी कि उनको अपना देश छोड़ें बहुत समय व्यतीत हो गया था। देश की याद आने लगी थी। दूसरी बात यह थी कि सम्राट कुबलेजा भय कुछ हो गया था। उसके समय दरबारी धीरे मंत्री इन विदेशियों की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा के प्रति ईर्ष्या करते थे। पोलो लोग जानते थे कि सम्राट के मरने पर उनका जीवन ही क्षतरे में पड़ जायेगा। इस कारण जब से देश वापस लौटने के लिए छटपटाने लगे। परन्तु कुबलेजा किसी तरह भी उनको जाने नहीं देना चाहता था। इस कारण वे विवश थे। जब जब वे देश वापस जाने की यात्रा माँगते तब तब कुबलेजा उनकी प्रार्थना को प्रतीकार कर देता।

उसी समय परशिया (ईरान) के बादशाह के दूत कुबसेजा के दरबार में आए और उन्होंने सम्राट की सेवा में अपने बादशाह का पत्र दिया। परशिया के बादशाह की अलग सुबरी मलका बुलमाना का वैहाप्त हो गया। वह मंगोल बंस की अग्रतम सुबरी थी। परशिया के बादशाह की इच्छा थी कि उठी बंस की किसी सुबरी को वह अपनी मलका बनाए। इसीलिए उसने कुबसेजा को पत्र लिखा था। अपनी भाबी मलका को लाने के लिए परशिया के बादशाह ने बहुत से कर्मचारी तथा सैनिक भेजे थे।

पत्र पाकर कुबसेजा ने उस बंस की एक पत्नी सुबरी को जिसकी उमर सत्रह वर्ष की थी बुलाकर फारस के दूत के सुपुर्ब कर दिया। सुबरी लहजाबी को लेकर फारस के राजदूत धस दिए। किन्तु धागे जाने पर उन्हें ज्ञान हुआ कि स्वतन्त्र-मार्ग से फारस जाना सम्भव नहीं था क्योंकि बीच में असामित थी और पुर हो रहा था। ये लहजाबी को लेकर आपस कुबसेजा की राजधानी लौट आए। उसी समय मार्को पोलो सम्राट की आज्ञा से भारत की यात्रा करके लौटा था। उसने फारस के राजदूत को बतलाया कि फारस को समुद्र के रास्ते भी जाया जा सकता है। फारस के राजदूत ने सम्राट कुबसेजा से प्रार्थना की कि पोली लोगो को उसके साथ कर दिया जाये तो वे समुद्र के रास्ते फारस पहुँच सकते हैं क्योंकि मार्को पोली की ही समुद्री मार्ग का ज्ञान था। बहुत अनिच्छा पूर्वक सम्राट कुबसेजा ने पोली परिवार को देग लौटने और फारस की भाबी मलका को फारस तक पहुँचा देने की आज्ञा दी।

जस अनुपम सुम्बरी फारस की माफी मसका को पट्टबाने क
 लिए पीरह बड़े समुद्री जहाजों का एक बेड़ा तयार किया गया और
 सैकड़ों भाबिकों की बेज रेल में गुम्बरी जहाजों को लेकर ६००
 दैनिक तथा रातदमकारी समुद्री यात्रा को चल पड़ ।

तोम महीने की समुद्री यात्रा करने के उपरान्त जहाजी बेड़ा
 आबा द्वीप पहुँचा । माफी पोली ने सिद्धा है कि यह द्वीप बहुत घनी
 है । इस सुन्दर द्वीप को प्रशंसा करते हुए वह सिद्धता है कि नीच
 इलायची काली मिर्च तथा सनी बीमती मसाले यहाँ बहुतायत से
 उत्पन्न होते हैं । वास्तव में यह मसालों का द्वीप है और पृथ्वी के
 सनी बेसों को मसाले इसी द्वीप से आते हैं ।

आबा को पार कर पोली का जहाजी बेड़ा मुनाभा पहुँचा
 वहाँ गेडा बैसाकर पोली प्राश्चर्यचकित हो गया । रसर इत्यादि
 इकट्ठी करने के लिए तथा जहाजों की मरम्मत करने के लिए यहाँ
 पाँच महीने जहाज ठहराये गए । किनारे पर जहाँसे मजबूत फिलेबंदी
 की और सनिक प्रयत्नी रक्षा करते रहे क्योंकि वहाँ के निवासी नर
 नली के और मनुष्यों को मार कर खा जाते थे ।

मुनाभा से चल कर वे लोग मका (सीमोन) पहुँचे । माफी
 पोली ने इस बनस्पति से महत्प्रशंसा की तो प्रशंसा की ही है
 परन्तु वहाँ के राजा के पास पृथ्वी का सबसे बड़ा और सुन्दर
 माणिक (जाल) की प्रशंसा उसने बड़े उत्साह से की है । उसने
 लिखा है कि यह घनमोल माणिक हुबेनी के बराबर चौड़ा और
 उतना ही मोटा है । उसने प्राय मुनि भयवान बुद्ध का भी उल्लेख

किया है और लिखा है कि वहाँ के निवासी भगवान बुद्ध की मूर्ति की पूजा करते हैं। उसने घ्राबम की बोटी का भी उल्लेख किया है।

श्री लंका को पार कर पोल्तो ने कारोमंडल तट पर भ्रमण किया। यहाँ वह मोती के जघोप का उल्लेख करता है। जब वह वहाँ के राजा के दरबार में गया तो उसके मुकुट गले कानों हाथ, धनुषियों और पीरों में पहने हुए हीरे और जवाहरात देख कर वह आश्चर्य चकित हो गया। वैसे बहुमूल्य हीरे उसने जीवन में पहली बार देखे थे। मार्को पोल्तो ने अपनी पुस्तक में मोती के जघोप का तो वर्णन किया ही है परन्तु हीरे प्राप्त करने का अत्यन्त सजीव वर्णन किया है। उसने लिखा है कि हीरे की खानों में देती गहरी कंधराएँ हैं और उनके डाल इतने भयंकर हैं कि उनमें कोई भी व्यक्ति घुसकर नहीं उतर सकता। हीरा इकट्ठा करने वाले पशुओं को मार कर उनका खून से लथपथ मांस इन गहरी पहाड़ों कंधराओं में लटक बैठे हैं। इन पहाड़ों पर हजारों की संख्या में चीमें रहती हैं जो तुरन्त कंधराओं में जाकर उस मांस को लेकर उड़ती हैं। हीरा इकट्ठा करने वाले उन चीमों को देखते रहते हैं और मांस को लेकर वे वहाँ बैठती हैं वहाँ बीड़ कर पहुँच जाते हैं। चीमों को वे उरा कर जमा देते हैं और चीमों नास वही छोड़ उड़ जाती हैं। उन मांस के टुकड़ों में बहुमूल्य हीरे छिपके रहते हैं जो कि होरा इकट्ठा करने वाले प्राप्त कर लेते हैं। कारोमंडल तट पर स्थित क्वलिन बंदरगाह की भी मार्को ने देखा और कामो मिर्च के इस सुन्दर देश की उत्तम बहुत प्रशंसा की है। वहाँ के प्राकृतिक दृश्यों की तो उत्तम प्रशंसा

की ही है। उत्तम पशु पक्षियों का भी बहुत लम्बीय बर्तन लिखा है।
 उत्तमे लिखा है 'इस क्षेत्र में बहुत से विचित्र पशु होते हैं जो अन्य
 किसी क्षेत्र में नहीं पाए जाते। वहाँ काले दौरे होते हैं, जिनके छपीर
 बर घोर किसी रंग का निधान तक नहीं होता। वहाँ बहुत तरह के
 लोते होते हैं। कुछ बर्तन की तरह सफेद होते हैं और कुछ सात होते हैं
 कुछ हरे होते हैं। संसार में इतने सुन्दर पक्षी कहीं नहीं होते। यहाँ
 के जोर अन्य सभी स्थानों के मोरों से बड़े घोर प्रचिक सुन्दर
 होते हैं।

कारोमंडल से आगे बढ़ कर पोसी का जहाजी बेड़ा गुजरात
 पहुँचा। वहाँ के बाइरलों की रीज कर पोसी बहुत प्रभावित हुआ।
 उत्तमे लिखा है कि वे सोप मांस नहीं खाते घराब नहीं पीते पशु
 पक्षियों को नहीं मारते और वहाँ के योनी डेढ़ सौ घीर दो सौ बर्तों
 तक जीवित रहते हैं। वे सोप जीव हिंसा नहीं करते। ऐसे पक्षि
 सोप शुम्बी में कहीं नहीं मिलते। उनका जीवन बहुत सुख और
 पवित्र होता है।

गुजरात की खाड़ी से निकल कर मार्को पोला का बेड़ा
 सोमनाथ होता हुआ घावे बढ़ा। पोसी ने सोमनाथ का मंदिर की
 भूति हुआ का भी उत्सव किया है। घन्त में वह हरनुज के बंदरगाह
 पहुँचा। वहाँ लम्बी यात्रा समाप्त हो गई। परन्तु यह यात्रा बहुत
 कर्हमी बढ़ी। संकड़ी नाविक बर गए। ६०० यात्रियों में केवल २५
 पक्षी सोप बचे और सब जीव में ही मर गए। कारत के तीन बूतों
 में से केवल एक जीवित बचा। नाम्यबध प्रभुपन सुंदरी गहनाधी

सहीसलामत फारस पहुँच गई। परन्तु तब तक उसका होने वाला पति कुछ फारस का बादशाह मर चुका था। उसका पुत्र माजान सिहासन पर बैठ चुका था। उसने उस मंगोल सुंदरी को अपनी मुख्य मलका बना लिया। मयोन सहजारी युवक बादशाह की मलका बनने से बहुत प्रसन्न थी। मार्को पोलो लिखता है कि जब सहजारी को फारस के बादशाह के रनिबात में पहुंचाकर चलने लगे और सहजारी से विदा मांगी तो उसकी धाँपों में चाँचू चाँचू और उसने उन तीनों को बहुत सम्मान के साथ विदा किया।

बेस-बिबेघों में पञ्चीस बर्ष मरकने के बाद तीनों पोलो १२६३ में बेनिस अपने घर पहुंचे। जब वे अपने घर पहुंचे जिस पर उनके सम्बंधियों ने अधिकार जमा लिया था तो किसी ने विश्वास ही नहीं किया कि वे पोलो हैं (पिता चाचा और पुत्र)। बात यह थी कि कठिन यात्रा के कारण उनके चेहरों का रंग तबि जैसा हो गया था। पञ्चीस बर्ष तक तातारी भाषा बोलने के कारण वे अपनी भाषा को भी ठीक तरह से नहीं बोल पाते थे। उनकी बेश चूबा मंयोलों जैसी थी। किसी प्रकार वे अपने घर में घुसे और उन्होंने सार्वकाम को एक बड़ा भोज दिया जिसमें अपने सभी सम्बंधियों और मित्रों को आमंत्रित किया। वे अत्यन्त सुंदर रेशमी बस्त्रों में भोज में आए और जबकि सब मेहमान भजों पर बैठ गए तो मार्को पोलो अम्बर गया और उन तीन मयोल लबाबों को ले आया जो वे उस समय पहिने हुए थे जब वे बेनिस में यात्रा से लौटने पर चुके थे। पोलो ने कंबी से उन भारी लबाबों को तहों और लीबन को काटना

घोरतम क्रिया । सभी मेहुमानों ने धातुबर्ष बरिस होकर देखा कि उन गये जगहों में स डेर क डेर हीरे, माणिक पत्थ, नीलम पुष्पक निकलने लगे । देसते देसते बहुमुख्य हीरों घोर खबाहरातों का एक बड़ा डेर सय गया । सारे शहर में तैली से यह खबर फंस गई तो बरिस क सनी लोग अपने उन प्रसिद्ध घोर साहसी बेध-बातियों का घाबर और स्वागत करने के लिए उनके घर बौड़ गए । उसके बाद तो तीनों पोसो का ऐसा भय स्वागत हुआ जैसा कि बेनिस में किसी का भी नहीं हुआ था ।

सर हीनरीयूज न मार्को पोसो का एक सुंदर जीवन चरित्र लिखा है । उसका भीचे लिखा संघ मार्को पोसो के महत्व का प्रच्छा चित्र प्रीकता है । वह पहला यात्री था जिसने समस्त एशिया को स्वत के मार्ग से पार किया और रास्ता जोड़ निकाला । उस लम्बे रास्ते पर चलते हुए जो एक के बाद बहुत से राज्य मिले उनका घसने बहुत रोचक वर्णन किया है । फारस के रेमिस्तान बखशान का लहलहाता सुंदर पटार खोतान की लूकानी नदियाँ मंगोलिया के हरे नरे मैदान जहाँ मंगोलों के सम्राट निवास करते थे जिसने सारे योरोप और एशिया को भयभीत कर दिया चीन तथा उसके सम्राट की शान-श्रीकृत का उसने जैसा सजीव चित्र खींचा है जैसा कम बातियों में किया होगा । उनमें योरोप भागों को चीन की नव शीकृत उसको नदियों और बड़े नगरों के बारे में पहली बार सही बतकारी थी । यही नहीं उसने सिव्यत जर्मा इयाम सेघस कोचीन चीन तथा जापान सनी को जोड़ निकाला और उनके बारे

में सबसे पहले दुनियाँ को बताया । उसने भारत के बारे में भी लिखा और उसने पूर्वी द्वीपों काया सुमात्रा तथा अफ्रीका के अक्कीनिया क्षेत्र अंडायास्कर और अंडीबार को भी यात्रा की । यही नहीं मार्को पोलो ने योरोप से चीन तक आते समय ताइबेरिया और उत्तरी महासमुद्र के बारे में भी लिखा है । वास्तव में मार्को पोलो एक महान साहसी पर्यटक था । और वह सबैव यात्रियों को प्रेरणा देता रहेगा । पर्यटन के इतिहास में मार्को पोलो का नाम सबैव अमर रहेगा ।



दूसरा परिच्छेद

इब्न बट्टा की यात्रा

एशिया को लोखने वालों में इब्न बट्टा का नाम पड़े घाबर के साथ लिया जाता है। इब्न बट्टा ने मार्को पोलो से भी अधिक होश की यात्रा की। वह मुस्लिम पर्यटकों में सबसे महान और सफल पर्यटक था। इब्न बट्टा अफ्रीका में हैमिपर का रहने वाला था। १३२५ में जब वह बीस वर्ष का पुत्रक था तब वह अपनी आश्चर्यजनक और महत्वपूर्ण यात्रा के लिए निकल पड़ा। उसकी यह महत्वपूर्ण यात्रा बत्तीस वर्षों तक चलती रही।

वास्तव में इब्न बट्टा मट्टा की धार्मिक यात्रा के लिए निकला था। वह टगिपर के स्वतन्त्र भाग से उत्तरी अफ्रीका में धर्मशोधिया तक आया। वहाँ उसने धर्मशोधिया का अत्यन्त प्रतिष्ठ प्रकाश-गृह देखा जो बंदरगाह के समीप समुद्री बहावों को मयंकर बट्टानों के घाते से सुभित रहता था। धर्मशोधिया में उसे एक पवित्र धरमा और विद्वान व्यक्ति मिसा मिसका नाम हुआ था। उसने इब्न बट्टा से पूछा "मैं देख रहा हूँ कि तुम्हें क्या विदेशों की यात्रा का शौक है।"

बघबाद की यात्रा की। इस यात्रा के सम्बन्ध में बडूटा ने लिखते हुए कहा है "हम मदीना से चलकर नरद के प्रदेश में आए जो विशाल औरत मैदान है और हमने उसकी सुगन्धित वायु में साँस ली। फँद जो नरद की राजधानी है मक्का और बघबाद के बीच में है। फँद तक प्रतिष्ठित हासन रऔब की पत्नी जुबेरा ने जहाँ जहाँ पानी मिलता था वहाँ बड़े तालाब बनवा दिए थे इस कारण फँद तक पानी का अधिक कष्ट नहीं हुआ। फँद से आगे बढ़ने पर 'सेतान का बरौ' पार करना पड़ा जो कि बहुत कठिन है। उसके उपरान्त बसीका पक्षि जहाँ के तामाबों की रजा के लिए प्रण्वी इमारतें बनाई गई हैं। इराक में घुसने पर बडूटा ने कबेसिया के पवित्र रज-रबल को भी देखा जहाँ कारस से मुस्लिम सेनाओं का पुख हुआ था और जिसमें जुबा ने इस्लाम धर्म को बिजयी बनाया था। आगे बढ़ने पर नरद नगर पड़ा जहाँ घली का मकबरा था जिसकी सीढ़ियाँ चाँदी की हैं और जिसे प्रत्येक पामिक मुनसमान घूमता है।

नरद से आगे चलकर बडूटा बतरा पहुँचा जहाँ ताड़ वृक्षों की नीतल छाया और निर्मल जल ने बडूटा की बकाबट को दूर कर दिया। बतरा से वह मध्य परशिया (ईरान) में घुसा जहाँ उसने शुशतार का मध्य और मजमौहक बाँध देखा और जस्त प्रतिष्ठित इस्पहान और धीराज नहरों की रंगीनी लीबई और बंजब से अपनी आँखों को सजस किया। धीराज के बारे में इब्न बडूटा ने लिखा है "समस्त पूर्व में बाजारों बागों और नदियों की सुंदरता के लिए धीराज अद्वितीय है" जहाँ जलको इकठावाह की प्रतिष्ठ और

प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर नदी मिली जिसकी उसने बहुत प्रशंसा की है। इसी नदी के सम्बन्ध में प्रसिद्ध कवि हाफिज ने पाया है 'उनसे कहो कि उनका देखन राजमाबार जसी संवर धीर बुद्ध ललित-भारा नहीं बिजला सकता।

इस बूढ़ा ने यही संसार प्रसिद्ध कवि और पायक दोस्त सारी की ललाहि पर अपनी यज्ञाजिसि बड़ाई और उसके स्वर्गों में अपना स्वर मिलाकर उसने शीराज की सुंदरता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। दोस्त सारी ने शीराज की प्रशंसा करते हुए लिखा था 'इस शहर को देख कर परदेशी भी मुग्ध हो जाता है और अपने घर को भुलकर उसका प्रशंसक बन जाता है।'

शीराज से इस बूढ़ा मैसोपोटामिया गया और कुफा का प्राचीन नगर बैठा। एक समय वह नगर बलीफा की राजधानी था। बूढ़ा बगदाद भी गया किन्तु बगदाद का बंभव हुमाकू की लूट के कारण नष्ट हो चुका था। बगदाद हुमाकू के प्रायमण से पनपा नहीं था। वहाँ की बस्जिदें और महाविद्यालय सब नष्ट हो चुके थे। इस बूढ़ा वहाँ कारण के बादशाह यन्-सैयद से मिला और उसके साकर के साथ तशरैफ गया। १३२७ में इस बूढ़ा बगदाद से फिर मूझा सीट बना और वहाँ तीन वर्ष तक ठहरा। वहाँ उसने इस्लाम बर्न-शासक का अध्ययन किया।

१३३० में वह फिर पर्यटन के लिए निकल पड़ा और उसने यमन को भी देख निकाला। उसने इस प्रदेश के सम्बन्ध में लिखा है कि वहाँ वर्षा केवल सर्दियों में ही होती है। बात यह भी कि उसकी

मानसून हवाओं के बारे में कोई ज्ञान नहीं था। प्रमन से बड़टा प्रमन के अम्बरगाह घाया। उसने सिखा है कि प्रमन का अम्बरगाह बारों घोर से पहाड़ों के द्वारा घिरा है केवल एक घोर से ही उस तक पहुँचने का मार्ग है। वहाँ न कोई फसल पैदा होती है, न वहाँ पुल है घोर न वहाँ कोई नदी है। केवल ताजाक या बाँध हैं वहाँ वर्षा का जल इकट्ठा कर लिया जाता है।

प्रमन से समुद्री अहाज द्वारा चल कर बड़टा ने अग्नीका के पुर्वी तट का रास्ता पकड़ा घोर अला नामक स्थान पर ठहरा। उसने सिखा है कि इस नगर में बाजार बड़ा है घोर हल्दी लीय रहते हैं। किन्तु यह बुनिया का सबसे गंवा शहर है। वहाँ से बड़टा मुम्बाला घोर किलवा पहुँचा। किलवा से पंद्रह दिन की यात्रा की दूरी पर लोठामा नामक स्थान था वहाँ लोने की मूल बहुत मिलती थी।

अग्नीका के समुद्री तट को छोड़कर इन्म बड़टा प्रमन पहुँचा घोर फारत की जाड़ी में आकिल हुआ। फारत की जाड़ी में तट पर हरमुज का शहर था जिसे मार्को पोली ने दो बार देखा था। उसका बर्तन करते हुए बड़टा ने सिखा है कि वह एक बड़ा घोर सुन्दर शहर है। हरमुज से इन्म बड़टा अम्बर की घोर पुसा। उसके उपरान्त उसने बेहरिन में मोती इकट्ठा करने का र्थपा देखा। इसके तर्म्ब में बड़टा ने सिखा है कि फारत की जाड़ी में केवल यही एक ऐसा स्थान है जिसे देख कर मन प्रसन्न हो गया। बड़टा फिर स्पस पर उतरा घोर एक बार फिर उसने अरप की मधुभि को बूतरी घोर से पार किया। इन्म बड़टा के साहस घोर पर्यटन की

जापसा की विना प्रशंसा किए नहीं रहा जा सकता क्योंकि वही ऐसा पर्यटक का जिताने एक यात्रा में ही दो बार घन्ब की मन्मथुमि को पार किया ।

इसके उपरान्त वह प्रतलोमिया गया । वहाँ में वह प्रसिद्ध संत जलालुद्दीन कमी के मकबरे का दर्शन करने गया । जिसने नाथने वाले उरबेदों (मेकनेबी) का सम्प्रदाय प्रताया और जो महान इस्लामी रहस्यवादी कवि था । घगते करते वह ऐकसिस पहुँचा जहाँ उसने चासीस बीनार में एक राइरी (बास) पारीबी । प्रायः एक कर वह वसा पहुँचा जहाँ उसने मोममगानी फदीसे को देखा । वसा का मुमताज औरजन-वेग था । उसके पिता ने वसा को पूतानियों से छीन लिया था । प्रागे बढ़ कर उसने जामे सागर को पार किया और काफा पहुँचा । पहाँ से वह सराय तथा कीस्टै-नटिनोपिम गया और उस भाग की यात्रा की जिसका बर्नन मार्को पोमो ने किया था ।

वह न बरनेवागा पर्यटक चलने करते क्षीबा के उपजाऊ और महलहाने कम मोत के पार पहुँचा । उसकी राजपागी उरपत्र के बारे में उजने लिखा है कि 'यह तुम्हें का सबसे पड़ा सबसे महत्वपूर्ण और महान्त सुंदर नगर है' इस नगर का प्रियेजसाँ ने मह बूझ कर दिया । वहाँ से बूटा बुजारा गया और समरकंद की तरफ की । प्रागे बसकर समरकंद तैमूर की राजधानी बना ।

समरकंद से प्रागे बढ़कर उसने फ्रासस नदी को पार किया और सुरासान प्राप्त में घुन कर बारास पहुँचा । पलाय जैता सुंदर नगर

भी बंगेजली ने पर्वत पर चिया था वहाँ से चल कर वह हिरण्य पुरुषा
 जिसे बंगेजली ने पर्वत पर चिया था । किन्तु जब वहाँ पहुँचा तो
 जसका नाम निर्माण ही हुआ था और वह फिर सुंदर नगर बन
 गया था । हिरण्य को बीजे छोड़ कर बहुत समय पुरुषा जहाँ
 इनाम चिया और हाथ-पदरों की सजावियाँ थीं जिनके पुष्पों
 पर सोना मड़ा हुआ था ।

इस बहुत से भारत की सम्पत्ता वहाँ की जमा और सुंदरता
 के बारे में बहुत कुछ सुन गया था । अतएव उसने निश्चय किया
 कि भारत की ओर चला जाये । इसी उद्देश्य से उसने हिन्दुस्तान
 पर्वत को पार किया और पकड़ी होता हुआ तिम नदी के किनारे
 १३३३ में पहुँच गया । तिम नदी के किनारे पहुँच कर उसकी
 अत्यन्त प्रसन्नता हुई और उसने लिखा है कि मैंने वहाँ पहुँच कर
 मुझ को बहुत आश्चर्य के लिए अचकचाए चिया ।

इस वक्ता का भारत में घाने का उद्देश्य यह था कि वह
 मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में नौकरी करे जो कि अपने दरबार
 में विद्वानों का आश्रय करता था । जब वह मुसलमान में था तो उसे
 मुसलमान के दरबार में घाने का निमंत्रण मिला । वह प्रसन्न होकर
 दिल्ली की ओर चल पड़ा । उसने देखा कि भारत में जाति प्रथा है
 सोच जाती ताब्य एकात्म में रहते हैं किसी के सामने नहीं जाती ।
 एक जाति वाला दूसरी जाति वाले के साथ नहीं जाता । उसने देखा
 कि हिन्दु क्षत्रियों अपने बन्धुओं के साथ चल कर सती हो जाती हैं ।
 एक ऐसे दरबार पर वह बेहोश हो गया । उसने देखा कि हिन्दु

पवित्र गंगा में स्नान करना सबसे बड़ा धार्मिक कार्य मानते हैं ।

जब बहुत दिवसी दरबार में पहुँचा तो मुस्तान ने उसका बहुत आदर और सम्मान किया । मुस्तान के बारे में उसने लिखा है "मुस्तान की मुँह करने और घोंट देने का बहुत शौच है" मुस्तान ने उसे काढ़ी बना दिया और मुस्तान बुबुबुइहोन के मन्धरे का संरक्षक नियुक्त कर दिया । मुस्तान की बटुआ पर बहुत प्रशिक्षण हुआ था । जब इम्ल बन्टा बेहनी पहुँचा तो बेहनी बीरान ही गया था । मुस्तान ने धाता दे ही थी कि लोय बेहनी छोड़कर शीस्ताबाद जैसे जावे । इम्ल बन्टा ने मुस्तान की इस विभिन्न धाता का सबीब बर्लन किया है । जमने लिखा है कि धर्मिकास बेहनी बातो दिल्ली छोड़कर चले गए किन्तु कुछ घरी में छिप गए । मुस्तान ने धाता की कि छिपे हुए लोयों की लोय की जावे । मुस्तान के गुलामों की दो ध्यक्ति सड़क पर मिस गए । एक लूता था और दूसरा धंघा था । मुस्तान ने धाता की कि मुझे को वास में सटका कर और धंघे की घसीद कर शीस्ताबाद तक ले धाया जावे । मुस्तान की धाता का पालन किया गया । धंघे का गरीर रास्ते में ही टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया । केवल उसकी एक टांग शीस्ताबाद पहुँची ।

उस कूर मुस्तान के दरबार में धाता घाट बघों तक रहा । धर्मिकास समय मुस्तान की उस पर कृपा बनी रही परन्तु वह सेलानी पर्यटक एक बार मुस्तान का लोय भाजन बन गया । बस यह थी कि उत्कृष्टा बघ यह एक ऐसे दोष से मिलने जया गया जिस पर मुस्तान को सँदेह था । किसी प्रकार बटुआ की जान बची नहीं तो

भी खंभेजर्जा ने ध्वंस कर दिया था वहाँ से चल कर वह हिरात पहुँचा जिसे खंभेजर्जा ने ध्वंस कर दिया था । किन्तु जब बड़टा वहाँ पहुँचा तो उसका जब निर्वाण हो चुका था और वह फिर सुंदर नगर बन गया था । हिरात को पीछे छोड़ कर बड़टा मजहब पहुँचा जहाँ इमाम रिखा और हारन अलगावीर की सभाबियाँ थीं जिनके पुम्बजों पर सीमा मड़ा हुआ था ।

इस बड़टा ने भारत की सम्मता वहाँ की कमा और सुंदरता के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था । अतएव उसने निश्चय किया कि भारत की ओर चलना चाहें । इसी उद्देश्य से उसने हिन्दूकुम्ब पर्वत को पार किया और पबनी होता हुआ सिय नदी के किनारे १३३३ में पहुँच गया । सिय नदी के किनारे पहुँच कर उसको अत्यन्त प्रसन्नता हुई थीर उसने निश्चय है कि मैंने वहाँ पहुँच कर धुवा को सठन यात्रा के लिए वापस किया ।

इस बड़टा का भारत में घाने का उद्देश्य यह था कि वह मुहम्मद बिन मुमाऊ के दरबार में गीऊरी करे जो कि अपने दरबार में विद्वानों का आदर करता था । अब वह मुलतान में था तो उसे मुलतान के दरबार में घाने का निमन्त्रण मिला । वह प्रसन्न होकर बिस्मी की ओर चल पड़ा । उसने देखा कि भारत में जाति प्रथा है, लोग साथे समय अलगमें रहते हैं किसी के सामने नहीं जाते । एक जाति जाता दूसरी जाति जाने के साथ नहीं जाना । उसने देखा कि हिन्दू धियाँ अपने पतिवों के साथ अल कर सती हो जाती हैं । एक ऐसे अवसर पर वह देहोना हो गया । उसने देखा कि हिन्दू

विभिन्न रंगों में स्नान करना एवमि बड़ा धार्मिक कार्य मानते हैं ।

जब बटुटा विस्मी दरबार में पहुँचा तो मुल्तान में उमरुता बहुत धारर और सम्मान किया । मुल्तान के बारे में उमरुता मिला है "मुल्तान को मुह करने और में देने का बहुत धीक है" मुल्तान ने उसे फाडी बना दिया और मुल्तान कुतुबउद्दीन के दरबारे का संरक्षक नियुक्त कर दिया । मुल्तान की बन्दा पर बहुत प्रपिठ हुआ थी । जब इम बन्दा बेहमी पहुँचा तो बेहमी पीरान हो गया था । मुल्तान ने धाता दे ही थी कि लोग बेहमी छोड़कर बीनताबाद चले जावें । इम बटुटा ने मुल्तान की इस विभिन्न धाता का सत्रीय परहन किया है । उमरुता मिला है कि प्रपिठोंस बेहमी बासी रिहनी छोड़कर चले गए किन्तु कुछ धरों में द्विप गए । मुल्तान ने धाता ही कि दिने हुए लीयों की शीर की आवे । मुल्तान के गुलामों की ही व्यक्ति सङ्घ पर मिल गए । एक गुला था और इतरा धंधा था । मुल्तान ने धाता ही कि लूने को बांस में सन्का कर और धधे को धतीठ कर बीनताबाद तक से धाया आवे । मुल्तान की धाता का पालन किया गया । धंधे का गरीर रास्ते में ही टुकड़े-टुकड़े होकर बिघर गया । केवस जाली एक हांग बीनताबाद पहुँची ।

जब कर मुल्तान के दरबार में बन्दा घाठ धधों तक रहा । प्रपिठोंस समय मुल्तान की उस पर हुआ बनी रही मरुतु यह सैलानी पर्यटक एक बार मुल्तान का प्रीय भाजन बन गया । घात यह थी कि उरकष्ठा बना यह एक ऐसे शोध में मिलने आता गया जिस पर मुल्तान की मरिह था । जिमी दरार बटुटा की जान यथी नहीं तो

उसको फाँसी निश्चित थी। परन्तु फकीरी लेकर घोर अपने बग
 परीसों में घाँट कर उसने फिर गुलतान की प्रसन्न कर लिया।

एक दिन गुलतान ने उसे बुलाया और कहा कि मैं तुम्हें एक
 राजसूत बनाकर चीन के सम्राट के दरबार में भेजना चाहता
 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम बिदेसों में भ्रमण करने के शौक
 हो।

बाग यह भी कि चीन के सम्राट ने भारत के सम्राट के लिए
 कुछ उपहार भेजे थे। गुलतान भी चीन के सम्राट को कुछ
 उपहार भेजना चाहता था। भारत के गुलतान ने चीन
 सम्राट के लिए एक सौ उत्तम जालि के घोड़े एक सौ सौ
 मार्तण्डिका और सौ यक्षिया सुती रेशमी और सौ कपड़े के पा
 बड़िया लताबारे सोने के दामादान भारी के सुंदर बर्तन जूरी
 काम की बोझाके और सोनी से बड़े रस्ताने इत्यादि बहुमूल्य उपहार
 लेकर इन्हें चढ़ा कर भिजा दिया। उसके साथ चीन के पंद्रह राजसूत
 थे। साथ में एक हजार सैनिक सवार थे। बेहली से इन्हें बंदू
 केवल ८ मील ही गया होगा कि कुछ बिहारीयों ने आक्रमण कर
 दिया। इन्हें बन्दूक बन्दूक गया। बिहारीयों ने सब कुछ लूट लिया
 और इन्हें बन्दूक किसी प्रकार अपनी जगह बना कर निर्यत भागा
 वहाँ से बचकर बहु जंगल में भाग गया और घुमा प्यासा समय
 बेहली लाया गया। दूसरी बार फिर उपहार लेकर लखी जो
 ग्वालियर पर दीक्षताजब हीते हुए लम्मात की प्याड़ी में पहुँचे
 वहाँ से जहाजों के द्वारा गानाबार पहुँचे जो कि फाँसी निश्च का था

है। इन् बग्टा ने इस प्रदेश की प्राकृतिक सुखरता की बहुत प्रशंसा की है। कालीकट के बन्दरगाह पर उतर कर ब चीन की यात्रा के लिए घनुबूस मौसम की प्रतीक्षा में तीन महीने उहरे रहे। कालीकट के बन्दरगाह में बहुत से बड़ बड़े घोर मजबूत चीनी जहाज ब। जब कालीकट से चीन चलने का समय आया तो तेरह बड़ चीनी जहाजों पर बिस्नी मुजतान के भेजे हुए उपहारों को लाया गया। प्रातःकाल चलने की सारी तैयारियां करती गईं। इन् बग्टा तट पर मस्जिद में प्रार्थना कर रहा था। उस रात्रि को एक भयंकर लूचन आया घोर बन्दरगाह में सड़े सारे जहाज नष्ट हो गए। जिस जहाज पर इन् बग्टा जाने वाला था उसके भस्माहों ने जब यह देखा तो वे भी पाल बड़ाकर जहाज को लेकर भाग गए। इन् बग्टा का घन दास वासिया कर्मचारी मुजतान द्वारा लिए गए उपहार या तो समुद्र में डूब गए अथवा वे भाग गए। केवल इन् बग्टा बचेला रह गया।

इन् बग्टा का फिर यह साहम नहीं हुआ कि वह बेहली लीडे। एक जहाज का रहा था वह उसी पर सवार होकर "आलहीप" पर जो हिन्द महासागर में है उतर गया। इन् बग्टा ने लिखा है कि यह द्वीप जो संख्या में दो हजार है संसार का महान धान्यभंडार है। उन द्वीपों पर एक रानी राज्य करती थी। उसने इन् बग्टा को अपनी राज्य का ब्राजी बना दिया। इन् बग्टा ने बहां के ब्राजी की लड़की से विवाह कर लिया घोर घन्य तीन सुंदर बियों को भी अपनी पत्नी बना लिया। उसने लिखा है

कि इन द्वीपों में सुन्दर किया पाला बहुत आसल है । उत द्वीप की मुख्य पैदावार मारियस कोड़ी और मारियस की बटा से बने रस्ते थे । उतने उन द्वीपों के निवासियों को मस्जिद में ले जाने और कियों को कपड़ा पहिानाने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु वह सफल नहीं हुआ । उत बेघ पी रानी बतका घाबर करती थी किन्तु उसका घबीर उसके दड़ते हुए प्रभाव के कारण उससे बनता था । इत कारण इन्म बट्टा का मन प्रसाप्त हो गया और वह फिर यात्रा के लिए निकल पड़ा । वहां से चल कर बट्टा लका घाया । वहां के राजा ने उसका घाबर किया और घाबरन की छोटी पर जाने का प्रयत्न कर दिया । इन्म बट्टा ने सिखा है कि लका का पहाड़ पृथ्वी के सबसे ऊँचे पहाड़ों में से है । उसकी छोटी बाइलों से बहुत ऊँची थी और पहाड़ पर बहुत रंगों के फूल और भांति भांति के हरे वृक्ष थे । वहां गुलाब इन्वेली के बराबर होता है ।

लका से इन्म बट्टा कारोमडल तट की ओर बढ़ा । बीच में उसका बहाब टकरा कर बूब गया किन्तु बट्टा सकुशल कारोमडल तट पर पहुँच गया । वहां का सुलतान उसकी बेहती वाली पत्नी का सम्बन्धी था । इस कारण सुलतान ने उसका उचित सम्मान किया । वहां उसका बहुत तेज बुखार घाया लेकिन वह बच गया और स्वस्थ होमे पर फिर समुद्र यात्रा के लिए चल पड़ा । परन्तु समुद्री शत्रुओं ने रास्ते में ही उसके जहाज को लूट लिया । उसके पास जो भी हारे जवाहरात थे वे सब शत्रुओं ने लूट लिए । वह फिर कासीकड बीन-हीन अवस्था में सीट घाया । अरबस्त निर्पन

हो जाने पर भी इन्म बट्टा ने साहस नहीं छोड़ा और वह फिर भारतीय गया। यद्यपि वहाँ जलका फिर प्रारंभ और सम्मान हुआ परन्तु वह वहाँ ठहरा नहीं और बंगाल की ओर चल दिया। वह आसाम में सिलहट एक प्रसिद्ध संत जगन्नाथजीन के दर्शन करने गया। संत ने उसको बट्टी के पास बिए जो कि बहुत धर्मकारी थे। वहाँ से जाया सुमाया होना हुआ इन्म बट्टा चीन पहुँचा।

चीन के बारे में इन्म बट्टा लिखता है यह एक विघ्नल देश है। इसमें तरह तरह की मृगयवान वस्तुएँ मिलती हैं। देशम फल प्रनाम सोना और चाँदी वहाँ बहुत मिलता है। इस देश में एक बहुत बड़ी नदी है। इस देश में अत्यन्त पाँच हैं, और पेली से देश लहलहाता है। इस देश में रेशम बहुत होता है क्योंकि वहाँ रेशम का बीड़ा बड़ी सरलता से पाला जाता है। देशम की चीन में इतनी बहुलता है कि वहाँ के निर्यन व्यक्ति और भिखारी भी रेशमी कपड़ा पहिन्ते हैं। चीन में सोने और चाँदी के सिद्धों का चलन नहीं है। वहाँ कापस की मुद्रा चलती है जिस पर मन्त्रा की मुहर होती है। इन्म बट्टा ने चीन की चित्रकला को भी बहुत प्रशंसा की है। जो कोई परदेशी वहाँ जाता है जलका चित्र बनाकर प्रहर की बीमार पर लपा दिया जाता है। यदि कोई परदेशी कोई अघराय करके भागना चाहे तो उसका चित्र सभी प्राणों में नेश दिया जाता है और वह पकड़ लिया जाता है। वह लिखता है कि यात्री के लिए चीन पृथ्वी के सभी देशों में सबसे अधिक सुरक्षित और आनन्ददायक देश है। यदि तुम्हारे पास हीरे जवाहरात नी क्यों न हों अकेले पात्रा करने में वहाँ

कोई भय नहीं है। जिस समय इन्म बूढ़ा चीन में था उस समय प्लान के बघरों में कुछ फिड़ा हुआ था। महाग प्लान मर चुका था जिसको बड़ी धान-धीरुत से बचनाया गया। पृथ्वी में एक पड़ा तहसाला बना कर एक सुंदर पत्तन पर धूल का मुक्त शरीर रखा गया। उसके साथ उसके हजियार और उसके कीमती बख रक दिए गए और उस पर इतनी मिट्टी डाली कि एक बड़ी पहाड़ी बन गई।

इन्म बूढ़ा की अन्तिम यात्रा अफ्रीका में हुई। यह सिन्धुनद पर उत्तरा और उत्तरे सहारा की यात्रा की। सहारा मरुभूमि की यात्रा कर चुकने के बाद उसने पश्चिमी सुदान की यात्रा की। जिस समय बूढ़ा अफ्रीका की यात्रा कर रहा था तब वहाँ 'माली' राज्य बहुत अक्षत अवस्था में था। डिम्बकन्द उसकी राजधानी थी। मरुहो ट्रिपोली और ईजिप्ट (मिस्र) से उसका व्यापार होता था। अपने नील नदी के उद्भव स्थान की और नील नदी के डेल्टा में उस नदी में नावों द्वारा यात्रा की। जब इन्म बूढ़ा 'तम्बावा' में था तो उसको मरुहो सुलतान का संदेश मिला कि वह उसकी राजधानी में आए। यह यात्रा सुनकर वह फिर अक्ष शिवा और मरुहो की राजधानी फेज पहुँच गया। वहाँ वह सुलतान के दरबार में हाजिर हुआ और वह उसकी संरक्षता में रहने लगा। इस प्रकार १३४८ में वह फिर अपने देश पहुँच गया।

इन्म बूढ़ा बत्तीस लम्बे वर्षों तक यात्रा करता रहा और अपने समयय बबहत्तर हजार मील की यात्रा की। इन्म बूढ़ा

ने अपने समय की प्रायः समस्त जानी हुई पृथ्वी की यात्रा की।
 यद्यपि उससे पूर्व मार्को पोलो ने चीन यात्रा की थी
 और उसका विद्वत् वर्णन लिखा था परन्तु अरब तथा पश्चिमी
 दुबान की सब प्रथम उसने ही खोज की और उस यात्रा का अत्यन्त
 सजीव वर्णन लिखा।



तीसरा परिच्छेद

भारत की खोज

वास्को डी गामा

विभिन्न देशों की खोज करने वालों में वास्को-डी-गामा का नाम सर्वप्रथम रहना क्योंकि उसने सबसे पहले भारत तक पहुँचने के लिए समुद्री मार्ग खोज निकाला। बात यह भी उस समय पृथ्वी पर में भारत के मन कारीबरी की वस्तुओं और यहाँ की ऊँची सभ्यता और संस्कृति की पुनः थी। जो भी देश भारत से व्यापार करता था वह बालामास ही जाता था। भारत की बनी हुई सुंदर कारीबरी की वस्तुओं की योरोप की राजधानियों में बहुत माँग थी। मध्य एशिया में तुर्कों का साम्राज्य स्थापित हो जाने से भारत से व्यापार करने का पुराना कारवाँ मार्ग योरोप के देशों के लिए बन्द हो चुका था। इसलिए योरोप के देश भारत के लिए जसमाने हुई निकालने के लिए बहुत इच्छुक थे।

पुर्तगाल का राजकुमार हुनरी जो समुद्री मार्गों की खोज करने वालों का सबसे बड़ा नेता था और जिसने योरोप में समुद्री मार्गों की खोज निकालने की प्रतिष्ठित धारा कर दी उसकी यह सबसे बड़ी प्रतिभावा थी कि भारत पहुँचने के लिए समुद्री मार्ग खोज

निकाला जाये। जो कार्य उसके जीवन काल में नहीं हो सका वह उसके मरने के बाद वास्को डी गामा ने पूरा किया और राजकुमार हीनरी का स्वप्न पूरा हुआ।

वास्को डी गामा का जन्म १४६१ में साइन नामक समुद्र के किनारे एक छोटे से कस्बे में हुआ जहाँ मछुएँ रहते थे। बचपन से ही समुद्र में रहने के कारण गामा साहसी नाविक बन गया। उसको समुद्र यात्रा की बहुत सामंसा भी थी और उसने सुन रक्खा था कि पुर्तगाल के बादशाह सिद्ध भिन्न देशों की खोज करवाने के लिए साहसी नाविकों को भेजा करते हैं। इसलिए उसने पुर्तगाल के बादशाह के यहाँ गीतरी करली। गामा को पुर्तगाल के बादशाह ने भारत के समुद्री मार्ग की खोज निकालने के लिए कसै चुना इसकी भी एक घनोखी कहानी है। पुर्तगाल के बादशाह डाम-मैनुएल के मन में यह भावना उत्पन्न हुई कि भारत के लिए समुद्री मार्ग खोज निकालने के लिए साहसी नाविकों को भेजना चाहिए। वह जानता था कि भारत एक बनी देश है। समुद्री मार्ग खूँड निकालने पर उसके व्यापार से पुर्तगाल मालामाल हो जायेगा। लेकिन वह यह भी जानता था कि अफ्रीका के दक्षिण में अज्ञात-मन्तरीप की खोज कर हिन्द महासागर में पहुँचना बड़ा कठिन और बड़े खर्च का काम है। भारत के लिए समुद्री मार्ग खोज निकालने की उसकी इच्छा इसकी प्रवृत्त ही थी कि उसने इस कठिन यात्रा के लिए जहाज बनाने की धारणा दे दी। जहाज बनाने वालों को यह भी धारणा ही थी कि वे उसी तरह के जहाज बनायें जिन्हें लेकर आरबोसोम्बू-सिबालु ने

आशा अग्तरीय तक की समुद्र से आशा की थी । जब अहाब बन कर
 तैयार हो गए तो पुर्तगाल के राजा को यह विज्ञा हुई कि इन लोग
 का नेता या कप्तान कौन हो । उसको कोई ऐसा साहसी नजर नहीं
 आता था । दिन बीतने लगे । एक दिन राजा अपने दरबारियों के
 साथ समा भवन में बैठा था । राजा ने जब आँख उठा कर देखा
 उसी समय बास्को डी गामा समा भवन में आया । राजा की नजर
 उस पर पड़ी । पचायक उसके मन में यह विचार पठा कि भारत
 की खोज के लिए बास्को डी गामा को भेजना चाहिए । राजा ने
 बास्को डी गामा को बुलाया और उसके भारत यात्रा का नेता और
 कर्माडार नियुक्त कर दिया । बास्को डी गामा ने बुटने के बस भुक्त
 कर राजा की प्रतिबद्धता किया और इस महान पर को स्वीकार
 किया । राजा ने उसके एक रेगमी भंडा दिया जिस पर ईसाई धर्म
 चिह्न अंक बना हुआ था । बास्को डी गामा उस समय छत्तीस वर्ष
 का था उसने विवाह नहीं किया था और उसमें साहस और आत्म
 विश्वास कूट कूट कर भरा था । यात्रा के लिए जहाज तैयार
 किए गए, खाने-पीने की चीजें भारी मात्रा में भरनी गईं । उस
 समय तक सुपोल का भी नाम योरोस नामों को था उसके बारे
 में लिखी गई पुस्तकें—अंसे पोडोस्मी का सुपोल नामों पोली ही
 यात्रा का अर्धम चित्र इत्यादि सभी अस्तुएं रखनी गईं । जहाजों को
 अकों और अकों से लैस किया गया । बास्को डी गामा ने अपने
 साथ अलने के लिए १७ आदिमियों को चुना । सब तैयारियां कर
 चुकने के बाद बास्को डी गामा अपने साथियों के साथ रात्रि में

विर्जापर में भयबल से यात्रा की सफलता के लिए प्रार्थना करता रहा ।

घाट बुलाई १४६७ को प्रातःकाल बास्को डी गामा विर्जापर से अपने साधियों के साथ निकला । सभी के हाथों में बलती हुई मोम बत्तियाँ थीं । बास्को मोग धार्मिक संघों का उद्धारण कर रहे थे । समुद्र समुद्र के किनारे घाटा जहाँ बहाव पड़े थे । समुद्र के किनारे बहुत भीड़ थी । सभी की घांटों में धांसु मरे हुए थे । बहुत से की पुण्य विपन्न बित्तक कर रहे रहे थे । बास्को डी गामा घोर उसके साधियों ने सभी को झुटकर प्रणाम किया और उनसे बिना सिकर अहाब पर चढ़ गया । चारों अहाब तैयार पड़े थे ।-बास्को डी गामा ने अहाब पर पहुँचते ही देवामी लाल धंडे को जिन पर बास्को डी गामा का कहाराया अहाबों के पात्र जो न दिए गए, संगर उठा लिए गए, और अहाब चल पड़े । नीड़ बेर तक बास्को डी गामा के उभार अहाबों को जहाँ सबने सम्भी और विरह तथा महत्त्वपूर्ण यात्रा के लिए निकले थे तब तक देखती रही जब तक कि वे घाट से अलग नहीं हो गए ।

सौसम अण्डा का घोर हवा समुद्रत भी इसलिये कनारी द्वीप तक बढ़ी घामानी से अहाब आ गए । कोई कठिनाई नहीं हुई । वह महार कोहरा या इस कारण चारों अहाब एक दूसरे से दूर होकर भटक गए लेकिन केप बर्डी द्वीप के पास सब मिल गए । केप बर्डी द्वीप को पार कर बास्को डी गामा ने समुद्र तट छोड़ दिया । बास्को डी गामा के पूर्व चारबीनोम्बू डिगम्बू तथा अन्य यात्री समुद्र

तट के पास पास ही चलते थे जिससे कि सुमि घास से प्रोभन न हो जाये । परन्तु वास्को डी गामा ने साहस के साथ बलियु घटनादिक महासागर को पार कर आशा अन्तरीप तट पहुँचने के लिए समुद्र तट छोड़ कर बलिया-पश्चिम का रास्ता पकड़ा । उसको यह मान्य नहीं था कि एक समय वह बलियु अमेरिका के तट से केवल छे ली मील ही दूर रह गया था । समुद्र-तट छोड़ कर घटनादिक महासागर को पार करने के लिए वास्को डी गामा ने बड़े साहस का काम किया । कारण यह था कि अभी तक किसी भी नाविक ने समुद्र-तट को छोड़कर मुझे समुद्र में इतनी लम्बी यात्रा नहीं की थी । कोलम्बस ने भी समुद्र तट को छोड़कर मुझे समुद्र में केवल बी हजार छे ली मील की ही यात्रा की थी । ऐसी दशा में वास्को डी गामा द्वारा चार हजार पाँच ली मील की समुद्र तट से दूर मुझे समुद्र में यात्रा करना बड़े साहस का काम था । दिन पर दिन बीतते गये । फँसा हुआ दूर दूर तक समुद्र का अन्त और आराम के सिद्धांत और कुछ नजर नहीं आता था । छिपाने के दिन लगातार भूमि के दर्शन किए बिना वास्को डी गामा साहस के साथ चलता चला गया । तब कहीं आकर उसके बहानु बलिया पश्चिमी अन्तरीप के तट पर पहुँचे । नवम्बर का महीना था वास्को डी गामा ने उस स्थान का नाम 'सद हेतना' रखा । यहाँ के आदिवासियों से बोझा भगड़ा ही गया जिसमें कुछ चीटें आईं । यहाँ से वास्को डी गामा घामे बड़ा और आशा अन्तरीप की ओर चल पड़ा ।

घामे समुद्र बहुत भयंकर था । तैज तूफान में समुद्र की लहरें

इसके पहारों की शक्ति भयानक बिपत्ताई पड़ती थी। घोर गर्जन के कारण एक दूसरे की आवाज नहीं सुनाई देती थी। दिन बहुत छोटे होते थे इस कारण अमावासर घंघेरे में ही चलना पड़ता था। समुद्र का ऐसा डरावना रूप देखकर मस्माह डर गए। उन्होंने साहस छोड़ दिया और पुर्तगाल लौट आने के लिए और मचाये सगे। बास्को डी गामा ने प्रीय और प्रायेण में कहा कि वह पीछे पीड़ने के बजाय नर बनना प्रस्था समझता है। लोग खुप हो गए। लेकिन अब हालत और भी बिगड़ने लगी। जारों की बर्षा के कारण जनका बुरा हाल ही गया। जहाजों में पानी भरने लगा और नाविक जारों की बर्षा के कारण ठिठुरने लगे। सभी अपने जीवन से निरास हो गए। हर क्षण वे मृत्यु की बाट जोह रहे थे। बिपत्ति के उन क्षणों में सभी ने भगवान से दया की प्रार्थना की। धीरे धीरे समुद्र का तूफान रुका समुद्र शांत हुआ। नाविकों ने फिर प्रभु को याद किया। उन्होंने देखा कि किता बाने ही उस तूफान में ही उन्होंने केप प्राय पुड होप (प्रायः अस्तरीय) को पार कर लिया है।

परन्तु उनके कर्बों का अंत नहीं हुआ क्योंकि समुद्र अब भी जल पराब का धीरे जाड़ा तेज होता जा रहा था। एक बार फिर बास्को डी गामा के सहायकों ने उसे पुर्तगाल वापस लौट आने को कहा। इस बार बास्को डी गामा प्राये से बाहर हो गया। बतलै हा लिस्बन' में मैने अपने हृदय में भगवान को बचन दिया था कि न पीछे नहीं लौंरूंगा। इसलिए अब यदि कोई यह बात फिर बोलता तो मैं उसको समुद्र में लेंक रूंगा। बास्को डी गामा की

तट के पास पास ही चलते थे जिससे कि भूमि धाँक से घोड़न न हो
 जाये। परन्तु वास्को डी गामा ने साहस के साथ दक्षिण अटलांटिक
 महासागर को पार कर आभा अन्तरीप तक पहुँचने के लिए समुद्र
 तट छोड़ कर दक्षिण-पश्चिम का रास्ता पकड़ा। उसको यह मान्य
 नहीं था कि एक समय वह दक्षिण अमेरिका के तट से केबल छे सौ
 मील ही दूर रह गया था। समुद्र-तट छोड़ कर अटलांटिक महासागर
 को पार करने के लिए वास्को डी गामा ने बड़े साहस का काम
 किया। कारण यह था कि अभी तक किसी भी नाविक ने समुद्र-तट
 को छोड़कर खुले समुद्र में इतनी लम्बी यात्रा नहीं की थी। कोलम्बस
 ने भी समुद्र तट को छोड़कर खुले समुद्र में केबल दो हजार छे सौ
 मील की ही यात्रा की थी। ऐसी बला में वास्को डी गामा द्वारा चार
 हजार पाँच सौ मील की समुद्र तट से दूर खुले समुद्र में यात्रा करना
 बड़े साहस का काम था। दिन पर दिन बीतते गये। कँसा हुआ दूर
 दूर तक समुद्र का जल घोर आकाश के सिवाय घोर कुछ नजर नहीं
 आता था। छिपाने दिने लगातार भूमि के बर्तन किए बिना
 वास्को डी गामा साहस के साथ चलता चला गया। तब कहीं आकर
 उसके अज्ञान दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका के तट पर पहुँचे। नवम्बर
 का पहिला था वास्को डी गामा ने उस स्थान का नाम 'सेंट हेलेना'
 रखा। यहाँ के आदिवासियों से थोड़ा भगड़ा हो गया जिसमें कुछ
 छोटे घाईं। यहाँ से वास्को डी गामा आगे बढ़ा और आभा अन्तरीप
 की ओर चल पड़ा।

आगे समुद्र बहुत भयंकर था। तेज तूफान में समुद्र की लहरें

इसे बहाजों की भाँति मयानक बिलसाई पड़ती थी। घोर गर्जन के कारण एक दूसरे की आवाज नहीं सुनाई देती थी। दिन बहुत छोटे होने से इन कारण व्यावहारिक धंधरे में ही चलना पड़ता था। समुद्र का ऐसा डरावना रूप देखकर नस्लाह डर गए। उन्होंने साहस छोड़ दिया और पुनर्गत लौट चलने के लिए घोर मन्त्राने लगे। बास्को डी गामा ने क्रोध और धार्षण्य में कहा कि वह पीछे सौटने के बजाय पर जाना अच्छा समझता हूँ। सोच चुन ही गए। लेकिन अब हासत और भी बिपत्तने लगी। जाइों की बर्षा के कारण उनका बुरा हास हो गया। बहाजों में पानी भरने लगा और नाबिड जाइों की बर्षा के कारण ठिठुरने लगे। सभी अपने जीवन से निरास हो गए। हर जगह से मृत्यु की आह बोल रहे थे। बिपत्ति के उन क्षणों में सभी ने भगवान से बचा की प्रार्थना की। धीरे धीरे समुद्र का तूफान रुका समुद्र शांत हुआ। नाबिडों ने फिर प्रभु को याद किया। उन्होंने देखा कि बिना जाने ही उत तूफान में ही उन्होंने बेप धाब गुड होप (धासा अन्तरीप) को पार कर लिया है।

परन्तु उनके कष्टों का अन्त नहीं हुआ क्योंकि समुद्र अब भी बहुत पराब था और जाड़ा तेज होता जा रहा था। एक बार फिर बास्को डी गामा के सहामकों ने उसे पुनर्गत वापस लौट चलने को कहा। इस बार बास्को डी गामा अपने से बाहर हो गया। उसने कहा 'लिस्यन' में मैंने अपने रूप में भगवान को बचन दिया था कि मैं पीछे नहीं लौटूँगा। इसलिए अब यदि कोई यह बात फिर दोहरावेगा तो मैं उससे समुद्र में पेंक दूँगा। बास्को डी गामा की

इस दृढ़ इच्छा के सामने फिर किसी की बोलने का साहस नहीं हुआ। वे धीरे धीरे मोसल की छाड़ी को पार किया जिसे डिबाज ने पहले ही बूँद निकाला था। मोसल की छाड़ी में वे घूमि पर उतरे, धीरे धीरे मांस की छाफर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि महीनों से वे नमकीन मांस तथा अन्य प्राण पदार्थ खाते खाते उफला गए थे। किंतु करने का समय नहीं था। वे धीरे बढ़ते गए और उन्होंने छस अस्मिन् पत्थर को भी पार कर लिया जिसे डिबाज ने अपनी यात्रा के अंत में बिछू रूप से छोड़ा किया था।

धामे सब कुछ गया था। किसी भी योरोपनिवासी से इस समुद्र में जहाज नहीं बसाया जा और न किसी योरोपियन ने प्रायिका के इस तट को बनी देखा ही था। बड़े दिन पर उन्हें समुद्रतट दिखाई पड़ा जिसका नाम उन्होंने मंडाल रखा। वे धामे बढ़ते गए, धीरे धीरे की धीरे बढ़ने पर वह 'मिगोनी' नदी के मुहाने पर उतरे। यहाँ के बंदू छाति के लोगों से इन विदेशियों की खूब घाब भय की। वे शीघ्र तीर कमाल और भागे रहते थे। वहाँ तबि की बहुतायत देखकर वास्को डी गामा ने उस नदी को तबि की नदी का नाम दिया और घंटे बेश की भले लोगों का शेष रह कर पार किया है। यहाँ वास्को डी गामा ने अपने जहाजों की लकड़ी और मरम्मत की। इस कारण एक महीने टूरना पड़ा। यहाँ धामे पर सभी नाविकों में पहली बार एक मर्यदर शोष फूट पड़ा। जिसे 'स्कर्षी' कहते हैं। धारमियों के हाथ पाँव सूख गए समूझे फूल गए, धीरे धीरे में बेहूष पीड़ा होने लगी। इसका कारण यह था कि उन्होंने महीनों

तक नमक लगा हुआ मांस और अन्य रससे हुए पदार्थ खाए थे । बाद में इस रोग का इलाज सैप्टेन युक्त ने निकाला । वास्को डी-गामा इस रोग की परबाह न करके घागे बढ़ता ही गया और मोर्बेम्बयू पहुँचा । यहाँ उसको चार घरों जहाज जिसे यिनमें सोना चाँदी मोती हीरे माल तथा पत्ता तथा अन्य जबाहुरात और सौंघ काली मिर्च तथा अन्य मसाले मरे हुए थे सिग्नो घरों व्यापारी पूर्व से लाए थे ।

यहाँ वास्को डी गामा ने सुना कि भारत की तरफ प्रक्टर जीन के राज्य में हीरा जबाहुरात और मसाले इतनी अधिक मात्रा में होते हैं कि कोई बड़े तो जिनमें में भर सकता है । लेकिन वहाँ तक केवल ऊँचों द्वारा ही जाया जा सकता है । इस लक्ष्य से वास्को डी गामा के घागेभी तुम्ही से भाव लटे । लेकिन उनके वहाँ तक जाने का प्रयत्न न हो सका । इस कारण से लोग उस रहस्यमय देश में न जा सके ।

मोर्बेम्बयू में पहुँचे तो इन विदेशियों का स्वागत हुआ क्योंकि वहाँ के मुसलमान तथा निवासियों ने उन्हें मुसलमान समझा किन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि वे ईसाई हैं तो उनका विरोध हुआ । वास्को डी गामा ने जब यह देखा तो यह घागे बढ़ा किन्तु हवा अनुकूल नहीं थी इस कारण उसे फिर वापस मोर्बेम्बयू घागा पड़ा । वहाँ मुसलमान के आदिमियों से लड़ाई हुई और वास्को डी गामा ने छोटी तोपों का उपयोग कर उन्हें परास्त कर दिया । कुछ आदिमियों को उठाने बंदी बना लिया और कुछ जहाज उसमें छीन लिए ।

इस दृष्ट इच्छा के सामने फिर किसी को बोलने का साहस नहीं हुआ। वे घाते बड़े घोर मोसम की छाड़ी की वार किया गिरे डियाज ने पहले ही झुंड निकाला था। मोसम की छाड़ी में वे भूमि पर उतरे घोर ताजे मांस को धाकर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि महीनों से वे नमकीन मांस तथा अन्य खाद्य पदार्थ खाते जाते चकता गए थे। किंतु बतने का समय नहीं था। ये घाते बढ़ते गए, घोर उन्होंने उरा अस्तित्व परवर को भी पार कर लिया गिरे डियाज ने अपनी यात्रा के अन्त में अिच्छु रूप से कहा किया था।

घाते सब कुछ गया था। किसी भी यीरोपनिवासी ने इस समुद्र में कहाज नहीं कहाया था और न किसी यीरोपियन ने अष्टीका के इस तट को कभी देखा ही था। बड़े विम पर उन्हें समुद्रतट दिखाई पड़ा जिसका नाम उन्होंने गंठाल रक्खा। वे घाते बढ़ते गए घोर उत्तर की ओर बढ़ने पर वह 'लिग्नोसी' नदी के मुहाने पर उतरे। यहां के बंर जाति के लोगों ने इन विदेशियों की कुछ घाब भगत की। वे लोग तीर कमान और जाल रगते थे। वहां तबि की बहुतायत देखकर वास्को डी गामा ने उस नदी को तबि की नदी का नाम दिया और यंदु देज को अपने लोगों का देश कह कर याद किया है। यहां वास्को डी गामा ने अपने जहाजों की सफाई और मरम्मत की। इस कारण एक महीने ठहरना पड़ा। यहां घाते पर लगी नाविकों में पहली बार एक मरकर रोम फूट पड़ा। जिससे 'स्कर्बी' कहते हैं। आरमियों के हाथ पांव सूज गए मनुके फल गए, घोर बंरों में बेहब पीड़ा होने लगी। इसका कारण यह था कि उन्होंने महीनों

तक तपस्य समा हुआ मांस और अन्य रक्ते हुए पदार्थ जाए थे ।
 याव में इस रोग का इलाज कप्येन पुक ने निकाला । बास्की जी-
 पामा इस रोग की परवाह न करके भागे बढ़ता ही गया और
 मोरैम्बकपू पहुँचा । यहाँ उन्नी घाट घरव जहाज मिले जिनमें सोना
 चाँदी मोती हीरे मान तथा पत्ता तथा अन्य अकारणत और गौण
 कामी मिर्च तथा अन्य मसाले भरे हुए थे जिन्हें घरव व्यापारी
 खूब से जाए थे ।

यहाँ बास्की जी गामा ने सुना कि घरव की तरफ प्रस्थ
 बौल क राज्य में हीरा जवाहरात और मसाले इत्यादि अथिच मात्रा
 में होते हैं कि कोई चाहे तो उभियों में मर सकता है । लेकिन यहाँ
 तक केवल डोंटों द्वारा ही जाया जा सकता है । इस लक्ष से
 बास्की जी गामा के आचमी लुनी से नाच उठे । लेकिन उनके यहाँ
 तक जाने का प्रयत्न न हो सका । इस कारण वे लोच उत रहस्यमय
 देश में न जा सके ।

मोरैम्बकपू में पहले तो इन विदेशियों का स्वागत हुआ क्योंकि
 यहाँ के तुलतान तथा निवासियों ने उन्हें मुसलमान समझा किन्तु
 जब उन्हें मातुन हुआ कि वे ईसाई हैं तो उनका विरोध हुआ ।
 बास्की जी गामा ने जब यह देखा तो वह अपने दड़ा, किन्तु हवा
 प्रमुक्त नहीं की इस कारण उसे फिर बाका मोरैम्बकपू आना पड़ा ।
 यहाँ तुलतान के आचमियों से लड़ाई हुई और बास्की जी गामा ने
 छोटी लीपों का उपयोग कर उन्हें परास्त कर दिया । कुछ आचमियों
 को अपने बंदी बना लिया और कुछ जहाज उताने दीन लिए ।

२१ मार्च को वास्को डी गामा मोम्बासा की घोर बरसात। मोम्बासा में रात्रि को मुसलमनों ने उन पर घातमण कर दिया। अथवा वास्को डी गामा और उसके आदमी सावधान नहीं होते तो सब मारे जाते। वहाँ वास्को डी गामा के आदमियों की ताबा मांस मछली तथा फल आदि को मिला इस कारण 'स्कर्वी' रोग मिट गया और वे प्रसन्न और स्वस्थ हो गए। मोम्बासा से एक दिन की समुद्र यात्रा करके वे भोग मालिखी पहुँचे। वहाँ का राजा एक ईरानी था उसने इन बिबेसियों की अच्छी खातिर की और एक हिन्दू कुशल नाविक भारत तक ले जाने के लिए तैयार कर दिया। वास्को डी-गामा तथा उसके साथी आकर तक यह समझते रहे कि हिन्दू ईसाई होते हैं।

२४ एप्रिल को वास्को डी गामा उस हिन्दू नाविक के बताए मार्ग से कालीकट की घोर घस पड़ा। तेईस दिन तक लगातार उनके बहाव समुद्र में आते रहे। तेईस दिन तक उन्हें कोई भूमि नहीं मिललाई थी। परमायक दूर पर भूमि मिललाई थी और सारे नाविक डेक पर चढ़ कर उसे देखने लगे। नाविकों को ऊँचे पहाड़ों की पंक्ति मिललाई थी। वे भारत के पश्चिमीय घाट के पहाड़ थे। जबकि वे इस दृश्य को देख ही रहे थे कि भीषण वर्षा और अंधड़ शुरू हो गया और वह लूँबर दृश्य पानी के कारण अशुभ हो गया।

अन्त में २१ मई १४९८ को वास्को डी गामा कालीकट के बंदरगाह पर उतरा। करीब ग्यारह महीने के बाद वास्को डी गामा की यात्रा सफल हुई। उसने भारत का समुद्री मार्ग खोज निकाला।

जब यह लोच कालीवट पर उतरे तो वहाँ के रहने वालों ने उनसे पूछा कि तुम किस देश के रहने वाले हो और यहाँ क्यों आए हो ? पुत्रवाणियों ने उत्तर दिया हम ईसाईयो और मसालों की खोज में आए हैं। वहाँ के निवाणियों ने बालको डी मामा से कहा कि तुम अत्यन्त भ्राम्यधामी हो कि तुम उस देश में आए हो वहाँ कि हीरे पत्थे की बहुतायत है और जो बहुत धनी है। बालको डी मामा अपने तेरह साधियों के साथ अपने देश का भंडा कंधे पर रखे हुए राजा के महल की ओर चला। कालीवट की मत्तियों में गए मारी इन विदेशियों को देखने के लिए इकट्ठे ही गए। राजा ने २८ मई १४९८ को सार्वकाल इन विदेशियों से बात करवा स्वीकार किया। राजा ने उन्हें अपने माल की बाजार में बेचने और अपने से भारतीय माल को लेने की आज्ञा दे दी। किन्तु भारतीयों ने पुर्तगाल के बने हुए माल को लेकर बाक भी सिरोंझली कोई भी उस घटिया माल को लेने के लिए तैयार नहीं था। राजा ने कहा कि मेरा देश बहुमूल्य जवाहरतों और मसालों के लिए धनी है। मुझे सोना चाँदी और ऐस्मी कपड़ा चाहिए। बालको डी मामा ने भोज मन्नाला बहाजों में गया और वह अपने देश वापस लौट पड़ा। दो वर्षों के बाद बालको डी मामा अपने देश वापस पहुँचा। इस लम्बी यात्रा में उसका भाई और उसके ती सानो मर गए, लेकिन उसकी यात्रा सफल हुई और उसने भारत का समुद्री मार्ग खोज निकाला। उस समय स्वयं बालको डी मामा को भी यह ध्यान नहीं था कि उसकी खोज इतनी महत्वपूर्ण होगी।

जब बास्को डी गामा अपने बेश पुर्तगाल पहुँचा तो वहाँ का बाबशाह इतना क्रोध हुआ कि उसने अपने एक सामस्त घोर बड़े राजकर्मचारियों को उसको घाबर के साथ बरबार में लाने को भिजा । जब बास्को डी गामा बाबशाह के बरबार में पहुँचा तो रास्ते में उसको देखने के लिए बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई । बाबशाह ने उसकी इस बेश सेवा के लिए उनको डान की उपाधि दी जो उसके बंध वाले भविष्य में अपने नाम के साथ जोड़ सकते थे । उसके बंध बिन्दु के साथ राजा का चिन्ह जोड़ दिया गया । उसको तीन हजार इयूरोस की वार्षिक पेंशन दी गई धारो चलकर उसको घोर अधिक सम्मान दिया गया ।

यह स्वामाधिक ही था कि पुर्तगाल के सातक इस लोभ का साथ उठाने के लिए भारत को फिर दूसरी बार अपने आसानी भिजते । आश्चर्य की बात है कि दूसरी बार बास्को डी गामा यात्रा पर नहीं गया । इसका क्या कारण था इस बारे में किसी को कुछ नहीं मालूम । इतिहास चुप है । दूसरी यात्रा का नेता पैद्रो कंब्रास था । उसके साथ तेरह बड़े घोर मजबूत जहाज थे जो एक सको से सुसज्जित थे और जिन पर कुछाल सैनिक तथा व्यापारी घोर पारसी थे । कुल मिला कर उन जहाजों पर पंद्रह-सौ आसानी थे । उनमें सेप आब-गुड-होप (आसा-अन्तरीप) को पहली बार बार करने वाला प्रसिद्ध आरबोलान्गू विद्याज भी था । पुर्तगाल का बाबशाह इन जहाजों को बिदा करने के लिए स्वयं समुद्र के किनारे तक आया । कंब्रास ने जहाज पर पहुँच कर पुर्तगाल का झंडा उड़ाया और

पश्चिम की ओर चल पड़ा। वह पश्चिम की ओर चलता जाता गया और बसिण्ड अमेरिका जा पहुँचा। प्रमजाले में ही उसने एक नया महाद्वीप का जन्म निकाला। डेबाल के आदमी जो कि बसिण्ड अमेरिका की भूमि पर उतरे थे वह ठाढ़र साए कि वह सयन बनों से भरा हुआ देश है, वहाँ काफी आबादी है। वहाँ क तिबानी तीर कमल का उपयोग करते थे। उन्ही रात्रि का एक भयंकर तूफान उठा और वे लोग नाम कर एक मुरझित बगह पर पहुँच गए। यह जाडीस वा वहाँ डेबाल ने एक व्यव का बिगह स्थापित किया जो तीन ती साल के बाद जब तिबले वहाँ पहुँचा तब भी मौजूद था।

डेबाल को यह तबिक भी प्यान नहीं था कि उसने इतने बड़े महादेश को छोड़ निकाला है। इस कारण वह वहाँ न एक कर 'क्रिप-आक-बुड-होप' (आमा अस्तरीय) की ओर चल पड़ा। बीच में ही भयंकर तूफान आया। इस तूफान में भार जहाज डूब गए और जो आदमी सपुत्र भं डूबे उनमें वृद्ध 'वारपोलीम्पू-डियाय' भी था। जिस आदमी ने सबसे पहले आमा-अस्तरीय की खोज की थी वह वही मरा।

सितम्बर के महौने में डेबाल कातीरुट वहाँवा और कातीरुट के राजा से मिला। राजा के वैभव को देखकर वह डंब रह गया। उसने ऐसी घाल-धीरुट जीवन में कभी नहीं देखी थी। उसने लिखा है—राजा अपने सर पर छोने का मुकुट पहन था। उसके कानों में हीरे लबाहूरत और मोती बठित कृन्त लटक रहे थे। मोती गुपाड़ी के दरबार थे। उसको कलाई से कौहनी तक जो सोने के कड़े थे

जममें अपखित रत्न हीरे वगैरे लाल इत्यादि जड़े थे। वह वीरों में नीचे से ऊपर तक रत्न जड़ित आभूषण पहिने हुआ था। उसके संगठों में एक बहुत बड़ा माल का जो बहुत श्याम रमक रहा था। उसकी रमर में जो छोटे की पेटी थी उसमें इतने बड़े हीरे और अन्य अवाहस्त जड़े थे कि उनकी रमक से कांस चौबिया जाती थी। कंबाल ने ऐसे कीमती हीरे अवाहस्त कभी भी बीजग में नहीं देखे थे।

राजा ने कंबाल को कालीकट में पुर्तगाल के भाल का गौराम स्थापित करने की आज्ञा दे दी। कंबाल ने अपना मोराम स्थापित किया और उस पर पुर्तगाल का झंडा फहराने लगा। लेकिन आरोह जिकी में कुछ झगड़ा हुआ। वहाँ के निवासियों ने मोराम पर हमला कर दिया वहाँ का सामान छुट लिया और कई पुर्तगालियों की मार डाला। बदले में कंबाल ने भी नगर पर मौलों की बर्षा की और वहाँ से बखिल की ओर कोचीन के बंदरगाह चला गया। कोचीन से वह कालीमिर्च अपने जहाजों में भर कर 'तिस्वान' पुर्तगाल की राजधानी को १५११ में लौट आया। उसके बाद बीजग के इतिहास में कंबाल का किसी ने नाम नहीं सुना। कहते हैं कंबाल बीसा धूम्यवान भाल नामा बीसा तब तक पुर्तगाल में कोई नहीं लाया था।

कंबाल के साथ कालीकट में जो दुर्घटना हुई उसकी खबर पाकर पुर्तगाल से एक बहुत बड़ा जहाजी बेड़ा वास्को डी गामा के निरुत्थ में भेजा गया। पंद्रह बड़े जहाजों को लेकर १५१२ में

बास्को डी गामा भारत की ओर चल पड़ा। जब बास्को डी गामा मालाबार तट के समीप पहुँचा तो जैसे एक बड़ा जहाज भिमा जिसमें बहुत से मुसलमान मज्जा लीब यात्रा करके लौट रहे थे। बास्को डी गामा को यह मान्य हुआ कि उन जहाज पर अपार धन है। एक डाकू की तरह उसने उन यात्रियों से उनका धन माँगा। मना करने पर पुर्तगालियों ने उस जहाज पर पोतियों की बौछार की और जहाज में आग भगा दी गई। जहाज में जो भी थी पुष्ट्य वे सभी लूट कर भस्म हो गई। बास्को डी गामा का यह नीब कार्य अत्यन्त निम्ननीय था।

बास्को डी गामा ने कालीकट पर आक्रमण किया वहाँ के मुसलमानों की निर्बधता पूर्वक हत्या कर दी। कालीकट पर गोसा बारी करके बास्को डी गामा बसिस्त में मालाबार की ओर बढ़ा और वहाँ भी बबरवस्ती गरीब किसानों से उनकी कालीनीब तथा अन्य मसाले छीन कर अपने जहाजों पर लाद कर पुर्तगाल लौट आया। बास्को डी गामा का यह कार्य किसी सुटेरे से कम न था। आज भी पोसा में पुर्तगाली जिस बर्बरता का प्रदर्शन करते हैं और वहाँ के निवासियों पर जैसा अत्याचार करते हैं उससे यह सिद्ध होता है कि पुर्तगाल वासियों की वह सुटेरों की प्रवृत्ति समाप्त नहीं हुई है।

जब पुर्तगाल के बादशाह ने अष्ट्रीका और भारत में अपना राज्य स्थापित करने का प्रयत्न करना आरम्भ किया। एक ठ बाद दूसरे कर्मांडरों की अधीनता में जहाजी बड़े बड़े जाने लगे। १५३३ ईसवी-अग्निबा एक बहुत सक्तिवाली और बड़े जहाजी

वेड़े को लेकर भारत की ओर चला। उसको भारत का पहला वायसराय नियुक्त किया गया। जब वह कासीकट के समीप पहुंचा तो वहाँ के शासक सामुरी ने अरब के मुसलमानों का एक जहाजी बेड़ा तैयार किया। पुर्तगाल के जहाजों पर हमला करने की बेतमारी कर ही रहे थे कि एक व्यक्ति ने अस्मिडा को होनेवाले आक्रमण की खबर दे दी। अस्मिडा ने अपने लड़के लौरेंसो को उस जहाजी बेड़े को नष्ट करने के लिए भेजा। कुछ हुआ फासीकट का जहाजी बेड़ा नष्ट हो गया। किन्तु पुर्तगालियों की इस विजय से उनकी कठिनाइयाँ समाप्त नहीं हुईं। मिस्र के एक जहाजी बेड़े ने १५०० में लारेंसो के बेड़े पर आक्रमण किया। लौरेंसो मारा गया और यह मिस्री बेड़ा 'इसू' के बंदरगाह में जम गया। १५०१ में अस्मिडा ने उस मिस्री जहाजी बेड़े पर हमला किया। जबकि कुछ हुआ और पुर्तगालियों की विजय हुई।

अस्मिडा के वायसराय-काल में हिन्दमहासागर में पुर्तगालियों की घाट बँठ गई। अस्मिडा के बौरे पुत्र लौरेंसो ने लंका को भी खोज निकाला। उसने लंका में एक स्वयं स्थापित किया और पुर्तगाल की ओर से लंका पर अधिकार कर लिया। वहाँ से उसने एक हाथी पुर्तगाल को भेजा जो योरोप में पहला हाथी था। जब लंका तक पुर्तगाल का जहाज पहुँचाने लगा। लौरेंसो २१ वर्ष की उमर में मारा गया। वह साहसी और बীর था। यदि वह जीवित रहता तो पुर्तगाल का साम्राज्य एशिया में और दूर दूर तक फैल जाता। जब उसके मरने का समाचार उसके बाप को सुनाया गया

तो अपने छोटे लिये पुत्र की मृत्यु का समाचार उसने दानि धीर
 र्भय से सुना । उसने कहा शोक मनाना धीरतों का काम है बदला
 लेना बहानुओं का काम है । उसने अपने पुत्र की मृत्यु का बदला मुझ
 करके लिया ।

अस्मिन्ना का बापसराय काम समाप्त हुआ धीर अस्तुर्क
 भारत का बापसराय बना कर भेजा गया । अस्तुर्क साहसी धीर
 और सिन्धु दूरदर्शी धीर महत्वाकांक्षी था । उसने यहाँ ही कालीकट
 पर शाक्यगण किया धीर उसको जना घर राज कर दिया । उसके
 बाद उसने गोमा को जिय लिया धीर उसे भारत में पोर्तुगीज
 साम्राज्य को राजपाली बनाया । थोड़े दिनों में ही गोमा बंमबघाली
 नगर बन गया ।

धन अस्तुर्क की नगर भारत के पूब की धीर थी । उसने
 अपने एक सहायक 'सिन्धुदा' को पूब में खोद करने के लिए भेजा ।
 उसने बंगाल को चाड़ी की धीर पूबोय द्वीप समूह के द्वीपों की यात्रा
 की । वहाँ से लौटकर उसने अस्तुर्क को सुनाया कि उन द्वीपों में
 इतने मछलें उत्पन्न होते हैं जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता
 धीर वहाँ की धन-खोज का कोई पार नहीं है ।

अस्तुर्क ने उसीस सहायक लीवार किए, धीर बहु सुनाया
 थाया । उसके जहाजों में खीरह सी पुने हुए धीरिण के । उसने
 बलाका पर शाक्यगण किया । वहाँ के लीप लड़े लेकिन पुर्नपालियों
 के धीरे धीर बाल्य क सामने से मुझ न कर सके । पुर्तगाल की
 विजय हुई । सहर के हर एक की धीर पुस्त को निर्बयतापूर्वक

मार जाता गया और वहाँ से बहुत सा सोना चाँदी और बजाहुराई भर कर अस्तूरुर्क नौटा। वहाँ जतने एक जिना और निर्बाधर कुछ पुर्तगाली सैनिकों को बेघर-रैघ में बना कर छोड़ दिया। वह सबला पूरा का पूरा तो पुर्तगाल नहीं पहुँच पाया क्योंकि लीटते समय जुनावा के समीप एक तेज झड़ और तुकल प्रमा बिलते हुए आवाज हुए गए। परन्तु फिर भी बहुत सा वन पुर्तगाल पहुँचा।

मसाला पर विचार प्राप्त कर लेने से पुर्तगाल का पूर्व में प्रभाव बहुत बढ़ गया। बात यह भी कि वह हिन्द महासागर का द्वार था जिससे होकर चीन व्यापार पूर्वी द्वीपों का मसाला तथा फिलीपाइन्स का व्यापार होता था। एशिया में वह सबसे बड़ा व्यापार का केंद्र था। अब अस्तूरुर्क का नाम सारे पूर्व में मसाला ही था। लेकिन अस्तूरुर्क केवल मसाला से संतुष्ट होने वाला नहीं था। मसालों को उत्पन्न करने वाले द्वीपों को वह जीतना चाहता था। मसाला के सेनानायक को १५१२ में उसने बताया कि वह मसाले के द्वीपों को खोज निकाले और उन पर अधिकार करे। अब उसके सेनानायक प्रंसिसको तेरानो ने जाया की आज्ञा की तो वह आदर्श में पहुँच गया। उसने अपने जीवन में इतना अधिक मसाला उत्पन्न करने वाला देश नहीं देखा था। उसने अपने मित्र मंगलान की लिखा "मैंने एक और गया महादेश खोज निकाला है जो कि बास्को डी गामा द्वारा खोज लिए हुए देशों से भी बड़ा और बनी है।" इन मसाले के द्वीपों के बारे में पुर्तगाल में बड़ा कौतूहल फैल गया। कौलम्बस द्वारा गई पृथ्वी अमेरिका की खोज से जैसा

द्वीपसूहण नहीं उत्पन्न हुआ बसा इन मसाले के द्वीपों की खोज से उत्पन्न हुआ ।

पुर्तगाल वालों की इन खोजों का परिणाम यह हुआ कि व्यापार का मार्ग ही बदल गया । अभी तक पूर्व से मसाले इत्र तथा अन्य वस्तुओं का व्यापार कारस की खाड़ी और लाल सागर के द्वारा होता था और यह व्यापार मुसलमानों के हाथ में था । पुर्तगाल वालों की इन खोजों के कारण हिन्द महासागर से होते हुए ब्रह्मस 'आशान्त-मन्तरीय' को पार कर योरोप पहुँचने लगे । उस समय पुर्तगाल का बीजब सूर्य बहुत प्रकाशमान था और पुर्तगाल योरोप का सबसे बनी देश बन गया था ।



चौथा परिच्छेद

नई दुनियां की खोज

क्रिस्टोफर कोलम्बस

क्रिस्टोफर कोलम्बस के द्वारा नई दुनियां (अमेरिका महाद्वीप) की खोज के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। इस खोज के कारण दुनियां का नक्सा ही बदल गया और उसके साथ कोलम्बस का नाम भी अमर हो गया।

कोलम्बस का जन्म १४५१ में इटली देश के जिनोवा नगर में हुआ था। उसका परिवार बुनकर था। एक निर्धन परिवार में जन्म लेने के कारण कोलम्बस को बचपन में कोई सिला नहीं मिली। वह जब तक अपने देश के बाहर नहीं गया तब तक वह लगभग अक्षित था।

यद्यपि कोलम्बस अपने पिता के साथ कपड़ा बुनने का काम करता था लेकिन उसका मन उस काम में नहीं लगता था। वह समुद्र यात्रा के स्वप्न देखता था। जिनोवा के बन्दरगाह में सभी देशों से धान और आनेवाले जहाजों को देखकर उसके मन में भी समुद्र यात्रा की इच्छा जाग उठती थी।

१४७४ में कोलम्बस सब औरतु बर्ष का था तब वह एक

बहाल पर पहली बार समुद्र-यात्रा के लिए 'त्रिपोल' यथा जो ब्रिटीश के अधिकार में था। १४७६ में वह व्यापारिक जहाजों के साथ लिस्बन इङ्ग्लैंड और स्काटलैंड की यात्रा पर गया। कोसम्बस की इच्छा यह थी कि वह भी कोई नम्बी यात्रा करे और किसी नये देश को खोज निकाले। उस समय बुनिया में पुर्तगाल लोगों के लिए प्रसिद्ध था प्रत्येक कोसम्बस १४७७ में लिस्बन धा गया। जहाँ उसने एक मृत समुद्री कप्तान की पुत्री से विवाह कर लिया जिसने ग्रिस हूगरी की सेवा की थी और जो पोर्टो-सैंटो का कप्तान नियुक्त किया गया था। उसने यहाँ लिब्ना पढ़ना सीखा और विज्ञान की जानकारी प्राप्त की। जब बारबोसाम्यू-डियाज़ ने अपनी घासा-प्रस्तरीय की यात्रा का बर्तन पुर्तगाल के बावन्धाह को सुनाया था उस समय वह यहाँ मौजूद था।

कोसम्बस ने उस समय का खोज का जितना भी साहित्य था सब पढ़ डाला। उसने सभी प्रसिद्ध नाविकों समुद्र यात्रा करने वालों और खोज करने वालों से बात की। लिस्बन में उसने जो भी चार्ट और नक्शे थे उन सभी का गहरा अध्ययन किया और उन सभी नौकारों की पूरी जानकारी प्राप्त करली जो कि समुद्र यात्रा में काम लाते हैं।

बहुत दिनों से उसके मन में एक योजना धूम रही थी। यह सोचता था कि पश्चिम की ओर जाकर भारत पहुँचा जा सकता है। जैसे जैसे वह इस बारे में अधिक सोचता और अध्ययन करता रहा जैसे उसका यह विश्वास मजबूत होता गया कि पश्चिम की ओर

जाकर भारत पहुँचा जा सकता है। १४वें में कोलम्बस ने पुर्तगाल के बादशाह से अपना बिचार प्रकट किया और कहा कि मैं पश्चिम की ओर यात्रा करके भारत पहुँचना चाहता हूँ। उसने बादशाह को अपने बिचार के पक्ष में कुछ सबूत भी दिए। उसने बताया कि पश्चिमीय हवाओं के द्वारा पश्चिम से आकर साए हुए बहुत से सफ़ी के टुकड़े मिले हैं जिन पर बहुत सुंदर गहनासी और नुबवाई है। इससे यह सिद्ध होता है कि पश्चिम में कोई ऐसा देश जरूर है जहाँ की कारीगरी बहुत अच्छी है। उसने यह भी बताया कि पुर्तगाल के समुद्री किनारे पर दो मनुष्यों के सब बहते हुए पश्चिम से आए, जिनका चेहरा चौड़ा था और जो योरोपियन लोगों से बहुत भिन्न थे। घायरसैड के समुद्री तट पर परम देशों में पाए जाने वाले पौधों के बीज मिले हैं। इन बातों से यह सिद्ध होता है कि पश्चिम में कोई देश अवश्य है। बादशाह को कोलम्बस की बातें सुनकर उसकी योजना पर बरोता हो गया। लेकिन उसके बरवारियों ने राजा को यह सलाह दी कि वह कोलम्बस से उसकी पूरी योजना से नै और उससे कहें कि थोड़े समय बाद उसको उत्तर दिया जावेगा। इसी बीच में जबकि कोलम्बस बादशाह के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था बादशाह के बरवारियों ने गुप्त रूप से पश्चिम की ओर आह्वान भिजे। जब वे आह्वान पश्चिम की ओर बोड़ी दूर गए, उन्हें एक भयंकर लूटान का सामना करना पड़ा और वे लिस्बन लौट आए। लिस्बन लौटकर उन्होंने कोलम्बस की योजना की बहुत मज़ाक उड़ाई। जब कोलम्बस को यह खबर मिली तो वह बहुत

नारायण हृषीकेश धीर उसने निश्चय कर लिया कि वह पुरतपास से चापे
 कोई मतलब नहीं रखेगा। उसने पनगाम छोड़ दिया और वह
 सीमा स्पेन की रानी इसेबेला के पास गया। रानी इसेबेला ने उसकी
 सारी योजना सुनी और जग योजना पर राय देने के लिए उसने एक
 शाही कमिशन बिठाया। कमिशन ने उस योजना के विरुद्ध राय दी।
 लेकिन फिर भी रानी 'इसेबेला' ने कोलम्बस को ना नहीं कहा।
 उसने कोलम्बस को यह कह कर रखने के लिए कहा कि इस समय
 स्पेन पुर लोगों से युद्ध करने में लगी है। इसलिए स्पेन इस
 समय ऐसी योजनाओं का हाथ में नहीं ले सकता। कोलम्बस ने फिर
 एक बार प्रयत्न किया कि पुरतपास का बारशाह उसकी योजना से
 पक्ष ले लेकिन वह सफल नहीं हुआ। उसने यह भी कोशिश की कि
 इङ्ग्लैंड का बारशाह हैनरी सातवां उसकी मदद करे लेकिन वहाँ भी
 वह असफल हुआ। उसी समय जनवरी १४९२ में मरों की हार हो
 गई और स्पेन विजयी हुआ। पुर युद्ध समाप्त होते ही रानी इसेबेला
 ने कोलम्बस को बुलवा भेजा। १४९१ में कोलम्बस रानी इसेबेला
 तथा उसके पति राजा फर्डिनेंड के सामने उपस्थित हुआ। एक बार
 फिर उसकी सभी योजना को सुन कर उसके दरबारियों ने उसकी
 योजना ख़ाई और उसको दरबार से निराश लौटना पड़ा। कोलम्बस
 को अपनी इन असफलता से बहुत शोक हुआ। उसके मित्रों को भी
 बहुत दुःख तथा क्योंकि उनका विश्वास था कि कोलम्बस की योजना
 ठीक है। उन्होंने एक बार फिर रानी इसेबेला को कोलम्बस को एक
 अवसर देने के लिए कहा। पहले तो रानी पाड़ा किचकिचाई क्योंकि

कठिन समय था। एक घोर ली जसे यपनी यात्रा की सफल बनाने की पुन भी घोर दूसरी घोर उसके नाबिक विरोधी हो रहे थे। किसी प्रकार जतने उन्हें समझकर घोर बमका कर घाने बड़ने को राखी कर लिया। जैसे जैसे बिन व्यतीत होते गए धाम्ना भूमिल होती गई किन्तु ६ अक्टूबर १४६२ को पुन घाणा बंधी। बात यह थी कि रात्रि पर कोसम्बस ने हवा में बिड़ियों को जड़ते हुए गुना। ११ अक्टूबर १४६२ के सार्यकाल डूर पर रीझनी बिछलाई थी। अपने बहाब 'संटा-मैरिया' के ऊँचे डेक से कोसम्बस को रीझनी साक बिछलाई वे रही थी। १२ अगस्त १४६२ के प्रातःकाल कोसम्बस बहामा के 'ग्वाला-हनी' द्वीप पर उतरा। हुषियारों से जैसे जब कोसम्बस घोर उसके साथी बहाबों से उतर कर भूमि पर आए ली किनारे पर कीतूहलबस जो बहुत से गल नर-नारी उन्हें देखने के लिए इकट्ठे हो गए वे भाप गए। कोसम्बस ने स्पेन का घाही भंडा कहुराया घोर एक बड़ा क्वास स्थापित किया। उसके उपरान्त उस महान नाबिक ने मुठने के बग बँठकर प्रमु को घम्बबाब दिया कि जतने उस सम्बी जोबिम भरी यात्रा की सफल बनाया। जोब के इतिहास में यह पहला अखतर था कि तैतीत दिन लगातार बिना भूमि देखे किसी ने समुद्र की यात्रा की हो। जतने उस द्वीप का नाम सैन-सलबेडर रखया घोर स्पेन के लिए उस पर अधिकार स्थापित कर लिया। इत प्रकार यह महान साहसिक यात्रा समाप्त हुई। किन्तु उसके परिलाम जतसे भी अधिक महान थे।

कोसम्बस अभी तक यही समझ रहा था कि जतने भारत की

बौद्ध निकालता। पूर्व के लिए और मार्को पोलो की यात्रा में बसित चीन (चीन) के लिए यह नया मार्ग है। उसको यह सम्पना भी नहीं थी कि उसने उससे भी अधिक महत्वपूर्ण काम किया है। उसने एक नई दुनियाँ को ही खोज निकाला है। उसने तीन हजार मील बिना रुमि को बैसे लगातार समुद्र में यात्रा की थी। समुद्री खोज के इतिहास में यह प्रभुत्वपूर्ण घटना थी।

अपभ्रित द्वीप निवासियों से उसने बड़े दिलों में ही निराला करती। उसने लिखा "मेरा विश्वास है कि उन्हें आसानी से ईसाई बनाया जा सकता है। यदि प्रभु की इच्छा हुई तो अब मैं यहाँ से बापल स्पेन आऊँगा तो इनमें से ६ आदिवासियों को साथ लेता आऊँगा जिससे कि वे हमारी भाषा बोलना सीख सकें।" उसने यह भी लिखा है कि वे अश्वे वास साबित होंगे।

अब कोलम्बस ने उन द्वीप निवासियों की सहायता से एक द्वीप से बड़े द्वीप की यात्रा करनी आरम्भ की। उसको आशा थी कि उसको सीमा मिलेगा उसे चीन (चीन) का बंदर देखने को मिलेगा। वह राती इसेबेला तथा राजा फेरिनांड का बच महान् कार्य के लिए भागा था। इन द्वीपों का प्राकृतिक सौंदर्य और लहलहाता प्रवेश कोलम्बस के लिए बहुत ही सुखदायक थे। कोलम्बस ने इन द्वीपों के बारे में लिखा है "घोड़ी चिड़ियों का समुद्र संघीत देता सुनकारी है कि ननुष्य का वहाँ से कभी जाने का मन ही नहीं होता। यहाँ तोते इतने अधिक हैं कि अब वे भूँड में उड़ते हैं तो नुर्व को डक डेते हैं। बगुवा का द्वीप तो मानो पृथ्वी पर स्वर्ग है।" यह

सब होते हुए भी कोसम्बस एक द्वीप से दूसरे द्वीप को जाते हुए यह नहीं भूल सका कि वह वहाँ सोने पृथ्वी के मन्थनों और मार्को पोलो द्वारा बखित बंभसामी देश कथे (चीन) की खोज में आया है । कोसम्बस का एक साथी मार्टिन विग्जान बिना ऐडमिरल को बतलाए गुप्त रूप से एक जहाज को लेकर सोने की खोज में जाने किबर चला गया । बुर्माग से बड़े दिन एक और बड़ी दुर्घटना हो गई । हिंदी द्वीप की बहानों से टकरा कर कोसम्बस का जहाज संटामेरिया टूट गया । अब कैबल चार सी टन का छोटा सा 'नीना' जहाज रह गया । लेकिन उस छोटे से जहाज में बुनने लोप नहीं जा सकते थे । कोसम्बस ने उसी द्वीप पर एक छोटा सा क़िला बनाया क्योंकि उस द्वीप का राजा उसका मित्र बन गया था और उसने कुछ लोपों को उस क़िले में ही छोड़ दिया ।

अब कोसम्बस ने स्पेन लौटने की तैयारी शुरू की और जनवरी १४९३ में यह स्पेन की ओर चल पड़ा । उस समय तक पिटा जहाज जिस मार्टिन विग्जान सोने की खोज में लेकर चला गया था लौट आया और दोनों जहाज बैंग की ओर चल पड़े । कुछ सप्ताह की यात्रा बुदासपूर्वक हुई परन्तु उसके बाद हवा तेज हो गई । एक भयंकर तूफान उठा समुद्र भयानक हो गया समुद्र की लहरें उन छोटे जहाजों से भी अधिक ऊँची उठने लगीं । जहाज लवड़ी के हस्के लरते की तरह लहरों द्वारा उछाले जाने लगे । पर्याप्त 'पिटा' जहाज गायब हो गया । पिटा अपने नाविकों सहित समुद्र के पट्टे जल में डूब गया । हवा और भी तेज हो गई तथा समुद्र और

भी अपिष्ट भयानक ही उठा। कासीस टन का छोटा सा बहुरंग मोना बट्टस पतले में था। कोसम्बस और उसके साथियों को जीवन की कोई भी आशा नहीं रही। जहाँ में जाने पौन का सामान भी समयम समाप्त हो चुका था। मृत्यु सामने खड़ी थी। कोसम्बस को इस बात का कुछ पता कि यदि वह बूब गया तो उसकी नई पोज की छपर कभी स्पेन नहीं पहुँच सकेगी। उसने एक मोमजामी कागज लिपिवा और उस पर कितनी प्रकार उलझते हुए जहाँ में अपनी खोज का सारा हान मिश्रण मोम के कपड़े में सपेट कर एक छोटी मोछे के डिब्बे में रखकर उसको मोम से बंद कर समुद्र में फेंक दिया। उसने सोचा कि यदि मैं बूब भी जाऊँ तो जिस किसी को यह डिब्बा मिलेगा वह मेरी खोज का समाचार स्पेन तक पहुँचा देगा। उसके बाद पहाड़ के समान उठती हुई सहारों को देखते हुए मनु की प्रार्थना करते हुए वह विनाश की प्रतीक्षा करने लगा।

धीरे धीरे तूफान रुक गया और १८ फरवरी को कोसम्बस का जहाँ मजबूत पहुँचा। कुछ दिन रुक कर वहाँ अपने धाराम किया और जाने पीने की वस्तुएँ लीं और प्राप्त बड़ गए। कोसम्बस को इस बात की उतावली थी कि वह तीव्र स्पष्ट पहुँचकर इस मुकदमे समाचार को रानी को सुनाए। लेकिन ८ मास की हुआ फिर इतनी तेज हो गई कि उसने भयंकर प्रबुद्ध का रूप धारण कर लिया और एक बार फिर नाबिछोड़ के सामने मृत्यु नाबने लगी। फिर भी कोसम्बस ने साहस नहीं छोड़ा और किसी प्रकार बह बढ़ता ही गया। अंत में उसका जहाँ टूट नहीं ब मुहाने में पहुँच गया।

कोलम्बस के लौटने की खबर बड़ी तेजी से फैल गई। उत्तेजित भीड़ समुद्र के किनारे उस छोटे से जहाज को देखने के लिए जमड़ पड़ी जिसमें भयंकर घटनादिक महत्समुद्र की धार कर लिया था। बारबोलम्बू-डियाज भीना जहाज पर आया और उस सत्ताधी के दोनों प्रसिद्ध महान लौड़ी एक दूसरे से मिले। स्पेन में कोलम्बस का प्रपुर्ब स्वागत हुआ। जब वह समुद्र तट से रानी के महल की ओर चला तो ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे किसी विजयी राष्ट्रीय वीर पुरुष का कुलुस निकल रहा हो। सारे रास्ते में दोनों ओर उत्तेजित भीड़ उसका स्वागत करने के लिए एकत्रित हो गई थी और वे हर्ष से चिन्ता रहे थे। जब रविवार को कोलम्बस सीबिली की सड़क से गुजरा तो उसके आगे आगे एक बड़ा अनुस चल रहा था जसमें आगे ६ रेड इंडियन चल रहे थे जसके बाद नई दुनिया से भाई हुई चिड़ियों और रंगीन तोतों इत्यादि को लेकर आबमी चल रहे थे। कोलम्बस स्वयं छोड़े पर सवार होकर स्पेन के सैनिक घफतरी के साथ चल रहा था। उसको देखने के लिए चिड़ियों और मकानों की घातों पर लोग जमा थे। वहाँ से वह 'बारसीलोना' गया जहाँ रानी और राजा ने उसका स्वागत किया। उस समय तक सभी का यही विचार था कि कोलम्बस ने एशिया के तट के समीप द्वीपों की खोज की है और वे महान् ज्ञान के देस से अधिक दूर नहीं हैं। यही धारण है कि इन द्वीपों का नाम वेस्ट इंडीज रक्ता गया जो प्राय तक भी प्रचलित है। यह प्रसन्न धारणा उस समय केवल स्पेन वालों की ही नहीं थी बरन् समस्त संसार की भी वही धारणा थी।

३ महीने बाद जब कोलम्बस दूसरी बार यात्रा के लिए चला तो स्थिति ही दूसरी थी। गया जहाजी बेड़ा सितम्बर १४९३ तक बनकर तैयार हो गया। तीन बहुत बड़े जहाज जिनमें से हर एक चार बी टन का था बनाए गए और औरत छोटे जहाज तैयार किए गए। उन जहाजों पर पंद्रह हजार मालिक थे। इस बार यात्रा में जाने वालीं की कोई कमी नहीं थी। स्पेन के संभ्रांत कुलों के युवकों ने बखिबम की यात्रा के लिए अपनी सेवाएँ दीं। कोलम्बस इस बार अपने भाई ब्रेन्स को और पोप द्वारा चुने हुए एक पादरी को साथ ले गया। कोलम्बस ने नारंगी और नींबू के बीज भी साथ में ले लिए क्योंकि वह उनको नये द्वीपों में बोना चाहता था। इनके प्रतिरिक्त छोड़े हुए बेल माप भेड़ बकरे तथा फल और सन्धिपत्नी भी साथ में ले ली गईं।

इस बार बड़ी प्रसन्नता और भावना के साथ यह जहाजी बेड़ा यात्रा के लिए चल पड़ा। कोलम्बस ने दूरी और तीव्र का ऐसा ठीक हिसाब लगाया कि वह ३ नवम्बर को फिर उन द्वीपों के किनारे पहुँच गया। वह एक दूसरा ही द्वीप था और क्योंकि वह रविवार था उसने उस द्वीप का नाम डोमीनिका रखा। वहाँ से वह द्वितीय द्वीप गया जहाँ कि वह अपने साधियों को छोड़ गया था। लेकिन द्वितीय में उन छोड़े हुए स्पेनवासियों का कोई बिह्व नहीं था। वहाँ के ग्रामिवासियों ने जो पहले निज दिखाई देते थे उन स्पेनवासियों को मार जाता था। कोलम्बस ने एक दूसरा स्वाम चुना और एक नगर का निर्माण किया जिसका नाम उसने राणी इलेवेला के नाम पर

इसेबेसा' रक्खा ।

घारम्भ में ही इस नवीन स्पेन के उपनिवेश में प्रापती भयङ्गे धीर कसह घारम्भ हो गये लेकिन कोलम्बस ने उसकी परवाह न कर उन द्वीपों की पूरी तरह खोज करने के लिए तैयारी की । तीन जहाज १२ नाविक और ६ महीने का खाने पीने का सामान लेकर वह चीन (क्यूबे) के तट की खोज में निकल पड़ा । चीन तो उसको नहीं मिला किन्तु उसको एक नया द्वीप 'अमायका' मिला जो कि बहुत ही सुन्दर था । तब भी कोलम्बस का यही विश्वास था कि वह महान ज्ञान के देश चीन (क्यूबे) के पास है । उसने क्यूबा को भी ढूँढ़ निकाला । उसको यह अनुमान ही नहीं हुआ कि वह एक द्वीप है । इसी प्रकार वह बहुत से द्वीपों को खोजता रहा धीर बीमार पड़ गया । उसको खबर खाने लगा धीर उसके दाबमी उसको इसेबेसा ले आए क्योंकि उनका विश्वास हो गया था कि वह मर जायेगा । लेकिन कोलम्बस बच गया । बीमारी से ठीक होने पर उसने देखा कि उपनिवेश में बहुत समृद्धि है । उसका पोछे उन अर्धसुद उपनिवेशियों में स्पेन में कोलम्बस की सिरापतों धीर उसकी धूमनों की लम्बी सूची लिख भेजी थी । कोलम्बस ने निश्चय किया कि वह स्वयं स्पेन वापस जावे धीर रानी को इ चीज में उपनिवेश स्थापित करने की कठिनाइयों से अवगत करे । वह स्पेन वापस लौटा ।

सन् १४९२ में कोलम्बस कैडिज़ के बन्दरगाह में पहुंचा । बन्दरगाह में महान जौजी के स्वागत के लिए भारी भीड़ जमा थी । भीड़ की श्रवणा यह थी कि द्वीपों से अनन्त धन लौटा मसाले भर

कर उनके बेघरवासी सुखी सुखी लौटेंगे। उन्हें यह देखकर घ्राइवर्य हुआ कि उनकी कल्पना के विपरीत कमजोर रोमी और निर्धन लोगों का एक झुंड महाजों से उतरा। कोलम्बस की पोशाक एक भारी जूनी की पतली बाड़ी बड़ी हुई थी और वह बहुत ही कमजोर और दुखी नज़र आता था।

कोलम्बस स्पेन में दो वर्ष रहकर राजी की सब बातें बताकर तीसरी बार फिर माया के लिए निकल पड़ा। उसने अपने साथ ६ बहादुर लिए और इन पार उसने पहिलम-बलिया की ओर बढ़ना शुरू किया। उसने आधा ही कि बंस्ट इ डीज के द्वीपों के बलिया में भी उसको नया देश मिलेगा। उसको नया देश खबर मिली किन्तु अपनी मृत्यु तक वह यह न जान सका कि उसने एक बड़े महाद्वीप को छूँट निकाला है। तेज धुन और धर्म में वह लगातार चलता गया और अन्त में उसको पुष्पी दिखलाई दी। कोलम्बस ने मन में यह निश्चय कर रखा था कि पहिली धूमि का नाम पहिल तीम बेस्तायो के नाम पर रखेगा। उसे देखकर यह घ्राइवर्य हुआ कि उस भूमि पर तीन महाद्वीप हैं उसने उसका नाम सन्-क्रिनीडाड रख दिया। उस भूमि के सहस्रहस्तै दृश्य को देखकर स्पेन निवासी बहुत प्रसन्न हुए। कोलम्बस अब बलिया अमेरिका के तट पर चल रहा था तो उसने सोचा कि यह एक बहुत बड़ा द्वीप है। उसने उसको 'इसलान्तोटा' का नाम दिया। वहाँ की मत्स्यीय लोते तथा अन्य पक्षी बहुत बड़े थे। वह चलते चलते एक ऐसे स्थान पर आया वहाँ एक बहुत बड़ी जल की घाघ लकड़ में गिर रही थी। जबकि बहादुर वहाँ

जपर बात रहे थे तो मीठे बस की उस बारा में भीषण बाढ़ आई और उससे कोलम्बस के जहाज गह होते होते बचे । यह मोरिनिको नदी का मुहाना था जिसका नाम अर्जोनि कुंमन-मार्क्य रखा । जब बाढ़ समाप्त ही गई और जतरा निकल गया तो वह घाते बढ़ा । समुद्र तट का प्रवेश अत्यन्त रमणीक था पहाड़ों की ऊँची पंक्ति बहुत भली मान्यता पड़ती थी और वहाँ की धीतस वायु ने स्पेन वासियों की यात्रा की यकायक को दूर कर दिया ।

कोलम्बस ने यह निश्चय किया कि यह पृथ्वी का केन्द्र होया । उसकी बड़ी बड़ी नदियों को देखकर उसने अनुमान किया कि यह पृथ्वी का वही स्वर्ग है जिसके बारे में पार्सियायों ने घोषणा की थी कि वह तुर्क पूर्व में है और जो बहुत ऊँचा है ।

जब वह हैटी की ओर बढ़ा वहाँ उसका भाई उपनिवेश का शासन कर रहा था । लेकिन उसके पीछे वहाँ बित्रोह और अघान्ति का बोलबाला था । कोलम्बस भी उस स्थिति में कुछ सुधार न कर सका । वह एक सफल नाविक था किन्तु सफल राजनीतिज्ञ नहीं था । उपनिवेश से अिकायते स्पेन भेजी गई और वहाँ से एक स्पेनिश अफसर वायसराय नियुक्त किया गया । हैटी में धाते ही उस अफसर ने कोलम्बस को कैद कर लिया और एक जहाज पर उसे स्पेन भेज दिया । जब बृहज्जोबी कोलम्बस जिसके चेहरे पर कष्ट और दुःख की रेखाएँ बन गई थी रस्ती के सामने लाया गया तो रानो बहुत दुखी हुई । उसने कोलम्बस को फिर शाही सम्मान दिया और चौकी और अन्तिम बार उसको जहाज देकर यात्रा के लिए भेजा । लेकिन बीचन

में लगातार कठिनाइयों और खतरों को झेलते झेलते कोलम्बस पक गया था वह इंडीज की मन्ची यात्रा के योग्य नहीं रह गया था। फिर भी वह सकुशल हांगुरास पहुँच गया। वहाँ के निवासी उसके लिए गारियल लाए जिन्हें स्पेन वालों ने पहली बार खया। वे कुछ बढ़िया भात भी बेचने के लिए लाए जो कि कहीं दूर से वहाँ आता था। उससे यह सिद्ध होता था कि पास ही कहीं कोंची सम्यता का कोई देश है। कोलम्बस को निश्चय हो गया कि वह सोने के देश पूर्व में पहुँच गया है जहाँ से सातोमन के मन्दिर के लिए सोना लाया गया था।

यदि कोलम्बस थोड़ा पश्चिम की ओर बढ़ गया होता तो वह मेक्सिको की खोज निकालता और उसके सोने खारी से उसकी सफलता में बार बार लग जाते। उसके बुढ़ाने में उसकी इस खोज से असीम ईश्वर सफलता और सम्मान प्राप्त होता। किन्तु उसके खोज में उसको निरास और परासीनता ही हाथ मयी।

कोलम्बस सोने के पूर्वी देश की खोज में सफल रहा था कि मौसम खराब हो गया धन घोर भुसलावार निरंतर बर्बा होने लगी। बिजली की कड़क और मीथल तूफान से तमूद भयाङ्क ही गया। घाने बढ़ना बहुत खतरनाक था फिर उसके पास भोजन समाप्त हो गया था। जो थोड़ा बहुत भोजन बचा था वह बहुत खराब हो गया था। बिस्कुटों में कीड़े ही कीड़े हो गए थे। लोग रात्रि के धंभेरे में ही जगहें करते थे चिन्तित कि वे किसलाई बरें। कोलम्बस इतना बीमार हो गया था कि वह मानो मृत्यु की बात जोह रहा ही। उसके निकल

है "मैंने अपने जीवन में समुद्र की सहरोँ को उतना डूँबा और उतना भयंकर कमी नहीं देखा था और न समुद्र पर इतना फेन ही मुझे कमी देखने को मिला । आकाश से बल बर्षा निरतर ही रही है बरफ़ने का नाम नहीं लेती प्रलय का दृश्य उपस्थित है ।"

ऐसी बसा में प्राप्ते जीवन जारी रखना असम्भव समझ कर कोलम्बस स्पेन की ओर लौट पड़ा । जब १५४ में स्पेन पहुँचा तो वह इतना बीमार था कि उसको उठा कर समुद्र तट पर लाया गया । स्पेन पहुँचने पर उसे मात्सूम हुआ कि स्पेन की रानी मर चुकी है । कोलम्बस का एक मात्र सहारा और मित्र उठ गया उसके पास एक कौड़ी भी नहीं रही और वह इतना बीमार था कि मृत्यु उसके ग़बरीक लड़ी थी ।

कोलम्बस ने कुछ भरे घण्टों में सिखा है । 'बीस बर्ष तक कठिन परिश्रम करते रहने और कठोरों से मुमते रहने पर भी मेरे पास स्पेन में रहने के लिए एक भौंपड़ी भी नहीं है ।

नई दुनियाँ के प्रथम खोजी की दयनीय बसा को उसके घण्टों में ही पड़िये ।

"मैं वहाँ रोय बस्या पर पड़ा हुआ प्रकला मृत्यु की याद जोह रहा हूँ । राजा से लेकर साधारण भोग सभी मुझे उपेक्षा दृष्टि से देखते हैं और मैं इतना मोहताज हूँ कि मेरे पास जाने की भी नहीं है ।"

इस प्रकार वह महान खोजी क्रिस्टोफ़र कोलम्बस अत्यन्त दयनीय बसा में उपस्थित और अपमानित हुआ मर गया । उसे अपनी मृत्यु पर्यन्त तक यह मात्सूम न हो सका कि उसने एक

बड़े महाद्वीप—नई दुनियाँ को ही खोज निकालता है। मानव जाति को सेवा करने वालों तथा वीर पुरुषों की यही कहानी रही है। दुनियाँ इतनी दृष्टम्य है कि जब एक वर्ष बाद दुनियाँ को यह मामूला हुआ कि कोलम्बस ने एक नई दुनियाँ को खोज निकाला तो भी किसी ने उस महाद्वीप का नाम कोलम्बस के नाम पर रखने की चकरत नहीं समझी। कोलम्बस की मृत्यु के एक वर्ष बाद एक स्पेन क तख्त होबेदा ने जो कोलम्बस के साथ बूसरी यात्रा पर गया था १४९२ में एक यात्रा की। उसके साथ एमेरिगो वेस्पुची नामक एक व्यक्ति था। वे कोलम्बस के मार्ग से बक्षिरव अमेरिका पहुँचे। वहाँ से लौटकर एमेरिगो ने कहा कि यह महाद्वीप न एशिया है और न अफ्रीका है यह नई दुनियाँ है। क्योंकि एमेरिगो ने यह बात कही कि यह नई दुनियाँ है उस महाद्वीप का नाम उसके नाम पर अमेरिका रख दिया गया। खोज के इतिहास में इससे बड़ा धम्याय नहीं हो सकता। जिस व्यक्ति ने अचक परिधम करके और खोजिन उठाकर उस महाद्वीप को खोज निकाला उस व्यक्ति को भोग उस महाद्वीप का नाम रखते समय धूल नए। जो भी हो कोलम्बस की मानव जाति के लिए भी गई सेवा धमर रहेगी।

पाचवां परिच्छेद

बिल्बामो की प्रशान्त महासागर की खोज

जब स्पेन को यह ज्ञात हो गया कि जिस महाद्वीप को कोलम्बस ने खोज निकाला था वह एक नई दुनिया है तबही स्पेन वाले एक के बाद दूसरे साहसी नाविक को उस महाद्वीप की खोज के लिए भेजने लगे। साहसी नाविक खोजियों में से एक के बाद दूसरे ने अमेरिका के पूर्वी तट की पूरी खोज कर ली। इनमें पिम्बोन मेनडोसा वेंसिडास ब्बान-डी-ला-कोता और सोलिस मुख्य थे। यदि सोलिस ला प्लाटा नदी के मुहाने के पास मार न डाला जाता तो सम्भवतः वह पहला व्यक्ति होता कि जो प्रशान्त महासागर को खूँड निकालता।

यह महान् खोज करनेवाला बस्बाओ था। उसने उस अजनबी नई दुनिया के आगे क्या है यह डेरियन की छोटी से देखा। उसकी इस खोज ने कि अमेरिका के बहिष्म में प्रशान्त महासागर है यह सिद्ध कर दिया कि भूमि के चारों ओर जल है और उसके कारण ही संवेतान के विमान में पृथ्वी की बरिष्म करने का विचार जायज हुआ।

विस्वाप्रो एक प्रचंड परिवार का मुखर और स्वस्थ पुत्रक था। वह स्वेन से हूटी के उपनिवेश बना आया था और वहाँ आकर बस गया था। किन्तु हूटी में उस पर कर्ष हो गया। वहाँ का नियम यह था कि किसी व्यक्ति को जो कर्षकार होता उस द्वीप से जाने नहीं दिया जाता था। लेकिन विस्वाप्रो की जानना थी कि वह नहीं जोरों में भाव ले। एक दिन उसकी यह लालता इतनी तीव्र हो गई कि वह एक जहाज में चुपके से चढ़ गया और रोटी के बड़े खाली पीपे में छिप कर बैठ गया। जब जहाज हूटी से दूर मुझे समुद्र में निकल गया तो वह अपने छिपने के स्थान से निकल कर बाहर आया। जहाज का कप्तान बहुत ही नाराज हुआ। वह इतना नाराज हुआ कि उसने उसे एक निर्जन द्वीप पर छोड़ देने का निश्चय कर लिया। लेकिन उसकी तथा अन्य नाविकों की क्या प्रार्थना पर उसका क्रोध शान्त हो गया और उसने विस्वाप्रो को जहाज पर रहने दिया। कप्तान का यह निर्णय बहुत ही सामन्तवादी सिद्ध हुआ। जो कहना चाहिए कि इस निर्णय के कारण ही उस जहाज पर जितने भी लोग थे उनकी जान बच सकी। बात यह थी कि उसके बीच छोड़ी बेर बाद जहाज एक कप्तान के ऊपर चढ़ गया और हट गया। उस समय विस्वाप्रो ही था जिसने जहाज के लोगों को मृत्यु और विनाश से बचा लिया। वह जहाज के सभी नाविकों को एक नवी डेरियन के पास ले गया जिसके बारे में विस्वाप्रो पहले से जानता था। उसीसे यह बात नहीं था कि वह स्थान एक पतली भूमि की पट्टी है जो दक्षिण और उत्तरी अमेरिका को जोड़ती है।

बनाकर वे सब लोग समुद्र तट पर पहुँचे । वहाँ उन्हें दो बड़ी नावें मिलीं वे खुशी से उछल पड़े और खुशी से चिन्ता उठे कि हम ही योरोपवासी हैं जो नये समुद्र में जायेंगे । बिस्वाप्रो ने अपनी तलवार निकाल ली और नाव में पैर रखते ही उतने घोपला की कि वह बसिली महासागर पर स्पेन के बारासाह के नाम पर अधिकार करता है । प्राविवातियों ने उसे बतसाया कि बसिली में जो धूमि है उसका कोई अंश नहीं है और उस पर शक्तिवासी जातियाँ रहती हैं और वहाँ बहुत मात्रा में सोना मिलता है । बिस्वाप्रो ने प्रशान्त महासागर को ही बसिली महासागर कहा है ।

यह खेद की बात है कि बिस्वाप्रो जिसने यह महान काम की थी और पनामा कलडमकमण्य के पश्चिम में प्रशान्त महासागर को खोज निकाला था उसको चार वर्ष बाद सार्वजनिक रूप से क्षती दे दी गई ।

लेकिन यह समाचार कि नई दुनियाँ के पार बसिली महासागर है मीमलान तक पहुँच गया । अब उसको निश्चय हो गया कि समुद्र के रास्ते मसाले के द्वीपों तक पहुँचा जा सकता है । उतने स्पेन के तबल बारासाह की कहा कि उन मूस्यवान द्वीपों पर स्पेन का अधिकार होना चाहिए और उतने बचन दिया कि वह अमेरिका के बसिली में समुद्री मार्ग से पश्चिम में जाकर बहाली बैङ्गो में जायेंगे । तबल बारासाह ने उसका प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उसको समुद्र के मार्ग से पश्चिम में मसाले के द्वीपों पर अधिकार करने के लिए भेजा गया ।

छठा परिच्छेद

मैगलान की पृथ्वी परिक्रमा

करडिनिङ्ग-मैगलान का जन्म १४८० में पुर्तगाल के उत्तर में सबरीसा नामक स्थान पर हुआ था। उसने एक सामान्य परिवार में जन्म लिया था। कुछ दिनों तक पुर्तगाल के बारासाह के दरबार में नौकरी करने के बाद १५५ में उसने अपना नाम अलमेडा के जहाजी बेड़े में लिखा लिया और दो समुद्री युद्धों में भाग लिया। जब सिपेरिया ने १५६ में अलहाहा की खोज की तो वह उसके साथ था। १५९९ में जब अलबुकर्क ने अस्तोरा पर अधिकार जमाया तो वह उसके साथ युद्ध में सम्मिलित हुआ और जावा की यात्रा में भी वह उसके साथ रहा। उसकी पूर्व में की गई सिबाओ के उपलक्ष में जब वह पोर्तुगाल लौटा तो उसका वेतन बढ़ा दिया गया।

१५९९ में मैगलान ने मरडो के युद्ध में भाग लिया जिसमें वह जख्मी हो गया। जब वह पुर्तगाल लौटा तो उस पर यह आरोप लगाया गया कि युद्ध के क्षणों में उसने गड़बड़ की है। जब वह पुर्तगाल के बारासाह डामरीनुअल के सामुख गया तो उसने मैगलान का कोई उत्कार नहीं किया और उसकी घोर घोर

उदासीनता प्रकट की। मंगलान को राजा के इस व्यवहार और अभ्यास से बहुत दुःख हुआ और यह सोचकर कि पुर्तगाल में उसके लिए अब कोई भविष्य नहीं रहा उसने सार्वजनिक रूप से पुर्तगाल की राष्ट्रीयता को छोड़ दिया और स्पेन चला गया और वहाँ उसने स्पेन के बादशाह चार्ल्स पांचवें की सेवा स्वीकार कर ली। बात यह भी कि मंगलान की साहसपूर्ण यात्राओं की सफलता के कारणों और मसाने के द्वीपों की यात्रा के विवरण से चार्ल्स पांचवें बहुत प्रभावित हुआ। मंगलान ने अपनी मसाने के द्वीपों की खोज के प्रमाण में स्पेन के बादशाह को मसाने के द्वीपों के एक भाग और रासी को जिन्हें वह अपने साथ ले आया था दिखाया। यही कारण था कि दरबार में मंगलान को उचित आदर मिला। मंगलान की योजना यह भी कि वह दक्षिण अमेरिका के समुद्र तट के सहारे उत्तरी स्थान से भी दक्षिण में जाने जैसे अमेरिगो ने खोज निकाला था। उसका विश्वास था कि दक्षिण अमेरिका के दक्षिण में अटलांटिक महासागर से दक्षिण महासागर में जाने के लिए समुद्री मार्ग खोज होगा। यदि वह समुद्री मार्ग मिला गया तो मसाने के द्वीपों के लिए पश्चिमीय समुद्री मार्ग खुल जायेगा।

बहुत लंबे विचार करने के बाद स्पेन के तत्काल बादशाह ने पुर्तगाल के घोर विरोध करने पर भी मंगलान को खोज पर जाने की आज्ञा दे दी।

इस यात्रा के लिए लोगों को उरसाह नहीं था। बात यह भी कि वेतन कम था और रास्ता अनजान था। सीबिनी की गलियों में

सैन्यमान के धारणी लोड की मात्रा के लिए जाने वालों को धारणा तथा सेवा कर प्रती करते करते थे। यही कारण था कि सैन्यमान के साथ ही एव लोप गए उनमें स्वेन पुर्तगाल जिनोया फ्रांस जर्मन चीन रूसि वेगों के निवासी और एक संघ भी था।

सैन्यमान को स्वेन क तरल यारदाह ने पांच जहाज लिए थे। वे बहुत पुराने और मरगमन किए हुए थे। मरगमन ने ११ टन के ट्रिनीडाड जहाज पर अपना लंबा मगामा। सबसे बड़े जहाज सेंट ऐम्ब्रोसिया का मगमन एक स्वेनवासी कारवेयना था। नब्बे टन के जहाज 'कनसेवशन' का मगमन वसपार र्वसाबा बनाया गया। यन्त्रवासी टन का बिस्कोरिया जहाज को प्रकेला मात्रा से कुछसे पूर्वक लौटा था उसका मगमन बिस्बासघाती मन्डोखा था और पचहत्तर टन का छोटा 'सन्धियापो' जहाज सैन्यमान क पुराने मित्र सैरानो के भाई की मघीनता में था।

सैन्यमान को तत्काल पत्नी और ६ महीने का नवजात पुत्र का भूत उस पर इतना मघिक चढ़ गया था कि सुम्बर तत्काल पत्नी और ६ महीने के पुत्र का मोह भी उसको न रोक सका और वह पहली बार स्वेन क लंबे की मघने जहाज ट्रिनीडाड पर फहराया हुआ स्वेन से लम्बी यामा के लिए चल पड़ा। उसने फिर कभी मघनी पत्नी और पुत्र को नहीं देखा। क्योंकि जब वह तीन वर्ष बाद यात्रा से लौटा तो उसे मग्मून हुआ कि उसकी पत्नी और पुत्र दोनों ही स्वर्गवासी हो गए। मघने जहाज पर उसने एक बतती हुई मघाम

रक्षी भी जिससे कि पीछे भय्य जहाज टिनीबाड की रौसनी को बेलकर ठीक मार्ग पर चलते रहें । उसने अपने साथियों से कहा कि तुम मेरे जहाज के पीछे पीछे चले आओ और कोई प्रश्न न पुछो ।

संयत्न ने २ सितम्बर १५१६ को सैंबिनी से यात्रा आरम्भ की । एक घंटाह के बाद बहू कनारी द्वीप पहुंचा और फिर वहीं प्रस्थरीप को पार करने पर भूमि प्राक से प्रोम्न हो गई । कुछ दिनों तक हवा अनुकूल थी इस कारण यात्रा में कोई कष्ट नहीं हुआ । उसके बाद हवा तेज हो गई और एक महीने तक तेज तूफान और धंभड़ चलता रहा । इबनी का काऊट भी उस जहाजी बड़े के साथ था उसने इस तूफान का और विपत्ति का विस्तार पूर्वक वर्णन लिखा है । वह लिखता है—

‘इन भयंकर तूफानों के समय कई बार संत ऐन्सलम की मूर्ति हमारे सामने प्रकट हुई । एक रात्रि को जब कि भयंकर तूफान उठ रहा था और गहन धंभकार था तब संत प्रन्तजम बड़े भरतूस क ऊपर चलती हुई अग्नि के कम में प्रकट हुए और वहां डारि घड़े तक रहे । उससे हमें बहुत डारस बीया । क्योंकि उस समय तूफान इतना भयानक था कि हम सब सोप रो रहे थे और प्रतिभरु यह मय था कि अब जहाज डूब जावेंगे । जब यह पवित्र अग्नि हम से दूर चली गयी तो उसकी रोशनी इतनी तेज हो गई कि हम सब धंभे हो गए और बया के लिए बिस्ताने लगे क्योंकि हममें से किसी को भी बचने की आशा नहीं थी । परन्तु उस रात्रि को जहान् नहीं डूबे और

हम लोय बच गए।”

किन्तु उससे भी कड़ों का प्राप्त नहीं हुआ। वो महीने तक लगातार मूललापार बर्षा होती रही और पाने पीने का सामान बुरकम गया। अब नाबिकों में बिद्रोह क बिगड़ दिखलाई देने लगे। बात यह थी कि स्थेन बानी कस्तान पतगालबासी कसांडर मंगलान की प्राधीनता से घों भी बच बा। परन्तु मंगलान ने बड़ी कड़ाई से काम लिया। उसने कहा कि मैं तुम्हारी इन घमस्वियों से डरनेवाला नहीं हूँ। जो काम मैंने अपने जिम्मे लिया है उसका प्रबन्ध करूँगा। उसकी दृढ़ता को देखकर सब चुप हो गए।

नवम्बर १५१६ में मंगलान बाजील दक्षिण अमेरिका के तट पर पहुँचा। वहाँ पर एक दुर्घटना हुई। बिद्रोहात्मकता कस्तान उससे संतुष्ट नहीं थे। एक दिन ऐम्बोनिया का कस्तान मंगलान के बहादुर मिनीटाड पर बड़ गया और कुले बप में उसकी वैदग्ज्यती की। मैक्सिम मंगलान अयभीत नहीं हुआ। उसने उस बिद्रोही बस्तान को घने से बचड़ लिया और कहा कि तुम मेरे कंधी हो। उतको बंद में रखकर उसने उस बहादुर का बूझरा कस्तान निपुण कर दिया।

बाजील के तट पर ताकी भोजन बस्तुएँ बहुत मात्रा में मिली। पान वहाँ बहुत होते थे मुर्गियाँ और पशु भी बहुत सस्ती थे। एक बन्दू बेकर वहाँ के प्रादिवासियों से थे लोब पाँच बड़ी मुर्गियाँ से लेते थे। एक पंटी क बरने थे लोग एक डोकरो भरकर सकरकंधी के बैठे थे। पाने पीने की देती बुबिबा हो जाने से नाबिक प्राप्त हो गए।

मंगसान अब वहाँ पहुँचा तो उससे पहले वहाँ बहुत लम्बे समय से सूखा पड़ा हुआ था। वर्षा नहीं होती थी। मंगसान के वहाँ पहुँचते ही वर्षा खोरी से होने लगी। भोले प्राक्वितियों को यह विश्वास हो गया कि यह निबेछी गौरे सोप वर्षा अपने साथ लाए हैं। वे उनको बड़ी भय से देखने लगे। उनकी इस भय का लाभ उठाकर मंगसान ने उन सबों को ईताई बना लिया। वे भी स्वेदप्राक्वितियों के साथ घुटने टेक कर भय के साथ प्रार्थना करने लगे।

बड़े दिन के बाद मंगसान फिर प्रागे बढ़ा। वह बक्षिण की ओर बक्षिण अमेरिका के समुद्र-तट के साथ साथ चल रहा था। नये वर्ष के प्रारम्भ में वे रायो-जी-नाम्पाटा के मुहाने पर पहुँच गए वहाँ पाँच पर्व पूर्व सोमिस को प्राक्वितियों ने मार कर ला लिया था। वह प्रमरियों के बाद स्पेन की ओर से बक्षिण अमेरिका की प्रथक लोख के लिए निपुक्त किया गया था। वह जबकि समुद्र तट की ओर कर रहा था उस समय कुछ प्राक्वितियों ने इंडियन उस पर बौड़ पड़े और उसको मार कर धून डाला और उसका मांस खा गए।

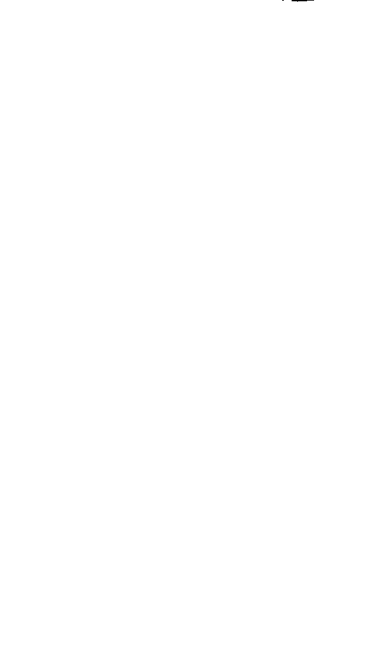
फरवरी और मार्च के महीनों में मंगसान बराबर बक्षिण की ओर बढ़ता गया। उसे प्राग्ना थी कि कहीं बक्षिण अमेरिका का महादेश समाप्त होना और वह उसे पार कर पश्चिम की ओर मसाले के द्वीपों की ओर बढ़ेगा। जाड़ा प्रारम्भ हो गया लेकिन कोई मार्ग नहीं मिला। उन छोटे जहाजों के एक के बाद दूसरा भयंकर दुर्घटना

हुटने लगा । उन तुफानों के साथ घोर गर्जन के साथ बिजली भी कड़कती थी । उन तुफानों ने बहादुरों को मरुमरु डाला और जबकि सभी यह समझ कर कि उनका प्रसन्न था गया है रोने लगे और प्रभु से प्रार्थना करने लगे तो उन्हें संत संसत्तान की पवित्र मूर्ति दिखावाई गी और तुफान रुक गया ।

धन धनवाने इंसान में और अधिक बढ़ना असम्भव था । एक पुरखित और बड़ा बंदरवाह देखकर मंगलान ने जाड़े में वहीं ठहरने का निश्चय किया । उसने उस बंदरवाह का नाम कुलियाण बन्दरवाह रखा । मंगलान जानता था कि उसे वहाँ चार पाँच महीने ठहरना होगा । इसलिए उसने नाबिकों को दैनिक राशन घटा भी जिससे कि खाने पीने का सामान समाप्त न हो जाये । नाबिक बीसे ही संतुष्ट नहीं थे । यात्रा के भीषण लक्ष घटसाटिक महासमुद्र के भयंकर तुफान सन्धे इंसिली प्र ब के भीषण शीत की सम्भासना और जस तट पर बेकार पड़े रहने के कारण नाबिक सुख्य हो उठे और उन्होंने मंगलान से स्पेन लौट चलने को कहा । साहसी मंगलान ने उन्हें फटकार दिया । वह बिपत्तियों से घबड़ाने वाला नहीं था । दोनों स्पेनवासी कप्तान शम्भानियो बहादुर पर सब पर और उसके पुर्तगाली कप्तान को पकड़ कर बंदी बना लिया । उस बहादुर में खाने पीने का भंडार था उसकी तोड़ डाला गया और रोटी और सराब कुछ बाँटी गई । उसके बाद उन्होंने यह योजना बनाई कि द्वितीयाह बहादुर पर भी कब्जा कर लिया जाये और मंगलान को मार कर और उससे स्वामिनाथ कप्तान सीरेनो को कैद कर स्पेन की ओर लौटा जाये ।

इस बिद्रोह की खबर मयमान के पास पहुची। उसने तुरंत एक खंदिखवाहक को पांच घारमियों के साथ उस बिद्रोही कप्तान को बुला जाने के लिए भेजा। वे पांचों घारमी कपड़ों के नीचे घस्त्र धरम छिपाए हुए थे। कप्तान ने मयमान के पास जाने से साफ इन्कार कर दिया। जैसे ही उसने मयमान के पास जाने से इन्कार किया खंदिखवाहक ने झपट कर उसकी मार डाला। बिद्रोही कप्तान के मरते ही उसके सहायक बिद्रोही नाबिकों का साहस लुप्त हो गया और उन्होंने बचाव की मिसा बाही। मयमान के साहस से बिद्रोह समाप्त हो गया और फिर कभी भी किसी ने बिद्रोह करने का साहस नहीं किया।

मयमान के बहादुर बुलियान बंदरगाह में दो महीने तक रहे किन्तु उन्हें एक भी घारिवासी दिखासाई नहीं दिया। परन्तु एक दिन समुद्र तट पर एक विशालकाय मनुष्य दिखाई दिया जो नाब और ना रहा था। वह इतना लम्बा था कि समूचे से लम्बा स्पेनवासी भी केवल उसकी कमर तक आता। उसका बैहरा बहुत बड़ा था जिस पर साल रंग पुता था। उसकी घाँवों के चारों ओर पीला रंग लपामा हुआ था। कुछ ही देर बाद ऐसे कई विशालकाय पुरुष बहूँ जमा हो गए। उन्हें स्पेनवासियों को देखकर बहुत आश्चर्य हो रहा था कि ऐसे छोटे घारमी भी होते हैं। स्पेनवासियों ने उन्हें आने को दिया। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि दो घारिवातियों ने एक डलिया भर कर बिस्तुव और चूहे का लिए और घारमी बास्टी बानी भी लिया। उसके विशाल घरीर को देखकर मयमान के घारमी



था मए तो उन्हें प्रजीव सा मया । मयमान पहले उत्तर की ओर चलता क्योंकि वह अपने धारमियों को ठंड से बचाना चाहता था । फिर वह उत्तर पश्चिम की ओर चलने मया क्योंकि उसका विश्वास था कि उस ओर मसाने के द्वीप हैं ।

उसके बहान खर्च हो गए थे । उसके नाविक मके हुए थे और ठंड से कांपते थे । फिर तो मयमान प्रशास्य महासागर में चलता ही मसा मया । किसी को भी प्रशास्य महासागर के विस्तार की कोई कल्पना ही नहीं थी । दिन पर दिन और सप्ताह पर सप्ताह निकलने मने किन्तु मसान जल के लिबाय भूमि का कहीं नाम भी नहीं लिखलाई मिया । इस तरह दो महीने निकल मए ।

जनवरी में कहीं एक छोटा सा टापू मिला लेकिन उस पर मनुष्य का लिङ्ग भी नहीं था । उस बीराम टापू को छोड़कर वे मगगे बढ़े किन्तु दूसरा टापू भी बीराम था । सब नाविकों को घोर मिरासा हुई । जनका मीजन समाप्त हो गया । पिस्तुट बिस्तुट न रहकर कीड़ों का पाउडर बन मए थे । भूह विस्तारिता की बरतु बन मए थे । मीजन की इतनी कमी हो गई थी कि जहान में मने हुए ममड़े को म्रान पर सेक कर म्राना मड़ा । नाविकों में भीमारी फैल गई जमीछ म्रामी मर मदे और तेरह बहुत म्रमित भीमार हो मए ।

मद्वानके दिन तक मयातार मयमान म्रनजाने समुद्र में रत दिन मसता रहा । उसे कल्पना ही नहीं थी कि प्रशास्य महासागर इतना बड़ा होगा । मस्त में मयमान किसीपाइन द्वीप समूह में पहुँचा । वहां उसकी जीन के म्रामारी मिले जिन्होंने उसे बतलाया कि मसाने

के द्वीप सब धमिक दूर नहीं हैं। मंगलान की यात्रा लफ्त हुई उसने पश्चिम में समुद्र के रास्ते मछाले के द्वीपों और चीन दर्यादि पूर्वी द्वीपों को जाने का मार्ग ढूँढ़ निकाला। सिध्दिय यह अपने परिधम का कर भोगने के सिण धीमित नहीं रहा।

उन द्वीपों पर जाने पीने की चीजों की दृष्टतायत थी। यके मुके और भीमार नाविकों को सब धरदा भोजन मिलने लगा तो उनका स्वास्थ्य जम्बी ही सुधर गया। सब मंगलान एक द्वीप से दूसरे द्वीप को जाता वहाँ से सोना इकट्ठा करता। वह धीरे धीरे मछाले के द्वीपों की धोर बढ़ता जा रहा था। उसने उन द्वीपों के शासकों से स्वेन के राजा के नाम पर कर जगाहना शुरू किया। मंगलान ने लौपों को ईसाई बनाने और सोना इकट्ठा करने में बहुत जम्बी थी। ईस्टर या यया मंगलान ने द्वीप के सबसे ऊँचे पहाड़ पर बड़ा धग का बिड़ू और कांटों का मुपुट रस दिया तितती सब उसको रीज सखें और उसकी पूजा कर सखें। एमिल समाप्त हो गया किन्तु मंगलान सोना बढीरने और लोगी को ईसाई बनाने में ही सया रहा। उसके जस्ताइ का यह कल हुआ कि उसका एक बेदी राजा से भयडा हो यया। मंगलान उस टात्र पर अपने बोड़े से सधरक संनिकों के साथ जतरा परन्तु वहाँ हजारों की संघा में ऊँड धारि वाली जमा थे। अयंकर मुड हुआ। ऊँड माधियासियों ने अपने भालों से मंगलान को कार डावा। उस साहसी नाविक का अपनी धरुत सकमता के बार इस प्रकार बुखद घण्ट हुआ।

दुपी और निराध नाविक जिनकी संख्या धय केवल एक ही

पंडह एह गई की टिनीबाड घोर बिक्टोरिया जहाजों पर जमा हुए घोर स्पेन की घोर सौदे । सितम्बर १५२२ को वे मसाले के द्वीपों के पास पहुँचे वहाँ वे कुछ महीने आनन्द से रहे घोर जहाजों में मसाले भर कर वे घाबे बढ़े । लेकिन टिनीबाड जहाज इतना जर्जर हो चुका था घोर उस पर लौप इत्यादि मसाले इतने घबिक भर लिए गए थे कि वह इतनी लम्बी यात्रा के लिए उपयुक्त नहीं था । टिनीबाड को मरम्मत के लिए छोड़कर छोटा जहाज बिक्टोरिया ९ नाविकों को लेकर स्पेन की घोर चला । उन साहसी नाविकों को उस लम्बी घोर मयंकर यात्रा में जो कुछ घोर बिस्तिमा उठानी पड़ी घोर उन्हें जिस प्रकार भुल से लड़ना पड़ा उसकी कहानी कौन लिख सकता है । एक के बाद दूसरा घाबमी मरता गया घोर जब जहाज वहीं अन्तरीप के द्वीपों के के पास पहुँचा तो केवल १५ घाबमी जीवित बच गए थे ।

लम्बी यात्रा समाप्त हुई । स्पेन की भूमि के बर्जान हुए । अठारह घुबे बके घोर जहास नाविक अपने अज्ञान डेल-कॅनो के साथ उतरे । जहाँनि अपने कमांडर घोर नेता मंगसान द्वारा प्रथम बार पृथ्वी की परिभ्रमा की वीरबपुर्ल गावा स्पेन के सोवी की मुनाई ।

मंगसान का पुत्र नर चुका था घोर उसकी प्रिय पत्नी बँटरिक्त ने जब अपने पति की दुखर मृत्यु का समाचार सुना तो वह उस घाघात को न सह सकी घोर मर गई । पत्नी घोर पुत्र के नर जाने से मंगसान का परिवार समाप्त ही गया । अतएव स्पेन के बादशाह ने बिक्टोरिया जहाज को लौटा कर जाने वाले अज्ञान डेल-कॅनो को

सम्मानित किया। यद्यपि ईशमान स्पेन के बादशाह से पृथ्वी की प्रथम बार परिक्रमा करने वाले विद्येता माथिक के रूप में सम्मानित होने के लिए अधिकृत नहीं रहा किन्तु बीजों के इतिहास में उसका नाम लॉर्ड प्रोवर और अन्ना के साथ लिया जायेगा।



धायन कर दिया। कारबोबा भी धायन हो गया। उसने क्यूबा के पब्लिक को अपनी यात्रा का बर्लन सिद्ध मेजा और कुछ दिनों के बाद वह मर गया।

कारबोबा ने जो बिबरल मेजा वह बहुत प्रेरणादायक और स्विकार था। इस कारण स्वेन वालों ने उस देश पर विजय प्राप्त करने के लिए फिर अहाबी देश धरने का निश्चय किया। इत अहाबी देश का नेता साहसी तबल मुबक बुभान-प्रियालता था। उसके साथ आई सौ बीर घोड़ा सैनिक थे और उसके अहाबी को बसाने वाला कुछ अनुमबी प्रलबराओ था जो कोलम्बत और कारबोबा की यात्राओं में उनके अहाबी की देखभाल कर चुका था। इस महान् बनी देश के लम्ब तट की तब प्रथम जोर प्रियालता ने ही की।

जब प्रियालता मैक्सिको के समुद्र तट पर पहुँचा और वहाँ के निवासियों से देश का नाम पूछा वे बिस्ता उठे 'मक्सिको मैक्सिको' कहूँगे तबल प्रियालता को लोने के प्राहूपलों से लाह दिया। उसके लिए उहूँगे लोने का लूट तैयार कर दिया। प्रियालता को इसमें कोई सहिह नहीं रहा कि मार्की पोलो ने महान् ज्ञान के त्रित देश का बर्लन किया वह यही देश है। जब वह लौटा तो उसने पब्लिक को बहुत उत्साहपूर्वक सूचना दी और कहा कि इस महान् बनी देश की जोर करना नितास्त धायवयत है।

जब इस लोने के देश की जोर की क्यूबा में तैयारियाँ होने लगीं। मैक्सिको का विजेता 'हरनाओ-बोर्ड त' उस अभियान का

नेता था। कोई स तत्पर साहसी और लगन वाला व्यक्ति था किन्तु
 उसका एक मात्र आदर्श सफलता प्राप्त करना था। वह किसी
 आदर्श या सिद्धान्त से बंधा हुआ नहीं था। महानुत्तम के सोने के
 देश की लोभ के लिए क्यूबा में बहुत अधिक उरसाह था। हर एक
 व्यक्ति इस लोभ में डाला जाहला था। लोगों ने छोड़ और घर
 घर करीबने के लिए अपनी भूमि बेच डाली। मुपर का मांस मसक
 लगाकर बहाइलों में भर लिया गया। लोगों ने हथियार और कब्र
 इकट्ठा कर लिए। सब तैयारी करके कोई स ने अपना टोप पहना
 जिस पर सोने का लम्बा लटक रहा था और उसमें सम्मान के बिगह
 रूप पंख लगे हुए थे। जब सब तैयार हो गए तो उसने अपने बहाइ
 वर मजबूतली भंडा फहराया जिस पर स्पेन का राज्य-बिगह प्रकट
 था और नीचे लिखा था "भाइयो बिन्दास के साथ बास का अनुकरण
 करो क्योंकि उसके मार्गदर्शन में हम विजय प्राप्त करेंगे।

उसने साबियों को सम्बोधित करते हुए कहा "भाइयो मैं तुम्हारे
 लिए आनन्द विजय और पुरस्कार प्राप्त करवा किन्तु तुम्हें उसके
 लिए कठिन परिश्रम करना होगा। महान कार्य कठिन परिश्रम के
 द्वारा ही पूरे होते हैं। घातकियों और निकम्मों को कभी बेमब और
 विजय प्राप्त नहीं होती। यदि मैंने इस अभियान के लिए कठिन परिश्रम
 किया है और जो कुछ मेरे पास था सब को राँध पर लगा दिया है
 तो केवल इसलिए कि मैं उस यद्य को प्राप्त करना चाहता हूँ जो कि
 मेरी नजर में सबसे मूल्यवान है। परन्तु यदि आपमें से कुछ ऐसे हों
 जो यद्य से अधिक बल की मूल्यवान समझते हों तो मुझसे सब-सब

कहें मैं आपको धनगत बन और सम्पत्ति का स्वामी बना दूँगा जिसकी हमारे वैद्यवासियों ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। आप लौच संख्या में घोड़े हैं किन्तु आपका निश्चय हड़ है। आप विश्वास रखिये कि ईश्वर कभी भी स्पेनवासियों का और ईसाइयों से युद्ध में साथ नहीं छोड़ता वह स्पेनवासियों की रक्षा करता है और उन्हें विजयी बनाता है क्योंकि हम क्रिस के भंडे के नीचे युद्ध करते हैं।”

ऐसे उत्साह के बातावरण में १८ फरवरी १५१६ को जहाजी बेड़ा स्पूबा के तट से रवाना हुआ। पापलट अलबराडो जहाजों को ताबपानी से बना रहा था। कैंटोचे अन्तरीप की पार कर और कम्पेची की खाड़ी के तट पर बन्दे हुए कोर्ट स अपने पाँच ती संनिकों सहित उस स्थान पर उतरा जहाँ प्रायः डेरा कुर्ज का नगर है। तट पर मन की हुरा कर देने वाली हवा चल रही थी। कोर्ट स को इसकी क्या कल्पना थी कि वह जिस बीरान भूमि पर उतर रहा है वहाँ एक दिन समृद्धिखानी नगर बनेगा जो पूर्व और वीरीय के व्यापार का केन्द्र होया और नये स्पेन की व्यापारिक राजधानी होया।

कोर्ट स ने एक बीरस विस्तृत बीरान में अपना डेरा डाला। उसके संनिकों ने कुत्तों की डासियों और बत्तों से अपने रहने के स्थान को छायादार बना लिया जिसने मूर्व की तेज किरणों से अपने को बचा सके। मैक्सिको निवागी इन पौरों लोगों को बैरकर समुद्र तट पर घाए और परों के बने लबाड़े और सोने के आभूषण धिबने के लिए लाये। कोर्ट स वहाँ के बावसाह महान ज्ञान के लिए कुछ भेद

लाया था क्योंकि स्पेन भासों का यह बिड़बास था कि वह देश
 मार्को पोलो द्वारा बखित महाम का देश है। उतने मट की
 उन वस्तुओं को मन्तिको के राजा के पास भेजकर यह कहल-
 बाया कि वह स्पेन के बादलाह की घोर से प्राया है और उसके
 दरबार में उपस्थित होना चाहता है। मन्तिको के निबासियों को
 यह सुन कर बहुत प्रादर्य हुआ कि संसार में उनके राजा से प्रताबा
 और भी कोई दूसरा राजा है जो उनके राजा जैसा शक्तिमाली है।
 मन्तिको निबासी अपने राजा को ईश्वर की तरह पूजते थे। वह
 सोने के पालों में खाता था उसकी घोर कोई प्रांज उठाकर देखा
 नहीं सकता था और न बिना प्राजा बोलने का साहस ही कर
 सकता था।

उन मन्तिको बासियों को जिन्हें कोई स मे प्रपना दूत बनाकर
 राजा के पास भेजने का निर्णय किया उन्हें अपनी शक्ति का प्रभाव
 बताने के लिए कोई स मे अपने सैनिकों को सैनिक प्रम्यास करने की
 प्राजा दी। नम देती के मंत्रान पर स्पेन के सैनिकों ने जब प्रपना
 सैनिक प्रम्यास करना प्रारम्भ किया तो मन्तिकोबासी बहुत ही
 प्रपनवेदी प्राबाज ने वहाँ के निबासियों को बहुत दर दिया।
 किन्तु जब उन्होंने तोप अपने की बर्यकर और बराबनी प्राबाज पुनी
 उनमें से पोलों घोर पुयों को निकलते देखा तो वे सबका प्रप।
 उन्होंने यह दृश्य कभी जीवन में नहीं देखा था। जब प्रासे घने जंगल
 में वृक्षों की बाजियों की भकभोरों ही वृक्षों से फूटते ही सारा बग

प्रवेश करपरा जाता था ।

उन भक्तिको निवाली बूतों ने उस तारे दृश्य को कमर्बस पर वेंसिल से खींच लिया और उनके बहाबों का चित्र भी बना लिया जिन्हें वे 'बल गृह' कहते थे । वह चित्र उन्होंने अपने राजा को दिखाने के लिए बनाया था ।

अब वे अपने राजा के पास आए और उन पौरे विदेशियों के अद्भुत कारनामों का राजा से वर्णन किया । उन्होंने अपने राजा को वह चित्र भी दिखलाया । 'मैनडेसुमा' भक्तिको का राजा यह सब देखकर बहुत संकित हो गया । पहले स्पेनवासियों से मिलना प्रस्वीकार कर दिया । पहले सोचा कि उसकी राजधानी इतनी दूर है और मार्ग इतना दुर्गम है कि विदेशी वहाँ तक आने का साहस ही नहीं करेंगे । लेकिन बरने में उसने जो भेद भेजी वह आश्चर्यजनक और अत्यन्त मूह्यवान थी । भेद में पाड़ी के बहिए के बराबर सोने का सूर्य था और उसके भी बड़ा चाँदी का चंद्रमा था । इसके प्रतिरिक्त सोने के जिल्लेने कुले शेर पीले बंदर बिड़िया तथा अन्य बहुत से जिल्लेने थे । कोर्ट स ने निश्चय किया कि राजा चाहे कुछ कहे उस नगर की अवश्य देखना चाहिए कि वहाँ इतना अधिक सोना और चाँदी है ।

यला जिस आदमी के हजारेों मील की लम्बी और अतर्नाक समुद्र की यात्रा की हो उसे इत छोटी स्वत जात्रा का क्या डर होता । कोर्ट स ने बैरा-बुर्ज पर अपना गिबिर लगाकर भक्तिको की यात्र की तैयारियां करना शुरू कर दी । यद्यपि कोर्ट स के साथियों

में लोने धीर चांदी का बेहद सातव था किंग्नु वे उस लम्बी धीर धनु बैरा की कतरनाक यात्रा से घबड़ा रहे थे। वे जानते थे कि वे मुट्टी भर हैं धीर उनको शक्तिशाली समुचे बैरा से मुक्त करना होगा। सैनिकों में घबड़ाहट फैल गई। इसकी सूचना कोर्ट स को मिली। कोर्ट स में प्रबन्ध साहस था। उसने हड़तापूर्वक एक जहाज को छोड़कर सब जहाजों में भाग लगवादी। जहाजों के गड हो जाने से सैनिकों में बेहद घबड़ाहट फैल गई धीर वे बिगोह करने पर उताव हो गए।

कोर्ट स ने कहा "मैंने अपना रास्ता चुन लिया है मैं यहाँ। सब तक रहूंगा कि जब तक मेरे साथ एक भी लापी रहेगा। यदि आपमें से कोई ऐसे कायर है जो इस क्षणभार धीर कतरनाक अभियान के खतरे से डर कर भागना चाहते हैं तो वह उस एक बच्चे हुए जहाज में बैठ जा सकते हैं। वे क्यूंका उस एक बच्चे हुए जहाज में जा सकते हैं। वहाँ पहुंच कर वे यह बतला सकते हैं कि किस प्रकार वे अपने कर्नाडर व साबियों को छोड़कर भाग आए धीर वहाँ सर्वपूर्वक सब बिम की प्रतीक्षा करते रहें जब हम मस्तिष्को की घट्ट संपत्ति से भरे हुए जहाजों को लेकर लौटें।

कोर्ट स ने अपने साबियों के हृदय को ठीक जगह छू बिमा। वे सभी लोने धीर चांदी के लिए बालुर थे। लोने धीर चांदी का सातव उन्हें वहाँ तक खींच कर लाया था। एक बार फिर उनकी छात्रों के सामने लोने धीर चांदी के डेर दिखलाई देने लगे। अपने नेता में उनका विश्वास पुनः जाग्रत हो गया धीर सभी एक स्वर

से बिस्नाए 'मैक्सिको जसो मैक्सिको जसो' इस प्रकार बहु बल अपनी अंतरनाक यात्रा पर चल पड़ा। १६ अगस्त १२१६ का दिन था जबकि इस छोटी सी सेना ने विजय की प्राप्ति और उत्साह को लेकर कुछ किया। आरम्भ में मार्च अगस्त सुम्बर देश में से होकर जाता था। समय बल प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा हुआ देश जहाँ रंग बिरंगी चिड़ियाँ उड़ती थीं मिनके पर घुप में हीरे की भाँति बमकते थे उनकी यात्रा को मनमोहक बना रहा था। तब तक उन्हें किसी भी विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। जो भी मैक्सिको निवासी उनके सामने पड़ते थे भीषण होकर उनसे दूर भाग जाते। मैक्सिको निवासी एक चिड़िया जपी साप को अपना देवता मानते थे। उसके बहुत से मन्दिर थे जिनमें उस देवता को प्रसन्न करने के लिए नर-बलियाँ दी जाती थीं। मैक्सिको निवासियों का विश्वास था कि वह देवता हवा को चलाता है बिजली चमकाता है और बादल बनाता है। लेकिन वह देवता एक दिन वह देश छोड़कर चला गया और यह बहु गया कि वह कुछ समय के बाद घारे जमईबालों के साथ लौटकर समस्त देश पर अधिकार करेगा। यह किबबन्ती और अल्पविश्वास फैला हुआ था। स्पेन के सैनिकों को देखकर मैक्सिकोवासियों को विश्वास हो गया कि अब वह समय आ गया। उनका देवता फिर लौट आया है। जब घारे स्पेन के सैनिक चमकते हुए बिरहबस्तर पहिने हुए चलते थे तो मैक्सिकोवासियों समझते कि वे उनके देवता के साथी हैं और कोई स को वह देवता ही मानते थे। साथ मैक्सिकोवासियों का भी बिम्बु था

प्रत्येक बाब कोर्ट स ने कास को उनके मन्बिरों में स्थापित किया तो उन्होंने प्रसका कोई विरोध नहीं किया ।

बास यह भी कि मैक्सिको में देवता को नर बलि देने का रिवाज था । मैक्सिको में देवदेवता कासि का आसन था । वे मैक्सिको नगर से जो समुद्र तट से जो सी मील दूर था देव का आसन करते थे । देवदेवता एक शक्तिवान् कासि थी । अपनी शक्ति के बल पर उन्होंने अपने से अधिक साम्य कासियों को बलात्कर उनपर अपना आसन स्थापित कर लिया था । उनका धर्म देवता पर नरबलि देने पर आधारित था । कोर्ट स जैसे जैसे आने बढ़ता गया जैसे ही जैसे उसे यह अनुभव होता गया कि साम्य कासियां आसक कासि से बृष्टा करती हैं । फिर पुरानी किबबन्ती कि देवता पीर बरुं लोगों के साथ मैक्सिको पर अपना अधिकार स्थापित करने आबेना, से कोर्ट स को बड़ी सहायता मिली । बहुत सी आसित कासियों का सहयोग और सहायता प्रसको मिल गई ।

कोर्ट स अब एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया था कि जहाँ से मार्ग दुर्गम और पहचानी था । जहाँ के एक प्रभावशाली नेता ने स्पेन कासियों को अपना स्वामी स्वीकार कर लिया और उनकी सेवा में रहने लगा । अब रास्ता अबे पहचानी की घाटियों में से जाता था । कहीं बस हजार फीट की ऊँचाई बढ़नी पड़ी तो कहीं नीचे डाल । दूरी को पार करते हुए कोर्ट स दुर्लभतकाला के अबे भेदान में पहुँचा जो सात हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित था । पंद्रह दिन की यात्रा करने के उपरान्त अब कोर्ट स दुर्लभतकाला के अबे भेदान में पहुँचा

तो वहाँ उत्तम धोर विरोध हुआ। अतः यह भी कि वहाँ के निवास स्वतंत्रता प्रिय थे। मंत्रिसभ के दायक की प्रभुता को वे स्वीकार नहीं करते थे। वे विच्छेद घोषणा के अन्तर्गत कोर्ट से वहाँ पर्यन्त पुनः करना पड़ा। वहाँ के निवासियों ने कोर्ट से के अर्थों से कह जिन्हें तुम वैधता कहते हो हम उन्हें मारकर उत्तम मान जायेंगे धीरे धीरे कि तुम जैसा कहते हो वे क्या उत्तम धोर हैं। भीषण युद्ध हुआ कोर्ट से भी विजय हुई। पराजित हो जाने के उपरान्त दुर्लभसकाला के निवासियों ने स्पेन की प्रभुता स्वीकार कर ली और उनके सहायक बन गए।

कोर्ट से का उनके मुख्य नगर दुर्लभसकाला में भयंकर स्वागत हुआ। वहाँ मंत्रिसभ के राजा मारुतेजमा का राजभूत था। राजभूत साध में बहुत मुस्यवान भेद साधा था। राजा ने कहा कि वह स्पेन की प्रभुता स्वीकार कर उत्तम कर देने के लिए इतत धर्म पर तैयार है कि कोर्ट से धामे न बढ़े। कोर्ट से राजा की कमजोरी को जान गया इततलिए वह चला नहीं आगे बढ़ता गया। जब वह चीनूता के समीप पहुँचा तो राजा के भड़कावे से वहाँ के निवासियों ने कोर्ट से पर धातमण कर दिया। किन्तु कोर्ट से के मंत्रिसभवासी सहायकों और मित्रों ने बहुते से ही सावधान कर दिया था। कोर्ट से सावधान था ही अस्तु पुनः हुआ और चीनूता के बहुत से निवासी मारे गए। पराजित होकर उन्होंने स्पेन वालों की प्रभुता स्वीकार कर ली। मंत्रिसभ की सेना जो नगर के बाहर अंत में खिपी हुई थी अत्यंत अतफत होते चला आन लड़ी हुई।

बौल्लता के पास ही एक भाप्रत ख्वातामुखी पर्वत था। कोर्ट स ने वहाँ के लोगों को प्रभावित करने के लिए कुछ सैनिकों को उस ख्वातामुखी पर्वत पर चढ़ने के लिए भेजा। बुधा पत्पर घोर भयंकर धम्मि की लपटों की परबाह न कर के लोग पहाड़ के मुँह तक पहुँच गए। वहाँ से उनको आश्चर्यचकित कर देने वाला मँक्सिको नगर का दृश्य दिखलाई पड़ा। उन्होंने उस सम्पूर्ण भील को देखा कि जिसमें मँक्सिको नगर तथा धम्म नगर बसे हुए थे। स्पेनवासियों के ख्वातामुखी पहाड़ के मुँह तक चढ़ जाने से वहाँ के भोग उनसे बहुत प्रभावित हुए उन्हें विश्वास ही गया कि वे धम्मस्य देवता हैं।

कोर्ट स वहाँ से ध्राये बड़ा। धब बहु सारा प्रवेश दिखाई देने लगा। इस विजय यात्रा के इतिहासकार डियाज ने लिखा है 'जब हमने उस भील को देखा जिसमें मँक्सिको तथा धम्म नगर बसे हुए थे तो हम भौचक्के रह गए। हमें ऐसा लगा मानो हम स्वर्ग में पहुँच गए हैं और हमारे कुछ सैनिक तो यहाँ तक पहुँचे नये कि क्या यह वास्तविक है? क्या हम स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं। किन्तु इतिहासकार को वास्तविक स्थिति का तुरन्त भान ही गया। उसने लिखा है कि जब हम उस आश्चर्यजनक नगर को देख रहे थे उस समय हम यह वहाँ धूम सकते थे कि हम केवल भारतो से भी कम सैनिक थे।' लेकिन कोर्ट स साहस के साथ ध्राये बड़ा।

तीन गहीने की दुर्गम यात्रा समाप्त हुई। कोर्ट स के सैनिक जब बुलाई में एक दिन प्रातःकाळ मँक्सिको के समीप पहुँचे तो वे उस यात्रा के कष्ट और कफावट को धूम गए और हर्ष से चिल्ला

उठे यही बाणिज्यत नूमि मंजितको है ।

सैनिकों के सामने जो हथियार बा बहु प्रभुत था । जब केतों से लहलहाते मैदान बसबशासी बनकते हुए नगर जिनमें सयन कुर्सी से जरी हुई सामादार पहाड़ियां थी ऐसी मनमोहक बिजलाई पड़ती थी मारों कि बहु परिवों का देश हो । प्रत्येक पग पर सौम्य विधवा हुआ था और बहु जल में बसा हुआ सैनिकों नगर जितमें बनकते हुए कुर्सी और महल बने हुए वे स्वयं की कल्पना लार्बक करता था । जब कोर्ट स सैनिकों में पहुँचा तो उसकी सड़कों पर नगरबासी भुंड के भुंड उन गोरे परवेशियों को देखने के लिए इकट्ठे हो गए ।

यदि सैनिकोंवातियों की बहु अपार भीड़ चाहती तो उन बार तो स्वयंवातियों को समाप्त कर सकती थी किन्तु कोर्ट स के सैनिकों के साहस तथा उनकी शक्ति के कारण वे उन्हें कौतुक के साथ देखते रहे । जब कोर्ट स नगर की दीवार के पास पहुँचा तो स्वयं सैनिकों का राजा मांटेजुमा उतसे मिलने आया । उसके बहुत से सामन्त थे । उसके आगे आगे राज्य के ऊँचे अधिकारी सीमे के बंड लिए चल रहे थे । सामन्त अपने कर्तों पर राजा की पालकी उठाए हुए थे । पालकी सोने की थी और हीरे जवाहरात जड़े होने के कारण बमक रही थी । जो सामन्त उसकी पालकी को उठाए हुए थे वे नये दौर के और उनकी नजर जमीन पर थी । पालकी से उतर कर मांटेजुमा एक सुन्दर रत्नजटित शामियान में गया । उसके लबादे तथा कुतों में पन्ने हीरे और मोती टके हुए थे । कोर्ट स उतरा और उसन राजा का अधिकारन किया । उसके उपरांत कोर्ट स ने

राजा की बतमाया कि उसका उद्देश्य वहाँ के निवासियों को ईसाई धर्म में बीक्षित करना है। उसके उपरान्त उसने स्वयं के अतिशयानी वास्तुशास्त्र के बारे में बर्बा की। कोर्ट स ने माटेबुमा से कहा कि वह अपने देवता की मूर्तियों को छोड़ दे और नरबलि को रोक दे। राजा ने कोर्ट स की इस बात की मानने से इन्कार कर दिया। कोर्ट स को बहुत गुस्सा धामा किन्तु वह अपनी कमजोरी को जानता था। इतने बड़े नगर की बीतने के लिए उसके पास केवल चार सौ सैनिक थे। फिर भी वह गुस्से में बिस्मा उठा 'इस राजा को समाप्त कर देना चाहिए। इस जयसी को सम्मरणा समय व्यर्थ खोना है। हमें इसको पकड़ लेना चाहिए और यदि वह विरोध करे तो उसके शरीर में तलवार घुसेड़ देनी चाहिए। परन्तु उस समय वह सम्भव नहीं था।

वास्तव यह थी कि स्वयं वालों को मैक्सिको में रहने वाली जातियों की मित्रता और सहयोग प्राप्त हो गया था। इसका कारण यह था कि वे कोर्ट स को सूर्य का बीया हुआ पुत्र अपना देवता मानने लगे थे जो कभी लौटने वाला था। इस कारण कोर्ट स ने उनकी सहायता से बीजे से मैक्सिको के राजा माटेबुमा को पकड़ लिया। उसके ईसाई बनने से इन्कार करने पर उसको पकड़ लिया और मरवा डाला। राजा के मरने पर कोर्ट स की कल्पानातीत सम्पत्ति हाथ लगी। वह डेर के डेर मोना मोती और हीरे जवाहरात अपने साथ ले गया। अगस्त १५२१ में कोर्ट स ने मैक्सिको पर स्वयं का फंडा चढ़ा दिया।

जब स्पेन के बादशाह को पता चला कि कोर्ट स ने मैक्सिको के विद्यालय साध्याग्व को स्पेन के लिए बिक्रय किया है तो उसने कोर्ट स का बहुत सम्मान किया ।

मैक्सिको बिक्रय करके ही कोर्ट स रुक नहीं गया । उसने बहुत से अपने बहादुर समीपवर्ती समुद्र-तटों की खोज के लिए भेजे । कोर्ट स के लोबी उत्तर में प्रधान महासागर के तट तक पहुँच गए और प्रग्दर की घोर कैंसीफ्रीनिवा घोर टैंकलास की खोज निकाला । बसिस की घोर प्रनबरेंडी ने आडीमास्ता की खोज निकाला । तीसरे बरने ने हांडुरास की खोज निकाला । हांडुरास में बहुमुख्य धातुओं की बहुत अधिक खानें थीं । तीन वर्ष के प्रग्दर कोर्ट स ने पनामा से मैक्सिको की उत्तरी सीमा तक समस्त देश पर अधिकार कर लिया । उस समय यह सारा विद्यालय प्रबेद्य गया स्पेन कहलाता था ।



आठवा परिच्छेद

दक्षिण अमेरिका की खोज

कोर्टेस की सफलता और मैक्सिको की धानवाण विजय ने नई दुनिया की खोज के लिए लोगों में बहुत प्रबल उत्साह पैदा कर दिया। उस समय स्पेन के प्रत्येक युवक के हृदय में खोज की चाह बाधित हो गई थी। जो लोग बंस्ट-ईंडीज में रहते थे वे तो सोने के रेगों की खोज को सब कुछ छोड़ने की तैयार थे। सोने की खानक में उन्हें घंटा कर दिया था। वे सोने की खोज में कहीं भी जाने की तैयार थे। जिस समय स्पेनवासों ने मैक्सिको पर अधिकार किया उसी समय मैगलान ने महान यात्रा करके यह बतला दिया कि अमेरिका और एशिया के बीच में बहुत विस्तृत प्रशांत महासागर बसा हुआ है। इस जानकारी का यह परिणाम हुआ कि सर्वत्र के लिए यह विचार दूर हो गया कि अताले के द्वीप कहीं बजरीक ही हैं। अतएव स्पेनवासों ने प्राये अताले के द्वीपों की ओर से अपना ध्यान हटा कर अमेरिका की ओर ही अपना ध्यान केन्द्रित कर दिया। अब हम पिबारा द्वारा स्पेन के वावसाह के लिए पैक की खोज की कहानी का वर्णन करेंगे।

पिडारो बन्बापो के साथ डेरियन तक गया था और उसके साथ ही उसने भी डैबी बोडी से प्रयाग महात्तगर के बनजाले महात्तपुर को बेचा था। बन्बापो के साथ ही डेरियन के बलडमर-मय्य को पार कर वह बरिलिण समुद्र में पनामा तक पहुंचा था। वहाँ उसे मान्य हुआ कि बरिलिण में एक महान् जाति निवास करती है। मैक्सिको की ही जाति वह जाति बहुत सम्य भी और उनके देश में सोने और चाँदी की बहुत प्राणें थीं। बहुत से साहसी बोडी उस नए बनी देश की खोज में निकल पड़ते परन्तु पनामा और वेक के बीच एक अत्यन्त लघन और धँबेरा बनाना था। उस अमानक अमन बन को देखकर बड़े बड़े साहसियों का साहम भी समाप्त हो जाता था।

किन्तु पिडारो अत्यन्त साहसी और हृदय निरुद्धमान नामा व्यक्ति था और उस अत्यन्त घात को सम्भव बनाने के लिए कठिबद्ध था। आरम्भ में ही उसको अत्यन्तता मिली। १५२६ में वह एक अज्ञान पर दो आरमियों को लेकर जाता। उसे बरिलिण समुद्र में नौका संभालन का अनुभव नहीं था। समुद्र तट पर रहने वाले इंडियन राजू थे। उसको समुद्र तट पर कोई सुरक्षा नहीं मिल सकती थी। इसका बरिलिणम यह हुआ कि उसके आरमी एक एक करके मरते गए। वेक का घनी देश अतिना दूर है समझने से उसने बहुत घबिह दूर था। अन्त में भूमध्य देश के पान जब ये गाली द्वीप पहुंचे तो वे वहाँ पनामा से आने वाले और जहाजों तथा आरमियों की प्रतीक्षा में रुक गए। पिडारो को यह देखकर घोर निराशा हुई

कि जब केवल एक अहास घाया घोर उत्तम संनिक एक भी नहीं था। बात यह भी कि यात्रा की कठिनाइयों घोर विपत्तियों की खबर पनामा में बस चुकी थी। इस कारण वेक की खोज के लिए कोई भी जाने को तैयार नहीं था। पिज्जारी के साथ भी मुट्टी भर सोप रह गए थे उनकी इयमीय बशा थी। उनके पास जाने को नहीं था समुद्र तट पर भी कुछ बख्शी इत्यादि मिल जाती थी वे उसी पर मुबर कर रहे थे। उन्होंने पिज्जारी से प्रार्थना की वह बापस लौट बसे क्योंकि वे उस यात्रा की कठिनाइयों को अधिक सहन नहीं कर सकते थे। उस समय वह अणु उपस्थित हुआ कि जब जम्म बात नेता के मुख प्रपट होते हैं। अपने साथियों की यह बात सुनकर पिज्जारी ने स्वान से तलवार निकाल ली घोर रैते में पूर्ण से पश्चिम तक एक लकीर खींच कर उसने अपने साथियों से बखिल की घोर बुझकर कहा 'मित्रो जब घोर कठिन परिश्रम सुख नमता भीयल तुजान घोर बर्षा तथा धृत्यु है घोर इस घोर धारान घोर लख है। उबर वेक का धरयन्त बनी बैध है घोर इपर पनामा घोर उत्तमी निर्बन्ता है। मैंने अपना रास्ता चुन लिया है मैं बखिल की घोर बार्जया।'

ऐसा कह कर उसने उब रैजा को पार किया घोर बारह साहसी व्यक्ति उसके साथ बने। डेय साहलहीन बकै हुए घर (पनामा) की घोर लौट गए। वह छोटा सा साहसी घोर हड़ निरखय बाला इत घाये बखिल की घोर बड़ा। केवल दो दिन की यात्रा करने के उपरान्त वे वेक के तट पर पहुँच गए।

वहाँ के निवासियों से बात करके पर पिज्जारी को विश्वास हो गया कि वह बैंग बनवान है और वहाँ से अनन्त धन प्राप्त किया जा सकता है। यह जानकारी प्राप्त करके पिज्जारी श्रीमता से पनामा की और सीबा। वहाँ से पिज्जारी स्पेन गया और स्पेन के बारगाह ने उसने पैसों को बिजय करके की आज्ञा प्राप्त की। पिज्जारी के इस अभियान में कोर्ट स ने बहुत धार्मिक सहायता की।

फरवरी १३३१ में पिज्जारी के सेनापतित्व में तीन बहादुर बख्शिया की और चल पड़े। उसके साथ १५ सैनिक और ३६ घोड़े थे। पिज्जारी पैसों को कर तट पर बरू गया और १३३२ के फतह के मौसम में अरब की ओर बढ़ा। 'कुबको' पैसों की राजधानी थी। उस पवित्र नगर में सूर्य का एक भव्य और विजाल मन्दिर था। नई दुनियाँ में ऐसी कुबको इमारत और कुमरी नहीं थी। किन्तु वहाँ का राजा वहाँ न रहकर 'कजामासेया' नामक स्थान में रहता था। अतएव पिज्जारी अपनी छोटी सी सेना के साथ उस ओर बढ़ा।

स्पेनवासियों के पैसों के तट पर उतरते ही समस्त बैंग में यह अरब फैल गई थी कि गोरे बाड़ी पाते अजनबी लोग समुद्र से आए हैं जो कि समझते हुए बदन पहिने हैं विभिन्न प्रकार के भयंकर पशुओं पर बड़े हुए हैं और उनके पास घातक बिजली की कड़क पैदा करने वाले दास्र हैं।

कोर्ट स की भाँति पिज्जारी ने भी मुट्ठी भर सैनिकों को लेकर पैसों के अरब प्रवेश किया। उतरे हुए में भी पैसों की अनन्त धन

सम्पत्ति को प्राप्त करने की भावना थी। उसकी घातों के सामने
 पैर के राजा की घमण्ड यम सम्पत्ति की बकाबोंप भी घौंर बहु उस
 समस्त सम्पत्ति को प्राप्त करना चाहता था। परन्तु पित्रारो घौर
 उसके लक्ष्य के बीच ऐग्रीम पर्वत माता के दुर्गम घौर
 की बीवार थी। उन ढँचे पहाड़ों पर बनी हुई स्पायी बर्द प्रमकती
 हुई बिबलाई देती थी। उन ढँचे घौर तंय हरो में से पित्रारो को
 जाना था। पहाड़ों का ढाल देता मयानक वा कि भुङ्कतबारों को
 घोंरों से उतर कर रेंय कर चलता पड़ता था घौर किसी तरह से
 वे घोंरों को झर पड़ते थे। उन पहाड़ों में भयंकर गहरे गड्ढे
 घौर गगन चुम्बी कीटियां थीं। ऐमे दुर्गम मार्ग में चलते हुए बराबर
 यह धाउंका भी कि पैर के निवासी भारी संख्या में उन पर प्रमकल
 करके वहीं उग्हें बिबकुल समाप्त न कर दें। वहाँ भयंकर घीत का।
 बीसे बँसे वे लीय झर पड़ते जाते थे शीत प्रधिक होता जाता था।
 साहल के साथ पित्रारो घौर उत्क सैनिक बड़ते बड़ते बीटी पर
 पहुँच गए। वहाँ से उतार प्रारम्भ हुआ जो बहुत ही घतरमाक
 था। सात दिन लगतार घतरत रहने के उपरान्त वे ऐसे स्थान पर
 पहुँचे वहाँ से कजामालेया की सुम्बर घाटी का मनोरम दृश्य
 बिबलाई पड़ता था। उस मनोरम घाटी में बहु प्राचीन नगर सूर्य
 की रोगनी में बसक रहा था। किन्तु घीम ही स्थितवातियों का
 दृश्य निराशा से भर गया। उग्होंने देखा कि मीनों तर घँट की सेना
 के तम्बू घड़े हैं। पित्रारो इसके लिए तैयार नहीं था। परन्तु घब
 बायत तीरमे का कोई रास्ता भी न था। प्रतएव पित्रारो ने यही

निश्चय किया कि अब तो जान पर खेल कर घाने ही बढ़ना चाहिए।
 पैर की सेना में स्पेनबासियों की शिक लिया जा। इसका कारण यह
 था कि पिजारो के सैनिक स्पेन का भंडा लिए हुए और बिरहुबस्तर
 पहुंचे हुए थे जो सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे। अब स्पेन की
 सेना पैर की सेना के समीप पहुंची तो पैर का बाबशाह
 जो अब्राहारातो से सदा हुआ था एक सौते के सिंहासन पर
 बैठा हुआ तीस हजार सेना के साथ जनते मुठ करती
 जाता। बड़ा भयंकर समय था। पिजारो समझ क्या कि मृत्यु
 नजदीक है क्योंकि तीस हजार सेना के सामने डेढ़ सौ सैनिक क्या
 कर सकते थे। उसको समझ में आ गया कि बचने का एक ही रास्ता
 है कि राजा को किसी प्रकार पकड़ लिया जाये। उसने अपनी सेना
 को संकेत किया और सेना ने बाबशाह के सिंहासन पर घाकमल
 कर दिया। जबरन मुठ हुआ परन्तु बाबशाह पकड़ा गया। पैर के
 बाबशाह ने सोना लेकर अपना सुठकारा कराना चाहा। वह जानता
 था कि मघनि स्पेनवासी अपने धर्म को रक्षाना चाहते हैं और उनके
 लिए उनके मन में उत्साह है परन्तु वे उससे भी अधिक सोने के
 लालची हैं। उसने पिजारो से कहा कि मैं उस कमरे को जिसमें मैं
 बंद हूँ उसकी जेबों तक सोने से भर दूंगा जहाँ तक मेरा हाथ
 पहुंचता है। उसने लड़े होकर बीमार पर निशान कर दिया। राजा
 के आदमी मूठों से सोना साकर उस कमरे को भरने लगे। जब
 सोना आ गया तो पिजारो ने राजा को मार डाला। ऐसा बुरित्त
 बिरहासपात स्पेनवासे ही कर सकते थे। इतिहास के पन्नों में

स्वेन वालों का यह कुत्कृत्य सबैव उनके लिए घोर नरका की बात बना खोपा । विजारो को सगभय ३ लाख पौड के मुस्य का सोना मिला ।

राजा के मारे जाने के उपरान्त वैक के लोगों का साहस समाप्त हो गया । विजारो को वैक विजय करने में फिर कोई कठिमाई नहीं हुई । भयभीत वैक निवासी उन्हें वही पुष्य सूर्य के पुत्र मानने लगे ।

एक वर्ष सूर्य के ये पुत्र स्वेनवासी वैक की राजधानी कुवाको में पुसे । वहाँ उन्हें इतना खजाना मिला जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी । परन्तु वहाँ पहुँचने पर विजारो को अपने ही देशवासी प्रसिद्ध खोजी घनमागरो से पूछ करना पड़ा । बात यह थी कि घनमागरो ने चाइल के समुद्र तट की कई सी मील भूमि पर अधिकार कर लिया था । वह चाइल के भीतरी भाग में प्रवेश करना चाहता था किन्तु वहाँ इतनी अधिक ठंड थी कि उसके प्राइमी और छोटे बंधकर शीत के भारे परने लगे । इसके बिच्छु चाइल निवासी खान पहिन कर रहते थे और बड़े लड़ाकू थे । इस कारण उन पर विजय प्राप्त करना साठाम नहीं था । घनमागरो का मानना यह था कि मैंने इस क्षेत्र को पहले खोजा है इस कारण कुवाको उसका है । इधर विजारो का मानना यह था कि वैक के राजा को उसने मार कर वैक विजय किया है इस कारण वैक की राजधानी कुवाको उसका है । बात यह थी कि दोनों की धाँक कुवाको की अपार सम्पत्ति पर लगी हुई थी । एक ही देश के निवासी

होने पर भी वे दोनों लालची लोभी निकड़ भए। उस पुत्र ने अलमायरो मारा गया।

अब पिजारो ने कुन्नाको को मनमाना लुटा। पैर का अन्त सौना अब अहाबों में भर भर कर स्पेन पहुँचने लगा तो स्पेन में हमबल मच गई। हर एक युवक सोने के बेशों की खोज में निकल पड़ा। वे पनामा पहुँचने लगे और वहाँ से गई दुनिया के विभिन्न भागों में सोने की खोज में जाने लगे। सोने की खोज में उन्होंने वहाँ के निवासियों के साथ बहुत निर्बयता का व्यवहार किया। उनका सोने के लिए इतना गह्रा लालच और उनकी क्रूरता को देखकर वहाँ के निवासियों की उनसे पहरी चूणा हो गई। इस सम्बन्ध में एक कहानी बहुत ही मनोरंजक है। पारिवासी इंडियनों ने कुछ स्पेनवासियों को पकड़ लिया। उनके हाथ पाँव बाँध कर उन्हें जमीन पर गिरा दिया और सोना विधत्ता कर उनका पुह में डाला और कहा "ये ईसाइयो सोना लाओ।"

उस समय दक्षिण अमेरिका की खोज करने के लिए बहुत से खोजी निकल पड़े थे। उनमें एक श्रीरेलाना था। उसने पिजारो के एक भाई के साथ सिनामन के सघन बनों की यात्रा की थी और ऐंग्डीज पक्ष मासा की अग्य स्वर्ण प्रदेष्टों की खोज में पार किया था। पिजारो ने यह अभियान तीन सौ पचास स्पेनवासियों और चार हजार पारिवासी इंडियनों को लेकर १५४० में किया था। वह चाहता था कि उस महाद्वीप के सुदूर भीतरी भाग को भी लौज निकाले। यह यात्रा अत्यन्त कष्टदायक और भयानक थी। भीषण

दुष्काल और मुकम्ब के कारण मनुष्य और पशु सभी घबड़ाए हुए थे।
 मुकम्ब प्रस्ता पृथ्वी प्यटती और सैकड़ों घर उसके प्रागर समा करते।
 वहाँ मूसलापार बर्षा होती और इतनी भयंकर बाढ़ आती कि राते
 बंध हो जाते। ऐंग्रीज की ज़िंबी पर्वतमासा को पार करते हुए ठंड
 इतनी अधिक थी कि शीत के कारण मनुष्य और घोड़े मर जाते।
 सारी कठिनाइयों को सहते हुए स्पेनवासियो का इस एक नदी के
 पास पहुँचा जिसके पार सोने का देश था। उनका पास जाने पीने
 की सब सामग्री खुद गई थी। वे बगली फलों पर पुंजर कर रहे
 थे। कुछ दूर तक नदी के किनारे किनारे चलने के बाद पिजारो ने
 एक नाव बनाने का निश्चय किया जिससे कि वह नदी के द्वारा
 भोजन सामग्री की तलाश कर सके। पिजारो और उसके मुक्य
 सहायक एरोस्ताना ने सब प्रादमियों को काम पर लगा दिया। वे
 बोलों भी नाव बनाने में जुड़ गए। उन्होंने नावों में लपाने के लिए
 कीलें बनाने की भट्टी तैयार की और जहाँ तक लकड़ी के कोपसे से
 लोहा गताने का प्रयत्न किया। बर्षा अधिक होने से कोपसे को बला
 तकना एक प्रयत्न कठिन काम था। उन्होंने घोड़ों के नालों से कील
 बनाईं जिनको भोजन के लिए मार कर या लिया गया था।
 इराकूल की बपहू उन्होंने वेड़ों से निकाले हुए पोंर को काम में
 लिया। इस प्रकार उस नाव को बनाकर उन्होंने नदी में उतार
 दिया। बार ही भील तक वे नदी की धारा में चलते रहे। किन्तु
 बल प्रदेश में बंपली फलों तथा कर्बों की कमी होती गई और प्रादमी
 भूख से मरने लगे। अतएव पिजारो ने एरोस्ताना को प्रस्ता ही कि

बहु पचास प्राबन्धियों को साथ लेकर शीघ्रता से नबी की धारा के साथ जाने और उस प्रवेश से जिसके द्वार में उसने सुन रखा था भोजन सामग्री नाम में भरकर ले जाने ।

घोरेलाना नबी में नीचे की ओर बस पड़ा किन्तु उसे कोई पांव या डेरा नहीं मिले । लपट बनों तथा जलमय मीठानों के प्रतिरिक्त उसे और कुछ नहीं दिखलाई दिया । बहु नबी वास्तव में एक बहुत बड़ी नबी की सहायक नबी मात्र थी । वास्तव में बहु प्रवेशन का महानद था । घोरेलाना ने उस महानद में जाने का निश्चय किया । उसने फिरारों को छोड़ दिया । बात यह थी कि उसके प्राबन्धी बहुत बक चुके थे । जलधारा इतनी तेज थी कि उसके विरुद्ध उठे सौदगा उनके लिए सम्भव नहीं था और वहाँ कोई भोजन सामग्री भी नहीं थी जिससे वे अपने मुँह और कुली ताबियों के लिए ले जा सकते । साथ ही इस बात की भी सम्भावना थी कि वे सोने के उस देस में पहुँच जाने जिसकी कि वे खोज कर रहे थे । उसके ताबियों में से कई ने घोरेलाना के इस व्यवहार का प्रभाव अपने पीछे छोड़े हुए ताबियों के साथ विद्रोहपात करने का ओर विरोध किया । घोरेलाना ने उन विरोधियों को अपने ज्वलन के फिनारे ज्वाला मरने के लिए उतार दिया और बहु जाने बड़ गया ।

३१ दिसम्बर १९४ को जाने की कुछ नहीं रहा । उन्होंने अपने झूठों और काठियों को कुछ जंगली बड़ी बूटियों के साथ ज्वालना और ज्वाला और सोने के देस की खोज में चल पड़े । इस नबी की धारा में घोरेलाना तथा उसके प्राबन्धियों को बड़ी विचलितियों

घोर कम्बों का सामना करना पड़ा। जब वे उस तिब्ब नदी में घबनी नाम के रहे थे तो उन्हें वहाँ के प्रादिनिवासी इंडियनों से युद्ध करना पड़ा। उन्हें एक नई नाम बनानी पड़ी। कम्पनातीत कठिनाइयों का सामना करते हुए वे अन्त में अगस्त १८४१ में कुले समुद्र में पहुँच गए। वे दो हजार मील के सपभग नदी में बल बुके थे। उन्होंने वहाँ घास के रस्से बनाए घोर कम्बलों के पाल बनाए घोर कुले समुद्र में बल पड़े। कुछ दिनों के उपरान्त वे पश्चिमी द्वीप समूह के एक द्वीप में पहुँच गए।

पिचारी घोरनामा की प्रतीक्षा करते करते जब थक गया तो बुकी होकर वापस लौट गया। वह दो वर्ष के बाद पैर लौटा। उसके साथ चार हजार तीन सौ पचास व्यक्ति इस यात्रा पर गए थे उनमें से केवल अस्सी व्यक्ति जीवित लौटे। शेष मर गए।

सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक स्पेन तथा पुर्तगाल के साहसी जोबी वृम्बी के विभिन्न भागों की साहस भरी यात्राएँ करती रहे घोर अपने अपने देशों को नम बीजत से भरते रहे। उस समय तक इन औपनिषिक जोत्रों का एक मात्र कार्य इन दो देशों में ही किया। सोलहवीं शताब्दी के मध्य के उपरान्त अन्य देशों में भी इस घोर ध्यान दिया।



नवा परिच्छेद

अप्रेजों का क्षोज अभियान

इङ्गलैंड का सोतेरुंसे जाय पड़ा था। एीब की बीड़ में बहु बहुत पीछे रह गया था। मसाले के द्वीपों पर अधिकार बनाने का समय निकल गया था। भारत की ओर में बहु पिछड़ गया था। धारा अन्तरीय की बूँड निकालने में बहु पीछे रह गया था और नई दुनिया की बूँडने में भी बहु बहुत पिछड़ गया था। पुर्तगाल वालों का पूर्व के मार्ग पर अधिकार था और स्पेन वालों का महाल के द्वीपों को पहुँचने वाले पश्चिमी मार्ग पर अधिकार था और बे लमी मार्ग कंबे (चीन) को जाते थे। इङ्गलैंड उस स्वजित और बन घाम्य से पूर्व कंबे (चीन) बेग के लिए उत्तरी मार्ग की खोज क्यों न करे ?

बिस्मलक का निवासी मास्टर बार्ने को कंबट का मित्र था के मन में यह विचार उठा कि यदि उत्तर में समुद्र मौटाबहन के उपपुत्र ही तो मसाले के द्वीपों तक पहुँचने के लिए पुर्तगाल और स्पेन की अपेक्षा छोटा रास्ता बूँड निकाला जा सकता है।

कुछ लोगों ने शंका प्रकट की कि उत्तरी समुद्र बर्फ से बने

रहते हैं और उत्तर के प्रदेश इतने ठंडे हैं कि वहां कोई व्यक्ति यह ही नहीं सकता।

बार्ने ने साहस के और बीरता के साथ उत्तर दिशा दुनिया का कोई भाग ऐसा नहीं है जिस पर मनुष्य न पहुंच सके और न कोई ऐसा समुद्र है जिसमें बहाव न चल सके।

इस एक विश्वास तथा बीरता और साहस से परिपूर्य मनोवृत्ति को लेकर इंग्लैंड इस खोज प्रनियान में उत्तरा और उत्तर के कठिन मार्ग की खोज प्रारम्भ की। एडवर्ड एडवें के शासनकाल में एक कम्पनी बार्नेट एडवेंचरर्स के नाम से स्थापित की गई जिसका प्रमुख गये रैशों की खोज निकालना था। उसका प्रथम चर्नर कंबट था जिसने न्यू-फ़ाउन्डलैंड को बूझ निकाला था। १३३३ में इस कम्पनी ने तीन छोटे बहाव सर हग-विन्सीपबी तथा रिचार्ड बेंसलर के नेतृत्व में उत्तरी समुद्र की खोज के लिए भेजे। वे अपने साथ इंग्लैंड के बालक बारासाह के दुनिया के सभी देशों के बारासाहों और नरेशों के नाम पत्र लेकर गये थे।

सर हग-विन्सीपबी एक साहसी और बहादुर मनुष्य था। उसने 'बोना देस्परेडो' नामक एक सौ बीस टन के छोटे से बहाव पर इंग्लैंड का राष्ट्रीय ध्वज कहराया। दूसरे बहाव पर रिचार्ड बेंसलर था जिसको सौ बड़ी धड़ा और घाबर से देखते थे। उन लोगों को उत्तरी भाग से खोज तक पहुंचने के बारे में ऐसा महरा विश्वास था कि उन्होंने अपने बहावों पर छीसे का हुन्का पेट करवा लिया जिससे कि परम देशों के छोड़े बहाव को मुकतान न पहुंचा सके।

सब तैयारी हो जाने पर २ मई का दिन यात्रा आरम्भ करने के लिए निश्चित हुआ। यात्रा करन वाले बल में बितने भी लोच के सभी अपने स्वजनों और प्रेमियों से मिल रहे थे। बड़ा ही कस्तुरापूर्ण दृश्य था। पत्नियाँ पतियों को बिदा कर रही थीं बहिनें भाइयों की और माता पिता पुत्रों को आशीर्वाद दे रहे थे। सभी निश्चित दिन तैयार थे। सभी जहाजों में सवार होकर प्रीतविष पहुँचे जहाँ उस समय उस्ताह का दरबार था। दरबारी तथा अन्य साधारण लोग सभी जन खोजियों को देखने के लिए झुंड के झुंड समुद्र तट पर पहुँचे। समुद्र तट पर घण्टा भीड़ थी। लोग इमारतों पर चढ़े हुए अपने साहसी बेशबातियों को देख रहे थे। अपने बेशबातियों को इतने उस्ताह से उनको बिदाई देते देखकर नाविकों में उस्ताह की लहर फैल गई और उन्होंने इतनी जोर से अवधीव किया कि आकाश गूँजने लगा। किन्तु राजा एडवर्ड बीमार होने के कारण उस उत्सव में सम्मिलित न हो सका।

दरबार के साथ जहाज बुलबिब तक गए और फिर ईपलड के पूर्वी तट के टिनारे किनारे चलने लगे। अंत में अनुकूल वायु के साथ उन्होंने अपने पाल जोल दिए और लुते समुद्र की ओर बढ़ गये। अपनी मातृभूमि को अन्तिम नमस्कार करते हुए सबों की आँसों में आंसू धा गए। स्वयं रिचर्ड बैसलर के मुख पर उदासी छा गई क्योंकि वह पीछे अपने दो छोटे बच्चे छोड़ गया था। सभी को इस बात की आशंका थी कि क्या वे फिर अपनी मातृभूमि के दर्शन कर सकेंगे।

तीनों जहाजों ने बुनाई के मध्य तक उत्तरी समुद्र की पार कर लिया, और वे नार्वे के समीप पहुँचे। नार्वे के सम्पन्न द्वीपों में तथा छे छे समुद्री तट में होकर वे धीरे धीरे बढ़ने लगे। उत्तर में धीरे धीरे हुए बिलीषबी अपने जहाजों को सोफीटन द्वीपों के पास ले गया। यह द्वीप डेनमार्क के राजा के अधिकार में थे और यहाँ यनी आबादी थी। चलते चलते यह तीनों जहाज उत्तरी अल्तरीप की भी पार कर गए।

उत्तरी अल्तरीप की पार करते ही समुद्र अचानक ही उठा। समुद्र इतना अचानक और अचानक ही गया कि जहाज अपने निर्धारित मार्ग पर नहीं चल सके। एक जहाज एक और तो दूसरा जहाज [बरी और बड़े गया। यह समय अत्यन्त खतरा का था। हंग बिलीषबी अचानक एक पर उड़ा था। नार्वे और समुद्र और नर्वेन कर रहा था। फिर भी उसने रिचार्ड बेंडनर से विनम्रता कर कहा कि वह प्रयत्न करे कि उसका जहाज उससे दूर न चला जाये। बरगु समुद्र का वेग इतना अधिक था कि जहाज की निर्धारित मार्ग पर चला सकना सम्भव नहीं था। जहाज पत्तों की तरह उड़ रहे थे। सब प्रयत्न व्यर्थ हुआ और वे दोनों छोटे जहाज एक दूसरे से टूटकर हो गए और फिर कभी नहीं मिले। बिलीषबी का जहाज हवा से अचानक वेग से 'भोवा-बेंडनर' की ओर चला गया।

मौजब अराब का अचानक भील पड़ रहा था। अतएव बिलीषबी ने सत्यलैंड की भूमि पर जाड़े में रहने का निश्चय किया। उसने अपने आदिमियों को उस प्रदेश की खोज के लिए भेजा किन्तु

साधारण का कोई भी बिगड़ नहीं मिला। उस प्रदेश में मासु सोमड़ी तथा अनेक प्रकार के घग्घ पशु तो थे किन्तु मनुष्य का नाम भी नहीं था। जैसे जैसे जाड़ा अधिक पड़ने लगा बर्फीली हवाएँ चलने लगीं। समस्त प्रदेश बीरान तो था ही अब वर्ष से भी डक गया। इस जमा देने वाले ऋतु में उन मुट्टी भर घंघों ने सैपसंड के उस बर्फीले प्रदेश में किस प्रकार अपने दिन काटे कोई नहीं जानता। जनवरी १३३४ में बिलोपदी जीवित था उसके बाद कोई कुछ नहीं जानता। सब समाप्त हो गया। उन साहसी खोजियों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया।

उपर रिचार्डसन की खबर से जिसका जहाज बिलोपदी से दूर भटक गया था। रिचार्डसन जब दूर भटक गया तो बहुत दुःखी हो गया। परन्तु फिर भी वह साहस के साथ उस घनजाने प्रदेश की ओर बढ़ता गया। चलते चलते वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ कि रोज़नी नहीं थी। परन्तु वहाँ निरन्तर सूर्य की रोज़नी ओर चलकर उस विस्तृत समुद्र पर बिगरी रहती थी। एक बड़ी छाड़ी को देखकर अपने जहाज को लेकर वह उसमें घुसा और उसने वहाँ अपना लंगर डाल दिया। वह कस का उत्तरी प्रदेश था और वह इतने सागर में पहुँच गया था। वहाँ उसने मनुष्यों से मित्रता स्थापित कर ली। मनुष्य घंघों के भीमकाय जहाजों को देखकर बहते तो इतने भयभीत हो गए कि वे उन्हें देखते ही भाग जाई हुए। परन्तु योड़ी ही देर बाद जिनमें विदेशियों के प्रति विश्वास उत्पन्न हुआ और वे अपने पैरों में निर कर उनका दर्शन करने

सयें । रिचार्ड ने उनको बड़ी स्नेह से उठाया और इतारों तथा भाव-
 भविमा से उन्हें घादबस्त किया कि हम तुम्हें पकड़ने या मारने नहीं
 भाए हैं । हम तुम्हारे मित्र हैं । सम्भव हो जाने पर वे शीघ्र इन
 प्रधानों मेहमानों के लिए भोजन सामग्री लाए ।

इसके उपरान्त वे मद्रुए अपने राजा के पास यह सूचना देने
 गए कि एक विचित्र आति के शीघ्र भाए हुए हैं जो बहुत ही सम्भव
 तौर घातीय हैं ।

यह सूचना मिलने पर मस्बोनबाई अपना स्वतः के राजा ने
 रिचार्ड को मास्को बुला भेजा । यह यात्रा बिना पहिए की पादियों
 (स्नेह) के द्वारा बर्फ पर हुई । यह यात्रा भी बड़ी कठिन और
 बका देने वाली थी क्योंकि मार्गदर्शक रास्ता मूल गया और लगभग
 रैड हजार मील की लम्बी और बहुरायक यात्रा करने के उपरान्त
 रिचार्ड अंतसर मास्को पहुंचा । मास्को उस देश की राजधानी और
 मुख्य नगर था । वह इतना बड़ा था जितना कि संभन अपने उप
 नगरों सहित बड़ा था । जब रिचार्ड अंतसर रामा के महल के समीप
 पहुंचा तो उसकी तो बनी दरबारियों ने जो सोने के बरत पहिने थे
 धरपत्नी की । राजा एक बहुत ऊँचे तिहासन पर बैठा था । उसके
 सर पर सोने का मुकुट था और हाथ में एक तमबार थी जिसकी
 पूंठ में हीरे और जवाहरात बड़े थे । रिचार्ड तथा उसके साथियों ने
 राजा का अभिवादन किया और अपने राजा का पत्र दिया । राजा
 ने पढ़वाई छटी का पत्र बड़े चाव से पढ़ा । उस समय रिचार्ड को यह
 ज्ञान नहीं था कि बालक राजा मर चुका था और उसकी बहिन मैरी

तिहासत पर भी । राजा ने उन संघर्षों की लम्बी बाढ़ियों में बहुत बधि बिछाई । इसका कारण था कि रूस में यह भाग्यता थी कि लम्बी मोटी घोर पीले रंग वाली बाढ़ी भयवान का प्रसाद है ।

राजा ने एडवर्ड स्लैट के नाम एक पत्र बिया घोर घतमें इंग्लैंड को रूस से व्यापार करने की याता थी । रूस से बिदा होकर रिचार्ड बंसलर सकुशल स्वदेश लौट आया । घतने रत का विवरण बिलबालियों को सुनाया । इससे मर्चेट एडवर्डार्स को उल्लाह उत्पन्न हुआ घोर कम्पनी ने इत बार अधिक बहाव उत म्हुम्न देस से व्यापार बढ़ाने के लिए मेरे बिलके बारे में बे कुप्र भी नहीं जानते थे ।

इस बार उत सहायी बड़े का नेता ऐम्बनी बैनकिन्सन चुना गया । बैनकिन्सन एक बड़ निरुपय बाला घोर बतुर ध्यति था । वह चार मन्त्रे घोर मजबूत बड़े बहावों को लेकर १९ मई १९३७ को रूस की घोर चल पड़ा । वह बो पुलाई को उत्तरी घन्तरीय पहुँचा । कुप्र विनों के उपरान्त वह उत स्वान पर पहुँचा जहाँ हफ-बिलौपबी तथा बसके साथी घर्यकर घीत में ठिठुर कर मर गए थे । घतने सेंट निकोलस छाड़ी में लंपर डाला जहाँ से घतने स्तेव पाड़ी ली घोर नास्की गया । जहाँ उतने रत के राजा को महारानी का पत्र बिया । घत समय लमस्त देस बर्फ से डका हुआ था । इस कारण वह उत समय यात्रा नहीं कर सकता था । मस्मी घाने पर एप्रिल १९३८ में वह मास्की से बसिए की यात्रा के लिए बस पड़ा । बात यह थी कि उसकी कम्पनी की याता थी कि वह बीरे (बीन)

का स्थान मार्ग खोजने का प्रयत्न करे। जैनकिम्बान ने इस के राजा से उन सभी देशों के राजाओं के नाम पश्चिमपत्र ले लिए जिनके देश में से होकर उसको जाना था। जैनकिम्बान मास्को से बाल्या गया और वहाँ से उसने एक क्सी सेनापति के साथ नदी द्वारा दक्षिण की ओर यात्रा की। वह दसौ सेनापति दक्षिण में अस्त्रा-जान की सेना का संचालन भार लेने के लिए जा रहा था। अतएव उसके साथ पाँच सौ नार्वे की जिनमें सैनिक सप्तमरी भीजन सप्तमरी तथा व्यापारी भास सब हुंघा था। इस कारण इस यात्रा में जैनकिम्बान को कोई कष्ट नहीं हुंघा।

तीन महीने सप्ताहार घाना करने पर और एक हजार की सौ भील की यात्रा करने के उपरांत जैनकिम्बान दक्षिण में पहुंच गया। अस्त्राजान नगर में व्यापार की कोई यात्रा या सम्भावना न देखकर जैनकिम्बान ने साहज के साथ निश्चय किया कि वह कैस्पियन समुद्र तक बाल्या में नौकावाहन करे और देखे कि क्या प्रागे चीन (चैये) का मार्ग मिल सकता है। उसने पहिले कभी भी कैस्पियन समुद्र में कोई भी जहाज ईपसंड की राह प्यबा को पहरा कर तथा अंग्रेजी नाविकों द्वारा संचालित होकर नहीं घाया था। यह पहरा अक्सर था कि इंगलैंड के नाविकों ने कैस्पियन समुद्र में नौका संचालन किया था। हवा बिजड की ओर बायु का वेग बहुत अधिक था। अतएव तीन सप्ताह तक सप्ताहार तेज विरोधी बायु से मुड करती रहने के बाद जैनकिम्बान कास्पियन समुद्र के पूर्वी तट पर पहुँचा। वहाँ उसने एक हजार ऊँठों का कारवाँ इकट्ठा किया और प्रागे चल दिया।

जब चीनकिस्तन कास्पियन समुद्र के पूर्वी तट पर उतरा तो उसे यह खीझ ही पता चल गया कि वह धीरों धीरे डाकुओं के देश में पहुँच गया है। वह वहाँ के सुस्तान से मिलने गया जो स्वयं एक प्रसिद्ध डाकू था। उस तातार सुस्तान ने चीनकिस्तन की यात्रावस्तु की धीरे उसको बंगसी घोड़े का मांस तथा घोड़ी का दूध खाने के लिए दिया।

वहाँ से यह छोटा प्रजेजों का दल चल पड़ा। तीन सप्ताह तक वे बीरान्त देश में यात्रा करते रहे। वहाँ न तो नदियाँ थीं न याँव के घीर न कोई यात्रावाही ही थी। तीन सप्ताह की कठिन यात्रा के बाद वे घानतस नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने को लावा किया और थोड़ा बिधाम किया। एक दिन पूरा मनोरंजन करके वे लोग फिर जाने चल दिये। सो भीत उस नदी के किनारे किनारे चलने के बाद उन्हें फिर एक बहुत बड़ा ऐमिस्तान मिला। वहाँ उन पर फिर डाकुओं ने घातमाला किया।

बड़े दिन के समीप वे सोय बुजारा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्हें ज्ञात हुआ कि वहाँ के सीबायर इतने निर्धन थे कि उनसे अधिक व्यापार की कोई यात्रा नहीं हो सकती थी। यद्यपि वहाँ भारत तथा सुदूर पूर्व से बहुत से कारवाँ आए हुए थे। वहाँ पहुँच कर चीनकिस्तन को पता चला कि नीबल मुड़ों के कारण सीबे का मार्ग बड़ा दुष्सा है। यात्रा था रहा था अतएव चीनकिस्तन वहाँ कुछ महीने रुक गया। वहाँ से ६ ऊँटों का कारवाँ लेकर वह कास्पियन समुद्र की धीरे लीटा। कास्पियन समुद्र से यह मास्की की धीरे बड़ा धीरे दो सितम्बर को वह मास्की पहुँचा। उसने मास्की में रुक के राया से

फिर घेर की घोर कंबे की कुछ वस्तुएं राजा को समर्पित कीं। जिनमें पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। जैनकिासन इस में कुछ समय बका घोर फिर इंगलैंड पहुँचा।

इंग्लैंड प्रथम पूर्व में प्रकले वेर यज्ञा रहा पा। उत्तर प्र कीय समुद्र के मार्ग से पूर्व तक पहुँचने में इंगलैंड प्रसन्न हो गया। प्रत्यक्ष महारानी एलिजबेथ ने सेबैट कम्पनी को १३०१ में स्वतः मार्ग से पूर्व से व्यापार करने का एकाधिकार प्रदान कर दिया।

उस समय जो लोग भारत की यात्रा करते थे वे स्वतः मार्ग द्वारा घनेपो जाते थे घोर ऐगिस्तान को पार कर पूर्वोत्तर नदी के किनारे बहाँ पहुँचे वीबीबीन बसा पा बहाँ पहुँचते थे प्रयाग बड़े ऐगिस्तान को पार कर बसरा पहुँचते थे।

१३० में बाल म्यूबेरी बहुमा प्रंग ब बा जो इस यात्रा के लिए गया। 'हर्मुज' पहुँचकर उसने बहाँ व्यापार की सम्भावनाओं का अध्ययन किया। बहाँ से वह बन्दर प्रव्यस्त पहुँचा। बहाँ से बस की लौटते हुए वह ईरान गया घोर बहाँ के सुन्दर नगर इस्फ़हान की राज घोर तबरीज होता हुआ तुर्की की राजधानी कांस्टैन्टिनोपल पहुँचा। बहाँ से पोर्लैंड होता हुआ वह इंगलैंड पहुँचा।

१३०३ में नई कम्पनी की घचीनता में म्यूबेरी ने एक महत्वपूर्ण क्रिया का नेतृत्व स्वीकार किया। वह संरक्षण से बला घोर घनेपो पहुँचा। बहाँ उसके मन के दो राक्षस व्यापार के लिए बस गए। म्यूबेरी किच तथा दो प्रथम व्यापारी घाने बढ़कर हर्मुज पहुँचे। बहाँ के पुर्नगौर घबर्नर ने उन्हें रुँद कर लिया घोर कंबेरी

की भाँति योग्य भेज दिया। किसी प्रकार पुर्तगाल वालों की कब्र से
 छुटकर वे दोनों घायरा पकड़े और म्यूंबेरी ने महारानी ऐलीजिबेच का
 पत्र सम्भवतः अफ़सर को दिया। वहाँ से वह इंग्लैंड की ओर लौटा
 परन्तु वह इंग्लैंड नहीं पहुँचा और सम्भवतः रास्ते में ही मर गया।
 किंब भारत में ही रहा और उसने यहाँ का जो बर्ख़न लिखा है उससे
 भारत के तरकाशीन बंभव का पता चलता है।

घायरा और फ़तहपुर सीकरी का जो बर्ख़न उसने लिखा है
 वह पढ़ने योग्य है। घायरा और फ़तहपुर सीकरी जो बहुत बड़े नगर
 हैं। दोनों नगर संवन से बहुत बड़े हैं और यहाँ की जनसंख्या
 साकर व्यापार करते हैं। इन दोनों नगरों में हीरे-जवाहरात और
 मोती का बहुत अधिक व्यापार होता है। इसके प्रतिरिक्त राम और
 बरत्र का भी यहाँ बहुत बारबार होता है। किंब घायरा से बंवाल गया
 और वहाँ से कूच बिहार गया। कूच बिहार के बारे में मिलते हुए
 किंब कहता है "वहाँ का राजा बहुत बयानु है उसका राज्य बहुत
 बड़ा है और जोबीन चीन से अधिक दूर नहीं है। जब कभी कुछ
 होता है तो सारे जनासयों में बहुर बात बते हैं। नवम्बर १२५६ में
 किंब बीपुर (मंगा किनारे) से बहाब द्वारा पीगू गया। नाब द्वारा
 इरावदी नदी की पार कर वह बसीन पहुँचा जिसे बारे में उसने लिखा
 है कि वह बहुत ही सुन्दर नगर है। यहाँ के लोग बहुत ही सच्चे
 सुन्दर और बड़े हैं। स्त्रियाँ गोरी हैं उनके चेहरे मोम हैं और उनकी
 आँखें छोटी हैं। मजान बहुत ऊँचे हैं। सारा देश बहुत सुन्दर है।

इस देश में कम बहुतायत से उत्पन्न होते हैं। गारवी प्रबोर और गारियल बहुत अधिक उत्पन्न होता है। राबा के पास बहुत से हाथी हैं जिनमें चार लफेरे हाथी हैं जो प्रसन्न हैं।

पौंगु से किन्न मतका गया। वहाँ पुर्तगाल वालों ने समुद्र तट पर एक बड़ा किमा बना रखा था जहाँ से पुतगास बासे व्यापार करते थे। १५८८ में यह बापस सीटा और बंगाल प्राय द्वीपों से लंका गया। लंका के बारे में जसने लिखा है कि वह बहुत ही सुन्दर और बनस्पतियों से सहस्रहस्ता देश है। वहाँ कोलम्बो में पुर्तगाल वालों का एक बड़ा मजबूत किमा है जिसमें एक लाख मिन का व्यापार होता था। इस प्रकार पूर्व में घूमफिरकर किन्न १५६१ में इङ्गलैण्ड बापस पहुँचा। आठ वर्ष तक निरंतर पूर्व के देशों में घूम कर उस साहसी प्रप्रेज ने जो जायकारी संश्लेषों को ही वह माने बसकर ईस्ट इंडिया कम्पनी के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई।

किन्न के बर्लन से उत्साहित होकर कुछ प्रथम संघर्षों ने भी मत्तले के द्वीपों में पहुँचने का प्रयत्न किया, परन्तु वे सफल नहीं हुए। जब लोगों ने संश्लेषों को इस प्रतिस्पर्धा में पीछे छोड़ दिया। जब लौहों के हाथ में मत्तले का व्यापार प्राणवा और वे काली मिर्च तथा लौह का समाना मूल्य लैने सये। प्रत्येक संघर्ष के कतिपय व्यापारियों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी स्थापित की और पूर्व से व्यापार करने का एकाधिकार प्राप्त किया। ३१ दिसम्बर १६ को व्यापारिक

एलीजियेस ने इस कम्पनी को धाञ्जापत्र प्रदान किया ।

१६ १ में वेस्ट लंकास्टर के नेतृत्व में चार बड़े जहाजों का बेड़ा पूर्ब से व्यापार करने के लिए बना । यह जहाजी बेड़ा नीकोबार द्वीप समूह पहुँचा । अंग्रेजों ने बन्ताम में काली मिर्च प्रप्त की और वहाँ जहाँसे अपने एजेन्ट निपुल्ल कर दिए । मौसुका में भी काली मिर्च सरीसभे के लिए अपने एजेन्ट निपुल्ल कर बेड़ा इंग्लैंड सीट छाया । अन्ना लंकास्टर अपने जहाजों में दस लाख बीड काली मिर्च लेकर इंग्लैंड पहुँचा था । इसके उपरान्त बराबर अंग्रेज जहाज पूर्ब में मसाले के व्यापार के लिए जाने लगे ।

१६ ७ में विभियम हाकिमा सूरत पहुँचा और सूरत से सफ़ाट जहाजों के दरबार में पहुँचा । यद्यपि सफ़ाट ने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया किन्तु पुर्तगालवालों का मुबल सफ़ाट के दरबार में इतना अधिक प्रभाव था कि वह सफ़ाट से इवतड के लिए कोई व्यापारिक मुक्तिपार् प्राप्त न कर सका और उसे बिरादा नीदना पड़ा । परन्तु उसकी भारत के बारे में तथा मुबल दरबार के बारे में बहुत सूख्यवान जानकारी प्राप्त हुई ।

१६१४ में पुर्तगाल की सेना ने अंग्रेजों के जहाजों पर जो तासी के मुहाने पर लपर डाले हुए थे धाञ्जल किया । यद्यपि पुर्तगाल की सेना बहुत अधिक थी फिर भी अंग्रेजों ने उन्हें पीछे हकेल दिया । अन्ना अंग्रेजों का प्रभाव भारत में बढ़ने लगा । बिरोधकर नर डामल रो की कार्यकुशलता और बनुराई के कारण अंग्रेजों की सूरत धामरा अट्मराबाद और अदीच में व्यापारिक

कोटिया बनाये की धात्रा मुगल दरबार से प्राप्त हो गई। उसने उपर्युक्त घटकों का प्रभाव भारत और एशिया में बढ़ता ही गया।

सत्रहवीं पन्नाही पृथ्वी के इतिहास में एर पहलपूरुल स्वान रकती है। उस सत्रहवीं के प्रारम्भ में स्पेन और पुर्तगाल ने बहुत बड़ और बिस्तृत साम्राज्य स्थापित कर लिए वे और आपत में लंबि करके प्रथम क्षेत्र निर्धारित कर लिए वे जिसे कि उन दो प्रबल और महान राष्ट्रों में परस्पर प्रविलम्बिता न हो। उनके साम्राज्य बिस्तार का बरिखाम यह हुआ कि उन दोनों राष्ट्रों का व्यापार बहुत अधिक बढ़ गया और वे आपत समुद्रिशाही बन गए। इङ्ग्लैण्ड और हालैंड ललबाई घाँकों से उन दोनों राष्ट्रों के बीच और व्यापार को देखते थे किन्तु उन दोनों की सम्पत्ति शक्ति को चुनौती देने का उन्हें साहस नहीं होता था। यही कारण था कि इङ्ग्लैण्ड ने मसाले के द्वीपों तक उत्तरी घटके मार्ग से पहुँचने का प्रयत्न किया। परन्तु उनका यह प्रयत्न असफल ही गया। इङ्ग्लैण्ड समझ गया कि साम्राज्य स्थापित करने के लिए और बिदेसी व्यापार बढ़ाने के लिए समुद्री शक्ति की बढ़ती आवश्यक है। अतएव उन्होंने क्षेत्र बलनेवाले जहाजों का निर्माण किया किन पर भारी तापे रखी जाती थी जो बहुत दूर तक मार कर सकती थीं। अन्त में जब १५८८ में स्पेन के प्रथम 'अरमाडा' से घटकों का समुद्री युद्ध हुआ और घटकों की विजय हुई तब भारत में इङ्ग्लैण्ड के लिए समुद्री मार्ग खुले और उसके बाद ही इङ्ग्लैण्ड के व्यापारी ठेकी के साथ व्यापार में घापे गई।

इंग्लैंड की बढ़ती हुई शक्ति के प्रतिरिक्त एक बात थी थी जिसके कारण स्पेन और पुर्तगाल के साम्राज्य इतने फैल गए कि उन दोनों देशों को उन्हें सम्हालना कठिन ही रहा था । इतने विस्तृत साम्राज्यों को देखभाल करने के लिए उनके पास अथवा मानवीय तथा भौतिक साधन नहीं थे । यही नहीं सोलहवीं शताब्दी में स्पेन और पुर्तगाल में पुरबबनी साइली लोबियों के उत्तराधिकारी उत्पन्न होने काय हो गए । बिनासिता ने वहाँ की छोटे परम्परा को समाप्त कर दिया । इसका परिणाम यह हुआ कि कनडा स्पेन और पुर्तगाल पिछड़ते गए, और इंग्लैंड और हार्लैंड ब्रिटेनी व्यापार में आगे बढ़ते गए ।

बात यह भी कि उत्तर यूरोप में पहले ऐम्बरब मत्तले के व्यापार की प्रमुख मंडी थी । उसका पतन होने पर १३५३ में ऐम्बरब मत्तले के व्यापार की मुख्य मंडी बन गया । उस समय स्पेन के बादशाह फिलिप द्वितीय ने जिसके प्रागन काम में पुर्तगाल स्पेन से निजा दिया गया था इंग्लैंडवालों को लिस्बन के बादशाह से व्यापार करने की मनाही कर दी । इसका परिणाम यह हुआ कि हार्लैंड की मत्तले की मन्दी ठप्प हो गई क्योंकि डच (हार्लैंड) व्यापारी लिस्बन से ही मत्तले खरीद कर लाते थे जो कि वहाँ पुर्तगाल वालों द्वारा मत्तले के डोनों से लाए जाते थे । अपने व्यापार को गह होते बैकटर डच व्यापारियों ने साइल किया और एक बहाज मत्तले के डोनों को छोड़ भेजा जो जाया जाकर और बहुत सा मत्तला लेकर बुगानपूर्वक हार्लैंड लौट आया । इस सफलता से

उत्साहित होकर हासंड के व्यापारियों ने एक कम्पनी स्थापित कर ली और बहु प्रति बर्ष एक जहाजों का बेड़ा मसाले के द्वीपों की ओर भेजती थी । इस कम्पनी की स्थापना से हासंड बालों ने साम्राज्य विस्तार और उपनिवेशों की स्थापना का एक सक्रियतापूर्ण प्रयास कर दिया जिसकी मूल्य इंगलंड बालों ने भी की ।

जहाँ भी पुर्तगाल के लोग ने हासंडबालों से उन पर घाघमण्य करना प्रारम्भ कर दिया । अन्त में उन्होंने पुर्तगाल बालों को १६४१ में मलक्का से निकाल बाहर किया । इसके उपरान्त क्रमशः हासंड बालों ने पुर्तगाली प्रभाव को लका व इतिहास भारत से भी समाप्त कर दिया । कुछ दिनों बाद उन्होंने स्थायी रूप से मलाया प्रदेस द्वीप तथा मसाले के द्वीपों पर अपना अधिकार कर लिया । इस प्रकार सो बर्षों के अन्तर ही पुर्तगाल का विस्तृत साम्राज्य समाप्त हो गया ।

उपर इंगलंड भी स्पेन और पुर्तगाल के साम्राज्य को विघ्न निम्न करने का सफल प्रयास कर रहा था । अस्यु स्पेन और पुर्तगाल का पराभव हुआ और इन दोनों राष्ट्रों के हाथ में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्राप्त हुआ ।

दसवा परिच्छेद

ड्रेक की पृथ्वी परिक्रमा (१५७७-१५८०)

ड्रेक की पृथ्वी की परिक्रमा ज्ञान के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि ड्रेक के पचास वर्ष पूर्व मैगलान पृथ्वी की परिक्रमा कर चुका था परन्तु ड्रेक की पृथ्वी परिक्रमा का महत्व इस कारण है कि वह पहला यूरपियन था जिसने यह साहस किया और उसने मैगलान जलसंयोजक के इतिहास में जाकर उस भूमि की जानकारी भी संसार को दी कि जिसके चारों ओर प्रभास महासागर और ऐटलांटिक महासागर मिलते हैं। उस समय के पृथ्वी के नक्शों में उस रहस्यमय भूभाग को ईरा-आस्ट्रेलिया लिखा जाता था और उसको इतिहासी अफ्रीका में बुझा हुआ दिखता था। ड्रेक ने पचास बार यह बतलाया कि यह रहस्यमय ईरा-आस्ट्रेलिया इतिहासी अफ्रीका का भाग न होकर एक स्वतन्त्र महादेश है। ड्रेक ने ही अमेरिका के समुद्र तट की बकोबर तक गीब्राल्टर की ओर इंग्लैण्ड की पसासे के द्वीपों का रहस्य बतलाया ।

ड्रेक जब पचास वर्ष का था तभी से वह समुद्र पर चला गया

या । वह पंद्रह वर्ष की आयु में एक जहाज पर स्वेर्रिडल हो गया
 था जो इंग्लैंड और नार्वे के बीच व्यापार करता था । इस
 कारण ड्रूक को अनेक बार उत्तरी समुद्र की यात्रा करनी पड़ती
 थी । परन्तु वह बालक को समस्त पृथ्वी की परिष्कार करनेवाला
 था और जो अविध्य में बड़ा साहसी नाविक बनने वाला था । उसको
 उस छोटे से लकीर समुद्र की यात्रा से बड़े संतोष ही सकता था ।
 वह घौटासा उत्तरी समुद्र उसको एक लौहखाना मान्य पड़ना पर
 और वह जुने हुए विस्तृत महासागर पर यात्रा करने के लिए एक
 बड़ा रहा था । उसी समय इंग्लैंड में 'जाल-हाकिम' के नेतृत्व में
 एक प्रबन्धी लोड अमियान अमेरिका के स्पेनिश उपनिवेशों की
 ओर जा रहा था । ड्रूक ने उस जहाज पर काम करना छोड़ दिया
 और अपने सम्बन्धी जाल-हाकिम की अधीनता में उस लोड
 अमियान में सम्मिलित हो गया । १२१७ में 'बुविच' जहाज पर
 ड्रूक ऐटलांटिक महासागर के तटस्थों का सामना करते हुए स्पेन के
 उपनिवेशों तक पहुँचा और वहाँ से स्पेनवासियों के बहुसूत्र्य
 खजाने का एक प्रसंग आया । इस यात्रा में ड्रूक स्पेनवासियों
 के हाथ से मरते मरते बच निकला । स्वदेश लौटकर अनेक लोगों
 को अमेरिका की नव बीसत का बहुत ही विस्तार वर्णन दिया और
 बतलाया कि अमेरिका में कल्पनातीत धन है । अभी तक लोगों को
 अमेरिका के बारे में तनिक भी जानकारी नहीं थी केवल स्पेनवासी
 ही नई दुनियाँ के पल का उपभोग कर रहे थे । लोग ड्रूक के

दसवा परिच्छेद

डुक की पृथ्वी परिक्रमा (१५७७-१५८०)

डुक की पृथ्वी की परिक्रमा लोब के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि डुक के पचास बरों पूर्व मैगलान पृथ्वी की परिक्रमा कर चुका था परन्तु डुक की पृथ्वी परिक्रमा का महत्व इस कारण है कि वह पहला व्यक्ति था जिसने यह साहस किया और उसने मफलान असंप्रयोगक के दलिल में बाहर उस भूमि की जानकारी भी संसार को दी कि जिसके बारे में प्रजात महासागर और ऐटलांटिक महासागर हिसोरों मारता है। उस समय क पृथ्वी के नक्षत्रों में उस रहस्यमय भूमय को टैरा-व्यास्टु-तिस-तिसा जाता था और उसको दक्षिणी ध्रुवीका में बुड़ा हुआ दिसताया जाता था। डुक ने पहली बार यह बतलाया कि यह रहस्यमय टैरा-व्यास्टु-तिस-दक्षिणी ध्रुवीका का भाग न होकर एक नुनक स्वतन्त्र महादेश है। डुक ने ही अमेरिका के समुद्र तट की बंदोबर तक लोब की धीर इंपलैण्ड को मत्ताते के द्वीपों का खुस्य बतलाया।

डुक अब पंद्रह बरों का था तभी से वह समुद्र पर जाता गया

या । वह पंद्रह वर्ष की आयु में एक जहाज पर ऐपरेंटिस हो गया था जो इंग्लैंड और न्यूयॉर्क के बीच व्यापार करता था । इस कारण ड्रक को प्रत्येक बार उत्तरी समुद्र की यात्रा करनी पड़ती थी । परन्तु वह वास्तव में समस्त पृथ्वी की परिभ्रमा करनेवाला था और जो अभिव्यक्ति में बड़ा साहसी नाविक बनने वाला था उसको उस छोटे से सकीर्ण समुद्र की यात्रा से संतोष ही सकता था । वह छोटासा उत्तरी समुद्र उसको एक कंबोजाना मान्यता पड़ना था और वह कुंभे हुए विस्तृत महासागर पर यात्रा करने के लिए छूट गया था । उसी समय इंग्लैंड में 'जान-हाकिन्स' के नेतृत्व में एक प्रमुखी लोक अभियान अमेरिका के स्पेनिश उपनिवेशों की ओर जा रहा था । ड्रक ने उस जहाज पर काम करना छोड़ दिया और अपने सम्बन्धी जान-हाकिन्स की प्रधीनता में उस लोक अभियान में सम्मिलित हो गया । १५१७ में 'ब्रिच' जहाज पर ड्रक ऐटलांटिक महासागर के तूफानों का सामना करते हुए स्पेन के उपनिवेशों तक पहुँचा और वहाँ से स्पेनवासियों के बहुसूत्र्य जहाजों का एक प्रसंग लेकर गया । इस यात्रा में ड्रक स्पेनवासियों के हाथ से मरते वच निकला । स्वदेश सौदकर उसने लोगों को अमेरिका की जन हीनता का बहुत ही विघटन वर्णन किया और बताया कि अमेरिका में कल्पनातीत धन है । अभी तक लोगों को अमेरिका के बारे में तनिक भी जानकारी नहीं थी केवल स्पेनवासी ही नई दुनियाँ के जन का उपयोग कर रहे थे । लोग ड्रक के

नया धीर मुग्धर 'ऐसीत्रियेय' बहादुर रहस्यमय ढंग से उस डेढ़े में घाबर सम्मिलित हो गया। उन बहादुरों पर डेढ़ तो नाबिक के धीर उन बहादुरों पर सभी घाबरपक बस्तुओं को इकट्ठा किया गया था। बहादुरों को तैयार करने में लूब लर्ब किया गया था। माथा के लिए संगीतनों को नीकर रखना नया था तथा धातुनिकताम ढंग के धरम धरम इकट्ठे किए गए थे। पबल-पोल (बहादुर) पर बड़ी धान धीकत का प्रदर्शन किया गया था। जीवन के लिए चांदी के धरन थे धीर सभी धारान की बस्तुएं उपलब्ध थीं। डूक की केबिल इन्हीं की सुगंध से महक रही थी बिगूँ महारानी ऐसीत्रियेय ने उसे भेंट किया था। इस प्रकार सब तैयारियां पूरी कर लेने के बाद १५ नवम्बर १५७७ को डूक ने अपने छोटे से बहादुरी डेढ़े को लेकर 'प्लेमाऊब' के बम्बरगाह से प्रस्थान किया। डूक के साथ साथ सभी नाबिकों की यही मान्यता थी कि वे 'अलर्जीरिया' की धीर का रहे हैं।

डूक की अविध्य का कोई ज्ञान नहीं था वह एक अत्यन्त शौकिन की यात्रा के लिए जा रहा था। अपने बहादुर पर बड़े होकर अपने अपने होप को उतारा धीर अज्ञानपूर्वक अपनी मान्यता को प्रहारा कर उस में बिना सैकर उस यात्रा के लिए चल पड़ा। कितने मान्यता था कि डूक की उस यात्रा में कितनी कठिनाइयां बिगूँ बिस्वातबात का सामान करना पड़ेगा धीर अन्त में उसको औरबपुर्ल तकजता प्राप्त होगी।

डूक बड़ी अन्तरीय तक लकड़मन पहुंच गया, परन्तु धन यात्रा

का उद्देश्य प्राप्त रस सकना सम्भव नहीं था क्योंकि वहाँ से मित्र बैस का रास्ता दूसरी ओर जाता था। डक ने अपने साथियों को पाना के समय से घबरात कर दिया और साहस के साथ अपने जहाजों की ऐंठनाटिक महासागर की ओर मोड़ दिया। ऐंठनाटिक महासागर के तुलसी बन को पार कर वह १ अप्रैल की 'बाबील' के तट पर पहुँचा। किन्तु जुहरा इतना गहरा था और भीषण इतना कराव था कि जहाज बिखर गए और उन्हें सुरक्षा के लिए 'आप्लाटा-मरी' के मुहाने में भागकर शरण लेनी पड़ी। फिर भी समुद्र शान्त नहीं हुआ। उन पहलुओं की भी मर्यकर लहरों से मुझ करते हुए वे जहाज कितनी प्रकार बसिल की ओर बढ़ने लगे। ६ मई सप्ताहों तक वे जहाज कठु और मर्यकर समुद्र से संघर्ष करते रहे। समुद्र इतना मर्यकर था कि उन घंटेज नाविकों के साहस और मौका संभालन की कुशलता के कारण ही वे बच गये।

२ जून की वे मैसाल द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त वेटेपोनिचा के भीरान तट पर लंड-बुलियाल के बन्दरगाह में पहुँचे। बन्दरगाह में मुसल ही उन्होंने एक भीमस्त दृश्य देखा। यहाँ पूर्व तट तट पर 'मैसाल' से भी 'नर बंकात' टांग दिया था, वह ज्यों का त्यों लटक रहा था।

इतिहास बीहरावा आ रहा था। जो दशा उस भीरान जनशुभ्य प्रदेश में भूलकर जाने वालों की पहले हुई थी वही दशा उन घंटेजों की होने वाली थी।

पाना में डक को अपने प्रमुख साहायक 'बाबी' पर वह खिड़

प्यु होता या रहा या कि यह यात्रा को विफल कर देता पाहता है। पर्यटि डाटी डेक का पमिष् मित्र या परम्पु बहु अनुशासन हीनता को यज्ञाया दे रहा था। यही नहीं कि यह ड क की आजापों को नहीं मानता या यह याया को घातकन कर देने का भी प्रयत्न कर रहा था। अतएव डूक ने कौंगिया को निर्मोचित किया और अंग्रेज कानून के अनुसार उसका मुकदमा हुआ। बी दिन मुकदमा होने के उपरान्त कींगिसन ने डाटी को अपराधी घोषित कर दिया। उसके उपरान्त जो हुज्य उपस्थित हुआ बहु खोज के इतिहास में अत्यन्त हृदयपरशी या। सभी अंग्रेज नाविक समुद्र तट पर उतर गए। उनके अहाज बगदरगाह में लंगर डाले राड़े थे। 'डाटी को फांसी देने का इशान तैयार किया गया। ड क और डाटी दोनों भगवान की प्रार्थना के लिए एक साथ घुटने बैठ कर भुके। कुछ ही दिर में ड क की तसयार बमकी और अपने मित्र का घटा सर हाथ में लेकर उसने कहा 'देवी देघरीही और बिश्वासघाती का ऐसा अन्त होता है।

उस समय जाड़े का मध्य या इस कारण ६ सप्ताह के उन्ही बगदरगाह में ठहरे रहे। अन्त में वे तीनों अहाज संमतान अन्तसंयोजक की और चल पड़े। घरा में बहु अन्तसंयोजक मिस गया और वे साहल के साथ उसमें घुसे। उस अन्तसंयोजक के दोनों और जो ऊँचे पहाड़ थे उन पर से कई और अंग्रेज का सर्वकर प्रवाह घन पर बहने लगा। अथ कि वे उस क ड और भयानक समुद्र को पार कर रहे थे अथ नूमोलबेतापों की भाँति उनका भी बही

बिहार का कि बक्षिण का बहु धनमाना प्रदेश कोई महादेश है जो पानी हुई पृथ्वी की सीमा से दूर है। इस बक्षिणी समुद्र तट पर वहाँ के प्रादिवासी जो प्रथि जमाते थे बहु उत्त बीमस्त दृश्य की घोर भी प्रथिष्ठ डरावना बना देती थी। सोलह दिन लगातार चलने के उपरान्त वे फिर बुझे घोर बिलुप्त समुद्र में पहुँच गए। अब वे प्रशान्त महासागर में थे। किन्तु उस समय प्रशान्त महासागर शांत नहीं था। समुद्र में एक भयंकर तूफान उठ एक के बाद दूसरे भयंकर तूफान आते गए, घोर जहाज बिबद्ध होकर कभी बक्षिण की घोर घोर कभी पश्चिम की घोर बहकर हार्न-अन्तरीप से दूर चले गए। अब जहाज पुनः समुद्र तट के समीप पहुँचे तो जहाँ बक्षिण महाद्वीप के स्थान पर एक कड़ा कड़ा समुद्र तट मिला जिस पर बहुत ऊँची घोर प्रयत्न लहरें निरंतर टकराती रहती थीं। इस भयंकर तूफान में 'मैरीपोल्ड' जहाज टकरा कर डूब गया और उस पर खिलने भी नाविक थे वे समुद्र तल में चले गए। एक सप्ताह के उपरान्त 'ऐलीजैबेन' जहाज का कप्तान अपने जहाज को लेकर इंग्लैंड वापस चला गया। अब डूब केवल अपने अकेले जहाज 'गोल्डन हिन्द' के साथ रह गया। किन्तु डूब साहस छोड़ने वाला नहीं था। उसने अपने साथियों से कहा हम लोग अकेले ही नये देश को खोज निकालने का गौरव प्राप्त करेंगे। दो महीने तक लगातार उन भयंकर तूफानों से सड़ते रहने के बाद डूब ने उन बक्षिणी द्वीपों में लंगर डाला जिनके बारे में तत्कालीन भौगोलिक फुल भी नहीं जानते थे। वहाँ ऐटलांटिक घोर प्रशान्त महासागर एक साथ मिलकर

घोर घबराव करते हुए प्रवाहित होने थे । उस द्वीप के घात तक जाकर डक ने सैटकर दोनों हाथों से जानी हुई पृथ्वी के दक्षिणतम स्थान को बिपटा लिया ।

डुक ने बुनिया को बतसाया कि वे दक्षिणी द्वीप दक्षिणी महाद्वीप आस्ट्रेलिया के भाग न होकर एक द्वीप समूह हैं जिनके चारों घोर जुला हुआ समुद्र हिमोरे नारता है । बाद को इस खोज को एक चाँदी के पृथ्वी के नक्शे पर पहली बार दिखाया गया जो घात भी विद्विग्न स्पूत्रियम में रहता है ।

डुक यह कहकर कि जिस समुद्र में मैं घात प्रवेष्ट कर रहा हूँ उसे प्रशांत महासागर न कह कर प्रशांत महासागर कहना अधिक उपयुक्त होगा इसलिए अमेरीका के पश्चिमीय तट के साथ साथ घाते बना । घाते चलने पर जिसी का समुद्र तट घाया घोर घागे बढ़ने पर वे "बाम परैओ" पहुँचे । वहाँ उनकी स्पेन का एक बहुत बड़ा जहाज मिला जो 'पैर' से लाए गए सोने से लदा था । घंघ भी जहाज की तोपें मरख उठीं । स्पेन के जहाज पर जो भी नाविक थे जयभीत हो उठे । प्रवेष्ट जहाज के नाविक कुर्नी से स्पेन के जहाज पर चढ़ गए, और स्पेन के नाविकों को रस्सों से बाँधकर उन्हें नीचे लहकानों में बंद कर दिया और उस जहाज का सारा मूख्यतम खजाना अपने जहाज पर ले आए । वे घात प्रीप्रता से उत्तर की ओर 'नीमा' और 'पनामा' की ओर बढ़े क्योंकि स्पेन के कुछ और जहाज उस ओर गए थे जिन पर 'पैर' का बहुत अधिक सोना लदा था । जो भी स्पेन का जहाज उन्हें मिलता वे उसे सूट लेते और

उसका बजाता अपने जहाज में भर लैते। यहाँ तक कि उनका जहाज
 घौमे से भर गया। कुछ यह तो समझ गया था कि जब उस समुद्र
 तट से होकर वापस अपने देश को लौटना असम्भव है। अतएव
 ड्रुक ने निश्चय किया कि वह उत्तर में जाकर यदि सम्भव हुआ
 तो उत्तर के मार्ग से इंग्लैंड को वापस लौटने का मार्ग ढूँढ
 निकालेगा।

उत्तर में चलते चलते जब ड्रुक का जहाज उत्तरी ध्रुव प्रदेश
 में पहुँचा तब सर्वकर हीन पड़ने लगा था और कोहरा इतना घहरा
 था कि मार्ग दिखाई नहीं देता था। अतएव ड्रुक ने बहिल की
 ओर चलने का निश्चय किया। बहिल की ओर चलने पर वे उस
 स्थान पर आए जिते प्रायः हम 'सेन्कोवर' द्वीप समुद्र राज्य अमेरिका)
 कहते हैं। परन्तु वहाँ पहुँचने पर वायु बहुत तेज हो गई और उत्तरी
 चलने लगी इस कारण ड्रुक को फिर पीछे लौटना पड़ा और उसने
 एक बन्दरगाह में जिते प्रायः 'कसिस्को' कहते हैं लंगर डाला।
 ड्रुक ने वह बन्दरगाह में कुछ समय ठहर जहाज की मरम्मत कर लेने
 का निश्चय किया क्योंकि यहाँ से जैसे प्रायः अस्तरीय के मार्ग से इंग्लैंड
 तक की लम्बी प्रयाण महागायक की यात्रा करनी थी। ड्रुक ने उस
 समुद्र तट की सप्त सौ मील की यात्रा करनी थी। ड्रुक ने उस
 जिते जगह नये देश की ओर चलने का निश्चय किया। उसने उस
 नये देश का नाम 'न्यू-ग्रानिपन' रखा। अंग्रेजों को देखकर ईंडियन
 भुव के भुव समुद्र तट पर इकट्ठे हो गए। उनका राजा भी आया।
 वह लम्बा और सुंदर था तथा विपना की भावना से आये बढ़ा।

डूक के पास घाट उगने घबना मुच्छ उतार कर डूक के तार पर रत दिया तथा घबने गने में जंजीरों डाल कर इस बात का प्रदर्शन किया कि घब बहु बैठा उतरा है और बहु उतरा घाटाकारी लागता है ।

घब डूक उतर बैठा का राजा बन गया । उसे इस बात की कल्पना भी नहीं थी कि उसके राज्य में समीप ही कंसीओनिया की सोने की खानें थीं । उसकी प्रजा शक्तिप्रिय घोर मपुर थी । वे खंजों की देवता के समान यज्ञा घोर भक्ति करते थे । डूक ने राजा की जाति ही यहाँ लाग व्यपहार किया घोर घबनी प्रजा का शासन किया ।

जब डूक यहाँ से चलने लगा तो उसने वहाँ एक स्मारक बना कर दिया । उसके साथ ही महारानी ऐनीत्रियेय का उस क्षेत्र पर शक्तिस्थ बतान के लिए उसने एक बना स्तूप बना किया जिस पर पीतल की प्लेट पर महारानी का नाम तथा डूक के वहाँ पहुंचने की तारीख सोद दी गई । इसके प्रतिरिक्त उस प्लेट पर यह भी जोद दिया गया कि उस क्षेत्र को उसके राजा तथा निवासियों ने स्वच्छ-पूर्वक महारानी को भेंट किया है । उस स्तूप पर प्लेट के साथ ३ पैस का एक सिक्का भी जोद दिया गया जिस पर महारानी का चित्र तथा उसके राज्यचिह्न प्रकित थे । सब तक स्पेनबाले उस क्षेत्र तक नहीं पहुंचे थे । उन्होंने कभी भी उस धूमि पर पैर नहीं रखना था वे उससे बहुत दूर कई डिग्री दक्षिण तक ही पहुंच पाए थे ।

जब यहाँ से निरा होने का समय आया तो वहाँ के लोग बहुत

ही बुझी हुए । वे सब क सब अत्यन्त अशास और बुझी हो गए । वे रोने लगे और अपनी माया में इस बात की सिद्धांत करने लगे कि बेबता उन्हें छोड़े का रहे हैं । उन भोले इंडियन लोगों की कतरता और छुटपटाहट की देखकर डक और उसके साथियों का हृदय इतित हो गया ।

वास्तव में वे भोले इंडियन अफ सों को बेबता मानते थे । बिबाई का दिन आया । सब इंडियन उन्हें पिटा करने के लिए आए । जब अहाब बस पड़ा तो वे सबके साथ समीपती हाइों पर चढ़ गए जिससे कि वे उस अहाब की सितनी दूर तक सम्मम ही बैल सकें । उसके उपरान्त उन्होंने आय बनाकर और पशुओं का बलिदान करके अपने प्रभुओं की सद्गुण यात्रा की कामना की ।

२३ जुलाई १५७६ को डक ने न्यू-घसपियन की छोड़ा । वह उसी रास्ते से चला जिसे 'मैपलाम' न पकड़ा था । वह उस रास्ते बसिन्ही समुहों तथा ऐटलान्टिक महासागर को पार कर इंगलैंड पहुँचना चाहता था । अड़सठ दिन तक लगातार तेजी से उसका अहाब चलता गया । कोई भूमि नहीं दिखलाई थी । अड़सठ दिन की लम्बी यात्रा के उपरांत डक का अहाब फिसीपाइस द्वीप समूह में पहुँचा । वहाँ से वह आगे बढ़ा और ३१ नवम्बर १५७६ को वह मतासे के द्वीपों में पहुँचा । वहाँ के राजा ने उसका अरुद्धा स्थापित किया । राजा का अरुद्धा जय्य और अरुद्धा का वह कमजोर के सीमे के छार के अरुद्धे पहुँचे था । उसके बालों में सोने के धन्ने थे और गले में भारी सोने की बँजीर थी । यहाँ अरुद्धों की लम्बी यात्रा के उपरांत अर

पेट ताजा भोजन मांस और सब्जी पाने को मिली । उस रीस में चावल मुर्गी घास गन्ना दूध और मौस बहुतपास ल चल्पम हीने थे । संसेबीस के छोटे से द्वीप पर डक ने अपने जहाज पोस्टन हिन्द की भसीभाति भरम्मत करवाई क्योंकि उसे हुंगलेड तक समी वाजा करनी थी । सेरिन सोने से लवा हुआ जहाज उन द्वीपों की पट्टानों और तेज जलपारा से टकरा कर लम्बेप टूटते टूटते गया ।

६ जनवरी १५८ को जहाज ग्वाएक एक ज्वालन पर चढ़ गया । वहाँ बह रात्रि क घाट घने से दूसरे दिन तीसरे बहर बार घने लक घटका रह गया । डक और उसके साथियों को जल पतरे से उबरने की कोई आशा नहीं रही । परन्तु डक ने हिम्मत नहीं हारी । याने सब नाविकों को हिम्मत के साथ जहाज को जल कतरे से निकालने के लिए प्रामाणित किया । डक की बुद्धिमत्ता और साहस ने भयधान को असीम दुःख से पतरे पर बिजप पाई और जहाज सुरक्षित जल कतरे से निकल गया ।

अब जहाज हिन्द महासागर में पहुँचा । तेजी से हिन्द महासागर को पार कर उसने आग्ना अन्तरीप को पार किया । जब आग्ना अन्तरीप को डक ने पार किया तो उसे आश्चर्य हुआ कि जिस अन्तरीप को पुर्तगाल के नाविक बृषी में सबसे अधिक सुखानी और कतरनाक बतलाते हैं वह वास्तव में बहुत ही सरल और आस है । डक ने अपने नेत्र में पुर्तगाल के नाविकों को आशा अन्तरीप के बारे में ऐसी आमक बात केंलाने के लिए जला बुरा कहा है ।

अन्त में डेक समुदाय इ मनेड वापस पत्रुंभ गया । तीन लम्बे
 वर्षों के बाद जब डेक का 'गोल्डन हिन्ड' अहाज 'संसार' के
 अन्तरगत में घुसा तो वहाँ के लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं
 रहा । क्योंकि उन्होंने यह मान लिया था कि डेक समुदाय के पहले तल
 में जाता गया है । जब लोगों को यह बात हुआ कि एक अज्ञेय ने
 पृथ्वी की परिष्कार की है तो तबसे देश विद्योत्साह से मग्न हो
 गया । महारानी ऐलीजेबेथ ने डेक को अपनी विचित्र यात्रा
 की कहानी सुनाने के लिए अपने दरबार में आमंत्रित किया । डेक
 ने जब अपनी लम्बी यात्रा की कहानी महारानी को सुनाई तो
 महारानी आश्चर्यचकित और आत्मविभोर हो उठी । उस एक
 घौंटे से आहार पर एक राजकीय भोजन डेक और उसके साथियों
 को दिया गया जिसमें महारानी स्वयं उपस्थित हुईं और उन्होंने
 डेक को 'माईड' की उपाधि से विभूषित किया । महारानी ने यह
 भी आज्ञा प्रदान की कि 'गोल्डन-हिन्ड' अहाज संसद के
 'विश्टोरिया अहाज' की भांति सुरक्षित रक्खा जावे । जिससे कि
 इंग्लैंड की आने वाली पीढ़ियाँ सर जेम्स डेक की अच्युत और
 साहसी यात्रा की याद रख सकें । 'गोल्डन-हिन्ड' अहाज को
 राष्ट्रीय स्मारक की भांति सुरक्षित रक्खा गया । बाद में उस अहाज
 के दुर्घटने के लिए गए और उसकी लकड़ी से 'प्रोपसफोर्ड विश्व
 विद्यालय' में एक कुर्सी बनाई गई जिस पर 'कोले' की प्रतिष्ठा
 संस्थित की गई जिसका आशय नीचे लिखा था ।

'यह कुर्सी उस औरतवाली महान अहाज की लकड़ी से

बनी है जिसने वृष्णी की परिग्रमा की थी और जो सुवं के रव की प्रतिरूप्यता करता था । कुव और उसके गहन के लिए इसी अपिक गीरबनासी बाग और कोई नहीं हो सकती थी कि कुक को स्वर्न में और गहन को धोतपत्र न धोरयताली स्थान बना है ।'

सर अमिस कुक की मृत्यु १२६६ में समुद्र पर हुई । वह अथक नाविक सर्जिस के लिए समुद्र पर ही शिरनिष्ठा में लो गया । किसी कवि ने उसके बारे में जो पंक्ति लिखी हैं उनका आशय नीचे दिया है ।

समुद्र की लहरें उसका कपन था गई और जल उसकी समाधि बन गया । परन्तु उसका पग इतना पिनृत और महान था कि महासागर में भी इतना स्थान नहीं था कि उसको अपने में समा सकता ।

ग्यारहवा परिच्छेद

कनाडा की खोज

स्वेन घोरे बुतगास की दृष्टता ने घोरोप के सभी देशों में नये देशों की खोज के लिए उत्साह पैदा कर दिया। वे भी पश्चिम की ओर जाकर नए नए देशों की खोज करने लगे। क्रॉस मन्लाह अमेरिका के पश्चिमीय तट तक पहुंचने लगे। प्रंस की सेवा में नियुक्त 'कनीरेंटाइन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के तट को छू ड निकाला परन्तु 'ब्रुक्स स-कार्टियर ने तो सेंटमोरंस के उत्तर में एक बहुत बड़े भाग पर अपने देश का अधिकार ही स्थापित कर लिया। ब्रुक्स पश्चिम की ओर जाने का मुख्य उद्देश्य अमेरिका से चीने (चीन) के लिए मार्ग छू ड निकालना था।

२ अगस्त १५३४ को दो छोटे जहाज शिन्का बजल साठ घोरे इकसठ टन का घोरे बुने हुए घाबनी लेकर कार्टियर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। मौसम अचछा था इस कारण उसको यात्रा में कोई कठिनाई नहीं हुई। तीन सप्ताह में वह न्यूफाउण्डलैंड पहुंच गया। उसने प्रतिदिन सी धील की रकबर से यात्रा पूरी की। परन्तु उस प्रदेश का बुर्बी तट बर्ड से जमा हुआ था। जिस स्थान वह

सबसे पहले पहुँचा उसका नाम उसने "बोना बिस्वा-अमरीप" रखा और समीपवर्ती प्रवेश का बहुत सगाता रहा। जब वर्ष पिघल गया तो उसने सँबाइर तथा ग्लू-फार्जेंट लड के बीच में से होकर सेंट-सारेस की खाड़ी को खोज निकाला। वह पहला युरोपियन था जिसने उस खाड़ी का पता लगाया था। कुछ मास में वे दोनों छोटे बहाइ खाड़ी के पासपास एड द्वीप से दूसरे द्वीप और एक अमरीप से दूसरे अमरीप का बहुत सगाते रहे। कार्टियर को मिल एडवर्ड द्वीप बहुत मुश्किल लगा। उस द्वीप के बारे में उसने लिखा है 'उस द्वीप में हमें सुरार और नीली सुगन्धवाले फूल देखने को मिले। वहाँ बरफ नहीं थे वहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ थी। वहाँ अनेक प्रकार के घनाक और फस पाए जाते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों वहाँ खेती की गई हो और परिष्कृत करके फस के बुरे लगाए गए हों। परन्तु भारतखिता यह भी कि वे वहाँ खंखली व्यवस्था में रहे हुए थे। इस छोटी गरमी पड़ने लगी और कार्टियर नवाइस्कोसिया की ओर बढ़ा और एक खाड़ी में आया जिसका नाम उसने बरम खाड़ी रखा। उस खाड़ी में वह बितनी दूर जा सकता था उसनी दूर इस आशा से गया कि सम्भवतः यही प्रशांत महासागर का मार्ग होगा परन्तु जहाँ निराश्र होता पड़ा। उस समय समुद्र में भयंकर लुफान उठ खड़ा हुआ इस कारण आगे बढ़ना संभव नहीं था। उसने अपने बहाइयों को सुरक्षित स्थान पर लड़ा किया और साबियों सहित भूमि पर उतर गया। वहाँ उसने एक बड़ा ऊँचा चिन्ह बनाया और उसके नीचे काँस की लता का लकित

करनेवाले बायब लिपि लिए । वहाँ सभी ने भयबान से सफल यात्रा के लिए प्रार्थना की ।

परन्तु समुद्र में भयंकर तूफान उठ रहा था और लहर बहुत तेज होती जा रही थीं । अतएव कार्टियर ने फ्रांस को लौटने का निश्चय किया । अहाज किलोने की मति उदत्त रहे थे । मृत्यु सामने खड़ी थी किन्तु वह किसी प्रकार पाँच मितम्बर को ६ महीने की यात्रा के बाद सङ्ग्रहण फ्रांस लौट आया ।

फ्रांस के आरुक्षों ने उसे पुन अमेरिका भेजा । मई १५३३ में कार्टियर पुन तीन बहाजों को लेकर अटलांटिक के तूफानी समुद्र को पार करने के लिए बन पड़ा । वायु बहुत तेज और प्रतिकूल थी । लहरें पहाड़ों के समान ऊँची उठती थी और गहरा कोहरा मार्ग को धाँस से ओझस कर देता था । फिर भी साहस के साथ कार्टियर बढ़ता ही गया । कभी कभी तो ऐसा होता था कि अहाज एक दूसरे से अलग हो जाते थे । अन्त में अहाज एक दूसरे से अलग हो ही गए और लंबाइनर के समीप ही जाकर एक दूसरे से मिले । समुद्र की बिगड़ी हुई हालत के कारण तीन सप्ताह की यात्रा में पाँच सप्ताह लय गए । अब कार्टियर लंबाइनर के दक्षिण समुद्र तट पर पहुँचा । वहाँ वह एक बहुत सुन्दर और बड़ी खाड़ी के अन्दर घुसा जिसमें बहुत से द्वीप थे और उसमें घाने जाने के चारों ओर से रास्ते थे । कार्टियर ने उसका नाम सेंट-भारेंस रक्का क्योंकि वह खाड़ी में १ अयस्त को घुसा था जिस दिन सेंट-भारेंस का भोग था ।

घाम या अघाम सभी मुख्य सेंट-भारेंस की खाड़ी में बड़े

जहाजों के द्वारा कनाडा के लिए आते जाते हैं उन्हें यह स्थान में भी स्थान नहीं आता होगा कि मात्र से चार घी वर्ष पूर्व छोटे जॉब जहाजों ने इन लाइनों को जोड़ निकाला था और उनका बिस्वास था कि वे उस माप से कैंपे (कोन) देश को पहुंच जायेंगे ।

जहां कार्टियर को रैड इंडियनों ने घतलाया कि वह एक बहुत बड़ी नदी 'हीयेलागा' है जिसे दस शट-नाररा कहते हैं जो कनाडा की ओर बढ़ने पर पतली होती गई है और घाघे उत्तमें ताजा और मोटा पानी है ।

कार्टियर लिखता है 'वहनी सितम्बरको हम लौक उस स्थान से कनाडा की ओर आस पड़ । कनाडा जहां के निवासियों की भाषा में बांघ या कबजे को कहते थे । जब कार्टियर कनाडा के समर पुसा ली कनाडा का शासक आरह बड़ी नारों और बहुत से लैबकों के साथ नदी में आस कर उन विदेशी पीर बर्ल लोगोंसे विस्मये घाघा को प्रथम बार कनाडा में घाए थे । उतने उम पीरों का स्वागत किया और उनकी नाविक कुशलता से बहुत प्रभावित हुआ । बात यह थी कि कार्टियर कनाडा से बहुत ऊपर 'हीयेलागा' नामक स्थान पर पहुँचा था जहाँ नदी बहुत पतली हो गई थी और उसकी धारा बहुत तेज थी । वह स्थान बहुत ही अतर्नाक था । क्योंकि जहाँ बड़ी संयकर जहाने थीं । एक राप्ताह तक वे प्रथम खोजी उस अतर्नाली नदी में ऊपर की ओर बढ़ते गए । वह देश बहुत ही सुन्दर स्थान बनों से भरा हुआ था । जहाँ घंगूर की बेशों की बहुतायत थी और उन पर घंगूर के पुष्पे लटक रहे थे । २ प्रखोबर

को कार्डियर 'होवेलागा' कस्बे में पहुँचा । उतका वहाँ सैकड़ों प्राविवातियों ने गहरा स्वागत किया । पुरय स्त्री और बच्चे सभी ने उनका ऐसा मध्य स्वागत किया कि मानों वे उन्हीं के बेटाबेटी हों जो बहुत लम्बी जोखिम की यात्रा करके वापस सकुयस घर लौटे हों । स्त्रियाँ अपने बच्चों को उनके पास इतने लिए लातीं कि वे उनको छुकर घ्राचीर्वाह हों । क्योंकि उनका विश्वास था कि जो लोय ऐसी जोखिम की यात्रा कर सके उनमें अवश्य बेबी शक्ति है । उन्होंने इन विवेदियों के सम्मान में समुद्र तट पर यन्त्रि बनाकर रात भर नाचने का आयोजन किया ।

प्रातः काल कार्डियर ने बड़िया कपड़े पहिने और अपने साधियों के साथ घस्त्र धात्र चारसु कर तट पर उतरा । वे लोय उस कस्बे की घोर गण्ड जो मक्का के खेतों के बीच में बड़ा था । वहाँ पर भी पाँचबानों ने गाना गा कर और नाचकर उनका स्वागत किया । वहाँ का राजा उनसे मिलने आया । उसको लोय कर्षणों पर उठाए हुए थे । उसको हिरन की जाल पर बिठाया गया । उसके तर पर मुकट के स्वान पर प्राप्त का होया था ।

वहाँ एक घबरीब घटना घटी । राजा ने अपना जाल का मुकुट कार्डियर के सर पर रख दिया और उसके सामने इतने प्रकार मूक गया जैसे कोई मुकट बेचता के सामने झुकता है । वहाँ के लोय कार्डियर और उसके साधियों को बड़ी श्रद्धा से देखते थे । वे लोय धर्मों और सुतों को उनके पास इस घासा से सते कि वे

कार्टियर बनावे के उम धारिवाणियों के इस विश्वास को देखकर बहुत इवित हुआ। उसने प्रत्येक के माथे पर बात का चिन्ह बनाया और प्रभु ईसा का उपरोक्त रूप स्वर्ग में बड़ कर बनाया। उस बीच सभी धारिवाणी पढ़ा से कामोम जड़े रहे और धाका की ओर देखते रहे। वे छांतीमियों के ही अनुसार हाथ उठा कर प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे। उसके उपरान्त कार्टियर ने अपने धारिवाणियों को धाका दी कि वे बिगुल तथा ध्वज बाधों को बजावें। उसे सुनकर धारिवासी लोग बहुत प्रसन्न हुए और नाचने लगे।

उसके उपरान्त कार्टियर और उसके धारिवासी सभीपक्षी बहाड़ पर चढ़े। पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर जो नव्य हृदय उसे दिखावाई पड़ा उसे देख कर वह बहुत प्रसन्न हुआ। ऐसी सुन्दर घाटी उसने जीवन में कभी नहीं देखी थी। उसने उस सुन्दर स्थान का नाम 'मार्श्ट-रायल' रखा जो अब मॉन्ट्रियल के नाम से प्रसिद्ध है।

अब बाड़ा नवीक धा रहा था। कार्टियर ने बाड़ों में घास की ओर वापस घात्रा करना उचित न समझ कर बाड़ों में चढ़ी रहना निश्चय किया। उसने मॉन्ट्रियल तथा नवीक के बीच एक स्थान चुना और वहाँ बाड़ा निकालने का निश्चय किया। जेब लोगों को इस बात को तनिक भी सम्पना नहीं थी कि बनावे में कैसा विद्वत् बाड़ा पड़ता है। उन्हें क्या मासूम था कि बाड़ों में वहाँ सम्पनासीत बर्फ पड़ता है और नदियाँ जम जाती हैं। जिसके कारण वहाँ नौकाबाहन सम्भव नहीं हो सकता। बड़े दिन के

पूर्व ही कार्टियर के आबमी 'स्कर्वी-रोग' से पीड़ित हो गए । बीमारी इस तेजी से फैली कि फरवरी के मध्य में एक ही बस आबमियों में बस आबमी भी ऐसे नहीं बचे जो रोग मुक्त हों । घाठ मर गए । बीमारी बढ़ती ही गई । सारे बस में केवल तीन आबमी स्वस्थ रह गए । जो मर गए वे उनको लोटकर पाड़ना भी संभव नहीं था क्योंकि सब जोर बहुत कमजोर हो गए थे और जमीन बहुत कठोर हो गई थी । अतएव मरे हुए लोगों को बर्फ में ही दबा दिया गया । लोगों में ऐसी घोर निराशा छा गई थी कि किसी को भी यह आशा नहीं रही थी कि वह जीवित फ्रांस भौट सकेगा ।

नवम्बर से मार्च तक इतना बर्फ पिरा कि उनके आहालों के डैकों पर बार छोट बर्फ जम गया । उस अजबबी रीत में पड़ हुए और बारों और आदिवासियों से घिरे हुए होमे पर भी तथा उनके आहालों के बर्षों से जम जाने पर भी उनमें किसी को खान पर कोई सिकायत नहीं थी । कार्टियर ने लिखा है कि उस वर्ष कनाडा में जाड़ा बहुत अधिक पड़ा । किसी प्रकार जाड़े का मौसम समाप्त हुआ । शीत की भयंकरता कम हुई और मई में बर्फ बिघल गया ।

मई में फिर वे शीघ्र स्वतन्त्र हो गए । नदियां और समुद्र खुल गए, अतएव वे फ्रांस की ओर चल पडे । यद्यपि उन्होंने कैंपे (चीन) का मार्ग नहीं छुड़ पाया परन्तु उन्होंने फ्रांस के लिए एक बहुत बड़ देश पर अधिकार कर लिया था ।

इस प्रकार कार्टियर ने कनाडा को खोज निकाला । अभी तक

नई दुनिया में स्वेगबासों ने ही देशों की खोज की थी। सब उस खोज में प्रयत्न भी शामिल हो गया।



वारहवा परिच्छेद

डेविस की उत्तरी ध्रुव की यात्रा

जब ड्रेक वृद्धी की परिक्रमा कर रहा था और शोबियर बंदे (चीन) के लिए उत्तर पश्चिम के मार्ग को खोजने के बजाय सोने की खोज में लप गया था उस समय भी कुछ लोगों की प्रतिज्ञा थी कि बंदे (चीन) के लिए उत्तरी मार्ग ढूंढ निकाला जाये । बात यह थी कि 'हम्ब्रे-गिलवर्ट' ने सुपीन के अध्ययन के बाद यह सिद्ध था कि उत्तर के रास्ते बंदे और पूर्वी द्वीप समूह (मलाते के द्वीपों) को जाया जा सकता है । उसका कहना था कि अमेरिका एक महाद्वीप है और उसके चारों ओर समुद्र है । अतएव उत्तर पश्चिम के रास्ते बंदे (चीन) पहुँचा जा सकता है ।

उत्तर पश्चिम के मार्ग से चीन पहुँचने के लिये जो जोख प्रतियोगिता भिन्न नया उसका नेतृत्व ज्ञान डेविस को सौंपा गया । उसको इस खोज के लिए दो छोटे जहाज एक पचास टन का दूसरा पैंतीस टन का दिये गये । ज्ञान डेविस बहुत ही कुशल और साहसी नाविक था । किन्तु वे जहाज उस खोजिम नरी और सतरनाक घाघा के लिए उपयुक्त नहीं थे । क्योंकि उन पर उच्च बर्फ़ीले प्रदेश की

यात्रा के लिए उपयुक्त साधन उपलब्ध नहीं थे ।

जान डेविस ७ जून १९८३ को डार्टमाउथ से इस साहसी यात्रा के लिये बन पड़ा । कुलाई में बहाज एटसाटिक महासागर में पहुँचे । समुद्र उस समय बहुत ही भयंकर था । यही नहीं कि वायु बहुत तेज थी और तूफान उठ रहे थे । समुद्र के घोर मर्जन के कारण स्थिति मयाबह हो उठी । कोहरा बहुत ही गहन था । ९ कुलाई को वे उस गहन कोहरे से निकले और एग्रेण्ट प्रीनलैंड के बर्फ से डके पहाड़ दिखलाई दिए । वह द्वीप घोर उसके पहाड़ इतने भीरान निर्जन और अनाकर्षक थे कि एंग्रेज मायिकों ने उसको भीरान और निर्जन देश का नाम दिया और उत्तर की ओर बढ़ गए । उनको आशा थी कि वे प्रीनलैंड के परिधमी तट पर घाये जाकर कैपे का नार्वे पाजाबोर्ने । प्रीनलैंड के कटे कटे समुद्र तट पर उतर कर डेविस और उसके साथियों ने अपने को ताजा ठिया और उस स्थान का नाम अपने छोटे लड़के के नाम पर डेविस ने मिलबर्ट-साऊड रख दिया ।

“उस देश के निवासियों को हमारे बहाजों के घाने की खबर लग गई और वे अपनी नार्वों में हमारे बहाजों के पास घाये । वे अपना बार्वा हाथ सूर्य की ओर उठाए थे । हमने भी बार्वा हाथ सूर्य की ओर उठा दिया तो वे बहाज पर घा गए । वे बलवान हुए पुत्र बिना बाढ़ी के थे । हमने उनसे सीन की साल तथा थिडियों की ज्ञान के बने वस्त्र खरीदे । ”

प्रीनलैंड के निवासियों को सूर्य की पूजा करती देश डेविस को विश्वास ही क्या कि उत्तर पूर्व में जुला समुद्र है अतएव वह आधा

घौर बिश्वास छे ताब घाये बड़ा । लेकिन उसने घौर ही अपना प्रमत्त छोड़ दिया क्योंकि जाड़ा नखरीक आ रहा था घौर यह छोड़े बसतपोबक में घुसा जो बाद को डैबिस बसतपोबक के नाम से प्रसिद्ध हुआ । उसने उत्तरी प्र ब रेखा को पार किया घौर एक स्थान पर लपर डाला । वहाँ उसे बहुत बड़े सकेर रीछ देखने को मिले । पहले तो प्रंघेबों का क्याल यह हुआ कि वे या तो बकरे या भैड़िये हैं परन्तु बाद को उन्हें ज्ञात हुआ कि वे उत्तरी प्रुब पर रहनेवासे रीछ हैं । वहाँ प्राबमियों के रहने का कोई बिन्ह न था घौर न वहाँ लकड़ी चास या घूमि ही बिबलवाई पड़ती थी । वहाँ केवल बट्टानें थीं । अतएव अन्होंने उसके बखिख में सगर जामा घौर जगें यह देखकर बहुत प्रतप्रता हुई कि वहाँ एक घुसी स्ट्र ट है जो बर्क से मुक्त है । बड़ी उत्कण्ठ से अन्होंने दोनों जहाजों को उस जूने बस की घौर बड़ाया परन्तु पहले कोहुरे तथा बिपरीत बायु के कारण अन्हें फिर पीछे लौटना पड़ा ।

प्र ब जाड़ा बड़ता आ रहा था । प्रोजन सामग्री समाप्त हीरही थी । डैबिस ने यह तो खोज कर ही ली थी कि पश्चिम की घोर जूना समुद्री मार्ग है अतएव अपनी सख्कस्ता की खुशी मनाता हुआ यह बेस की लीख घाया । जैसे ही बसन्त घाया डैबिस दूसरी खोज यात्रा पर चल पड़ा । उसके द्वारा उत्तर पश्चिम मार्ग का पता लगने की जबर दैघ में बड़ी प्रसन्नता से शुभी गई । उसने लोगों को बतलाया कि उत्तर पश्चिमीय समुद्री मार्ग के होने में तनिक भी शकैह नहीं है । यही नहीं यदि समुद्र बर्क से मुक्त हो बायु अनुकूल

घोर समुद्र गहरा ही तो उसे पार किया जा सकता है ।

इस उस्ताहूजनक बहान की सुनकर घोर सफ़सला का निश्चय होने के कारण व्यापारियों ने ईबिस के लिए दूसरे खोज अभियान की तैयारियाँ पूरी कर लीं । मई १२८६ में ईबिस पार बहाबों के साथ कटिन यात्रा के लिए प्रसन्न किया । सुन के मध्य में वह प्रीलमंड के पश्चिमीय तट पर पहुँचा । उस्ताहू अपने पुराने लपर स्थान निलबर्ट साइड तक पहुँचने के लिए बर्फ की बड़ी बड़ी चट्टानों में से होकर अपना रास्ता बनाता पड़ा ।

ईबिस का उसके पुराने रेस्ट्रिमो मित्रों ने स्वागत किया । वे उस्ताहू के घटान पर प्राणपूर्वक प्रार्थना करते प्रति गहरी निश्चिन्ता का प्रदर्शन किया । उनकी लहापता से ईबिस प्रान्तर की घोर घुला तो उसे यह वैषम्य बहुत प्रसन्नता हुई कि प्रान्तर की घोर यह प्रवेश बीरान्त नहीं था । वहाँ घास घीर मूनि भी घीर खंबली फूल घीर पैड़ उत्पन्न होते थे । परन्तु उसकी तो उत्तरी बर्फों में समुद्र में जाना था इस कारण वह वहाँ न रुक कर आगे बढ़ गया । कुछ दूर जाकर बर्फ घीर कोहरा इतना गहरा ही गया कि आगे बढ़ सकना सम्भव नहीं था । बाल रस्ते सब बर्फ में धम गए घीर बहाबों के नाविक अपने जीवन से निराश हो गए । नाविक बीमार घीर कमजोर हो गए । उन्हें अब सफलता की कोई भी आशा नहीं रही थी । ईबिस के नाविकों ने उससे प्रार्थना की कि उसकी अपने घीर उनके जीवन की रक्षा की घीर प्यार देना चाहिए । इस्ताहूस के साथ आगे बढ़ने का एक ही परिणाम ही था कि वे सभी यात्रा में समाप्त हो जाने पर

उनकी बिपवाई और पितृहीन बालक सब उसको कोता करेगा ।

डेबिस ने उन बच्ची को जो बीमार और रोगी थे और जो मयमौत से स्वदेश लौटने की यात्रा से ही और केवल एक बहाम 'भुनजाइन' की सेवा उस पर पुनः हुए नाविक जो साध्य के साथ उसके साथ जाना चाहते थे प्रागे भाग्य के भरोसे मत पड़ा । डेबिस ने उस स्ट्रेट को पार किया जो बाह को उसके नाम से प्रसिद्ध हुआ और 'इम्बरलैण्ड' साइड तट की खोज की । एक बार फिर उसने उस बिरडवेल्डिन चीन के लिए उत्तर पश्चिम मार्ग की खोज की । हिन्दु धर्म का मौलम बहुत छोटा होने के कारण समयम समस्त हो रहा था और उसे केपल मेन्डार के समुद्र तट की खोज करके ही लोतोप करना पड़ा । उसने मनमाने से उसी मार्ग का अनुसरण किया कि बिसबी नयासी वर्ष पूर्व जान कैडर काम में लाया था ।

जब वह स्वदेश लौटा तो लड़क के व्यापारी बहुत निराश हुए । यद्यपि डेबिस ने बहुत लम्बे और नए समुद्र तट की खोज निकाला था और वह पाँच ही सीम मछली की घातें और बहुत अधिक मात्रा में काह दिया लाया था किन्तु वह कंचे का भाग न बूँड सका । कंचे का मार्ग फिर भी बीता ही रहस्यमय था । यद्यपि अन्य व्यापारियों ने उस प्रयत्न को छोड़ दिया परन्तु सैण्डर्सन नामक एक बड़े व्यापारी को फिर भी यह तीव्र अभिलाषा थी कि कंचे (चीन) के मार्ग की खोज निकालना चाहिए । उसने फिर डेबिस से एक बार उत्तर पश्चिम मार्ग की खोज के लिए जान को कहा । ताहती

सौजी डंबित तीन बहाज सेकर फिर तीसरी बार बस पड़ा।

जब वह सबाइर के समुद्र तट पर पहुँचा तो उसका नाविक वहाँ के लठरे और कठिनाइयों को देखकर दुःख ही उठे। जब उसके प्रायिकोस नाविक मछली का शिकार करने गए थे तब वह कुछ प्रायिक साहसी नाविकों को एक छोटे बहाज पर सेकर घागे उत्तर की ओर लुमे समुद्र में बस दिया। मोसम गरम था और समुद्र के दोनों ओर भूमि बिप्लवाई पड़ रही थी। परन्तु जैसे जैसे डंबित घागे बढ़ता गया समुद्र चौड़ा होता गया। उसने उत्तरी प्रब रेखा को पार कर लिया था और वह उत्तर में उस स्वान तक पहुँच गया था जहाँ तक कोई छोटी नहीं पहुँचा था। अपने शाये हाथ पर एक डंबी पहाड़ी देखकर उसने उसका नाम 'संशुद्धन हीप' रख दिया क्योंकि उसे ऐसा लगा कि सम्भवतः लंबे का मार्ग मिल जावेगा।

३. सन् १३८७ खोज के इतिहास में एक स्मरणीय विषय था जबकि डंबित प्रीमलेंड तट पर उस लुडर उत्तरी रेखा में पहुँचा। वहाँ एक विस्मृत नीला समुद्र लैला हुआ था। जलमें बर्फ की बहाने नहीं थी केवल कतिपय बड़े बड़े हिमपिण्ड ही रहे थे जिनकी ऊँची लफेंद चौठियाँ प्राप्तमान की छु रही थीं। पूर्व में प्रीमलेंड के पहाड़ थे और उनके पार लघुते बड़ा मेसियर ऊँचा हुआ था। वह दृश्य वास्तव में ऐसा लुम्बर था कि मानो वह कास्मिक परिधों का बेस हो।

लेकिन घागे चलकर डंबित को फिर निरास होना पड़ा। उत्तर से एक भयंकर बेपवती वायु चलने लगी। उसके कमस्वल्प

समुद्र में एक विशाल हिमखण्ड एंडमॉडिक महमात्पर की धोर बहूकर जागया धौर उसने डैबिस का रास्ता रोक दिया । बार बार उसने प्रयात्न किया किन्तु धाये बहुतो असम्भव था धस्तु धनिष्ठा पूर्बक धौर मिरास होकर डैबिस मोट पड़ा ।

जब यह इङ्गलैण्ड वापस आया तो लोगों ने यह प्रश्न करना धारम्भ किया कि डैबिस को तीन बार मोठ पर भेजा गया किन्तु यह कीचे (चीन) का मार्ग नहीं बूँड सका । उन्हें यह भासूम नहीं था कि उस मार्ग में कौती भयङ्कर कठिनाइयाँ थीं । वास्तव में डैबिस ने चीनसेण्ड के उत्तरी ध्रुव प्रदेश के सप्त सौ तीस मील सम्भे समुद्र तट का पता लगाया लैन्डाइर के तट की खोज की धौर उत्तरी ध्रुव धिसके धारे में केवल भोग कपोल-कस्थित धार्ते ही धामते ने उसका सही पता लगाया । तब तो यह है कि उत्तरी ध्रुव के सम्बन्ध में इतनी महत्वपूर्ण खोज किसी ने भी नहीं की थी ।

तेरहवां परिच्छेद

बारनेट की स्पिट्जबगन की यात्रा

जब जान डेविल कॅम्पे (चीन) के लिए उत्तर पश्चिमी मार्ग ले जाने में तीन बार असफल हो गया तब वह वहाँ से बस प्रयत्न को छोड़ दिया। लेकिन ऐम्स्टर्डम के व्यापारियों ने इस चीज को अपने हाथ में ले लिया। १२६४ में उन्होंने एक कुप्रसिद्ध और अनुभवी नाविक बारनेट के नेतृत्व में बौद्ध अभियान उत्तर पश्चिम से कॅम्पे (चीन) को जाने का मार्ग ढूँढ निकालने के लिए भेजा। बारनेट की तीन यात्राएँ भीभौतिक शक्तों के इतिहास में सबसे अधिक रोमांचकारी बटमाएँ हैं। बारनेट की मृत्यु के उपरांत ही पुस्तक लिखी गई उसकी भूमिका में उन यात्राओं के संबंध में जो अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण और विचित्र भी बीसा दर्जनाएँ चित्र खींचा गया है बीसा कहीं पढ़ने को नहीं मिलता। उसमें लिखा है—

“बारनेट ने तीन यात्राएँ एक के बाद दूसरी तीन बरों में की। यह यात्राएँ मार्को पोलोवाँ तथा तारतार के उत्तर की ओर कॅम्पे के मार्ग के लिए की गई थीं। उन यात्राओं के पत्राचार पर असी डिपरी अज्ञात रीखा के अन्तर्गत जाने वाले रीछ की खोजें भी की

एई जिसके बारे में अनुमान था कि वह चीनमें है । अन्तिम यात्रा में 'सेंसे' जहाज बर्फ में डूब गया और उसके यात्रियों ने मोबा-लैम्बला में अत्यन्त ठंडे प्रदेश में एक शोपका बनाकर उसमें बस गये। उन सब महीनों के दिन उन्होंने अत्यन्त ठंडी सन्ध्या में बड़ी बर्षणीय स्थिति में काटे क्योंकि उन्हें वहाँ कोई भी आसानी देखने की नहीं मिली । बाद को किस प्रकार अपने जीवन को बचाने के लिए वे एक हजार मील कुमी नाव में समुद्र में जाने के लिए विवश हुए । वह एक हजार मील की यात्रा कुम्हे समुद्र में बड़ी कठिनाई अकर्मणीय क्षतों में घोर भूये रह कर की गई ।”

जीवितिक लोगों के लिए मानव ने जो त्याग व बलिदान कीर साधना की है उसका यह अद्भुत उदाहरण था । जिसके संकल्प में तीन सौ पन्द्रह वर्ष पूर्व यह विचारण लिखा गया था ।

१३६४ में क्रुश्न नाविक चिलियम कार्बेट के नेतृत्व में एंग्लो-डच के व्यापारियों ने बार जहाज इस उद्देश्य से भेजे कि वह उत्तरी सागर में घुसकर चीन और चीन के मार्ग की खोज करे । कुनाई के महीने में वे डूब जहाज मोबा-लैम्बला के बहिष्ठी समुद्र तट पर पहुंच गए । वहाँ से कार्बेट ने हवा के रज के अनुसार चलना आरम्भ कर दिया । केवल वह इस बात का ध्यान रखता था कि उसका रज उत्तर की ओर रहे और वह समुद्र तट के समीप ही रहे वर न निकल जावे । ६ कुनाई को सुदूर उत्तर में उन्हें एक कटाफटा तट दिखाई दिया जहाँ उन्हें बहुत प्रचीन मनु मिली । इस कारण उन्होंने उस स्थान का

नाम 'बियर-शीट' रखा दिया। भातू न जहाज पर चढ़ना चाहा प्रत्युत उस पर गोली चलाई गई। धारनेट के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि यद्यपि गोली उसके धरिरे में लगी थी फिर भी वह जल में डूब पड़ा और समुद्र तट की ओर तैरने लगा। उसकी आश्चर्यजनक शक्ति को देखकर सभी डेय थे जो लोग नाव में उससे पीछे बचा रहे थे। उन्होंने देखा भातू अभी नहीं बेसा था। अतएव उन्होंने उसकी जिंदा पकड़कर हालैंड से चलने का निश्चय किया और एक रस्ता उसकी पर्यन्त में डालकर उसको माथ के पास बँधना चाहा। परन्तु उस भातू ने इतना जोर लगाया कि उनकी नाव डमकाने लगी। परन्तु उन्हें उध भातू को नारना ही पड़ा और वे उसको पाल लेकर ही संतुष्ट ही गए जिसे वे पहली यात्रा की सफलता पर ऐम्बरवर्धम से गए।

यहाँ से धारनेट और घाबे उत्तर की ओर बढ़ा और एक ऐसे स्थान पर घाया जहाँ बर्फ का विस्तृत धीरस मीदान था और मौसम सुहारे से भरा था। फिर भी वह सावधानी से बर्फ को को बचाता हुआ चलता ही जाता गया। उन्होंने देखा कि नीबल-बँबला की सारी सुनि बर्फ से ढक गई है। उस बर्फ के स्थान से चलकर वे द्वीपों की ओर गए जिनका नाम उन्होंने हालैंड के राजकुमार के नाम पर 'घार्लैंड-द्वीप' रक दिया। वहाँ उन्होंने देखा कि वी सी समुद्री घोड़ समुद्र तट पर लिये हुए तूँड की घुप से रहे हैं।

जब वे लोग हालैंड भौट कर गए तो उन्होंने बतलाया

कि समुद्री बोट प्रबल और प्रयत्न बलवान समुद्री जन्तु हैं। वह जोनकी से बहुत बड़ा होता है उसकी छात चीन मछली के समान होती है, उसके बाल बहुत छोटे होते हैं उसका मुँह शेर की भाँति होता है उसके चार डालें होती हैं, किन्तु कान नहीं होते। जब नाविकों ने भालों और अन्य यन्त्रों से कुछ समुद्री घोड़ों को मार कर अपने साथ हार्बर रखाने के लिए ले जाने का निश्चय किया। वे साहस के साथ उनको मारने के लिए भाये बड़े परन्तु उनको मारना चलना सरस नहीं था शिकता वे समझते थे। उसी समय हुआ बहुत तेज चलने लगी और उसने बर्फ को टुकड़ टुकड़ कर दिया। अतएव उन्हें समुद्री घोड़ों के कुछ हावी शक्ति के समान शक्तियों को लेकर ही सतोंय करना पड़ा जो कि बहुत सम्बन्ध थे। इन वस्तुओं को तथा अन्य मुख्यवान वस्तुओं को इकट्ठा करके बारनेट की विवक्षित होकर उन ऊँची यस्तोया रेखाओं से वापस लौटना पड़ा और वह साइ तीन महीने के बाद सङ्ग्रहण बैस लौट पाया।

बारनेट ने लौट कर 'मोबा-बीबस्ता' के संबंध में जो रिपोर्ट दी उससे ऐन्सट्रॉन के व्यापारी बहुत उत्साहित हुए और उन्होंने लंदे और चीन के लिए उत्तर की धोर मार्ग बूड निकालने का प्रयत्न जारी रखने का निश्चय किया। अतएव उन्होंने बारनेट को दूसरा जोर अभियान से जाने को कहा। दूसरे वर्ष बारनेट फिर यात्रा पर गया किन्तु उसको यात्रा पर चलने में इतनी बेर ही गई कि वह दूसरी यात्रा में अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सका। अब हम उसकी तीसरी यात्रा के संबंध में लिखेंगे जिसने बारनेट को जोर

के इतिहास में प्रतिष्ठ कर दिया ।

मई १५६६ में चार्लेट ऐंगस्टडम से बी जहाज लेकर तीसरी घोर भस्मिन् माया के लिए बर्फ से जमे उत्तरी समुद्र की घोर बल पड़ा । एक जून १५६६ को चार्लेट एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ रात्रि होती ही नहीं थी तब ब दिन ही रहता था । कुछ दिनों के बाद उन्होंने एक ऐसा दृश्य देखा जिससे सबके सब माबिक भीचके रह गए । सूर्य की प्रत्येक बिशा में एक घोर सूर्य का घोर से घोर इन्द्रधनुष थे । एक इन्द्रधनुष उन सूर्यों के चारों घोर का घोर हमरा धनुष बड़ी प्रकीर्ण गोसाजार रस्ता को घेरे था । चार्लेट ने देखा कि वह उत्तरी ध्रुव से ७१ डिगरी प्रसांघ रखा पर था ।

घामे उन्हें लपलंड की उत्तरी अन्तरीप बिजलाई की घोर से उत्तरी पश्चिमी मार्ग पर बसत हुए उस छोटे से द्वीप पर आए जिसे उन्होंने 'बियर द्वीप' नाम दिया । यहाँ चार्लेट के साथी मरते मरते बचे । यहाँ एक डलवा ऊँचा बर्फ का पहाड़ था से इसा छईंश्य से कि बलकी बोटी पर बड़ कर समीपवर्ती श्वेता को देखा जावे बल पर बड़ गए । परन्तु बड़ने पर उन्हें सात हुआ कि वह इतना चिकना घोर फिसलने वाला है कि जग पर से उतरना असम्भव है । वह इतना चिकना घोर फिसलने वाला था कि यदि वे बड़ होकर उस पर से उतरने का प्रयत्न करते तो सब फिर पड़ते घोर उनकी पहनें टूट जाती । अतएव वे बर्फ पर बम कर बड़ गए घोर सरकना आरम्भ किया किन्तु यह भी बहुत अतरनाक

ज्योंकि पहाड़ के नीचे बहुत कठोर खड्डानें थीं घतएव हाथ
 र हूट जाने का भय था। बारनेट स्वयं नाव में बंठा रहा था। वह
 स्वर नहीं बढ़ा था। जब उसके साथी बठ कर उस बर्छे के
 चिकने पहाड़ में सरक रहे थे तो बारनेट नाव में बठ कर बहुत
 चिन्ता के साथ वह दृश्य देख रहा था। परन्तु कोई अप्रिय घटना
 नहीं घटी और व लोप समुद्रतल नीचे पहुँच पए।

एक बार फिर बारनेट क जहाज बर्छे और अर्धवीय मानुषों
 के देश में चल रहे थे। कोहरा और पाना पड़ रहा था। इस
 कारण मार्ग ठीक दिखनाई नहीं देना था। फिर भी बारनेट उरार
 की ओर बढ़ता ही गया। १६ घुन को उन्हें भूमि दिखनाई पड़ी
 वह स्थल प्रदेष्ट बहुत विस्तृत था। बारनेट ने सोचा कि वह
 चीनलैंड है, परन्तु वास्तव में वह 'स्पिट्जबर्गन' था जिसको उसने
 खोज निकाला था।

यहाँ उन नाविकों को बहुत थी वस्तुओं ने आश्चर्य में
 डाल दिया। यद्यपि वे इतनी ऊँची उरारी प्रसांश रैखाओं पर थे
 उन्हें यह देखकर महान आश्चर्य हुआ कि वहाँ घास और पत्ती वाले
 पेड़ पका होने थे और घास खाने वाले पशु थे। जबकि उत स्थान
 से कई डिग्री दक्षिण में न तो घास और पत्ती वाले वृक्ष ही होते
 थे और न घास खाने वाले पशु ही थे। वहाँ तो केवल मानु
 और तोमड़ी जैसे पशु होते थे जो मांस खाने थे।

एक जुलाई तक बारनेट ने उस विस्तृत प्रदेष्ट 'स्पिट्जबर्गन' के
 पश्चिमी तट की खोज करती और वह दक्षिण में 'विपर-डीप' की

घोर बम पड़ा। वह रिपब्लिकन के समुद्र तट पर उतरा नहीं। अतएव उस द्रुवीय महीन जोज के सम्यग् में अधिक बर्षन नहीं मिलता है। उत्तर के बीड़े समुद्र को जिसको अब 'बारनेट-समुद्र' कहते हैं पार कर वह पुन नीवा-जैम्बला में धार उतरा। वहाँ से उसके पश्चिमी तट के साथ साथ चलते हुए वह हिम बिन्दु' धारुत-पायन्ड तक आया। वहाँ धारनेट घोर उसके नाविकों को द्रुवीय भासुर्माँ संरते हुए हिम बर्दों और तेज धीर टंडी धापी नै बहुत परेक्षण किया। फिर भी वे लोव 'नीवा-जैम्बला' के उत्तरी तिरै तक समुद्र तट के साथ चलते चले गए। वहाँ उन्हें धार्रा के विपरीत एक अक्ष्ण्डा बंदरगाह मिल गया जिसमें उन्होंने जहाजों के लंपर डाम दिये। अब हवा धीर नी अधिक तेज हो गई थी और बर्फ नीवल बेग से जहाज के अग्वर आ रहा था। धीरे धीरे जहाज बर्फ से घिरता आ रहा था। जैसे जैसे हवा तेज होती गई धीर बर्फ कठोर होता गया अतका परिणाम यह हुआ कि नावें कठोर बर्फ तथा जहाज के बीच में बब कर डुकड़े डुकड़े हो गईं धीर फेता प्रतीत होने लगा कि जहाज भी बर्फ से बब कर डुकड़े डुकड़े हो जावेगा।

अपस्त का महीना आ गया धीर जैसे जैसे बर्फ बढ़ता गया वे एक प्रकार से कबजाने में बन्द हो गए। अर्होनि उस बर्फ की बेल से बाहर निकलना चाहा किन्तु वह अक्षम्य था। क्योंकि उस धीरान बर्फ से बने हुए अत्यन्त सीत स्थान पर घोर क्ये धीर बुल के साथ जाड़े के दिन निकालने के सिवाय कोई दूसरा चारा

नहीं था। बारनेट के लिए और अधिक जोग कर सकना सम्भव नहीं था परन्तु उन पर जो बीती उसकी कथा घस्यगत रोमाञ्चकारी है। बर्फ़ अब अहाज पर ऊंचा बढ़ता जा रहा था और प्रत्येक क्षण यह भय बढ़ता जा रहा था कि अहाज अब टुकड़े टुकड़े होने वाला है। उन्होंने अहाज को छोड़ दिया और समुद्र तट पर जो भी पेड़ बड़ों और झाड़ियाँ बह कर दूर से घा गई थीं उन्हें इकट्ठा कर लिया। मानो मयबाज ने उनके लिए ही उन पेड़ों को अहाकर भिजा था। सितम्बर के महीने में वे बर्फ़ में से समुद्र तट से डो डो कर पेड़ लाते रहे। इसका कारण यह था कि वे कबल सोमह व्यक्ति थे और वे भी निर्बल थे। इस प्रकार सितम्बर के महीने में उन्होंने भोजन बनाने के लिए यथेष्ट लकड़ी इकट्ठी कर ली।

अक्टोबर और नवम्बर के महीने उन्होंने उस भोजन के अन्वय निकाले। बाहर तेज हवा तुफान और बर्फ़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उत्तर की तेज हवा और तुफान तथा बर्फ़ लगातार बिना रुके पड़ रही थी। प्रत्येक दिन वे किसी प्रकार कुछ सोमड़ियों को खास लेते और उनके भांस को खा लेते। उनके घर में वे अपने लिए परम टोपियाँ बनाते। वे परबरोँ को परम करके अपने सोने के हथान पर रखते। परन्तु उनकी चारों छब वे घीते तो जम जाती और अन्त में उनकी घड़ी भी जम गई।

बाड़ा बढ़ता ही जा रहा था। वे एक दूसरे की दुखी और निराश होकर बैठते क्योंकि वे जानते थे कि यदि छीत और अधिक बढ़ा तो वे सब मर जायेंगे। बड़ा दिन आया और जला गया। उन्हें

बोझी धाया हुई क्योंकि सूर्य जितना भीषण था सफ़ता या बला बया अब सूर्य ऊपर चढेगा । परन्तु जैसे जैसे दिन लम्बा होगा यथा जैसे ही करते दीत चढ़ता गया । बर्फ इतना गहरा गिरा कि जमीन से भोपड़े की छन तक पहुंच गया ।

जया बर्फ धाया किन्तु वे सभी भी कड़ थे । वे साहसी शीत धरतरे और रोम से मुड कर रहे थे । बलबरी फरबरी मार्च और धर्मत भीत गया किन्तु उनका छोटा ता बहाज तब भी बर्फ में जकड़ा हुआ था । परन्तु अब उनके मन में धासा का संचार होने सवा था क्योंकि सूर्य की गरमी तेज होती जा रही थी । अतएव उन्होंने अपनी नाबों तथा पानों की मरम्मत करनी धारम्भ करली । वे इतने बीमार और कमजोर हो गए थे कि धबिध मेहनत नहीं कर सकते थे । परन्तु फिर भी उन्होंने किसी प्रकार नाबों की मरम्मत की और कुन के मध्य तक नाबें तयार हो गईं । वे बर्फ की काट कर अपनी नाबों को गुले समुद्र में ले गए । वहां से जीवित बच निकलने का उनके लिए यही एक मात्र उपाय था । उन्होंने बहाज की छोड़ दिया और दो छोटी कुनी नाबों में बैठ कर वे गुले समुद्र की धार बल दिए ।

बलते समय विनियम धारनेड ने एक पत्र लिखा और उसकी एक रिम्बे में बन्ध कर विमनी में लटका दिया । उस पत्र में लिखा था कि हम जोय किस प्रकार हार्नेड से चीन का रास्ता खोजने को ध्राए थे और किस प्रकार बहाज के बम जाने और अत्यन्त क्षति पड़ने पर अपने जीवन की रक्षा करने के लिए उन्हें बह

भ्रोंपड़ा बनाने पर विवश होना पड़ा। जहाँ उन्होंने रस महीने व्यतीत किए और किस प्रकार उन्हें विवश होकर दो नावें जुमी बनानी पड़ीं जिन्हें लेकर वे मुझे समुद्र में उतरने पर विवश हुए क्योंकि उनका बहाव बर्फ में जम गया था।

बारनेट स्वयं बहुत ही बीमार था और चल भी नहीं सकता था। अतएव उसके साथी उसको उठाकर नाव पर से गए। १४ जून १९२७ को वह छोटा सा रस अपने घात में रहने के स्थान को छोड़ कर उन दो छोटी घोर जुमी नावों में चल दिया। वे 'हिम बिन्दु' आइस पाम्पट की ओर बढ़े जा रहे थे। लेकिन बारनेट मृत्यु के समीप था। उसने बीबी आबाज में पूछा "बया हम आइस-पाम्पट के पास हैं यदि हम आइस-पाम्पट के पास हों तो मुझे ऊँचा उठा लो। मैं एक बार फिर उस स्थान को देखना चाहता हूँ।" उसके साथियों ने उसको उठाकर वह स्थान विपरीत किया। उसी समय यकामक हुआ तब होने सभी घोर बौड़ी ही बेर में वह इतनी प्रबल ही गई कि उसके सामने लड़ा होना कठिन था। उस हुआ के साथ गरम बर्फ इतनी तेजी से उन पर आ रहा था कि उनके सर के बाल तक सीधे बढ़े ही गए। सारा हृष्य और परिस्थिति इतनी मयाबहू ही उठी थी कि सभी ने समझ लिया कि सबका अन्त आ गया।

उन्होंने उन नावों को किनारे पर लगाकर बर्फ पर पीठ लिया और अपने बीमार कैता तथा कर्मांडर बारनेट को बर्छीनी घूमि पर लिटा दिया, जहाँ वह कुछ दिनों के बाद मर गया। बारनेट

के साधियों की उताही गृह्य से गुरा शोक हुआ। उन्होंने उसके बारे में लिखा है "हमारा मार्गदर्शक और मेता मित्र पर हम ईश्वर के बाह भरीगा करते थे घना गया और हम रह गए। १ नवम्बर १९१७ को दारुह समजोर और विपत्तियों से बड़े नाबिक जो उस समय भी लोमड़ी की पास की ठोपियां और झ बीय भागुओं की पास के कोठ पहुंचे थे अपनी उन हो छोटी और गुली नाबों में मोबा-बीम्बला से ऐम्सटर्डम पहुंचे। ऐम्सटर्डम के व्यापारियों की यह धारणा बन गई थी कि बारनेट तथा उसके साथी द्रुपीय भाषा में भर गए गए। जब उन दारुह नाबिकों से व्यापारियों को अपनी यात्रा का विवरण सुनाया तो वे घातक्यचरित हो गए, और बारनेट और उसके सहयोगियों के साहस की प्रशंसा करते नहीं सकते थे।

दो ती बीहत्तर वर्ष बाद १८७१ में मोबा-बीम्बला में बारनेट के छीत काल के स्थान की पुनः खोज की गई। उस स्थान पर घंपीठी के ऊपर खाना बनाने की बेबधियां मिलीं। पुरानी घड़ी बीबार के सहारे ज्यों की त्यों रखी थी। सभी घस्त्र घस्त्र घौजार और बर्तन ज्यों के त्यों रखे थे। यही नहीं वे संकीत बाघ और पुस्तकें जिनके द्वारा विपत्ति में कति हुए उन छाहसी नाबिकों की दो ती बीहत्तर वर्ष पूर्व लम्बी रातें कटती थीं वे भी वहां मौजूद थीं। उन बस्तुओं में एक बड़ा छोटे घूले और एक फ्लूट भी था। यह दोनों बस्तुएं एक छोटे सड़के की भी जो जाड़ में वहां भर गया था। जब दो ती बीहत्तर वर्ष उपरांत १८७१ में उन छाहसी नाबिकों के

उस स्मारक स्थान को जोखने के लिए लोग गए तो उन वस्तुओं को बेचकर उन्हें रोनाच ही आया और उनकी छात्रों में छात्र आ गए ।
 वे वस्तुएं अपने उन हीरो की नामों पर खूब गुना सुना रही थीं ।



चौदहवा परिच्छेद

हडसन द्वारा हडसन खाड़ी की खोज

उत्तरी प्रथ के रास्ते चीन (चीन) को पहुँचने की पहली धारणाएँ अभी अभी नहीं थी। ज्ञान संविदा ने नव विमित ईस्ट इंडिया कम्पनी के पहले जहाजी बेड़े को 'माला प्रतरीप' (कैप छाव पुड होप) के मार्ग से भारत पहुँचा दिया था। उसके बाद वह मर गया। उसको मरे दो वर्ष हो गए थे। परन्तु व्यापारी चाहते थे पूर्व के लिए कोई छोटा रास्ता ढूँढ निकाला जाये। प्रतएव मस्कोबाई कम्पनी ने हडसन को उत्तरी प्रथ के रास्ते एक बार फिर चीन का रास्ता खोज निकालने के लिए नियुक्त किया। हडसन उत्तरी प्रथ के रास्ते चीन तथा पूर्व के देशों तक पहुँचनेवाले उन खोजियों में था जो अपने प्रयत्न में सफल हो गया। यह बात नहीं थी कि हडसन उत्तरी प्रथ के मार्ग की कठिनाइयों को नहीं जानता था। उसको मालूम था कि इस प्रयत्न में चिलीपची तथा बारनेड ने अपनी जान ली थी तथा कोबियर और चबिस को भीती भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह एक और और साहसी नाविक था प्रतएव उसने एक बार फिर उस भयंकर

यात्रा पर जाना स्वीकार कर लिया ।

जोख के इतिहास में कोई भी खोजी इसके अधिक साहस-पुर्ख और उत्तरनाक यात्रा पर नहीं गया था । जब हडसन यात्रा कबला तो उसके पास घासी टन का एक छोटा सा जहाज उसका छोटा पुत्र बंक बो मेट तथा साठ नाविक थे ।

जलने से पूर्व हडसन के नेतृत्व में सभी नाविक सेंट ऐथनबर्ग के विरुद्ध में प्रभु से यात्रा की सफलता के लिए प्रार्थना करने गए । हडसन के बँहरे में आत्मविश्वास की आभा दृष्टिमान थी । प्रार्थना से लौट कर जब वे अपने जहाज की घोर आने मने तो मस्कोबाई कम्पनी के व्यापारियों ने उन्हें विदाई दी । विदा होकर हडसन ने लंमर उठवा दिया और वह उस उत्तरनाक यात्रा पर चल पड़ा । ६ सप्ताह की कठिन यात्रा के बाद हडसन प्रीमनेड पहुँचा । उसके जहाज के डेक पर बर्फ कम गया था । उसके जहाज की रस्सियाँ खरब की तरह घोर पाल तारते की तरह कठोर हो गए थे । उत्तर-पूर्वी तैज हुआ और बर्फ जहाज पर आक्रमण कर रहे थे । आगे बढोर बर्फ की जट्टाम रास्ता रोके थीं । आगे बढ़ना बहुत कठिन था । लेकिन हडसन ने इन बर्फ की विद्याम जट्टामों के किनारे से बचाकर अपने जहाज को निकाला । वह पहला नाविक था जिसने ऐसे साहस का काम किया था । बर्फ से बच कर हडसन रिपटलबर्गन पहुँचा जिसकी 'धारनेट' में खोज की थी । हडसन ने उसके पश्चिमी तट से उत्तर की घोर बढ़ना प्रारम्भ किया और उसने बर्ग के द्वीपों बहरमाहीं तथा बडे फडे

बहु मार्ग छोड़ दिया और पश्चिम की ओर चल पड़ा।

मस्कोबाई कम्पनी के लिए हडसन को धारण कर रहा था
 उनकी छब्र डब व्यापारियों को लग चुकी थी। व भी अंग्रेजों की
 भाँति उत्तर से पूर्व के लिए छोड़े रास्ते की खोज में थे। अतएव डब
 ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हडसन को कम्पनी के एक सौम्य प्रतिमान
 को ले जाने के लिए आमंत्रित किया। हडसन ने उस निमन्त्रण को
 स्वीकार कर लिया और १६६८ में वसन्त के आरम्भ में बहु
 ऐम्सटर्डम से चल पड़ा। उसका जहाज पर डब और अंग्रेज नाविक
 थे। इस यात्रा पर भी उसका पुत्र शंक उसके साथ था। परती में
 हडसन न्यू-फाऊन्डलण्ड पहुँचा। वहाँ कुछ काठ मछली पकड़ी और
 उससे जाने का बड़ा सुभीता होगा। वहाँ से हडसन रबिण
 की ओर बढ़ा। बहु अपने मित्र कैप्टेन जाम स्मिथ के उपनिवेश पर
 जीनिया की ओर जाना चाहता था। ७ अगस्त १६६८ को हडसन
 यात्र के 'न्यूयार्क' के पास पहुँचा जो उस समय 'न्यू ऐम्स-टर्डम'
 कहलाता था। २ सितम्बर को बहु जल बड़ी नदी के मुँह पर पहुँचा जो
 आज उसके नाम से प्रसिद्ध है। बहु वहाँ सारे दिन वहाँ की ओर
 बर्फीली हवा में बहकर काटता रहा। जब सूर्य चमका तो बिलसाई
 दिया कि वहाँ मृत्ति है जो टूटे पड़े डीपों की भाँति है। वहाँ एक बड़ी
 भीत की वहाँ हडसन ने रहने का निश्चय किया। उसके समीप ही
 तीन नदियाँ थीं जहाँ हडसन तीसरे पहर पहुँचा। यह देख कर उसे
 बहुत ही प्रसन्नता हुई कि वहाँ एक बहुत बड़ा बन्दरगाह था। उसने
 जहाज को उसी में जडा किया। वहाँ उन्होंने बहुत बड़ी बड़ी

का एक बहाज 'दिसकबरी' था। उसके साथ उसका लक्ष्म पुत्र था और एक विश्वासघाती बुद्धा मेठ था तथा कुछ नाबिक्र थे। हडसन ने उस विस्तृत ऐटलाण्टिक महासागर को अन्तिम बार पार किया। इस बार वह आइसलैण्ड के मार्ग से गया जहाँ उसे बहुत से पशु पक्षियों का शिकार करने को मिला और प्यास को ताजा मांस प्राप्त हुआ। वहाँ अण्डा मांस खाने तथा आइसलैण्ड को घेरने के धरम चल में रगल करने से अरास्तुष्ट नाबिक्र बहुत प्रसन्न हुए। उसके साथियों ने पिछले बय का नया सुंदर प्रवेश लोबा था वहाँ चलने को कहा। किन्तु हडसन को बर्फ से घना हुआ उत्तर हुआ था। वह उसके रहस्य को जागना चाहता था। अतएव उसने लोगों की राय नहीं मानी और वह अंतिसम्यक को घेर चल पड़ा। वह बीराल प्रदेश के पास से होकर लंबाडर के बर्फले समुद्र तट पर पहुँचा। वहाँ से वह अंत स्टुड में घुसा जो आब उसके नाम से प्रतिष्ठ है। वह वहाँ तीन महीने तक उसके आसपास चक्कर लगाता रहा किन्तु उसको पश्चिम को घोर जाने का कोई मार्ग नहीं मिला।

जाड़ा घा रहा था रातें लम्बा घोर ठंडी होती थीं और पूरबी बर्फ से ढक पई थी। वे स्टुड के कई सौ मील दक्षिण में थे और अन्तिसम्यक महासागर के लिए कोई मार्ग नहीं मिला रहा था। हडसन इस आशा से सुदूर पश्चिम की जाड़ी 'बेम्प-बे' तक आया था कि उसे दक्षिण समुद्र मिला जावेगा। परंतु वहाँ पहुँच कर उसने निराश होकर देखा कि दक्षिणी समुद्र नहीं है। पर हडसन को ज्ञान हुआ कि उसे पूरबी घोर जाड़े में घेर लिया है और वह उन बीराल

एक पीठ रोटी घाई। एक हडसन ने उनको रोटियां बांटी तो वह रो पड़ा क्योंकि रोटियां मुश्किल से पकड़ दिन के लिए भी धीरे धीरे पिघलने लगीं। उन्होंने कुछ मद्यनियां पकड़ ली थीं परन्तु वे अपने भूखे पेटों के लिए बहुत कम थीं।

बुन में अनुकूल हवा के साथ हडसन ने अहाज की वापस लवरेस की ओर मोड़ा परन्तु कुछ दिनों जाने के बाद ही बर्फ के कारण रुकना पड़ा। प्रबल बहान पर बिज्रोह भटक गया। हडसन और उसके साथी नाविकों में अग्रिम में अविश्वास उत्पन्न हो गया। कुछ नाविक नीच धीरे गुंठे से जो भूख धीरे धीरे क कारण उत्तरनाक हो गए थे। अग्रिम के इतिहास में इससे अग्रिम बीमारता नीच धीरे लवरेस तक घटना दूसरी नहीं हो सकती जो अग्रिम थी। उन नीच धीरे गुंठे नाविकों में हडसन और उसके पुत्र को उसके द्वारा पीठी बर्ष हडसन की टांकी में मरने के लिए छोड़ दिया। उन नीचों ने अग्रिम बर्ष की क्रिया कि हडसन उसका पुत्र और सभी बीमार धीरे अग्रिम लोगों को अहाज से हटा कर टांकी में मरने के लिए छोड़ दिया जाने धीरे को भी कुछ अग्रिम सामग्री सबे वह अग्रिम में बांटी ली जावे।

प्रातःकाल होते ही उन्होंने हडसन को पकड़ लिया और उसके हाथों को पीछे बांध दिया। हडसन ने पूछा इसका क्या मतलब है ? कुत्तों ने उत्तर दिया अग्रिम तुम अग्रिम ही नाच म होग तो तुम्हें इसका अग्रिम नामूम ही लावेगा। उन्होंने नाच को समुद्र में उतारा अग्रिम हडसन और उसके पुत्र को डाल दिया। उनके उपरांत अग्रिम बीमार

प्रबोध में पंप्त गया है। उसका माबिकर पहले ही बसंततुष्ट से बच तो उनका बसंतोष घरम धीमा पर पहुँच गया। एक नवम्बर को वे एक स्थान पर रुक गए और उन्होंने जाड़ा बिताने के लिए एक स्थान चुना। इस दिन के पार व बर्फ़ से रुक गए और बर्फ़ रात बिन पड़ रहा था। ६ महीने तक वे एक प्रकार से कड़ी का जीवन व्यतीत करते रहे। पहले तीन महीना तक उन्हें भोजन की कठिनाई नहीं हुई क्योंकि वे पक्षियों का शिकार कर लेते थे। किन्तु वे बिड़िया बसंत वाले ही उड़ गईं और वे धप उ वो उस निर्जन बीराम क्षेत्र में जाकर के दिन निकाल रहे थे धुँउ से पीड़ित रहने लगे। वे अब भोजन की लताय में अंतक रहना और घाटिया में जले और देहक तथा ऐसे ही शीघ्र अगतु को भी गिमत उनसे ही अपनी लुभा सुभाते। मई के महीने में बर्फ़ पिघला। शुक्र हुआ और उन्होंने मछली मारना शुरू किया। पहले दिन उन्होंने पाप सौ धी मछलियाँ पकड़ीं। इससे उनको भरपेट और अच्छा भोजन मिला। प्राणे के लिए प्राणा बंधी और उनका स्वास्थ्य भी सुधरा। हृदयन में एक बार फिर अस्थिर प्रयत्न किया कि पश्चिम का मार्ग रोजने का प्रयास किया जाये। किन्तु सब तोय विद्राहो न उटे। उन्होंने एक स्वर से कहा कि इस क्षेत्र के बाहुर इस बीहड़ प्रदेज में भूय स मरने की प्रपेक्षा स्ववेश में काँसी के द्वारा करना परत करवे।

हृदयन ने रातना स्वीकार कर लिया। सीरने के लिए सात तैयारियाँ करली गईं। उनसे रोटी के भंडार से पहले रोटियाँ निकाल कर सब की सब नाचियों में बाँट दी। हर एक के हितों में केवल

एक पीठ रोड़ी घाई। जब हडसन ने उनको रोडियां बांटो तो बहुत रो पड़ा क्योंकि रोडियां मुश्किल से पंद्रह दिन के लिए बौं घोर घायल जगहोने कुछ मधुनियां पकड़ ली थी परन्तु वे उतने सूखे पेड़ों के लिए बहुत कम थी।

बुन में अनुकूल हवा के साथ हडसन ने जहाज को वापस स्वदेश की ओर मोड़ा परन्तु कुछ दिनों चलने के बाद ही सर्ज के कारण रकना पड़ा। सब जहाज पर विद्रोह मड़न उठा। हडसन और उसके साथी नाविकों में घायल में घबिहवास उत्पन्न हो गया। कुछ नाविक नीच और गुंडे थे जो भूत और घायल के कारण खतरनाक हो गए थे। लौक के इतिहास में इससे घपिक बीमारा नीच और मरबाबनक घटना दूसरी नहीं हो सकती तो घय घड़ी। उन नीच और गुंडे नाविकों ने हडसन और उसके पुन को उसके द्वारा लोबी गई हडसन की पाड़ी में मरने के लिए छोड़ दिया। उन नीचों ने यह पर्यंत्र किया कि हडसन उसका पुन और सभी बीमार और घायल लोगों को जहाज से हटा कर पाड़ी में मरने के लिए छोड़ दिया जावे और को भी कुछ मोजन सामग्री वषे वह घायल में बांट ली जावे।

प्रातःकाल होते ही जगहोने हडसन को पकड़ लिया और उसके हाथों को पीछे बांध दिया। हडसन ने पूछा इसका क्या मतलब है ? दुखों ने उत्तर दिया जब तुम शीघ्र ही नाव में होग तो तुम्हें इसका दर्ज मासूम ही जावेगा। जगहोने नाव को समुद्र में उतारा जसर्भ हडसन और उसके पुन को डाल दिया। उसके उपरान्त कमजोर बीमार

धीरे धीरे धीरे को भी एक एक करके उस नाव में उतरने पर विवश किया गया । आखिरी समय पर कारपेंटर उस नाव में कुछ पड़ा उतने अपने मित्रों के साथ विषवासघात करने की प्रेरणा उसके साथ मर आता प्रकृत समझा । उसके उपरांत वे तीस नाविक 'दिसाफरी' अहाज के सब पालों को पील तेजी से ले गए ।

साहसी हडसन का प्रपन द्वारा खोजी हुई हडसन की छाड़ी में किस प्रकार कुछ प्रपन हुआ कोई नहीं जानता वह कहानी कहने वाला कोई नहीं बचा ।

सोभाग्यवश वे दिवोही सब इंग्लैण्ड लौटे तो हडसन का अरगत (बैजिक विवरण) धीरे धीरे इत्यादि होते गए । उस धीरे खोजे हुए खोजी की खोज करने के लिए कई अहाज इंग्लैण्ड से भिजे गए परन्तु हडसन की उस दुर्भाग्यपूर्ण नाव का कोई पता नहीं चला । तीन सौ वर्ष पूर्व जब अरगत साबियों ने उसके साथ विषवासघात किया था तब से धीरे धीरे उस कहानी को पुरा करनेवाली कोई कड़ी नहीं मिली । अबे सब कुछ निस्तब्ध हो गया ही । प्रकृति को भी उस कहानी को कहने का मज्जा साहस नहीं रहा । खोज के इतिहास में इतनी सच्चापूर्ण घटना हमारी पकड़ने को नहीं मिलती है ।

पद्रहवां परिच्छेद

परी और फ्रैंकलिन की उत्तर यात्रा

उत्तरी ध्रुव की खोज करनेवालों के सभी प्रयत्न अभी तक विफल हुए थे। इसका कारण यह था कि उत्तर में बर्फ की कठोर बीमार की भी किसी को उत्तरी ध्रुव की ओर नहीं जाने देती थी।

अभीसर्वी शास्त्री के आरम्भ में यह प्रमेय बर्फ की बीमार दूर गई और उनके बड़े शिबिर में चल कर बिखर गए। चीनमंड के समीप समुद्र में व्यापार करने वाले लोग यह खबर लाए। उसका परिणाम यह हुआ कि एक बार फिर उत्तरी ध्रुव की खोज और उत्तरी अमेरिका के तट से प्रशांत महासागर में पहुंचने के लिए मार्ग की खोज के प्रयत्न आरम्भ हो गए। उस समय तक अमेरिका का उत्तरी समुद्र तट अज्ञान था। अतएव इंग्लैंड ने दो बहाज तैयार किए। एक बहाज 'इसाबेल' कमांडर 'रात' की प्राधीनता में और दूसरा कमांडर मैथ्यू पॅरी की प्राधीनता में भेजा गया।

जब तत्काल खोजियों को यह पता ही गई थी कि उन्हें बैबिस स्ट्रेट से होकर प्रशांत महासागर का मार्ग खूँटना था। उनके साथ एक चित्रकार रिया गया था जिससे कि वे वहाँ के नक़्शे और

विजय ला सकें। उन जहाजों में जाने पीने की सामग्री खूब भर ली गई थी और उन प्रदेशों के आदिवासियों से मित्रता करने के लिए तरह-तरह की वस्तुएँ भी ले ली गईं।

मई के अन्त में दोनों जहाज प्रीनसेड के पश्चिमी तट पर पहुँचे। वहाँ उन्हें तेज पछिसि तुफानों का सामना करना पड़ा। जहाजों ने डेविड-स्ट्रेड को पार किया और बैकिंग की खाड़ी में पहुँचे। ऊँचे ऊँचे हिमखंड सर्वत्र समुद्र में तैर रहे थे। जहाज चलाना बहुत ही शोचिम का काम था। फिर भी दोनों जहाज इनको बचाते हुए साबधानी से पार रहे थे।

जहाज उन ऊँचे हिमखंडों को पार करते हुए धीरे धीरे अंतर्निर्जन और वीरान समुद्र तट को पार कर रहे थे। उसी समय समुद्र तट पर कुछ उस प्रदेशों के आदिवासी प्रकट हुए। रात्र अपने साथ एक ऐस्किमो जिसका नाम 'साब्योसी' था ले गया था।

'साब्योसी' ने उन्हें पुकारा उन लोगों ने उत्तर दिया तुम यहाँ से चले जाओ नहीं तो हम तुम्हें मार डालेंगे। जहाजों की ओर इशारा करके वे बोले यह कीमत से कीमत है? क्या यह सूर्य और बल्लभा से भाए हैं और रात्रि को रोझनी बैसे हैं?

दक्षिण की ओर संकेत करते ऐस्किमो ने कहा कि यह प्रबलबी लोग बहुत दूर से भाए हैं। किन्तु उन आदिवासियों को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि यह नहीं हो सकता। वहाँ सूर्य के सिवाय कुछ नहीं हो सकता।

शीघ्र ही वे धीरे-धीरे के विजय घन गए जिन्हें घ घन प्रभुवीय

हाई सेइस कहने लगे । यार्क-मगरीय को पार कर वे सीबे सम्ये तट पर बसते गए । कुछ दूर चलकर रास ने उस दिशा में जोर समझ कर बने का निश्चय किया । उसका पिचार था कि यदि इपर पहाड़ों के बीच को^१ तय स्ट्रेट हो भी तो भी यह निश्चय है कि इंसर्ज से बहाज नहों जा सकते । अतएव बसने अपने बहाज को पश्चिम की ओर मोड़ दिया जहां मार्ग बिचलाई देता था ।

२ मील तक बहाज बहुत अधिक बर्फ में बसते रहे । होपहूर को महरा कृहरा छा गया तब बहाजों को एक बड़ हिमखंड के पास अपनी सुरक्षा के लिए बड़ा रहना पड़ा । बसिए चल कर उन्हें एक बीड़ा जुता हुआ मार्ग बिचलाई दिया जिसका स्वभाव ठीक वैसा ही था जैसा कि बैफिन के 'सेन्टार-समंड' का था । लफ्तीमैन्ड पेरी और उसके कई अफसरों का यह विश्वास था कि यह एक स्ट्रेट है जो पश्चिम में जुमे समुद्र से मिलती है । परन्तु उसे यह देखकर बड़ा घाउसय रौर देर हुआ कि 'राग' ने उसकी बात को नहीं माना । यह कहकर कि जुमे पूरा निश्वास है कि इस ओर कोई मार्ग नहीं है वह वापस लौट पड़ा । वह सस्त महीने की यात्रा के बाद इंसर्ज लौट आया । यद्यपि उसकी निश्चय था कि उस ओर कोई मार्ग नहीं था परन्तु उसके सहयोगी अफसर उसके मत से सहमत नहीं थे । इस कारण सुगोत के आगकारों में यह एक विवाद का विषय बन गया ।

जब लफ्ठु नक्कीनेट से पूरा गया तो उसने सुदूर उत्तर की ओर घुस करने पर बल दिया । अतएव ही सोन अधिष्ठात तैयार

किए गए। एक वीरी के नेतृत्व में घोर बूतरा ब्रँकसिम के नेतृत्व में। वीरी पहले बना। उसको धारणा थी कि वह सकार-साऊंड यदि वह मार्ग पाने में सफल हो जावे तो 'बोन्स साऊंड' और घोर उसमें भी सफल हो जावे तो 'सिमप साऊंड' जावे। यदि वह 'बेहरिय स ड' से निकल जाने में सफल हो जावे तो वह कन्सबेडका और सबबिष हीन बना जावे। वीरी को यह धारणा थी गई थी कि ऐडलाइड से प्रशांत महासागर का मार्ग ढूँढ निकालना उसकी पोब का मुख्य उद्देश्य है।

मई १८१६ में ३७२ टन का 'ट्रिटला' तथा १५ टन का बूतरा छोटा जहाज लेकर वीरी अपनी यात्रा पर चल पड़ा। जुलाई के प्रथम सप्ताह में वह प्र बरेखा को पार कर गया। समुद्र में प्रसिद्ध हिमखंड नीर रहे थे घोर बलियाँ वायु बहुत तेजी से चल रही थी। हवा का जोर इतना अधिक था कि नरम बर्फ जहाज से धाकर तेजी से टकराता घोर उसकी सफेद बीछार सी बीट ऊपर तक पहुँचती। उस समय ऐसा भयानक लौट होता कि माचो बिबली गिर रही हो।

३१ जुलाई को वीरी सकार-साऊंड के प्रवेशद्वार पर पहुँचा। वीरी ने उसके बारे में लिखा है "जब हर एक भी बेहरे कर घोर बिन्ता प्रसक्त रही थी हवा का जोर बढ़ रहा था। हमने तेजी से साऊंड को पार करने का प्रयत्न किया। सभी नाविक मरतूल के पास इकट्ठे हो गए थे जबकि जहाज तेजी से धावे भाग रहे थे। उस समय तक सबके चेहरों पर घोर बिन्ता छाई रही जब तक कि

अज्ञात उस स्ट्रेट तक नहीं पहुँच गए जिसका नाम उन्होंने नीसेना सचिव के नाम पर 'बीरो-स्ट्रेट' रखा। अब हम सब बहुत प्रसन्न थे कि हम द्रुवीय समुद्र के शहर घुस चुके थे।

पश्चिम की ओर चलने पर एक बड़ा द्वीप मिला जिसका नाम उन्होंने नीसेना के 'सेनापति मैलबिली' के नाम पर मसयिली रखा और समीप की खाड़ी का नाम अपने बनों अज्ञातों के नाम पर 'हिकला' और 'प्रिपर' की खाड़ी रखा। पेरी ने लिखा है कि हमें यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता थी कि उस प्रवेस में जिसे लोग पुरुब के बाहर समझते थे ब्रिटेन की राष्ट्रध्वजा फहरा रही थी।

अब आधा सैज़ी से बढ़ता था रहा था। नया बर्फ जम रहा था। इस कारण अज्ञातों को उस खाड़ी में से जाने के लिए दो मीस लम्बे और सात इंच मोटे बर्फ को चीर कर एक नहर बनाई। उसमें से होकर अज्ञात खाड़ी में जा सके। अब अज्ञात खाड़ी के संवरपाह में पुरुब गए तो सभी नाविकों ने हर्षण्वति की। उन्हें वहाँ भी लम्बे सर्पकर घात के महीने व्यतीत करने थे। सितम्बर के अन्त तक उन्होंने खाड़ी के लिए सब तैयारियाँ कर लीं। अक्टूबर तक किरण इत्यादि पशु मांस के लिए बहुत मिलते थे। बाद को सोमड़ी भिड़िये बहुत मिलने लगे। अपने घाबमियों का मन बहुलाने के लिए पेरी और उनके अफसरों ने एक नाटक का आयोजन किया। १ नवम्बर को नाटक खेला गया। वह सूर्य निकलने का अन्तिम दिन था इसके बाद २६ दिन फिर सूर्य नहीं जमका। पेरी ने वहाँ एक अज्ञात भी निकाला जो बाद को इंपरीअल में दूया।

जनवरी १८१६ में आड़ा बहुत अधिक तेज धीर निराशाजनक हो गया। 'स्कर्वी' रोग प्रपट हुआ कुछ लोग उस रोग से पीड़ित हो गए। परन्तु पैरी निराशाकारी नहीं था उसने कहा कि इस रोग की रोकथाम का प्रयत्न करना चाहिए। एक के बाद वह दूसरी पुक्ति करता। उसने रोगियों को हरी सन्धी खिलाने के लिए लकड़ी के बस्तों में मिट्टी भर कर उनमें घासों तथा अन्य परोवार सन्धियों के बीज बोये और गरमी देने के लिए उन घन्टों को घ मोटी से पाइप के पास रख दिया। हरी सन्धियां उत्पन्न हुईं और उसने रोगियों को खिलाकर रोग मुक्त कर दिया। यद्यपि अब सूर्य फिर कमजोर लगा या किन्तु फिर भी फरवरी वर्ष का सबसे अधिक ठंडा महीना था। धीर कोई भी घाबली बेर तक बाहर जुमे में नहीं रह सकता था नहीं तो ठंड से उसकी छात बन जाती। एथिस के समय में कुछ कुछ वर्ष विफलता दुरु हुआ और बरमामीटर ऊंचा चढ़कर हिम विन्दु पर पहुँचा।

एक घण्टा को जहाज उस बन्दरगाह से निकल लके धीर पश्चिम की ओर बढ़े। कैप्टिन के मेल्बिली द्वीप से घाये नहीं बढ़ लके क्योंकि वर्ष बहुत था। जब वर्ष के कारण जहाजों का घाये बढ़ना सम्भव नहीं हुआ तो पैरी ने एक बार फिर लंबास्टर-मार्कड वापस जाने का निश्चय किया। कैप्टिन-के के पश्चिमीय तट को छूते हुए दोनों जहाज नवम्बर १८२ के प्रारम्भ में लकुघल डैम्स नदी में वापस लौट आए। पैरी के निष्ठा है "मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि जहाज पर जो भी ६३ घण्टर धीर नाविक

मेरे साथ पाए वे बे प्रकृति बेस को समुद्रत स्वल्प और हृष्य पृथ
प्रहारह महीने की लम्बी और बिकट यात्रा करके सीधे आए ।’

पैरी ने इस यात्रा में खोब सम्बन्धी बहुत बड़ा काम किया ।
उसने केवल छन स्टूडेंटों को ही नहीं बूझ निकाला बिनमें हीकर
प्रुथीय समुद्र को रास्ता जाता या बरम करने यह भी अनुभव से
जान लिया कि उत्तरी ध्रुव में जाड़े के दिनों में भी लम्बे महीने
किस प्रकार स्वल्प रहकर निकाले जा सकते हैं ।

फ्रैंकलिन की उत्तर-यात्रा

जब कि पैरी अपनी यात्रा पर जा लमी फ्रैंकलिन भी अपनी
सम्बन्धी यात्रा के लिए निकला । पैरी को यह यात्रा थी कि वह पूर्व
से बरिबन की ओर जावे वहां फ्रैंकलिन की पश्चिम से पूर्व की ओर
जाने का प्रयत्न था । सुदूर सम्भावना थी कि सम्भव है कि कहीं वे
एक दूसरे से मिल जायें । फ्रैंकलिन ने स्पिटज़बर्ग की यात्रा में
सम्बन्धी घट घटाई किया था और अन्त में वहां और सब घसकन
हो चुके थे वहां वह उत्तर बरिबन का मार्ग बूझ निकालने में लज्ज
हो गया । उसके साथ अन्तर रिचार्जतन को प्रमुख नाविक ‘बैक’
और ‘हुड’ और एक बाल्नाह बाल हीपरन थे ।

पैरी के जाने के पंद्रह दिन बाद इन पांच प्रपेज जोजियों के
हृष्यन-वे कम्पनी के एक बहादुर से कम्पनी के प्रधान कार्यालय तक
यात्रा थी । वहां पहुंचते पहुंचते अगस्त का अन्त हो गया । कम्पनी के
अधिन ने उनका मनोचित स्वागत किया और उन्हें एक बड़ा
बहादुर दिया । उस बहादुर में भोजन सामग्री अस्त्र-शस्त्र तथा सभी

अग्य प्रायशक सामग्रियां भर दी गईं। तोपों की सलासी की गड़गड़ाहट में वह जोशियों का बल उस अज्ञान में जिते कर्नैलियन नाविक से रहे वे 'कम्बरलेड-हाऊस' की ओर चल दिया। यह हड़सग-वे कम्पनी का एक किताबा। ए. लताह की छत्र कठिन यात्रा में उन्हें अनेक नदियों और झीलों को पार करना पड़ा। कई जगह जहाँ पानी तेजी से बिरता था। जहाँ नावों को लींचकर ले जाना पड़ा तो कभी कठोर जहानों पर भँसे की आस छोड़कर सोना पड़ा। उस यात्रा की समाप्त कर वे अचानक पहली मंजिल पर पहुँचे। अब हिम बिरना शुरू हो गया था और नदियों पर मोटा बर्फ जम गया था। उस समय जेकलिन ने यह निश्चय किया कि वह आगे बढ़कर 'अबाबास्का' झील तक पहुँच जाने बिसते कि उसे अचानक परमियों में तैयारी करने के लिए अधिक समय मिल सके। १५ जनवरी १८२ को डाक्टर 'रिचार्डसन' और 'टुड' को किले में छोड़कर जेकलिन 'बैक' तथा 'हूपबर्न' को साथ लेकर प्रुचीय शीत के समय में चल पड़ा। किले में जिनों से उसे इंडियनों द्वारा पहिले जानेवाले बर्फ में काम जानेवाले जूते जो लाने किले की आकार के थे कुर्तों से चलने वाली बाड़ियाँ स्लेज फर जमड़ की पैर तथा कौद और पंग्रह दिन के लिए भीजन दिया। बर्फ अब बहुत गहरा हो गया था और कुर्तों को भारी बाड़ियों को उन बर्फ पर लींचना कठिन हो रहा था। फिर भी ८५७ मील की दूरी उन्होंने १८ दिनों में पार कर ली। टंड शुरू पड़ रही थी अरमानोडर शुभ्य से पाँच दिवसी नीचे था। यात्रा की कठिनाइयों

का इती से अनुमान लगाया जा सकता है कि भोजन सामग्री कम पड़ गई हुसों को पोड़े बसे कमड़े के सिबाय जाने को कुछ नहीं था । रात्रि में हड़डी कपा बेनेबासी मयानक ठड पड़ती थी । अय तक के बाय पीने की कोशिश करते बहु बर्तन में ही कम जाती ।

२६ मार्च १८२ को बे सोय 'अबाबस्का प्रीत' बहूबे । बहूी पहुंचकर जहूँने यात्रा की तैयारियां करना आरम्भ करवाँ । बार महीने के बाद 'रिबाइसन और 'हुड' भी आ मिले । सब तैयारी हो चुकी थी । उत्तर में बसत आतु बहुत ही सुहावनी और मनमोहक थी । लम्बे ठंडे महीनों के बाद पेड़ों में हरित परिचान पहिल मिया का और तारा प्रवेश बनस्पति से लहलहाने लगा था । साथ ही कीड़े और काटने वाली मक्खियाँ इतनी पैदा हो गई कि रात्रि को सोना असम्भव हो गया । १८ जुलाई को प्रतम्ता और उत्ताह के बसावरख में बहु छोटा सा बस बन दिया । प्रंकलिन आहूता का कि बहु जाड़ा पड़ने से पहले कापर-नाइम-रिबर पहुंच जावे । लेकिन रास्ते की कठिनाइयाँ बहुत अधिक थीं जाने को सामग्री कम थी और बेने जाने नाबिक असम्भूह हो उठे थे । बर्फ घस्वी पड़ने लग गया था । अतएव विवरा होकर प्रंकलिन को अबाबस्का प्रीत से २२ मील की दूरी पर ही जाड़ा अ्यतीत करने का निश्चय करना पड़ा । उसने उस स्थान का नाम 'कोर्ड एन्टरप्राइज अर्वात् साहस का भुपे रखा ।

बहूी जाने के लिए यथेष्ट सुबिया प्रतीत होती थी क्योंकि प्रीत के किनारे रेण्डियर भूँड के भूँड करते बिकलाई बेटे थे । लेकिन जाड़ा

बहुत लम्बा और कष्टदायक था । प्रकलित को शीघ्र ही वह धनुमध हो गया कि बाड़े निकल सकें उसने छात्र सामग्री उनके पास नहीं है । इसलिये उसने 'बीक' को धनावस्था भीस नवव के लिए किया ।

१७ मार्च को बीक प्रातःकाल के समय साहस का दुर्प' (जैड आब देखर आइज) पहुँचा । प्रतिदिन अट्टारह मील की रफ्तार से उसने वह दूरी पार की । उसने वहाँ सभी मित्रों की प्रत्यक्ष और स्वरूप जामा । बीक पाँच महीने बाद अपने उन मित्रों से मिला था । उन पाँच महीनों में वह म्याट्ट ली चार मील बीसत बसा था । उसके पास बर्फ पर बसने वाले बूते और रात्रि की ओढ़ने के लिए केवल एक कम्बल और हिरन की जाल थी । बहुधा बर्मामीटर शून्य से चालीस डिग्री नीचे रहता था और उसको कभी कभी दो तीन दिन तक बरफ के लिए भीजन नहीं होता था परन्तु अपनी कष्ट-सहिष्णुता और साहस के द्वारा उसने अपने सभी साथियों की रक्षा करली । जून में शीतल ऐसा हो गया कि 'कापर-माहन-रिबर' को प्रचान किया जा सकता था और बूसाई में ठीम ली चोतीत मील की लम्बी और कठिन यात्रा करके वे पत नदी के मुहाने पर पहुँच गये ।

वास्तविक जीवन का काम अब शुरू हुआ । वे शीघ्र ही छोटे जहाजों में बैठकर प्र चीन समुद्र से बहिली तट की ओर चले । उन्हें पत्नी से मिलने की आशा थी । बेचारे कॅनेडियन नाविक उस समुद्र से भयङ्कर दृश्य की देखकर भयभीत हो गए । वे उस समुद्र में कभी

नहीं मए बे घोर बे उसमें जाना नहीं चाहते बे । किसी तरह उन्हें
 राजभरकर बचने के लिए रात्री किया गया । सब तो यह है कि
 उत्तरी प्रब के बहानी समुद्र तट के साथ साथ घामा भौमोलिक
 खोज के इतिहास में एक महान साहसिक कार्य ही माना जावेगा ।
 जैसे जैसे वे शो बहाब घस बर्कमि तट पर पूर्व की घोर बढ़ते जाते
 वे ब्रैकमिन जाड़ियों नदियों घोर डीपों के नाम रखता जाता बा ।
 घसने एक जाड़ी का नाम जाब चतुर्ष भूमिपैक जाड़ी नदियों का
 नाम हुड नदी बंक नदी बैपर्स इगलंड सेबेयरी घाब स्टेट के नाम
 पर, घोर वीरी-बै अपने मित्र वीरी के नाम पर रखे । खोज का मौसम
 समाप्त हो रहा था । मौसम की कठोरता घोर भोजन की कमी ने
 उन्हें बिबन्न कर दिया कि वे घर वापस लौट जावें । उन्हें अपनी
 खोज से घनी पूरा संतोष नहीं हुआ था । उनकी यात्रा का सबसे
 फलदायक भाग घस घाने जाना था । सम्भवतः उत्तरी प्रब की
 खोज के इतिहास में इससे अघिक कठ का सामना किसी को नहीं
 करना पड़ा । २२ अगस्त को ज़ीजी बल हुड नदी के नए मार्ग से
 फोर्ट एन्टरप्राइज (Fort Enterprise) के लिए चल पड़ा ।
 पृथ्वी बर्क से डक कुडी की घोर उन्हें केबल एक समय भोजन
 मिलता था क्योंकि दोनों समय भोजन कर सकें इतनी खाद्य-सामग्री
 उनके पास नहीं थी । एक अत्यन्त पपरीले घोर बीहड़ रास्ते पर
 उन्हें सम्पूर्ण यात्रा पैरल करनी पड़ी । बहुते कुछ दिनों तट
 जाने को कुछ नहीं मिला । जो लोई छोटे-मोटे जीवजन्तु मार
 बतें उन्हीं से भुषा की बुझते । ऊपर से जाड़ा इतना तेज था कि

परमामीटर में पारा हिम-बिन्दु से बहुत गीबे घतर गया था ।
 १ दिन के उपरांत एक गाय को पाकर वे लोग बहुत प्रसन्न हुए
 और उस मुझे बल में नबीन जरासाह और शक्ति का संचार हुआ ।
 लेकिन जैसे जैसे वे घाये बढ़ते गए स्थिति में कोई भी सुधार नहीं
 हुआ और वह बिगड़ती ही गई । भूख से मृत्यु उनको ताक रही थी ।
 एक दिन घाल और कुछ नीबू-जामुनों को बचाकर पेट की
 ज्वाला दांत की । दूसरे दिन एक हिरण के सीप हड्डियां और जूते
 धुन कर आए गए और पिछले बरत में मरे पड़ एक हिरण के मांस को
 मुझे जोड़ी मरभुजों की तरह प्या गए ।

घरत में स्थिति इतनी मयाबह हो गई कि अकस्मिक और
 जो भी बल में अचिठ अलखान वे वे तैत्री से लाहन दुर्ग की घोर
 बढ़े चितती कि वे वहां पहुंच कर रिचार्डसन और हुड को भोजन
 भिन्न लकें । व दोनों इतने अचिठ कमबोर और बीमार हो गए वे
 कि उनका चल सकना कठिन था । उनके सामने घोर निराशा छाई
 हुई थी ।

साधिर अ कस्मिक लाहत दुर्ग पहुंचा परन्तु वहां पहुंचकर उसे
 घोर निराशा और दुःख हुआ क्योंकि वह निर्जन और बीरान
 पड़ा था । वहां न तो कुछ खाने को था और न वे इच्छियन ही वे अिगर्ह
 वे भीड़े छोड़ गए वे । अकस्मिक घोर उसके साथी जब उस निर्जन
 स्थान में धुसे और अगहोनि देखा कि वहां खाने को कुछ नहीं है तो
 दुःख और निराशा से कपतर होकर वे रो पड़ । वे अपने लिए
 इतने दुकी नहीं हुए और मरोये बिनने कि अपने जन साधियों के

लिए जिन्हें वे पीछे छोड़ आए वे घोर जिनका जीवन इस बात पर निर्भर था कि वे यहां से तुरन्त कुछ भोजन भिज सकते। एक रेगिडपर की कुछ हथिया घोर जात सुनकर रात को जाई गई घोर बके हुए खोबी प्राण के सामने बैठ गए। कमरे के फर्श से लकड़ी निकाल कर प्राय बत्ताई गई थी। सुबह जब ऊँकलिन उठा तो उससे पर इतने सुन गए वे कि कुछ राज भी नहीं बन सकता था।

नवम्बर आने से पूर्व एक दूसरी बीमस्त घोर राष्ट्र दुर्घटना घटी। इस का एक व्यक्ति को कुछ घोर कष्ट से लगभग पायल ही गया था उसने हठ को मार डाला। प्रथम एक क बाद दूसरा व्यक्ति कुछ के कारण मरने लगा। जबकि ऊँकलिन रिबाईसन बैंक, हैपबर्न भी मरने ही जाने वे तो तीन इंडियन आए। वे अपने साथ हिरन का सूजा मांस घोर कुछ बीनों लाए वे। वे एक तरह भी पहुंचे नहीं आए। ठीक उसी समय आए जबकि ऊँकलिन घोर उससे साथी अपने जीवन की प्रशिक्षण पड़ियां पिन रहे थे। उनके ठीक समय पर पहुंच जाने से उन सबों का जीवन बच गया। उनकी यह अपनीय रक्षा देख कर उन इंडियनों ने बाहर जाकर प्रिकार किया घोर मछलियां बकड़ कर आए। बाबा मांस घोर मछलियां जाने से इनका स्वास्थ्य कुछ दिनों में ठीक हो गया घोर वे पात्रा करने के योग्य ही गए। स्वस्थ होकर वे साहस दुर्ग से बच पड़ घोर मुस बिपर-हीन प्युबे। वहां हडसन कम्पनी के प्रफसरों के साथ रहे कर उन्होंने बाढ़ के दिन अपनीय किये घोर पुनः स्वास्थ्य लाभ किया।

जब डॉकमिन और उसके छात्रों परमियों में इङ्ग्लैंड लीते तो वे पाँच हजार बाँध लीं पचास मील की यात्रा कर चुके थे। उन्होंने इस यात्रा में उन अकबनीय वृत्तिवाहियों और विचलियों का सामना किया था जो कि सोवियत के इतिहास में अनिर्बनीय थीं। जब दूसरे वर्ष परमियों में पैरी इङ्ग्लैंड वापस लौटा और उसने डॉकमिन से यात्रा के कष्टों को सुना तो वह एक बच्चे की भाँति रो पड़ा। प्रत्येक वर्षों को देखकर पैरी उन बच्चों की मृत्युता को अच्छी तरह समझ सकता था। यद्यपि उसकी यात्रा में बँते कष्ट नहीं उठाने पड़े थे।

परी की यात्रा

जब डॉकमिन कापर मेन रिबर की ओर बढ़ रहा था उस समय पैरी अपने बहाक जूरी तथा हूकला को लेकर हडसन स्ट्रेट को चल पड़ा। वहाँ से वह प्रयाग सामर में बुझना चाहता था। मोस्तन जराब का प्रत्यक्ष प्रति पीनी होने के कारण वे सौम्य हिन बँदों के बीच कुर के मध्य के बहने नहीं शूँचे। वे हिनबन्ध डार्ई ली कोट ऊँचे से और उनकी संख्या बहुत थी। दोनों बहाक इनको पार कर हडसन स्ट्रेट के मुह पर पहुँच गए। हडसन की खाड़ी में पैरी के पूर्वपरिचित बहुत से स्वाम से प्राप्त पैरी धीम ही साऊर्बन्धन द्वीप तथा प्रोमन स्ट्रेट (जिस पर छी वर्ष पूर्व बहुत कटु विबाध हो चुका था) पहुँच गया। यह देखकर पैरी की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा कि वहाँ एक अत्यन्त सुन्दर खाड़ी है जिसका नाम उसने 'डम क घाट के' रक्ता। वह जोर कोई विशेष साहस की नहीं थी क्योंकि उसमें कोई रास्ता नहीं था। जाया

देवी से बढ़ता घा रहा था नौका-संचालन का मौसम समाप्त होने पर वा घोर अभी देरी का कार्य प्रारंभ ही हुआ था। यह यात्रा अतर्नाक घोर कठिन तो थी ही उसका परिणाम कुछ नहीं निकला।

देरी इस प्रजिपान में बेहरिंग-स्ट्रुट की घोर बढ़ा था। इसने उत्तरी अमेरिका का दो सौ लीग समुद्र तट जोड़ा था और अब वह उस अर्धदि प्रदेस में जाड़े का मौसम व्यतीत करने की तयारी कर रहा था। पहले की ही तरह देरी ने इस अर्धदि ठंडे प्रदेस में जाड़े के लम्बे महीने व्यतीत करने के लिए मनोरंजन और स्वास्थ्य बीनों का प्रायोग्य किया। यहां तक कि बड़े बिन के भोज के लिए भुना हुआ मांस तथा अन्य प्राय वस्तुओं का भी उसने प्रबन्ध किया। भुने हुए मांस को सुरक्षित रखने के लिए बरतने मांस को भुना कर उस पर बाहर की घोर नमक लगा कर तथा कर्बस में लपेटकर डेब पर लटकवा दिया था। इसके अतिरिक्त जहां उसने जाड़ा व्यतीत करने का निश्चय किया था जहां पास में ऐस्किमो भी थे बिनसे उन लोगों का खूब मन बहुलता था।

एक दिन बर्फ बहुत बिर रहा था। जबर घाई कि ऐस्किमो लोगों ने बर्फ पर कुछ अिकार किया है। यह जबर सुनकर रिजपां बुझी से खुशी नहीं बनाई' उस पांव में रिजपां बुझी से चीकने लगी और एक दूसरे के घर में जाकर प्रायत में बुझी के मारे एक दूसरे से बिपदने लगीं। इसके बाद पांव की लनी रिजपां उस

मकान में घुसी वहाँ समुद्री घोड़ों को लाया जा रहा था। उन्होंने घोड़ों की बर्बादी की गिनायतें कि वे अपने घरों के दीपक जलाती थीं। इसके प्रतिरिक्त उन्होंने अपने घोड़ों के लिए कुछ मांस भी लिया। ऐसा लगता था कि पुरुषों ने बहुत से घोड़े मारे थे। वे बरामबर डो डो कर ला रहे थे। बड़े तो कुत्तों की तरह कर ला रहे थे। दीपक जला रहे थे। वे कमर में एक पट्टा बांधकर घोड़ों के घब को बाँधते थे। घब हर एक घोड़े में बाँधकर जपमण्डल रहे थे जैसे कि सारे पाँव में दिवाली मनाई जा रही हो। नाव भर में प्रतापता की लहरें उठ रही थीं। कि उन घोड़ों को मरवा जा रहा था। प्रत्येक ऐस्किमो समुद्री घोड़े के मांस को खा रहा था। देखते देखते उन्होंने शिक्का मांस खा लिया वह कल्पना के बाहर था।

जुलाई में जाकर कहीं भीतम ऐसा हुआ कि जहाज बंदरबाह से बाहर निकल सकें और अपनी यात्रा पर आने लड़ सकें। परी ने ऐस्किमो लोगों द्वारा बताया हुए मार्ग को अपनाया। बर्फ रास्ते को रोके हुए था। अचानक में जाकर वीरी ने जल स्ट्रेट को छूट निकाला जिसका नाम पतने अपने लोगों जहाजों फ्यूरी और हेल्सा के नाम पर रखा। वीरी को विश्वास था कि वह पतली जमबारा अर्ध द्वीप समुद्र को जाती है। अतएव वह आगे बढ़ता ही गया परन्तु आगे चल कर फिर बर्फ की एक अघिष्ट बीमार उसके सामने आकर लड़ी हो गई। तब उसने स्वयं मार्ग द्वारा खोज की। वीरी ने उसके बारे में लिखा है "वह स्ट्रेट अर्ध द्वीप समुद्र में जाती है यह इस खोज से इतना अधिक निश्चिंत हो गया कि मेरी यात्रा का बहुत कुछ सफल

हो गया।”

सितम्बर का महीना या यवा का और एक बार फिर बहाजों की बाड़ों में सुरक्षित रखने का प्रबन्ध किया गया। एक महीना और बड़ छोटे से लौड़ी बल को बर्त में रखना कठिन परीक्षा थी। परन्तु वे सब प्रसन्न थे। उन्होंने क्यूरी बहाज के चारों ओर बारह फीट ऊँची दीवार बनाई जिससे कि बहाज की हिमनिमित्त बहाजों से रक्षा की जा सके। बाड़ का मौसम बहुत लम्बा का और शीत बहुत अधिक था। जब प्रफस्त का महीना आया तब कहीं बर्त से छूटकारा मिला। वैरी तीसरी बार बाड़ के दिनों को उत्तरी द्रुव की बर्त में काटना नहीं चाहता था क्योंकि इसके आबमी कमजोर हो गए थे प्रत्यक्ष उसने घर लौटने का निश्चय किया। वैरी के बहाज जब प्रफेब्र में ईंमनेड पहुँचे तो वहाँ के सब पिरजों के सब बच्चे बड़ उठे और हर्ष के कारण प्रसन्न के निवासियों ने रोखनी की। क्योंकि वैरी और उसके साथी सत्ताईत महीने उत्तरी द्रुव का कठोर जीवन व्यतीत करके सकुशल घर लौटे थे। १४ नवम्बर १८२३ को वे लोय सकुशल ईंमनेड पहुँच गए।

इसने पर भी वैरी को छाति नहीं थी। वह फिर समुद्र-यात्रा के लिए प्रयत्नाने लगा। उसे उत्तरी द्रुव के रहस्य फिर वापस बुना रहे थे। वह तीसरी यात्रा पर फिर गया किन्तु तीसरी यात्रा बहुत्वपूर्ण नहीं थी क्योंकि वह कोई नई घुमि नहीं खोज सका। ‘प्रिंस रिचर्ड’ इनसेट में बर्त के कारण क्यूरी बहाज नष्ट ही गया और वैरी के सम्पूर्ण बल को हूकना पर लौटना पड़ा। इस प्रकार

२६

१८२३ में पंरी की तीसरी प्रकथा समाप्त हुई ।



सोलहवां परिच्छेद

क्रुक की यात्राए

यद्यपि 'क्रुक' के पूर्व डीरेस कार्पेंटर इसमें प्रौर डैम्पिर ने प्रास्ट्रेलिया की यात्राए की थीं परन्तु उस महाद्वीप की खोज के साथ 'क्रुक' का नाम प्रमिलन रूप से जुड़ा हुआ है क्योंकि वास्तव में प्रास्ट्रेलिया प्रौर न्यूजीलैंड को खोज निकालनेवाला वही था।

डैम्पिर १७११ में न्यू हाव्लैंड की यात्रा से वापस इंग्लैंड लौटा। किन्तु बहुत समय तक इंग्लैंडवासियों ने उस रहस्यमय बकिखी महाद्वीप की खोज के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया। लगभग सत्तर वर्ष बाद इंग्लैंड ने पुनः उस बकिखी महाद्वीप की खोज के लिए एक खोज प्रबिधान बनाने का विचार किया। उस खोज प्रबिधान का नेतृत्व 'जेम्स क्रुक' को सौंपा गया।

जेम्स क्रुक का वास्तविक जन्म डेल्फ्ट के तट पर होता था। इस कारण वह डचरी समुद्र प्रौर उसके मनुष्यों से मनी भाति परिचित था। पात ही कोयले की खानें थीं इस कारण वह खानों में काम करने वाले मनुष्यों के जीवन से भी परिचित था। यहाँ तक कि वह उन खोरो से भी परिचित था कि जो खोरी से पूर्वी तट पर बिदेयों ने बाल लाते थे। १७७१ में वह छाही नौसेना में जर्ती हुआ प्रौर

'ईपल' अहाज पर मास्टर मेड नियुक्त हुआ। चार वर्ष बाद जब बोल्डे ने कनाडा में कबीलेक पर पैन्नाक अहाज को लेकर प्रत्यक्ष किया तो वेम्स कुछ उसके साथ था। उसके बाद वेम्स कुछ का स्वामित्व 'आर्चमंडरलैंड' अहाज पर हो गया और उसकी सेंसारेस की जाड़ी का सर्वेक्षण करने के लिए बुना गया। उसका सर्वेक्षण कार्य इतना भ्रष्टा और संतोषजनक था कि उसे न्यू फाउंडलैंड और लेब्राडर के तट का सर्वेक्षण करने की प्रस्तावी गई। जब कुछ न्यू फाउंडलैंड और लेब्राडर के तट का सर्वेक्षण कर रहा था तो उसने बीकन में पहली बार सूर्यग्रहण देखा जिसके कारण उसको प्रख्यात महासागर की यात्रा के लिए जाना पड़ा। प्रपोजेक्शियनों में हिसाब लगाया था कि जून १७६६ में बीकन ग्रह दिखनाई देगा।

बात यह हुई कि रायल सोसाइटी काब ऐसइजनामी ने बार्बसाह को इस यात्रा का प्रार्थनापत्र दिया कि इंग्लैंड संसार में ज्योतिष के ज्ञान के लिए प्रतिष्ठित रहा है। वह धूमवी पर किसी भी शैस से ज्योतिष के ज्ञान में पीछे नहीं है। यदि इंग्लैंड इस महत्त्वपूर्ण घटना का सही परिचय न कर सका तो उसकी प्रतिष्ठा की बरका लगेगा। इंग्लैंड के बार्बसाह ने सोसाइटी की इस प्रार्थना की स्वीकार कर लिया। रायल सोसाइटी ने इस कार्य के लिए वेम्स-कुच को बुना। इस कार्य के लिए ३७ इन के एक बड़े अहाज को बुना गया और उस पर ७ नाविक नियुक्त किए गए। वेम्स-कुच को यह प्रस्तावी गई कि वह इंग्लैंड पर बीकन ग्रह

का परिवर्तन करे, प्रधानतः महासागर में नई खोज करे, और न्यूजीलैंड को लोन बिकाने। बुक ने उस खाही अहाम पर इंग्लैंड के राष्ट्रीय अखबार को कहुराया और यह १७६८ में यह उस महत्वपूर्ण यात्रा के लिए चल पड़ा।

उस अहाम पर बहुत तरह के मौप थे। अन्त समय पर जोसेफ बेंचस भी उसमें सम्मिलित हो गए। वे रायल सोसाइटी के एक बड़े पत्राचार सदस्य थे और प्राकृतिक इतिहास के विद्वान थे। उन्होंने उस अहाम पर जाने की खाबी प्राप्त करली थी कि जो ज्योतिषियों को लेकर बलिदान समुद्र के नये द्वीपों को जा रहा था। उस अहाम पर प्राकृतिक इतिहास की गवेषणा के लिए सभी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। उनके पास एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था कीर्तियों को बचाने के लिए और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए सभी प्रकार के बंध तथा मदीनें थीं। दो चित्रकार और ड्राफ्टमैन भी साथ थे। इस सबकी तैयारी में बैंक का इस हजार पाँच सय रुपया।

अहाम पर जो ज्योतिष सम्बन्धी खोजें थे वे बहुत बड़ियां थे। अहाम पर एक बूट लकड़ें वाली और सरलता से किसी स्थान पर से बाई जा लकड़ें वाली बेचनाला थी। इसके अतिरिक्त सभी प्रकार की भोजन सामग्री यथेष्ट मात्रा में लावनाभी और सुरक्षा के साथ रखी गई थी जिससे अहाम पर जानैवालों को कोई बीमारी न हो। बहुत तरह का मांस नीहू और नारंगी तथा अन्य फलों का रस भी यथेष्ट मात्रा में रक्ष किया गया था। बुक को यह खाजा भी मई थी कि जहाँ भी सम्भव हो ताजा भोजन सुब के लिया

बाधे विलसे कि प्राथमियों का स्वास्थ्य ठीक रहे। कुछ ने इस धारा का प्रसर प्रसर पालन किया। यहाँ तक कि नवीरा बम्बराह पर उसने एक नाविक को इस कारण १२ कोड़े लगाने की आज्ञा दी क्योंकि उसने ताजा मांस खाने से इनकार किया था। इस कारण सभी नाविकों का स्वास्थ्य बहुत प्रच्छन्न रहा। रामो-डी बंगरी से जब अहाज चला तो सबका स्वास्थ्य उतना ही प्रच्छन्न था कि जितना इ फर्नेड से चलने के समय था।

बड़ा दिन कुछ ने रिवर-स्मिथ के मुहाने पर बिताया। जनवरी १७६६ को कुछ का अहाज ली-मेंरी के जल संयोजक में से निकल कर धाधे बड़ा। स्टडिन द्वीप पर भी बैंक ने बहुत से नये पीचों को इकट्ठा किया और अहाज पर ले आए। इसके धाधे अहाज लेंड जार्ज द्वीप पहुंचा। एक वर्ष पूर्व उस द्वीप में 'डालकिन' अहाज पर ईप्सेन बसित था चुके थे। कुछ के अहाज के कुछ नाविक 'डालकिन' अहाज पर काम कर चुके थे और उस द्वीप के शासकों को जागते थे इस कारण वहाँ प्र प चों का निबबत स्वागत हुआ। सीम ही उस द्वीप पर खेमे नाड़ दिए गए। एक किता बनाया गया जितनी बीबारों पर तोपें अड़ा भी गई। बी बी कीमती औजार थे उचित स्थान पर रक दिए गए। ३ बून को जब आकाश स्वच्छ था और अस्तहनीय भीषण गरमी पड़ रही थी तो जहाँने सूर्य पर से नीलस ग्रह को चाते स्पष्ट देखा।

अस द्वीप में तीन महीने ठहर कर कुछ धाधे बड़ा। उसने 'दुपिया' नामक उस द्वीप के एक निवासी को साथ से लिया। बात

यह भी कि दुनिया घबड़ा रसोइया था और कुरो का मांस बहुत घबड़ा शूनता था । उस द्वीप समूह के प्राय द्वीपों में भी कुछ गया और उन सभी द्वीपों पर उसने इ मसंड के बावसाह् जार्न तृतीय के नाम से कब्जा कर लिया ।

घारे सितम्बर के महीने के समुद्र में यात्रा करते रहे ७ अक्टूबर १११९ को उन्हें भूमि दिखालाई थी । सबसे पहले एक बालक निकोलस ने भूमि को देखा । इस कारण कुछ ने उसका नाम ब्रॉय निकोलसहूँद रख दिया । वहाँ के निवासी अफ्रीकों को देखकर खुश नहीं हुए, उनका व्यवहार अशुतापूछ था अतएव कुछ की बंधुओं और सोपे अतवानी पड़ी कि बितसे वे उन पर आक्रमण न करें ।

मौरिस लोभों ने अतमा बड़ा अहात्र कमी नहीं देखा था । दूर से देखने पर उसकी सुरत एक विशाल बिड़िया के समान थी और पास उसके पर के समान थे । वे उसके आकार और सुन्दरता को देखकर मुग्ध हो गए । परन्तु जब अतमें से एक नाव समुद्र में डाली गई और गोरे लोय अपने कमठीसे रंगबिरंगे वस्त्रों में समुद्र-तट पर आकर उठे तो मौरिस लोपों ने समझा कि वे शैबता हैं । परन्तु वे लोय इन पोरों को देख कर खुश नहीं हुए । वे अपने भातों को अफ्रीकों की और तात कर अपना अ्येय प्रदर्शित कर रहे थे । समुद्र तट के रेतीले मैदान के बीचें अघन बन से बरी हुई पहाड़ियां थीं जिन पर बर्फ दिखालाई पड़ता था । समीप के जगस में असे हुए गाँवों से बुधा उठता दिखालाई बैठा था । मौरिस लोय अफ्रीकों के

आममन से प्रसन्न नहीं थे अतएव कुछ नै बहाँ उतरना सुरक्षित नहीं समझा। वह बसिन्हा की घोर जन पड़ा घोर उत्तर के द्वीप के पूर्वी किनारे पर उसने अपना जहाज उल्टाया। वहाँ का प्रदेश वीरान था अतएव कुछ उत्तर की घोर बढ़ता जाता गया। दुर्भाग्यवश प्राकृतिक घोर वैसिप्यन के बीच जो सबसे सुरक्षित बंदरगाह था उसको तो वह चुक गया परन्तु फिर भी 'कुछ की छाड़ी' में लंगर डालने का उसे प्रयत्न स्थान मिल गया। वहाँ उसे नक्षत्रियाँ और मुगियाँ भी बहुतायत से मिल गईं। उस क्षेत्र पर बादशाह जार्ज के नाम से अधिकार करके कुछ उत्तर की घोर बढ़ता गया। उत्तर की घोर बढ़ते हुए एक को बहुत सी नदियों के मुहाने देखने को मिले जिन्हें देख कर प्रपंचों की डेग्स की बाद जाने लगी। जब वे उस भूमि के सुदूर उत्तरीय स्थान पर पहुँचे तो दिसम्बर का महीना था। उस समय ऐसी प्रबल धाँधी आई कि उनका जहाज उस उत्तरी स्थान से जितने कुछ नै उत्तरी अन्तरीय नाम दिया दूर हट गया।

जनवरी १७७० में कुछ मारिया अन्तरीय पहुँचा। उत्तरी द्वीप के पश्चिमीय तट पर बसिन्हा की घोर चलते रहने पर कुछ का जहाज वहींन चारलट्टी साऊथ पहुँचा। यह स्थान उस स्थान से केवल ७ मील ही था वहाँ इतना नै सर्व प्रथम भूमि के दर्शन किए थे।

यहाँ प्रपंच समुद्र तट पर उतरे। वह प्रदेश लपट धनों से ढका था। बड़ी कठिनाई से कुछ एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया घोर बहुत

दूर पूर्व की ओर कुछ ने देखा कि उत्तरी द्वीप के पूर्व और पश्चिम की ओर जो समुद्र हिलोरें मार रहे हैं व दूर पूर्व में जाकर मिल गए हैं। उसने एक समस्या को हल कर लिया। उसने जान लिया कि इसमें का स्टार्टेन प्रवेश बसिली महाद्वीप का भाग नहीं था। अब उसने निश्चय किया कि वह दो द्वीपों के बीच उस अस्संयोगिक की ओर जिसे उसने खोज निकाला था जायेगा। अतएव वह उत्तर की ओर चला और तरनावेन अन्तरीप पहुंचा और उसने सिद्ध कर दिया कि वह प्रदेश बसिली महाद्वीप का भाग न होकर एक स्वतन्त्र द्वीप है। अब कुछ के मानिक कहने लगे कि उनका काम ही गया और उन्हें इन्सर्पेक्ष बावत चलना चाहिए। परन्तु कुछ ने उनकी बात पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया और हड़ता के साथ उसने अपना एक किर बसिली की ओर कर दिया। वहां के निवासियों से उसे यह पता लग गया था कि वहां दो बड़े द्वीप हैं अतएव उसने यह निश्चय किया कि किस प्रकार उसने उत्तरी द्वीप के चारों ओर यात्रा की उसी प्रकार बसिली द्वीप के चारों ओर भी उसे चक्कर लगाना चाहिए। जैसे ही कुछ बसिली की ओर चला तूफान घोर घांभी ने उसको बरेमान करना शुरू कर दिया परन्तु कुछ उससे तनिक भी नहीं घबड़ाया और धामे बढ़ता ही गया। घंघड़ घोर तूफान इतना तेज था कि करवरी के अन्त में ही दिन के समयदूर तूफान और प्रबल घंघड़ तथा भीषण वर्षा में अज्ञान का अन्त पाल फट कर टुकड़े टुकड़े हो गया और सात दिन तक उन्हें भूमि के दर्शन नहीं हुए। उस तूफान और भीषण वर्षा में मार्ग दिखाताई न देने के

कारण अहाज समय-समय में डूबी हुई अट्टाली से टकराने ही बाला का कि बच गया। उस समय वह अहाज टुकड़ टुकड़ होकर डूब जाने ही बाला का। कुछ घोर डटके तानी बहुत बड़े खतरे से बच गए। १४ मार्च को सायंकाल के समय कुछ एक छाड़ी में गुता घतएव उसने उसका नाम उसकी छाड़ी (साम्भ-छाड़ी) रख दिया। वहाँ से वह एक ऐसे स्थान पर गया जहाँ कि चार नदियाँ प्राकर गिरती थीं।

— कुछ ने म्यूजीलंड के बारे में सिका 'है' 'बुम्बी पर कोई भी देश इतना बीरान घोर बीहड़ नहीं दिखलाई देता जितना समुद्र से यह देश बीहड़ घोर बीरान दिखलाई देता है। जहाँ तक दृष्टि जाती है केवल पहाड़ों की शीटियाँ ही दिखलाई देती हैं। अगस्त में २४ मार्च को बलिली द्वीप के उत्तरी बिन्दु को गार कर लिया अब उसके सामने पूर्व परिचित मैसेकर की छाड़ी उत्तरी की छाड़ी तथा नवीन चार सैट्टी-सांख्य का जल सहारा रहा था।

कुछ ने अपने साथियों से कहा कि हमने इस देश की परिष्का पूरी करनी घतएव अब हमें इपलंड वापस चलना चाहिए।

ऐडमिरेलटौ-बै में लड़ा करके अहाज की मरम्मत की गई जिससे कि वापस सम्भी यात्रा के बहु योग्य बन सके। उसके पाल सब बट कर खर्च हो गए थे घतएव उनकी फिर से मरम्मत करने तथा अहाज की मरम्मत करने में बहुत परिधम घोर कठिनाई हुई।

जब समुद्र तट पर बंकर कीड़ों और वीधों की धोख करता
 था तब तक कूक ने अपनी इस यात्रा का बर्तुन सिद्ध बनाया ।

उसने मूबीर्लैंड की प्रथम खोज का सन्वाई के साथ भय
 जर्मन को दिया । परन्तु उसने लिखा कि यह मानना उसकी भूल
 ही कि वह बलिष्ठ महाद्वीप का एक भाग है ।

वहाँ के निवासियों के बारे में उसने लिखा है कि वे मजबूत
 बौड़ी हुई बाले बलिष्ठ, कुत्तिलि और लम्बे होते हैं । वे गहरे सूर
 रंग के होते हैं उनके बाल काले और बड़ी घनी होती है । पुरुष
 और स्त्रियाँ अपने बड़े तथा प्ररीर पर मछली के तेल में मिजा कर
 नाल रंग लवाती हैं । वे पत्थर हड्डी और प्रक के धामुपण
 पहिनती हैं और पुरुष वालों में सफेद पर लमाते हैं । उनकी नाबे
 बड़ी होती हैं जिनमें सौ घाबनी एक साथ बीठ सकते हैं । वे जब
 बहाज के समीप या बाठे हैं तो उनका मुखिया एक कुस्हाड़ी घुमा
 कर बिल्ला कर कहता है तुम हमारे साथ समुद्र तट पर घाघो हम
 तुम्हें मार डालेंगे । वे लीप नर मांस भक्षक वे अतएव यदि कोई
 उनके हाथ में पड़ जाता तो वे उसे मार कर खा जाते ।

एक दिन रात्रि पड़ने पर जब सब लीप डेक छोड़कर सोने लगे
 लिए बने पर ही बहाज एक बड़ी बहान से ठकरा कर बिलकुल
 प्रबल खड़ा हो गया । हर एक व्यक्ति डेक की घेरेर भागा प्रत्येक
 व्यक्ति के मुख पर घोर निराशा और घबड़ाहट छाई हुई थी क्योंकि
 सबकी समझ में आ गया था कि परिस्थिति पतरे से पूर्ण और
 नयानक थी । तुरन्त उन्होंने पालों को उतार दिया और नालों को

समुद्र में डूबारा तब उन्हें भाग्यम पड़ा कि वे कोरल बट्टानों पर चढ़ पाए हैं। जहाज में कहीं देख हो गया था और जयमें कुछ पानी आ रहा था। दो दिन घोर बिम्बा में बड़े परन्तु भाग्यवशा डूबा ज्वार आया और जहाज उसके साथ गहरे पानी में चला गया। सबों को बेहरे प्रसन्नता से स्निग्ध पडे। जहाज की मरम्मत करनी आवश्यक थी अतएव वे एक नदी में जाकर ठहर गए और जहाज की मरम्मत की जाने लगी। दुपिया और अन्य लोगों में बीमारी के बिम्बु दिखलाई देने लगे थे अतएव समुद्र तट पर एक अस्पताल स्थापित किया गया और ताजा मांस और भोजन लाने पर रोबियों का स्वास्व्य सुपरने लमा। उस स्थान पर प्रायः कुम्भारम्भ नगर बसा हुआ है और कुरु की एक मूर्ति वहाँ लड़ी हुई उस समुद्र की देवता है जिसे उजने अपने देव के लिए खोज निकाला था।

घामे खोज करने के लिए परिस्थिति अनुकूल नहीं थी। जहाँ तक नजर जाती थी समुद्र बट्टानों से भरा दिखलाई देता था और समुद्र की लहरें बहुत तीव्र थी। जब कुरु उस छोटी नदी के बाहर निकला तो उसने देखा कि समुद्र की लहरें बड़ी तीव्र से बट्टानों से टकरा रही हैं। उस क्षण में जहाज को पैना बहुत ही दुष्कर था। एक बार तो कुछ बेला साहसी व्यक्ति भी निराश हो गया और उसने प्राण छोड़ भी परन्तु सभी नाविकों के हर्ष का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि कुछे समुद्र में पहुँचने के लिए एक तंब परन्तु कुला मार्ग है। उस उत्तरी भूमि की शोक का नाम कुरु ने डूक प्रायः पार्क के सम्मान में चार्ड-अन्तरीप रखा। जब जहाज

को हिन्द-महासागर में जाने का रास्ता मिल गया। कुक ने सिखा है 'मैं जब उस महाद्वीप के पूर्वी तट को छोड़नेवाला था जिसे किसी भी योरोप निवासी ने पहले कभी नहीं देखा था। मैंने एक बार फिर ईंग्लैंड के राष्ट्रीय ध्वज को फहराया और हिज मॅन्वेस्त्री क्रिय चार्ज तृतीय के नाम से सम्पूर्ण पूर्वीय तट पर अधिकार कर लिया। उस पूर्वीय समुद्र तट का नाम हमने न्यू-साऊथ-वेस्ट रज दिया।"

कुक ने जब अपने जहाज को उस जल-संयोजक में से निकाला जिसे १९४ वर्ष पूर्व संयोजकज बिना जाने 'टारेल' ने पार किया था। जब समुद्र से निकलते ही 'न्यू सिनी' रिश्चबाई की ओर कुक ने अपनी जहाज को जाबा की ओर मोड़ दिया। उसका कारण यह था कि उसके नाविक जब बीमार हो रहे थे और बेस को लौटने के लिए जटपड़ा रहे थे। जहाज की भी हालत ख़ाबगी नहीं थी। उसमें पानी घाता था और रात दिन लगातार पम्प करके पानी को जसोबा जाता था नहीं तो पानी जहाज में भर जाता। जहाज के पाल इतने ख़रर और कमजोर हो गए थे कि वे तेज हवा के सामने नहीं ठहर सकते थे। एक कमलपूर्वक 'बटाबिया' फूँच गया और वहाँ जब लोगों ने उसका घाबर सतकार किया।

दो वर्ष पूर्व जब एक जेमाजक के खबरवाह से निकला था तब से कुक के जहाज पर केवल साठ मनुष्यों की मृत्यु हुई थी। तीन बूब कर नरे हां प्रायः प्रीत में भर गए एक समयीव से मरा, एक भोजन के बिना ही मर गया किन्तु एकही रोग से

व्यक्ति भी नहीं मरा जो जोर के इतिहास में एक प्रकृतपूर्व घटना थी। किन्तु बटाविया का जलवायु प्रचण्डों को मिलकृत अनुकूल नहीं था। उनमें महामारी पड़ गई। एक के बाद दूसरा व्यक्ति मरने लगा। अन्त में सब लोग इतने कमजोर हो गए थे कि एक बार केवल घीस व्यक्ति ही जहाज पर काम करने योग्य रह गए थे।

जब बड़े दिन के प्रबसर पर जहाज वहाँ से चला तो वे सब प्रसन्न थे और जब तीन वर्षों के बाद वे लोय लंदन पहुँचे तो उनके हृदय का ठिकाना नहीं था। क्रुस के ईंगलैंड पहुँचने और उसकी नवीन जोड़ों के बारे में इंगलैंड में उस समय अधिक जल्ताहू प्रपठ नहीं किया गया। क्रुस सम्राट से सेंट जेम्स महलों में मिला उसने अपनी यात्रा का विषय और नक़्शे सम्राट की भेंट किए और सम्राट ने उसको लपटीनेट से बँट्टेन बना दिया।

यद्यपि क्रुस द्वारा जो नवीन खोज की गई थी उसको इंगलैंड में उस समय कोई बिलय महत्व नहीं दिया गया परन्तु कुछ ही महीनों के बाद क्रुस को दो जहाज और बर्ग जर के लिए भोजन सामग्री के साथ सुदूर देशों की खोज के लिए भेजा गया।

यद्यपि क्रुस की दूसरी यात्रा बहुत ही महत्वपूर्ण थी किन्तु उसके फलस्वरूप कोई नया देश या महाद्वीप नहीं मिला। एक कई महीनों तक बसिन्ही प्रक का चक्कर मगलता रहा और जब उसे विश्वास हो गया कि सुदूर बसिन्ही में कोई महाद्वीप नहीं है तो वह वापस लौट आया। इस यात्रा के सम्बन्ध में उत्तरी अफ्रीकी

वैतुक।पाल हिटबी में रहनेवाले एक मित्र को जो पत्र लिखा था उसका धारांग्र देना ही मजेठ होगा।

उसने अपने मित्र को यह पत्र लंदन से दिसम्बर में लिखा था। प्रिय मित्र मैं अब अपने इस बचन को जो मैंने तुम्हें अपनी बूखरी भाषा पर जाने के पूर्व लिखा था कि तुम्हें अपनी भाषा का दर्शन लिख भेजना पुरा कर रहा हूँ। मैं 'मादा प्रान्तीय (कैप टाव बुड होय) से २२ नवम्बर १७७२ को दसिया की घोर बसा। जलते जलते मैं ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ बर्फ ही बर्फ बिललाई देता था और गहन कोहरा छाया हुआ था। वहाँ अत्यन्त बर्फ के ढंके पहाड़ (हिम पित्र) तीरते नजर आए। भयकर जतरा का घोर जात्रा मैं कठिनाई भी बहुत हो रही थी फिर भी मैं उस बर्फ के विसृष्ट भवान के दसिए में गया और कुछ दिनों तक धूमि की खोज में बर्फ से भरे समुद्र में घटकते रहने के बाद समुद्र लानबरी १७७३ को मैंने दसिए प्र ब रैला (ऐन्टार्टिक सर्किल) को पार किया वरन्तु उसी तापकाल मुझे वहाँ से लौटना पड़ा क्योंकि उस भयंकर बर्फ में अधिक टहर सकना कतरनाक ही नहीं असंभव भी था।

जब मुझे उन ढंको प्रलात्र रैलाओं में धूमि मिलने का कोई बिन्हु नहीं बिललाई दिया तो मैं जतर की घोर बड़ा घोर खोज में भी कोई धूमि मिलने के बिन्हु न देखकर मैं न्यूजीलैंड की घोर बल बड़ा। न्यूजीलैंड पहुँच कर २६ मार्च को मैंने साँघ्य छात्री (डस्की-वे) में लंपर बना। वहाँ के मैं क्वायन चारलडी-साँघ्य

व्यक्ति भी नहीं मरा जो लोज के इतिहास में एक अनुत्पन्न घटना थी। किन्तु बटाविया का जलवायु अघोषों को विलम्बित अनुत्पन्न नहीं था। उनमें महामारी पड़ गई। एक के बाद दूसरा व्यक्ति मरने लगा। अन्त में सब लोग इतने कमजोर हो गए थे कि एक बार केवल बीस व्यक्ति ही अहाज पर काम करने बोध्य रह गए थे।

अब बड़े दिन के प्रबसर पर अहाज वहाँ से लता तो वे सब प्रसन्न थे और अब तीन वर्षों के बाद वे लोग संभल प्युंछे तो उनके हर्म का ठिकाना नहीं था। कुक के ईंग्लैंड प्युंछने और उसकी नवीन औजारों के बारे में ईंग्लैंड में उस समय प्रथिम उत्साह प्रकट नहीं किया गया। कुक सम्राट् से सेंड कैम्स महलों में भिला उसने प्रपरी यात्रा का निष्ठा और नकसे सम्राट् को भेंड किए और सम्राट् ने उसको लकटीनेट से कॅपेन बना दिया।

यद्यपि कुक द्वारा जो नवीन औजार की गई थी उसको ईंग्लैंड में उस समय कोई विदेश्य महत्व नहीं दिया गया परन्तु कुछ ही महीनों के बाद कुक को दो अहाज और वर्ष भर के लिए भोजन सम्पत्ती के साथ सुदूर देशों की खोज के लिए भेजा गया।

यद्यपि कुक की दूसरी यात्रा बहुत ही महत्वपूर्ण थी किन्तु उसके फलस्वरूप कोई नया देश या महाद्वीप नहीं मिला। कुक कई महीनों तक बरिशली ध्रुव का खबर समाता रहा और अब उसे विश्वास होपया कि सुदूर बरिशली में कोई महाद्वीप नहीं है तो वह वापस लौट आया। इस यात्रा के सम्बन्ध में उसने प्रपरी

वैश्वदेव (वान द्वितीय) में रहनेवाले एक मित्र को जो पत्र लिखा था उसका सारांश देना ही पड़ेगा होगा ।

उसने अपने मित्र को यह पत्र सबन से तितम्बर में लिखा था । प्रिय मित्र मैं अब अपने उस बचन को जो मैंने तुम्हें अपनी दूसरी यात्रा पर जाने के पूर्व लिखा था कि तुम्हें अपनी यात्रा का बलान लिख भेजू या बुरा कर रहा हूँ । मैं 'आशा अन्तरीप (कैप टाब गुड हीप) से २२ नवम्बर १७७२ को बसिष्ठ की घोर बत्ता । जलते जलते मैं ऐसे स्थान पर पहुँचा वहाँ बर्फ ही बर्फ बिजसाई देता था और बहुत कोहरा छाया हुआ था । वहाँ अर्धरात्रि बर्फ के ढंके पहाड़ (हिम पिंड) ढँकते नजर आए । भयकर अतरा वा और यात्रा में कठिनाई भी बहुत हो रही थी फिर भी मैं उस बर्फ के बिसृत्त महाल के बसिष्ठ में क्या और कुछ दिनों तक भूमि की खोज में बर्फ से भरे समुद्र में भटकते रहने के बाद सातह जनवरी १७७३ को मैंने बसिष्ठ अ ब रेखा (ऐम्ब्राडिन्ड सर्किल) को पार किया परन्तु उसी क्षणकाल मुझे वहाँ से लौटना पड़ा क्योंकि उस भयंकर बर्फ में अधिक ठहर सकना असंभव ही नहीं प्रसन्न भी था ।

अब मुझे उन ढंको अलाय रेखाओं में भूमि मिलने का कोई बिन्हु नहीं लिखनाई दिया तो मैं अतर की घोर बड़ा घोर बीच में भी कोई भूमि मिलने के बिन्हु न देखकर मैं न्यूजीलैंड की घोर चल पड़ा । न्यूजीलैंड पहुँच कर २६ मार्च को मैंने साँध्य चाड़ी (डस्की-वे) में अतर बना । वहाँ से मैं क्वीन चारल्टी-साँध्य

बना गया। वहाँ से मैं फिर सुदूर दक्षिण में भूमि की खोज
 लिए गया। परन्तु सिबाय बर्फ मयंकर शीत और बुरे मौसम
 मुझे कुछ नहीं मिला। मैं वहाँ ऊँची श्रृंखला रेखाओं में चार मही
 तक बर्फ, शीत और पराब मौसम में खरकर लगाता रहा। मैं ए
 बार इकतर श्रृंखला रेखा को पार कर गया। किन्तु उसके बाद
 जाना सम्भव नहीं था क्योंकि वहाँ को बर्फ या बहू भूमि कि तर
 कठोर था। वहाँ हमने बर्फ के ऊँचे पहाड़ सेके बिगकी जोड़िय
 बादलों में छिपी हुई थी। मुझे अब पूरा विश्वास ही गया कि सुदूर
 दक्षिण में कोई दक्षिणी महाद्वीप नहीं है। फिर भी मैंने कुछ
 अधिक समय तक इस समुद्र में ठहरने का निश्चय किया और इत
 उद्देश्य से मैं बोड़ा उत्तर घाकर छहर गया।”

दूसरी यात्रा में एक दिन यह सिद्ध कर दिया कि दक्षिण
 अमेरिका या आस्ट्रेलिया के दक्षिण में कोई महाद्वीप या बड़ी भूमि
 नहीं है। केवल दक्षिणी ध्रुव के समीप बर्फीली भूमि है।

मैकिग उसी खोज की सरत बनाने के सम्बन्ध में एक
 महत्वपूर्ण कार्य किया। उसने स्कर्वी रोग से बचने का उपाय
 प्रपाय ईह निकाला। अपनी तब समुद्र पर सम्भी यात्रा करने में एक
 बड़ी बटिनाई यह थी कि सम्भे समय तक नमक मिला मांस तथा
 अन्य पदार्थ खाते से स्कर्वी रोग कुछ पड़ता था और बहुत से मालिक
 उससे मर जाते थे। सम्भे समय तक पहाड़ों का समुद्र में रह
 सकना इस कारण सम्भव नहीं था। मुठ या एोज अभियान में
 बड़ाओं को ताजा भोजन प्राप्त करने के लिए समुद्र तट पर जाना

पड़ता था। कुछ महीने की समुद्र यात्रा करने पर भी घाघे नाविक बत बर्चकर रोम से पीड़ित हो उठते थे। १७१६ में कप्तन पेसीसर 'ईपल' जहाज को लेकर जब पूर्णमाऊज बम्बरपाह में उतरा तो चार ही में से एक ही तीस स्कर्वी रोम से पीड़ित थे और एक महीने की यात्रा में बीस नर चुके थे।

दूसरी यात्रा में कुक ने यह निश्चय कर लिया था कि वह उस रोम से मुक्त करने का और उससे बचने का उपाय ढूँढ निकालेगा। यह तो हम पहले ही भिद्य चुके हैं कि कुक की प्रथम तीस वष की यात्रा में केवल पाँच व्यक्तियों को यह रोम हुआ था। दूसरी यात्रा में उसने घबने प्रयोग को घाघे बढ़ाया और उस सम्बन्ध में अधिक सावधानी बरती। उसका यह परिणाम हुआ कि तीस वष की सम्बन्धी यात्रा में एक घाघमी भी स्कर्वी से नहीं मरा। जाने सबों को बिचघ किया कि वे प्रतिदिन ठण्डे जल से स्नाय करें। वह स्वयम् भी प्रतिदिन स्नाय करता था। घाय और सुघर का ममक तथा मांस उसने जाने में कम यात्रा में देना घारम्भ किया। घाटे में ममकीन वष की वषों मिलाने के रिवाज को उसने बिस्मल समाप्त कर दिया। ममकीन मन्त्रन और पनीर खाना बन्द कर दिया गया और मुनहा अधिक खाने को दिया जाने लगा। मेहूँ का भोजन में अधिक उपयोग किया जाने लगा। एक शरीर की सफाई पर बहुत जोर देता और प्रति सप्ताह प्रत्येक मनुष्य के शरीर की सफाई की जाय करता। घपने सामने कपड़े बदलवाता तथा जहाज को भी नुव साय रखवा जाता और उनही नुवों के र गुनाया जाता। इस प्रयोग से

परिलाम स्वल्प दूतरी यात्रा में यह रोप बिस्मल नहीं हुआ ।

१७७१ में रामल सोसायटी में इस विषय पर एक लेख बढ़ने पर जेम्स कुक को एक स्वर्ण पत्रक दिया गया जो प्रायः भी ब्रिटिश म्यूजियम में रक्ता है ।

प्रायः कक अड़तासीस वर्ष का हो चुका था किन्तु उसमें बीस वर्ष के युवक जैसी स्फूर्ति और साहस था । उसने यह प्रश्न सबंध के लिए तम कर दिया था कि बशिल में कोई महाद्वीप है अथवा नहीं । परन्तु जब अन्तर पश्चिम के मार्ग का प्रश्न फिर उपस्थित हुआ तो उसने दाही सेना के प्रथम वेडमिरेल जार्ज सेडविच को फिर अपनी सेवाएं समर्पित कर दीं । उसकी प्रार्थना तुरन्त स्वीकार करली गई ।

कुक को जो कुछ आता-पैती थीं पुस्तक से ही सी गई थीं और उसने अपने लिए पुराने 'रिजास्यूदान अहाब' को चुना । एक दूसरा जहाज 'डिस्कवरी' लैप्टेन क्लार्क की प्राधीनता में उसके साथ बना । यह यात्रा कुक की अन्तिम यात्रा थी क्योंकि उससे वह वापस नहीं लौटा । १७७६ में वह अपनी तीसरी और अन्तिम यात्रा के लिए निकल पड़ा । उसकी आदेश था कि वह 'म्यू-अनविषम' जिले की ओर मुँह दिखाने की भी जावे और इन नदियों या पतनी बलघारा का पता लगावे जो हुडसन या ब्रिटिश-वे की जाती हों ।

एक बार कुक फिर टसमानिया और म्यूजीलंड पहुँचा और प्रशांत महासागर के द्वीपों में बहुत समय तक ठहरा । १७७७ में वह उत्तर की ओर बना । थोड़ी दूर जाने से अचानक कुक को

क द्वीप विद्यमान है पड़ा । बड़े दिन का पर्व समीप का कुछ ही दिन
 वह पद वे अत्यंत कुछ उस द्वीप पर इस प्रायः से उतरा कि उसको
 जाने कुछ और मन्त्रियों जाने के लिए मिलेंगी । उसकी प्रायः
 पूरी हुई और उसके धारणियों ने तीन सौ कुछ पकड़े । वे बहुत
 पक्षे थे । एक ने उस द्वीप का नाम 'विश्वमस द्वीप' रस दिया
 और वह धावे बढ़ गया । कुछ दिनों की यात्रा के बाद वे एक द्वीप
 समुद्र के पास पहुँचे जिनकी पहले किसी की जानकारी नहीं थी ।
 वास्तव में वे हवाई द्वीप नर थे । वहाँ के निवासी अपनी छोटी
 नावों में धावे और अत्यंत तपा सुपर के मांस को धारणियों के हाथ बेचा ।
 लंबेर डालने के लिए अत्यंत स्वान बैलकर कुछ ने वहाँ लंबेर डाल
 दिया । वह समुद्र तट पर उतरा तो वहाँ के निवासियों ने उसका
 धारण और धारण से स्वागत किया । वे उसके सामने धारण पुम्बी
 पर लेट जाते और उठने का संकेत करने पर ही उठते थे । वहाँ
 कुछ वे जाने पीने का नाम समान सर लिया । यद्यपि वहाँ के
 निवासी धारणों को धारण की हृदय से देखते थे किन्तु उन्होंने जो
 भी वस्तुएं भी उनका पुरा मुख्य बसुन किया । यहाँ तक कि उन्होंने
 उस पानी और लकड़ी का भी मुख्य बसुन किया जो धारण से पद ।
 मौसम ठण्डा और सुष्मनी वा और जहाजों की गति भीमी थी ।
 २२ मार्च को अत्यंत कर्तरी अन्तरीप पहुँचे और एक सप्ताह बाद
 वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक को प्रायः थी कि अन्तरी
 नौकाभय मिलेया । उसने उस स्थान का नाम होप-वे (प्रायः
 प्रायः) रस दिया । उस समुद्र तट को कुछ ने रिय जार्ज

क्योंकि कुक की पुस्तक में जो उस देश का वर्णन था वह बहुत उत्साहपूर्ण नहीं था।

कुक की मृत्यु के घठारह वर्ष बाद उसके मित्र 'बैंक' ने ब्रिटिश सरकार से प्रार्थना की 'कुक' को लोगों का राज्य सरकार को उपयोग करना चाहिए।

सन् १७७६ में अमेरिका के ब्रिटिश उपनिवेश में अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करती थीं और लोगों का अमेरिका की ओर जाना बंद कम हुआ तब लोगों का ध्यान आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की ओर गया। बैंक की कैप्टेन कुक के साथ की गई १७७० की बोटनी-वे की यात्रा की याद थी। उसने इंग्लैंड की सरकार से प्रार्थना की कि अपराधियों को भागे से अमेरिका न भेजकर न्यू साऊथ-वेल्स में भेजना चाहिए।

सन् १७८७ में म्यारह जहाजों का बड़ा गिना पर एक हजार व्यक्ति के कैप्टेन फिलिप्स के नेतृत्व में इंग्लैंड से अमे। ३६ सप्ताह की कठिन यात्रा के उपरांत वे २ जनवरी १७८८ में बोटनी-वे में पहुँचे।

कैप्टेन फिलिप्स न्यू-साऊथ-वेल्स का गवर्नर नियुक्त कर दिया गया था। पहुँचते ही फिलिप्स ने जान लिया कि बोटनी-वे उपनिवेश बसाने के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है। बात यह भी कि वहाँ बलबल और रैता या और फलके लह पर सब कुछ चलते थे। भीषण सबड़ के प्रतिरिक्त कुछ समुद्र की बेगबती नहरें उसके लह से सदैव बकराती रहती थीं।

जैसे ही जहाँ के निवासियों ने घण्टों के बहाजों को देखा जैसे ही वे अपने भाजों को हिलाकर बिस्ताने समे जाता कि उन्होंने प्रठारह वर्ष पूर्व किया था ।

उन दिनों गरमी थी इस कारण छिन्मिस्त ने कुली नाम में बैठकर समुद्र तट का निरीक्षण किया । उसने एक के बनाए हुए नक़्शे में एक कुली हुई जगह जिसको पोर्ट बंकरदान लिखा था देखा । उसमे उन दो पहाड़ों के बीच उस कुली हुई जगह में अफ़्सी नाम की बस्ताने के लिए कहा । उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा कि जब उसने देखा कि उसका बस शांत और स्वच्छ है तथा उसका बन्दरगाह बहुत सुन्दर और सुरक्षित है । उस पर अफ़्सी बनस्पति सहारा रही थी । उस दृश्य की सुन्दरता स्वच्छ बस और बनस्पति को देख कर छिन्मिस्त ने उस स्थान पर अपना उपनिवेश बनाने का निश्चय किया और उस स्थान का नाम उसने सिद्धनी रखा । सिद्धनी उस समय इङ्गलैंड का गृह सचिव था जिसने छिन्मिस्त की निपुणता की थी ।

उसने लार्ड सिद्धनी को लिखा "हम बोपहूर के बाहर पोर्ट बंकरदान में मुझे ली हुमें यह देखाकर प्रसन्नता हुई कि यह कुनिया का सबसे सुन्दर बन्दरगाह है जिसमें एक हजार बहाज सुरक्षा से साथ ठहर सकते हैं । हमारे लिये यह एक महान और महत्वपूर्ण दिन था और मुझे विश्वास है कि यह दिन साम्राज्य की नींव डालने का दिन सिद्ध होगा ।"

सत्रहवाँ परिच्छेद

फ्रेंचलिन की उत्तर की ओर यात्रा

उत्तरी अमेरिका का उत्तरी तट अभी तक अपरिचित था। उसकी ओर नहीं की गई थी। इस कारण फ्रेंचलिन ने मस्कोबी नदी के मुहाने के लिए एक डुगरा सीमा अभियान किया। मस्कोबी के मुहाने पर पहुंच कर ओबी बग दो भागों में विभक्त हो गया। एक पूर्व की ओर और दूसरा पश्चिम की ओर गया। फ्रेंचलिन को उत्तरी प्रवाह की यात्रा में जो अल्पसंख्यक बड़े उठाने पड़े थे उसकी यात्रा अभी तक ताजी थी परन्तु उत्तरी परबाहु न कर उस साहसी ओबी ने इस यात्रा का नेतृत्व स्वीकार कर लिया। उसके सहायक के रूप में उसके पुराने मित्र बक और रिचर्डसन थे। ओबी अभियान के अधिकारी फरवरी १८२३ में इन्सुलैण्ड से बसे और न्यूयार्क और कनाडा होते हुए दो मूल में दोठे कम्बरलैंड पहुंचे। एक महीने के उपरांत वे अकवासला भीम के द्विजारे पहुंच गए। वहां से वे पेन-डिवर-सेन्-रिवर के द्विजारे पहुंचे जहाँ उन भीम से मिलकर अफेन्सी नदी में चिरली हुई। उनकी योजना यह थी कि उस नदी के ताल के समुद्र में उतरेंगे। उन्होंने रिवर भीम के द्विजारे बाढ़ के

महीने निकालने का निश्चय किया। फ्रैंकलिन कभी भी चुप बैठा नहीं रह सकता था अतएव उसने निश्चय किया कि वह उस बड़ी नदी के मुहाने तक एक छोटे से दल के साथ जावे जिससे कि वह अपने अभियान की तैयारी कर सके।

फ्रैंकलिन ने मैकेंजी के स्वारथ स्वरूप उस नदी को जिसका सर्वप्रथम मैकेंजी ने किया था मैकेंजी नदी नाम दिया। एक छोटी सी नाव में जबकि हुवा यमुकूम की ओर पारा लेम की फ्रैंकलिन ने उस नदी में साठ घंटों में तीन सौ बारह मील की यात्रा की। बल का कमबोलपन घसीम आकास और खेल मछली के बिम्ह पोजियों को उत्साहित कर रहे थे। रात में वे प्रथीय समुद्र में पहुँच गए। बिस्तृत समुद्र फैला हुआ था उसमें बर्फ नहीं था और न यात्रा के लिए कोई बाधा ही दिखलाई पड़ती थी।

जब फ्रैंकलिन समुद्र तट के पास पहुँचा तो रेतली यूबियन बँक (इंग्लैण्ड का राष्ट्रीय ध्वज) जिसे फ्रैंकलिन की मृत्युपूर्विका पर पड़ी हुई स्त्री से बनाया था पहचाना गया। फ्रैंकलिन जब इंग्लैण्ड से इस यात्रा के लिए चला उस समय उसकी पत्नी मृत्युपूर्विका पर पड़ी थी टिननु उसने फ्रैंकलिन को मातृभूमि की सेवा के लिए जाने को विवश किया। फ्रैंकलिन के इंग्लैण्ड से चलने के कुछ ही दिनों बाद वह मर गई। चलते समय मृत्युपूर्विका पर पड़ी हुई फ्रैंकलिन की पत्नी ने अपने पति से यह प्रार्थना की थी कि जब तक वह प्रथीय समुद्र में न पहुँच जावे उसके भँडे को न पहुरावे। जब कि वह कड़ा प्रथीय समुद्र के पौराण तट पर पहुँच रहा था तो उन घंटों

ने इंग्लैंड के शासक को जय जयकार की।

डॉकमिन ने लिखा है "पाठक कल्पना कर सकते हैं कि जब मैंने पहले उस भंडे को फहराता देखा तो मेरा हृदय भर आया परन्तु बाद को मैं उसे फहराता देखकर प्रसन्न हुआ क्योंकि मेरी प्रिय बत्नी की अन्तिम इच्छा पूरी हो गई थी।

उस वर्ष वहाँ नौकाबाहन करने के लिए बहुत धेर हो गई थी परन्तु वहाँ अगस्त में मरमो की अतएव ३ सितम्बर को घट बियर-नेरु की घोर लौट आया। वहाँ कि जाड़े का तीसरा निकालने का निश्चय किया गया था। उसकी अनुपस्थिति में वहाँ एक छोटा सा किन्तु अक्षय्य धारामबापक उपनिवेश बन गया था। जिसमें पचास व्यक्ति जिन में अंग्रेजियन और इंडियन अधिकारी तथा उनकी पत्नियाँ और बच्चे भी सम्मिलित थे रह सकते थे। अपने वेता के सम्मान में उन्होंने उसका नाम फ्रैंकलिन बुग रखा था। वे सब वहाँ जाड़े के दिन व्यतीत करने के लिए जम गए।

बीते बीते दिन छोटे होते छोटे होते वैसे वैसे यह समस्या यन्त्री होती गई कि सायंकाल के लम्बे समय का किस प्रकार उपयोग किया जाये। अतएव वहाँ के रहनवासी के लिए एक स्मृत स्थापित किया गया जिसमें पढ़ना लिखना और हिसाब लिखाया जाता था। रविवार को छुट्टी रहती थी और सभी लोग प्रातः और सायंकाल प्रार्थना करते थे। और दिन सायंकाल को उस हाम में सब लोग टेल बैठते और इस प्रकार अपना मन बहुनाते। इस प्रकार सब अनियाव रत के सभी लोग एक दूसरे से बहुत घुल मिल गए। सभी का एक

ही पड़ेस्य था कि किस प्रकार उस समय को हूँती बुझी से काटा जाये ।

एत्रिल में मौसम परस्य ही गया । धूमि पर बर्फ जमी थी अतएव उस समय का उपयोग नाबें लैयार करने में किया गया । मई के महीने में म्योन में हुँस बतख मुर्वाडी घोर पालेवाली बिड़िया घाने लबी । मौसम ठीक हो गया था अस्तु कूल में नाबें नबी में डाल बी गईं घोर २४ कूल को अत्रिपान बल मकेंबी नबी के मुहाने की घोर बल पका । वहाँ पहुँचकर बल दो भागो में बंट गया । लोकलिन ६ नाबिकों के साथ 'लायन' जहाज पर था घोर बेंक उतके साथ 'रिलायन्स' जहाज पर था । यह दोनों जहाज पश्चिम की घोर बले । रिचार्डसन का बल पूर्व की घोर बला । उतका काम था मकेंबी नबी के मुह से कापरमाइन के समुद्र तट का सर्वेक्षण करना । ७ बुलाई को केंकलिन समुद्र के किनारे पहुँचा घोर अपने दोनों जहाजों पर इंग्लैंड का राष्ट्रीय ध्वज चढ़ाकर वे दोनों जहाज उस अलबाने समुद्र में ले बला । अपने बङ्कर वे समुद्र तट से एक मील दूर पानी में ठहर ग्ये । यहायक लगभग तीन सौ नाबें जिनमें ऐस्किमो भरे हुए वे उनकी घोर घाती बिबलताई थीं । इन लोबों ने गोरे लोपों को कभी नहीं देखा था । लेकिन जब उन्हें समझवा गया कि अत्र ब लोप ऐसे रास्ते की खोज में आए हैं जिससे कि बङ्क जहाज भी वहाँ तक आ सकें घोर उनसे ध्यापार कर सकें तो उनकी प्रतन्मता का कोई ठिकाना न रहा । वे फिर भी उन छोटे अत्र ब जहाजों को

घेरें हुए थे और उनमें से बीचों-बीच बुराने सवे । जब उन्हें रोका गया तो उन्होंने क्रोध होकर धनुष-निष्कास लिए । परिस्थिति यम्भीर होते-हीसे अकल्पित नै बन्धुओं-निष्कासने की आज्ञा थी । बन्धुओं को देखकर और उनकी पोली की आवाज और रफ्तार देखकर वे लोग अपनी नावों को लेकर चले गए और छिप गए ।

जब वायु अनुकूल थी । अकल्पित के जहाज समुद्र तट के साथ-साथ पश्चिम की ओर चले । कुछ दूर पहुँच कर बर्फ के कारण उन्हें समुद्र तट से हटना पड़ा । यह न कुहरा तुफानी हवाएं, और मूसलाधार वर्षा ने प्रथम समुद्र में जीवावाहन को अत्यन्त क्षत-विक्षत बना दिया । फिर भी अकल्पित अपने बहुत ही जया और २७ घुमाई को एक बड़ी नदी के मुहाने पर पहुँचा । यह नदी इस तट पर ब्रिटिश सीमा में सबसे पश्चिमी नदी थी और पेट ब्रिटेन और रूस की सीमाओं को घससाती थी । अकल्पित ने हिन्-रायल-हाइनेल सार्ज क्लैरेंस के सम्मान में जसका नाम 'क्लैरेंस' रखा दिया । एक संकुक में छाही तमगा यहाँ पाई गया जया और हर्षभक्ति के साथ मूलियन बिक (इ गलेड का राट प्यज) पहराया गया ।

फिर भी कुहरा और तुफान नहीं रुके । जैसे-जैसे वे पश्चिम की ओर बढ़ते गए कुहरा और तहरा होता गया । अगस्त के मध्य में जाड़ा था गया । नावों को बीचों-बीच घसीटने के अत्यन्त कठोर कार्य के कारण सभी लोग बक कर अनाक हो गए थे । यही नहीं बल्कि के सज्जनों और कीड़ों के कारण वे बहुत परेशान हो गए थे । वे मकेंटी नदी के मुहाने से २०४ मील दूर थे और बर्फीली

घन्तरीप की झापी डूरी पर बै ठँकलीन के मन में अपार ताहस
 पौर जत्साह बा किन्तु बहु अपने साबियों का जीवन और अधिक
 खतरे में नहीं डाल सकता बा । अतएव बहु रिटर्न-रीप से लौट
 पड़ा । वहाँ से लौट पड़ने के बहुत बाद उसको ज्ञात हुआ कि
 कंपनी बीसै बिसे बेहरिंग स्ट्रुट के मार्ग से 'जलसम' जहाज में सेवा
 पया बा जसने बर्पोली घन्तरीप (घाइसी बँप) को पूरा कर लिया
 बा और अकलिन की १६ मील की डूरी पर प्रतीक्षा कर रहा
 बा ।

२१ सितम्बर को अँकलिन जाड़ के निवातस्थान कोर्ट
 अँकलिन पहुंचा । डाक्टर रिचार्डसन भाठ सो मील की सफल
 समुद्र तट यात्रा करके जतसे पहले ही वापस लौट घाया बा ।

जब रिचार्डसन ने अँकलिन को छोड़ा तो 'डालफिन' और
 'यूनिपन' जहाजों को लेकर बहु अपरिचित पूर्वीय समुद्र तट की ओर
 गया । अँकलिन के बल की ही भाँति उसको कुहरै, तूफान और
 मच्छरों ने बहुत परेशान किया । परन्तु रिचार्डसन बढ़ता ही गया
 और मार्ग में जो द्वीप छोड़ी घन्तरीप जाए उनका नाम रखता
 पया । जसो अँकलिन-के वीरी-केप इत्यादि नाम रखे और एक
 स्थान पर जहाँ डालफिन लयभंग बर्छ के कारण गप्ट होते होते
 बाबा उसका नाम उसने 'डालफिन-स्ट्रेड' रखा । अँकलिन के बल
 के पहुंचने के पूर्व ही व वहाँ पहुंचे के । उनको वहाँ पहुंचने में इतनी
 देर ही गई थी कि वे जत बर्ष वहाँ नहीं पहुंच सकते थे । जत
 कितने में एक जाड़ा उन्हें और ध्मसीत करना पा । डूमरे बर्ष के बाद

वर्ष बाद २६ तिस्रर १८२७ का इम मंड पहुंचे ।

कॉकलिन उत्तर पश्चिम का रास्ता खोज निकालने में व्यस्त हो गया परन्तु उसका तथा रिचार्डसन ने उत्तरी अमेरिका के एक ह्वार मील समुद्र-तट की खोज की जिसके लिए उसको सर भी उपाधि दी गई थीर वैरिस भूगाम समिति ने उसको उस वर्ष सबसे अधिक महत्वपूर्ण खोज करने के उपलक्ष में सोने का पदक दिया ।

यह प्राश्चर्यजनक बात ही कही जायेगी कि कॉकलिन थीर वेरी अपनी अर्धीय लोको से साप साप लौटे थीर गौसेना मंत्रालय में एक दूसरे से केवल इस मिश्र के अन्तर पर पहुंचे ।

कॉकलिन द्वारा उत्तर पश्चिम भाग की खोज

यद्यपि उत्तरी अमेरिका का सम्पूर्ण तट खोज लिया गया था किन्तु उत्तर पश्चिम का मार्ग जिसके लिए इतनी मुख्यधान जाने गईं वह अभी तक हुआ नहीं जा सका था । 'तर-जान बेरो' जो अर्धीय लोको का जनक कहलाता है थीर जो गौसेना सचिव का उसने मिश्रण किया उस मार्ग को खोजने के लिए एक खोज अभियान थीर भेजा जाये जो पित्तनी सभी लोको को एक तुन में पिरो है ।

नए अर्धीय अभियान में अपनी सेवाएं देने के लिए बहुत से लोको ने प्रार्थना की । लेकिन तर जान कॉकलिन ने कहा कि इस अभियान का नेतृत्व करने का मेरा विशेष अधिकार है । उसने कहा कि थीर कोई कार्य मुझे इतना प्रिय नहीं जितना कि अर्धीय समुद्र की खोज करना ।

उससे कहा गया कि धरमबाहू यह है कि आपकी उम्र ६० वर्ष की हो गई है और लगातार लम्बे बर्षों तक खोज अभियानों में कठोर परिश्रम करते रहने के बाद उसको धरम विधाम करना चाहिए ।

साहसी पात्री ने कहा "नहीं नहीं" मैं तो अभी केवल ३६ वर्ष का ही हूँ । फिर कोई कुछ न कह सका और ठेककलिन उस खोज अभियान का नेता नियुक्त कर दिया गया ।

शे अहाम उसको दिए गए । उनमें तीन बर्ष के लिए खाल्य सामग्री रख दी गई । उन अहामों पर १२६ नाविक और कई प्रबन्धकारी थे । १६ मई १८४२ को अन्तिम बार सर जान डॉकलिन ने इंग्लैंड छोड़ा फिर उनको किसी ने नहीं देखा ।

अहामों पर जितने भी लोग थे उन सभी में उत्साह या और उत्तर पश्चिम मार्ग के रहस्य को जान लेने के लिए ही हड़ निश्चय थे । उन्हें सफलता का पूर्ण विश्वास था ।

४ जुलाई की धीमेतक के पश्चिमी तट पर अहामों ने बिस्को द्वीप में लंबरा डाला । उसके उपरान्त सब चुप और शान्त । श्रेय अहामों की अत्यन्त कष्टताजनक है और अतः विनाश की धोज में जो प्रति बर्ष खोज अभियान जाते रहे उनकी सूचना मात्र है ।

१८४५ में वैम्स रात अपने लीये हुए निम्न ठेककलिन की खोज

दूरी पर पहुँच

या या किम्ब

ऐक्सिमो अपने कपड़े में मौसला के अधिकांश के बदन को लपेट हुए था। उसने सबका ध्यान आकर्षित किया। पूछा कि यह बदन कहां से आया तो ऐक्सिमो ने बतलाया कि यह उन गोरों में से किसी का है जो एक द्वीप पर भुख से मर गए। परन्तु हमने उन गोरों को कभी नहीं देखा।

रात में कैम्पलिन का समाचार मिला। 'एम-विन्स्टाक' बत मील चल कर विन्स्टोरिया अस्तरीय पहुँचा। वहाँ ऐक्सिमो लोगों ने बर्फ का एक घण्टा भरोपड़ा बना दिया। दूसरे दिन प्रसन्न-कास सारा बाँध वहाँ आया। लगभग ४३ स्त्री पुरुष बन मरे हुए लौबियों के बिन्दु निकर आए। किसी के पास चाबी का बम्बल था तो किसी के पास सोने की चीज थी। बदन आलू इत्यादि बहुत सी वस्तुएं उम्होंने बिचलाई पर उनमें से किसी ने भी उन गोरों को देखा नहीं था। एक धारमी ने बतलाया कि उसने उस द्वीप पर वहाँ कि वे मरे थे उनकी हड्डियाँ देखी हैं यद्यपि कुछ को इकट्ठा किया गया था। उम्होंने बतलाया कि किच-बिलियम द्वीप के पश्चिम में एक बहाव जिसके तीन मस्तूल थे बर्फ से बर कर गढ़ ही गया। एक बूढ़ा धारमी ने उस समुद्र तट का नक्शा बनाने की गोक से बर्फ पर बनाकर बतलाया। उसने बतलाया कि वहाँ बहाव हुआ था वह वहाँ से आठ यात्रा की दूरी पर है।

एम-विन्स्टाक बहाव पर लौट आया। उसने स्नेज के द्वारा एक लौ बौल मील की यात्रा की थी। अमेरिका के समुद्र तट की जितनी अभी तक यात्रा हो चुकी थी उसमें उसने इस यात्रा को

ने बतलाया कि बहुत से घीरे लोय जबकि वे बड़ी तरी की घोर गए
 तो मर मर कर मिरते गए । कुछ को बचना दिया गया घोर कुछ
 नहीं बचनाए गए । एम-विसम्याक घाते बड़ा घोर १२ मई को किय
 बहाजबी पर पहुंचा । भयंकर बर्बादी हुई बस रही थी परन्तु फिर
 भी जगहोंमें प्रकृति के प्रजापक्षियों की लोख करने के लिए
 डेरा डाला । फावड़ों तथा कुवाली लेकर जगहोंमें बहुत लोख की
 परन्तु सब व्यर्थ हुई । वहाँ कोई ऐलिकमो भी नहीं मिले किन्तु कुछ
 प्रथिक पत्ता बनता । निराश होकर खौंगी बल घर
 की घोर बापस लौटने गया । एम-विसम्याक
 घीरे घीरे समुद्र तट पर टहन रहा था कि उसको एक मालव
 क काल दिखलाई पड़ा । उसका मुह नीचे था घीरे वह घाघा बर्छ
 में पड़ा था । वह एक भीगी जाक्य रहने हुए था
 घीरे उस पर एक झोट था । उस कुछ तरी ने टीक ही
 बतलाया था कि वे सींग बतते हुए मर मर कर मिरते गए । सब
 लोख करने वालों को सफलता की धाया ही बनी । उनका परिपम
 सफल हुआ । किंग विलियम द्वीप के उत्तर पश्चिम तट पर जगहें
 नीला बहाजी कापय मिला जित पर बहाज के एक कर्मचारी के
 घोख का संक्षिप्त समाचार मिला था । उसमें लिखा था कि १८४६
 में सब लोय कुमालपूर्वक थे । दोनों जहोज बार्ड में बीजे-द्वीप के नाव
 बर्छ में बम गए । बतते पूर्व हमलोग विलिगडन बंनस में होकर
 कर्मचालिय द्वीप के पश्चिम की घोर लीड घाए थे । उस समय
 सर बाम एंकेलिन लोख प्रभियाम का नेतृत्व कर रहे थे । प्रथम

बर्ष के प्रयत्नों का फल अस्ताहर्ष्यन था । १८४६ में वे किंग बिलियम द्वीप के बहुत समीप पहुँच गए जबकि जाड़ ने उन्हें धामे बहने से रोक दिया । २२ अप्रैल १८४८ में जहाजों को छोड़ दिया गया क्योंकि वे अप्रैल १८४६ से अप्रैल १८४८ तक बर्ष में बने रहे निकले ही नहीं । सर जॉन फ्रैन्सिस ११ जून १८४७ को मर गए । इसके धामे डेप्येन कोजियर ने नेतृत्व किया । अन्तिम मान्य था कि कल २६ को हम फिज नदी के लिए प्रस्थान करेंगे ।

सर जॉजियों ने फ्रैन्सिस की पुस्तकों अरमल तथा अन्य किन्हीं की खोज करने के लिए समीपवर्ती स्थानों को बेचना आरम्भ किया । ३ मई को उन्हें एक बड़ी नाव मिली उसमें कुछ पड़े कपड़ बड़े थे । ऐसा दिखता था कि उस नाव की फिस महानदी में जाने के लिए तैयार किया गया था ।

इसके पास ही दो मनुष्य ककान पड़े थे । कुछ बर्षियाँ बंदूकों एक बाइबिल बिहार-भाब-ब्लैकफील्ड पुस्तक प्रार्थना की पुस्तक सात घाठ बोड़े जुने कुछ रेशमी जमात तीसिया साबुन स्पंज कंभे इबाइन कील कारतूस डोरा मुई चाप बाइबल और बोड़ी तम्बाकू भी वहाँ मिली ।

सब वस्तुओं को सावधानी से बंदोरकर वे लोप जहाज पर ले आए । वे १६ जन की जहाज के पास पहुँचे । दो महीने बाद जहाज बर्ष से छूट गया और 'एम-बिगस्टार' सितम्बर में लंदन पहुँचा और उसने सर जॉन फ्रैन्सिस द्वारा उत्तर पश्चिमीय मार्ग बूट निष्ठापने में सफलता प्राप्त करने और फिर दुपटना का निवार

हो जाने का समाचार बतलाया ।

क्रैकलिन के जो भी अवशेष मिले उनको सदन की पुनःइंजेंट सभिस इंस्टीट्यूशन के धन्यायव्यय में बड़ी सावधानी के साथ रखा गया । वाटरलू जैस में उस महान और साहसी नाविक तथा उसके बहादुर साथियों का अिगृहिण उत्तर पश्चिम का मार्ग जोज निकालने में अपने प्राणों को उत्सर्ग कर दिया या स्मारक बनाया गया ।

इंग्लैंड में तर जाग क्रकलिन को उत्तर पश्चिम का मार्ग जोज निकालनेवाला स्वीकार किया गया और बीस्ट मिनिस्टर ऐसे म बतके लंघनरमर के स्मारक पर टैमिलन ने जो तर जाग क्रैकलिन का भतीजा या प्रतिष्ठ पंक्तियां लिखीं अिनका धाण्य नीचे लिखा है ।

“यहां नहीं बसेठ उत्तरी प्र थ को तुम्हारी हृदियां प्रकट करने का पीरब भिना । परगु ठे बीर, तुम्हारी धारमा उस धान्यरायक धाभा के लिए अघतर हो रही है अिनका मस्तध्व स्वान कोई तुम्बी का प्र थ नहीं है ।

अठारहवाँ परिच्छेद

नानसेन की उत्तरी यात्रा

उत्तरी ध्रुव की खोज के इतिहास में नानसेन का नाम सबसे प्रथम रहेगा। यद्यपि अग्य खोजियों ने भी उत्तरी ध्रुव की खोज में प्रशंसनीय कार्य किया है परन्तु 'नानसेन' और उसके जहाज 'फ्राम' का नाम इस सम्बन्ध में विशेष उल्लेखनीय है।

नानसेन ने ग्रीनलैंड को पूर्व से लेकर पश्चिम तक पार कर दिया यह स्वयं में बहुत बौदध का कार्य था। वेरी को छोड़कर अग्य कोई खोजी इस कार्य को नहीं कर सका था। नानसेन से कुछ वर्ष बाद उसने ग्रीनलैंड को और अधिक ऊँचे प्रभास रेखा पर पार करते यह प्रमाणित कर दिया कि यह एक द्वीप है।

उस समय उत्तरीय ध्रुव समुद्र में हिम के बहने की घोर खोजियों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ। १८८१ में एक जहाज 'वीनेडी' साइबेरिया के समुद्र तट के पास टूटा था। उस जहाज के प्रस्तावधेय खोज वर्ष बाद ग्रीनलैंड के दक्षिण पश्चिम तट पर बहकर आ पाए। इस घटना से नानसेन का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित हुआ कि बेहरिंग समुद्र से कोई जलधारा उत्तरी

प्रब होकर घटनाटिक समुद्र तक प्रवश्य ही जाती है। अस्तु उसने यह योजना तैयार की कि यदि यह ऐसा मजबूत जहाज बना सके, जो बर्फ के बराब को सह सके तो उसको बर्फ में कम जाने दिया जाये और फिर उसको जती तरह से बहने दिया जाये जैसे कि 'बैनेटी' के प्लानाबमेप बड़े थे। उसको यह मान्य था कि बर्फ उसको बहाकर तीन वर्षों में उत्तरी प्रब तक ले जावेगा।

उसकी यह योजना बहुतों को असम्भव और मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुई अतएव कोई उसे सहायता देने के तैयार नहीं था। किन्तु क्विप-मास्कर ने उसकी यात्रा के स्वयं के लिए एक हजार पौण्ड देना स्वीकार कर लिया। आर्थिक सहायता प्राप्त हो जाने पर 'कॉम' जहाज का निर्माण किया गया। उस जहाज प्रमियाज की तकलता केबल इस बात पर निर्भर थी कि जहाज इतना मजबूत हो कि बर्फ के बराब को सह सके। अतएव उसके निर्माण में बहुत सावधानी बर्ती गई। अंत में वह कमकर तैयार हो गया। उसमें बिजली भी लपा थी गई। उस जहाज में सभी सुविधाएँ उपलब्ध करायी गई थीं। पुस्तकालय बंगलानिक ईप से तैयार किया हुआ भोजन और आधुनिकतम यंत्र तथा धौजार जहाज पर उपलब्ध थे। उस लोग प्रमियाज के तिरह सवस्य थे।

१८६१ में प्रमियों के मध्य में एक सार्यकाल के समय जब बूकते हुए सूर्य की साम किरणें पृष्ठी पर पड़ रही थी 'कॉम' समुद्र में उतरा। जाहाग मार्ग के समुद्र तट के साथ चल रहा था। क्विप-मास्कर ने बरसेन ट्राइभेस और ड्रामसी को पार

किया परन्तु घामे बमकर उससे पश्चिमी भयंकर बर्षानी हुआ चलने लगी। बर्फ तथा हुआ की भयंकर मार के कारण जहाज समुद्र तट से दूर हट गया। अब भूमि नहीं दिखलाई पड़ती थी। २३ जुलाई को उन्हें 'नोवा-बेम्बला' की भूमि दिखलाई दी। 'नोवा-बेम्बला' पहले कुहरे से ढका हुआ था। मानसेन और उसके साथी 'आबारोवा' पर उतर गए और वे वहाँ के छोटे से बर्ष में गए। वहाँ उन्होंने स्लेज गाड़ियों को लौचने के लिए ३४ बड़ कुत्त मंगवाए और उन्हें जहाज पर रखा और घामे चल दिए। ३ अक्टूबर १८२३ को उन्होंने सफलतापूर्वक 'यूमार स्ट्रिट' को पार कर 'कारा समुद्र' में प्रवेश किया जो उस समय बर्फ से मुक्त था। पाँच सप्ताह बाद जहाज ने बेस्मूस्किन अन्तरीप को पार कर लिया जो पुरानी बुनिया का सबसे उत्तरी सीमा बिन्दु था।

उस प्रदेश के सम्बन्ध में मानसेन ने लिखा है, "बहु भूमि नीची और भीरम थी। सूर्य को समुद्र के पीछे भींचे की ओर गए हुए बहुत समय हो गया था केवल एक घटेसा तारा आकाश में बमक रहा था। वह तारा ठीक बेस्मूस्किन-अन्तरीप के ऊपर पीछे आकाश में बमक रहा था। ठीक बार बजे हमारे भैंडे पहराये गए और अन्तिम तीप कारतुल भन्धों की लसामी के लिए समुद्र पर बाने बने।"

उसके उपरान्त 'काम को नये साइबेरियन द्वीपों के पश्चिम में उतर की ओर मीड़ा गया। अब जहाज अन्तरीप क्षेत्र में चल रहा था वह समुद्र धरुता और जुता हुआ था जिस पर जल

कोई भी अहाज नहीं बना था। अहाज अब बहुत दृढ़ता और तेजी के साथ उत्तर की ओर बढ़ता जा रहा था। समुद्र की हवा तब ओर पाल उसको जितनी तेजी से आ सकती थे वह उतनी ही तेजी से आ रहा था।

अब अहाज ७० डिग्री अक्षांश तक पहुँच गया तो वहाँ पहले कछरे में से सफ़ेद बर्फ़ दिखलाई पड़ा। कुछ दिनों बाद प्रथम बर्फ़ में अम गया। बलबल का मौसम खमसत हो रहा था और अतिशय भी लम्बी रात आ रही थी। इस लम्बी रात के लिए तैयारी करने के प्रतिरिक्त और कुछ करने को नहीं था। अस्तु हम अपने अहाज को आँकों में रखने के लिए जितना आरामदायक बना सकते थे बना लिया।

अक्टोबर के नहीने में एक चारों ओर से घबराकर गर्जन करते हुए 'आम' की बहाने लगा। एक आम के पाल लम्बी और ऊँची बीबार के समान इकट्ठा होने लगा। वह आम के ऊपर फैलने लगा। वास्तव में बर्फ़ 'आम' को नील डालने का पुरा प्रयत्न कर रहा था।

पड़ा दिन आया और बला गया। जनवरी १८६४ में करमा मीटर में पारा शून्य के नीचे तीस डिग्री तक पहुँच गया। जनवरी में 'आम' गहना धुक हुआ और अस्ती डिग्री उत्तर अक्षांश रेखा तक पहुँच गया। घरती डिग्री तक पहुँचने के उपलक्ष में नामतेन ओर उसके सहयोगियों ने धुब उत्साह मनाया। तब जोय बहुत प्रथम थे। 'अच्छे बहै' यह कह कर इय ध्वनि कर रहे थे। वायु तेजी से आ रही थी। इसके बहने से तेज तोटी अती आवाज हो

हो रही थी। धारों धोर वफ ही बर्ष विप्लवाई बैता था। धारकाय धीर बर्षीला समुद्र सब एक ही रहा था धीर बहाव तैजी से उत्तर का धोर जा रहा था। सभी जोड़ी प्रसन्न धीर उत्साह से भरे हुए थे। बहाव इतनी तेजी से बह रहा था कि यदि उसी गति से बह चलता गया तो पचास महीनों में उत्तरी ध्रुव पहुंच जावेगा।

१७ मई को बहाव इक्यासी डिगरी अक्षांश रेखा पर पहुंच गया। ३१ अक्टूबर तक बह ८२ डिगरी अक्षांश पर पहुंचा। अतः दिन बयासी डिगरी अक्षांश पर पहुंचने व उपलब्ध में एक बड़ा भीषण हुआ। हम अपने लक्ष्य की धीर खुशी खुशी बड़ रहे हैं। हम नये साइबेरिया द्वीपों धीर फ्रेंच-जोसेफ लैंड के बीचों बीच हैं धीर बहाव में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसे अपने सख्य प्राप्ति की सम्भता में समीह हो प्रत्येक का यही विश्वास है की बह जिस लक्ष्य के प्राप्ति करने के लिए धाए थे वह सम्भव प्राप्त होया। अतएव हर एक पानी प्रसन्न धीर आस्थावित है।

पत्र मानसेन ने स्वीडिश पाइयों द्वारा लम्बी यात्रा की योजना बनाई। उसके संबंध में सभी जात्र विशेषज्ञों का कहना है कि यह यात्रा लोग के इतिहास में सबसे अधिक साहसी यात्रा थी। जाइों में यात्रा की तयारी की गई। जाड़े के दिन यात्रा की तैयारी में निकल गए। मानसेन बर्लिन के प्राथमन पर लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान करना चाहता था। जब १८९१ का नव बर्ष आया तो क्राम' फिर पंद्रह महीने के लिए मजदूती के साथ एक में जम गया। कुछ दिनों के बाद बर्ष का एक ताशा धीर भयकर बहाव आया धीर बहाव

समय गुर गुर हो जाने को हो गया। सभी ने धावप्यकता पकड़े कर जहाज को छोड़ने की तैयारियां कर लीं। एक दिन बहुत बिल्ला घोर घबड़ाहट में इयतीत हुआ। बर्फं भयंकर गर्जन करते हुए जहाज को दबा रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि प्रलय का दिन था गया है। परन्तु दूसरे दिन बर्फं का वह भयंकर दबाव धाक्त हो गया। जहाज प्रायः तिरासी डिग्री उत्तर अक्षांश पर पहुँच गया। सभी तक कोई भी व्यक्ति उठने उत्तरा में नहीं पहुँचा था।

उत्त समय तक सम्बन्धी साहसी स्लेज यात्रा की तैयारियां पूरी हो गईं थीं। उन्होंने बहुत छोटी घोर हल्की नावें बनाई थीं जो पुले बल में चल सकती थीं। यह नावें स्लेज यात्रियों पर रख दी गईं जिन्हें कुरो पीचते थे। मानसेन ने निश्चय किया वह अपने साथ केवल एक साथी जानसल को ले जानवा घोर सब जहाज कर ही रह्ये।

धन्त म वह महान दिन आया। उन छोड़ अमिवात का मुरम समय यह था कि ग्यु-साइबेरियन द्वीपों से अपरिचित उत्तरी द्वुप समुद्र होकर अटलांटिक महासागर में स्थित अर्धम या दोनलंड के बाव पहुँचा जावे। सभी साबियों ने बड़े हृदयस्पर्शी सम्भों में मानसेन को बिबाई की घोर उत्सुक बाव दोनों साहसी घोर लोत्री अपनी लम्बो यात्रा पर चल बड़े। वे चार स्लेज यात्रियों घोर अट्टाइस कुलों को लेकर उत्त बर्फीले समुद्र अपनी रैविस्तान की यात्रा के लिए चल पड़े। पहले सप्ताह उत्तरी यात्रा निबिध्न हुई घोर वे बरबागी अक्षांश रैसा तक पहुँच गए। मानसेन ने उत्त यात्रा

के सम्बन्ध में लिखा है "धब जो भी प्रवृत्तिकर धीरे कष्टदायक बात थी वह केवल भयंकर शीत वा जिसका हमें सामना करना था। हमारे कपड़े धब बर्फ के गिरहबस्तर तक पहुँचे। मेरी शीत की बाँह से रगड़ रगड़ कर मेरी बस्ताई में पहुँचा जाव ही गया। वह धाव पहुँचा होता गया धीरे हड्डी तक पहुँच गया। रात्रि को हम सोने के गरम बेंने में अपने को बन्ध कर लेट जाते। एक घंटे तक हमारे शीत भयंकर शीत के कारण किटकिटाते रहते तब कहीं जाकर हमारे शरीरों में थोड़ी परती उत्पन्न होती।

इतनी भयंकर ठंड के होते हुए भी नामसेन हड़तापूर्वक उठार की ओर बढ़ता गया। वह कठोर बर्फ की बड़ी बड़ी चट्टानों पर चल रहा था धीरे वहाँ तक पहुँच जाती थी बर्फ ही बर्फ दिसलाई बैठा था। व अग्रिम को धाव बढ़ना असम्भव हो गया। नामसेन स्तेज से उठार पड़ा धीरे पास के एक बहुत ऊँचे बर्फ के पहाड़ पर चढ़ गया। ऊँचे पर चढ़ हीकर उसने चारों ओर देखा। चारों ओर बर्फ के बड़े बड़े टीलों धीरे चट्टानों के सिवाय धीरे कुछ नहीं था। अतएव उसने निश्चय किया कि वह कब जोसेफ-संड की ओर चढ़े जो वहाँ से साफ़ चार ती भील दूर था। नामसेन कई दिगरी उठार असाध्य रेखा तक पहुँच गया था वहाँ तक कोई ध्यति अभी तक नहीं पहुँच सका था।

जब नामसेन दक्षिण की ओर बढ़ा तो सूर्य की परती बढ़ने लगी जिससे उन्हें बहुत धाराम दिशा परमत्तु धनको भोजन सम्बन्धी सम्पन्न सम्पन्न हो गई थी धीरे उन्हें प्रतिदिन एक कुत्ते को जल कर

दूसरे कुत्तों को उसका मांस सिमाना पड़ता था। यहाँ तक कि बर्फ में उनके पास कबल ठेरह कुरो रह गए। घुन में मानसेन को मरफकर बर्फ के तुफानों का सामना करना पड़ा और कुत्तों की संख्या घट कर केवल सात रह गई। यद्यपि वे अब कैंज बोरेफ-लैड की घसांश में था गए थे किन्तु फिर भी उन्हें कोई सुविधाजनक तट दिखालाई नहीं दे रहा था। मानसेन को जहाँ तक छोड़ तीन महीने ही गए थे कुत्तों का मोजन बिसकुल समाप्त हो गया था और वे बेचारे सूख के मारे धयनी काठी जाने लये थे। जब स्थिति इतनी नयायह हो उठी तनी मानसेन एक सील मछली मारने में सफल हो गए। उससे उन्हें एक महीने का भोजन मिल गया। मानसेन ने इस सम्बन्ध में लिखा है 'यह बहुत सुखदायक परिवर्तन था। अब हम जितना चाहें भोजन कर सकते थे। सील का मांस घुन कर खाने में बड़ा स्वादिष्ट लगता था। हम दोनों उस क्षेत्र में जहाँ बर्फ ही बर्फ का सील-मांस की बाबत था रहे थे।

उसके बाद उन्होंने एक समुद्री शीघ्रतथा दो बर्फों की मारा और वे उस खान पर जिसे उन्होंने इच्छया सिबिर का नाम दिया था ठहरे रहे। वह प्रदेश धरम्यत बोरोन का धामे बड़ना कठिन था किन्तु जाने की पचेठ मिल जाता था।

२४ बुलाई को मानसेन की घुमि दिखालाई बड़ी। हर्ष से वे दोनों यात्री धरम्यबिनोर हो गए। दो बर्फों के बाद उगको कनी न हटने वाले बर्फ का सफेद धावरण दूर कर घुम्बी के बर्गि हुए थे। उन्हें मानो गया जीवन प्राप्त हुआ था।

जब उनके पास स्लेज गाड़ी को खींचने के लिए केबल हो
 चुक शेष रह गए थे । इस कारण नामसेन और उसके साथी को
 गाड़ी को खींचने में कुत्तों की मदद करनी पड़ती थी । तेरह दिन
 लगातार वे उस हिजा में चलते रहे बिपर भूमि रिसनाई ही थी ।
 अन्त में सात घण्टा को वे बर्फ के सिरे पर आकर खड़ ही गए ।
 उनके पीछे घनक कूट और कठिनाइयाँ थी और सामने घर जाने के
 लिए प्रयाप्त बल मार्ग फँसा हुआ था । उन्होंने अपनी छोटी और
 हल्की नावें पानी पर डालीं जो बल पर बिरकने लगीं । जब कुहरा
 ताक हुआ तो उन्हें बात हुआ कि वे ठंडा बोसेक-लैंड के पास के
 पश्चिमीय तट पर हैं । जब उन्हें बड़ी घाशा बंद आई । परन्तु बीमर
 ही उन्हें घोर निराशा का सामना करना पड़ा । नियति ने उनके
 साथ बहुत क्रूरता की । वे नावों से उतर कर समुद्र तट पर बिबिर
 लगाकर आराम कर रहे थे कि एक भयकर तूफान उठा और तेज
 हवा बली उसके कारण बर्फ बहकर समुद्र तट पर आ गई और
 नामसेन की छोटी और हल्की नावें उस बर्फ में बल गईं । उन
 नावों के बल जाने से उस जाड़ में घर पहुंचने की आशा समाप्त
 हो गई । जब उन्हें बिबिद हाकर वहां रहना पड़ा । भाव्यबल बड़ा
 समुद्री घोड़े और रीछ बहुत थे इस कारण उनको भुज्जी मरने की
 नीबत नहीं आई । जब नामसेन ने देखा कि जाड़ा वहीं स्थिति
 करना होगा तो वह जाड़ों के निवात की तंयारियाँ करने लगा । कई
 बिनों तक वे दोनों समुद्री घोड़ों को काटके और जमदी बाल निकल-
 लने में लगे रहे और उन्होंने घण्टे तेज और धून इकट्ठा कर

लिया। उन्होंने समुद्री घोड़ों के मांस और पर्वों को उनके जाल से हक कर डेर बनाकर सुरक्षित कर लिया।

सितम्बर के महीने में उन्होंने नुहरे और बर्ब में रहने के लिए भोजन तैयार किया। वह घोड़ों की मांस और हड्डियों से तैयार किया गया था और प्रन्धर तैम का सैम्प बनाकर उसे गरम करने की व्यवस्था की गई थी। उस भोजन में नामसेन और उसका साथी रीस की मांस छोड़ कर और विद्याकर रात्रि को सोते थे। इस प्रकार उन्होंने आठ के लम्बे महीने व्यतीत किए। दसोबर में सूर्य मृत हो गया और दिन में भी अन्धेरा रहने लगा। जीवन बहुत नीरस और उदास हो गया क्योंकि वह तीतरा आड़ा था जो उन लोगों को उदारी प्रक प्रवेश में व्यतीत करना पड़ रहा था। नामसेन ने बड़ा दिन छोड़े से गरम जल से अपने शरीर को धोकर और जानसन ने अपनी कमीज को उसी पहिन कर मनाया। बाहर का मौसम बहुत पुराना और ठूठानी था और उसकी बर्फीसी ठंड से उनकी जान निकलती थी। उन्हें पुस्तक की तीव्र इच्छा होती किन्तु पुस्तक वहाँ अलभ्य वस्तु थी। नामसेन और जानसन यह हिताव लगाकर अपने दिन काट रहे थे कि उनका बहाना 'ग्राम' अब कहां तक वह गया होगा और उसके घर पहुँचने की सब सम्भावना हो सकती है।

नामसेन और जानसन अपने अत्यन्त पम्बे कपड़ों से बहुत परेशान थे। वे चाहते थे कि उन अत्यन्त पम्बे बिना कपड़ों को जो गरीर पर सरेस की तरह बिपन्न गए थे उतार कर फेंक दें। उनके

पास साबुन नहीं था और उन कपड़ों की धिकनाहट पर पानी का कोई भी प्रसर नहीं होता था। मई में जाकर कहीं मौसम ऐसा हुआ कि वे अपने भोंपड़े को छोड़ लें। उन्होंने अपनी नावों को बर्क पर बाँधना शुरू किया और स्नेज पाइपों को लीचते हुए वे फॉक्स-जोसेफ लड के बसिस्त की ओर बढ़े।

एक बार तो मानसेन लक्ष्मण डूबते डूबते बचा। वे बीनों जोड़ी द्वीपों के बसिस्त में पहुंच गए थे। उन्होंने अपनी हल्की नावों को एक स्थान पर रक दिया और पास के बर्कसे हीले पर चढ़ गए। लेकिन उन्हें यह बैलकर बहुत घबराहट हुई कि उनकी नावें बह जाती थीं। मानसेन नीचे बीड़ा कुछ कागड उतार कर फेंक दिए और उनके पीछे पानी में डूब पड़ा। नाव सैत्री से चढ़ी जा रही थी। पानी बर्क के समान ठंडा था किन्तु यह उनके लिए जीवन मरण का प्रश्न था। बिना नावों के निष्प्राण और निर्जीव व्यक्तियों के समान थे। जो कुछ भी उनके पास था वह उन नावों में ही था। इस कारण मानसेन ने पूरी चेष्टा की कि वह नावों को पकड़ लें। उसने डूबना बंद लगाकर नावों तक पहुंचने की कोशिश की। उसके हाव पैर कमजोर कठोर होते जा रहे थे और पकाबट बढ़ रही थी। अंत में मानसेन ने नाव के किनारे को हाव फलाकर पकड़ लिया। उसने प्रयत्न किया कि वह घबरे को पानी से निकाल कर नाव में चढ़ जाये किन्तु उसका तरीर ठंड के कारण इतना बल्लू गया था कि वह पानी से निकल ही नहीं सका। किसी प्रकार मानसेन ने अपना पैर नाव के तिर्रे पर रग दिया और

जैसे तसे उस पर चढ़ गया। दोनों नावों को एक साथ लेना सरल नहीं था। ठंडी तेज हवा उसकी भीषण ऊनी कमीज में उसके शरीर को बेपत्ती हुई निकल रही थी। ठंड क मारे उसका बुरा हाल था उसके बस किठकिठ रहे थे और उसका सारा शरीर काँप रहा था। घन्ट में किसी प्रकार वह बर्फ के किनारे पहुँच गया। वह बुरी तरह से काँप रहा था। जानसल ने उसके पीने कपड उतार कर उसको सोने वाले रीछ की घात के बने में बंध कर दिया जिससे कि कुछ परभी घा जाये। वह बोसिम की स्थिति टल गई।

१७ जून १८२६ का दिन था नानसेन प्रकेशा समुद्र तट का सर्वेक्षण कर रहा था जबकि कुछ के भी जाने की आशा उसकी सुनाई पड़ी और उसने सामने देखा कि किसी पशु के ताजे पर चिगह बर्फ पर बने हैं। नानसेन आश्चर्यचकित हो गया और वह धूमि की ओर चल पड़ा। पकायक उसको मनुष्य की सी आवाज सुनाई पड़ी। तीन बरों में पहली बार उसको मनुष्य की आवाज सुनाई दी थी। नानसेन ने अपनी सारी शक्ति लगाकर पुकारा उसको उत्तर मिला और एक कासी मनुष्य की छाया दूर से बर्फ के टीलों में चलती दिखलाई दी। वह एक मनुष्य था। व दोनों जल्दी चलकर एक दूसरे के पास आ गए। नानसेन ने अपना डोप हवा में धुनाया। उसने भी बीसा ही किया। उसने जकतन को पहचान लिया क्योंकि उसने उसको एक बार देखा था। वह ग्रेम से दोनों ने डोप हाथ में लेकर एक दूसरे की सम्पर्कना की और हाथ मिलाया। उम दोनों के

ऊपर कुहरे का घाबरण या घोर वीरों के नीचे कठोर बर्ष । परन्तु वे एक दूसरे से मिलकर ऐसे प्रसन्न हुए मानो उन्हें स्वर्ग मिल गया हो ।

बीकानेर ने पूछा क्या घाम नामसेन हैं । उत्तर मिला हाँ । इस की खोज करने वाले उस साहसी वीर के हाथ को प्रेम से पकड़ कर बीकानेर ने हिमाया घोर उसकी सफ़सता पर उसको बयाई बी । बीकानेर घोर उसके साथियों ने पनोरा अन्तरीप पर जाइ का मौसम ध्यतित किया था जो फ़ाज-जोसेफ-सैड का दक्षिणतम किन्तु या घोर वे बिडबर्ड अहाज की प्रतीका में वे जो उन्हें बर नि जाने के लिए घाने वाला था ।

२ बुनाई को बिडबर्ड अहाज या पठुचा घोर ठैरह अवात तक बहु मार्गे पठुच गया । नामसेन के सरनित लोट घाने की सूचना सारे बिद्व में प्रसारित करबी गई । एक सप्ताह बाद नामसेन का छोटा किन्तु मजबूत काम अहाज भी जिसने तीन बर्ष तक लपास्तार बर्ष के इबाव से सघर्ष किया था सुरनित पठुच गया । घोर ६ सितम्बर १८६६ की नामसेन घोर उसके साहसी घीर साथी काम अहाज में बिजयोस्तास के साथ किडिधनिया पहुँचि । बहु घानी तक सब खोजियों से अतिक उत्तर में पठुचा या घोर उत्तरी घुब के बहुत समीप होकर घाया था ।

उन्नीसवा परिच्छेद

उत्तरी ध्रुव पर विजय

१ अप्रैल १९११ कोज के इतिहास में स्वर्णिम दिवस था क्योंकि उस दिन 'पीरी' उत्तरी ध्रुव पहुंचने में सफल हो गया। अन्तार्धियों तक जिस उत्तरी ध्रुव के अनेक साहसी यन्त्रियों के प्रयत्नों को विफल कर दिया था उस दिन पीरी द्वारा विजित हो गया। उस दिन 'पीरी' ने अपना लक्ष्य प्राप्त किया जिसके लिए उत्तरी ध्रुव के महान राष्ट्र प्रयत्नशील थे। पास्तन में पीरी ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए धीकन के लम्बे तीर्थस वय समर्पित कर दिये थे।

पीरी को उत्तरी ध्रुव की यात्रा करने की प्रेरणा 'नोरडिंग-फ्रियोस्ट' की प्रीगलंड की कोज पुस्तक को पढ़ने से मिली। वह समय वह संयुक्तराज्य अमेरिका की नौसेना में लंबडीर्मंड पर पर काम रहा था। उसने १८८६ में प्रीगलंड की कोज अभियान में सम्मिलित होने के लिए नौसेना से छट्टी की और प्रीगलंड गया। वहाँ से जब वह लौटा तो उत्तरी ध्रुव की यात्रा करने का स्वप्न उसके रोम रोम में भर गया। प्रीगलंड के कोज अभियान से लौटने पर उसने उस महारिष को उत्तर में बहुत तक भी सम्भव ही

वार करने की योजना तैयार की। बहुत कठिनाइयों के बावजूद
 अपनी उस योजना के अनुसार प्रीनलैंड को उरार तक पार कर
 सका और वह पहला लोको या जिसने उसको यह बतलाया कि
 प्रीनलैंड एक द्वीप है। जब पेर्री की एक सफल उत्तरी भ्रम के प्रोजेक्ट के
 रूप में प्रसिद्धि हो गई। उसके अस्तित्व में केवल एक ही विचार
 था कि किस प्रकार उत्तरी भ्रम पशुबाबावे परन्तु उसके पास
 धन की बहुत कमी थी। कोई उसको सहायता देने के लिए
 तैयार न था। उस उत्साही लोको ने हिम्मत नहीं हारी और
 दिव्यदत्त दिनों में उसने एक ली अडवैठ व्याख्यात ईकर बन
 एकत्रित किया और 'वैलेंटिन' अहास की किराए पर यात्रा के
 लिए ले लिया। जून १८२३ में वह क्विबीटेलकिया से प्रीनलैंड की
 यात्रा के लिए चल पड़ा। उसकी पत्नी प्रीनलैंड की पहली
 यात्राओं में उनका साथ गई थी इस बार भी उसके साथ थी।
 पेर्री अहास कर लैंग भाकिया और पथेड कुल सेकर प्रीनलैंड
 के बहिष्करी तट की ओर बढ़ा। मंतबिली खाड़ी पर पहुंच कर पेर्री ने
 एक छोटी सी भौंपड़ी तैयार की। उसकी पत्नी धर्मवती भी प्रसव
 काल तानीप में रहा था। उस भौंपड़े में उसकी पत्नी ने एक
 पुत्री को जन्म दिया। तबनात भिक्षु को परम कर में लपेट कर
 बडल बनाकर रख लिया गया। उसने उत्तर में तप तक कोई
 धोरीपियन बच्चा उत्पन्न नहीं हुआ था। जब वह बात ऐतिहासिकों सीपों
 के सुनी तो वे यह निश्चय करने के लिए कि यह सड़की कहीं बर्च
 की तो नहीं बनी है। दूर दूर से उसे देखने जाने लगे। अपने धीबल

के ६ महीने तक नवजात शिशु बीबीस घंटा तैप की परम रोगी में रहता था ।

पैरी ने उत्तरी ध्रुव की खोजिन नरी यात्रा कई बार की । यहाँ उन सब यात्राओं का बर्तन कर सकना कठिन है । एक सौब अभियान में उसका टखना खम गया । दूसरे अभियान में उसका पैर बूढ गया । परन्तु वह साहसी और खोजी विरास नहीं हुआ । अनुभव के आधार पर अन्तिम और सबसे बड़े अभियान की तैयारियाँ करता रहा । जब उसके उत्तरी ध्रुव के अन्तिम बड़े अभियान की तैयारियाँ पूरी हो गईं तो उसे बहुत प्रसन्नता हुई और वह बहुत उत्साही प्रतीत होता था ।

'कम्बैस्ट' बहाज बिलका नाम संयुक्तराज्य अमेरिका के प्र वीडेंट के नाम पर रखा गया था और बिलका उपयोग 'पैरी' ने पीनलैंड की अन्तिम यात्रा में सफलतापूर्वक किया था उसीको उस ने उत्तरी ध्रुव की अन्तिम यात्रा के लिए चुना । जुलाई १९५६ में पैरी ने बहाज पर संयुक्तराज्य का राष्ट्रीय ध्वज चुराया और न्युयार्क से उत्तरी ध्रुव की यात्रा के लिए खम गया ।

जब बहाज खता तो हजारों व्यक्ति जो पैरी को बिदा करने आए थे उन्हें ध्वनि करने लगे । यह एक विचित्र बात थी कि जिस दिन पैरी पृथ्वी के सबसे अधिक ठंडे स्थान के लिए प्रस्थान कर रहा था न्युयार्क में बहुत अधिक गर्मी थी । जब बहाज नरी में अत्ये बढ़ने लगा तो दिनारे का शेर कम होता गया । अत्ये खनकर बहाज प्रेसीडेंट कम्बैस्ट के बहाज मेमबार्ड के पास से

निकला तो उसने अपनी छोटी तोप से थोना बाय कर उसारी प्रब
 भी बाबा पर जानेवाले उस बहाज को सलापी बी। किसी भी
 बहाज को जो पुष्पी के सिरे की पात्रा को निकला ही इतनी
 बाबनापुर्ल बिदाई नहीं बी यई बी। प्र बीबेट कबबैस्ट स्वयं
 बहाज पर प्राय घोर हर एक पापी से हाय मिलाया। वीरी से
 बोले "वीरी मुझे तुममें घोर तुम्हारी क्षमता में बिश्वास है यदि
 मनुष्य के लिए यह सम्भव है तो मैं तुम्हारी सफलता में बिश्वास
 करता हूँ।" सबों की शुभ कामना के साथ कबबैस्ट बहाज अपनी
 लम्बी पात्रा पर बन पड़ा।

२६ जुलाई १६ क को उसारी प्रब रेखा को वीरी ने बीसवीं
 बार पार किया घोर १ अगस्त १६ क को बहु मार्क-मन्तरीय
 पहुँच गया जो मनुष्य ज्ञानि का सबसे उत्तरी स्थान था। यह समय
 संभार घोर उत्तरी प्रब के संभार की बिभाजन रेखा थी। कई
 ऐलिको परिवारों घोर कई लो कर्तों को बहाज पर लेकर वीरी
 उत्तर की घोर बढ़ता चला गया।

इस पात्रा के सम्बन्ध में वीरी ने लिखा है "कल्पना कीजिए
 ताई तीन बी मील तक ठोत जैसे हुए बर्फ की। बर्फ के समी कम
 हों यहाँ देखने की मिलते हैं। बर्फ का पहाड़, बीरस मैदान के
 घाकार का बर्फ कबड़ काबड़ बर्फ। घोर कल्पना कीजिए एक
 छोटे बाले मकदून घोर बुरह बहाज को जो बरु से संघर्ष करता
 हुआ घाये बढ़ता है। उस बहाज पर १६ पापल व्यक्ति हैं जो 'बिचिन
 की लाड़ी' घोर प्र बीय समुद्र के बीच बर्फोंती घारा क उस स्वप्न

को अरिभार्य करने के लिए पार करना चाहते हैं जिसके लिए बहुत से और साहसी सौम्य बन्ध में अमर और मूस से तड़क कर मर गए।”

वेरी ने वही पुराना मार्ग पकड़ा जो 'स्मिथ-साइड' के पास से सेबाइन-प्रान्तीय होकर निकलता था। वहाँ १८८४ में चीने के सौम्य बन्ध को छूट से तड़क तड़क कर मरना पड़ा था। चौबीस घाबमियों में से केवल सात जीवित बचे थे।

प्रथम बहुत कुहरे और बर्फ में अज्ञान को घेर लिया और वेरी को विवश होकर जाड़ा व्यतीत करने की तैयारियां करनी पड़ीं। जाड़ा व्यतीत करने के लिए वेरी ने 'मेरीडल' प्रान्तीय को बुला वहाँ १९३३ में वह पहले भी जाड़ा व्यतीत कर चुका था। वहाँ उन्होंने 'कम्बेस्ट' का सामान पतार बिना और बाईं ही ऐस्किमो कुल बर्द में बौड़ने के लिए छोड़ दिए गए। वहाँ एक छोटा सा पाँच बत मया और ऐस्किमो पुरुष और सिखा अकार के लिए बसे गए। वेरी ने पहले की ही भाँति वहाँ से नम्बे मीस दूर घाँट लंब का सबसे अधिक उत्तरी बिन्दु कोलम्बिया प्रान्तीय से उत्तरी ध्रुव पर प्राकमण करने का निश्चय किया।

१२ अक्टोबर की सूर्य छिप गया और वे नीच प्रतप्रतापूर्वक उस महान संघर्ष में प्रविष्ट हुए।

वेरी लिखता है “हमारे जाड़े के निवास की कल्पना कीजिए। ताड़ बार सौ मीस उत्तरी प्रथ से दूर हमारा अज्ञान बर्द में लकड़ा तट से डेढ़ सौ बर पर पड़ा था और चारों ओर सर्वत्र बर्फ ही बर्फ था। बर्फोंनी ठेक हवा जनसमाप्ती हुई

घोर सीढी जँघी स्तेज घाबाज करती हुई बहती रहती है। तापक्रम धूम्र से ६ डिग्री नीचे तक जाता जाता है। बाहर समुद्र की जलपारा में ज्वार भाटे के साथ बर्फ घोर बर्जन के साथ चलता है।”

बड़ा दिन आया। सबों ने उसको बड़ उस्ताह के साथ मनाया। ऐस्किमो लोचों की दौड़ हुई। एक बच्चों की दौड़ हुई 'डूतरी' पुरुषों की घोर लोचरी ऐस्किमो माताओं की दौड़ हुई जो अपने बच्चों को घर में लपेट कर दौड़ीं।

अंत में १२ फरवरी १६ ६ को पहला स्तेज दल कोलम्बिया घातरीप की घोर चल पड़ा। एक सप्ताह बाद स्वयं पैरी रात्र सामान लेकर स्तेजों के द्वारा जाता। सब लोच कोलम्बिया घातरीप पर मिल गए। वहाँ एकत्र होकर सबों ने उत्तर की महान खोजिमपूर्ण यात्रा की तैयारी की। अठ खोजी दल में ७ परी के साथी १६ ऐस्किमो एक ही जातीस ऐस्किमो कुल घोर अट्टाइस स्तेज गाड़ियाँ थीं। प्रत्येक स्तेज गाड़ी पर सभी आवश्यक सामान था। प्रत्येक स्तेज गाड़ी पर लाने पकाने के बर्तन चार घादमी कुल घोर पचास साठ दिन की भोजन सामग्री। मोतम साक शान्त घोर ठंडा था।

एक मार्च को यह स्तेज गाड़ियाँ कोलम्बिया घातरीप से चल पड़ीं। दुर्घ की बर्बाती हुआ चल रही थी। घीअ ही घादमी घोर कुल उस बर्द में घाव से घोभस हो गए। मार्ग की कठिनाइयों घोर खोजिम की तनिक भी परबाह न करके वे गाड़ियाँ दिन प्रतिदिन आगे बढ़ने लगीं। कभी कभी उन्हें कोलम्बिया घातरीप के सिधे

के लिए एक छोटे बल को पीछे बेजना पड़ता था। कमी किसी खोपी घाभी को जिसका पैर या ऐड़ी बर्फ से बल जाती थीर बहु घाबे बढ़ना नहीं चाहता उसे पीछे जाइ के सिबिर में देखना पड़ता था। वही मुला बल था जाता तो उसको भावों द्वारा पार करने में डेर लगती। यह सब कठिनाइयां भेजते हुए थीर कठिन यात्रा की खोजिम पठ्यते हुए वे घाबे बढ़ते ही जाते गए। यहां तक कि उन साहसी खोजियों ने पिछले सब रिकार्ड तोड़ दिए। उत्तरी प्र. ब. में रहनेवाला रीस भी वहां से घाबे नहीं जाता था वे उसके घाबे निकल गए थीर ८७ डिग्री उत्तर अक्षांश रेखा को पार कर गए। वे उस प्रवेस में पहुंच गए जिस प्रवेस में लगातार ६ महीने तक दिन ही रहता है। यह वह स्थान था जो कि लक्ष्य के बहुत समीप था थीर वहां से परी को तीन वर्ष पूर्व भोजन की कमी के कारण लौट जाना पड़ा था।

इस प्रकार वे एक महीने तक लगातार चलते रहे। एक के बाद दूसरा बल पीछे बेजा जाता रहा यहां तक कि अन्तिम सहायक बल भी पीछे भिज दिया। प्र. ब. परी केवल अपने हाते बाँकर हीनसन थीर चार ऐस्किमो के साथ रह गया था। उसके पास पांच स्नेज नाइयां जातीत चुने हुए कुत्ते थीर जातीत दिन के लिए खाद्य सामग्री भी जबकि बहु प्रकृता उत्तरी प्र. ब. पर आक्रमण करने के लिए जो वहां से एक सी ठंठीत भीत दूर था बल पड़ा। अपने लसाह की प्रत्येक घटना रोमांचकारी थी। कुछ घण्टे सीने के बाद वह छोटा सा लोभी बल दो एप्रिल १९९९ की अर्धरात्रि

के बाद। अन्तिम यात्रा के लिए चल पडा। पैरी बस का नेतृत्व कर रहा था।।

पैरी ने लिखा 'जब मैं पास की गहाड़ी पर चढ़ा और उत्तरी भू-खण्ड से सीधी घाने वाली ठडी हुआ मेरे शरीर पर सगी लो मुझे हार्निक उत्साह हुआ।'

पैरी को भय था कि इस भी यदि कहीं जुता जल मिल गया तो वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने में असफल हो सकता है। वह इस उस यात्रा को अंतिम समाप्त करना चाहता था। पैरी बस घण्टे में बीस पचीस मील चलता चोड़ा विषम करता या सोता और फिर चल देता। यह कम बराबर चलता रहा। जब पैरी २२ डिग्री उत्तरी अक्षांश रेखा पर पहुंच गया था। पैरी इस बड़ी तेजी से घाने चढ़ रहा था। जितना विषम जगहों के लिए नितांत आवश्यक था वह कबल उतना ही विषम होता था। २ एप्रिल को वह उत्तरी भू-खण्ड से केवल पंतीस मील रह गया था। पैरी उस बर्ष से डटे हुए जल में तेजी से घाने चढ़ रहा था। ६ एप्रिल को वह उत्तरी भू-खण्ड पर पहुंच गया।

पैरी ने उसके सम्बन्ध में अपनी बायरी में लिखा है "आखिर मैं उत्तरी भू-खण्ड पर पहुंच गया। तीन नौ वर्षों के अनवरत परिश्रम का वह पुरस्कार था। वह मेरे जीवन का बीत जय तक स्वप्न थीर ध्येय रहा था। मैं आज जबकि वहां पहुंच गया हूँ तो मुझे वह बहुत साधारण घटना प्रतीत होती है।

पुरस्कार ही बर्षों के दीनों पर संयुक्तराज्य अमेरिका की राष्ट्रीय

पञ्चायं फहराने सभी घोर घेरी ने बोरब के साथ सूर्य की रोशनी में उनको प्र ब पर फहराते देखा । उस समयल जोडिम की प्रुब प्रेछों में यात्रा करते समय घेरी अपने शरीर पर एक रेशमी ढाबा लपेटे रहता था बिचकी बसकी प्रिय पत्नी ने बनाया था । उसने उस ऐतिहासिक स्थल पर प्रब उस भू डे को फहराया जहाँ कोई उत्तर पूर्व घोर पश्चिम नहीं था ।

वहाँ भूमि का चिन्ह भी नहीं था । चारों घोर बर्फ ही बर्फ दिखलाई देती थी । घेरी वहाँ अधिक दिनों नहीं ठहर सकता था क्योंकि भोजन सामग्री के समाप्त हो जाने का भय था । साथ ही इस बात का कतरा था कि उनकी बापसी यात्रा कं बुरख होने के पहले कहीं बर्फ पिघल न जावे ।

इधलिए थोड़ा धाराम करके वे कोसन्विया प्रन्तरीय के लिए वापस लौट पड़े । वे बहुत तेजी से चलकर सोलह दिन में ही कोसन्विया प्रन्तरीय पहुँच गए । कोसन्विया प्रन्तरीय से उत्तरी प्र ब तक पौने पाँच घंटे मील को यात्रा करने में उन्हें सँतीस दिन लगे थे । लौटते समय घेरी प्रतिदिन तीस मील की बलि से लौटा ।

वहाँ से सारा अभियान बल बन्दबस्त बहाज की घोर लौटा । १० जुलाई १९२१ को वह स्वदेश की घोर लौट पड़ा । अमेरिका पहुंचने पर सारा अमेरिका हर्षोन्नत हो उठा । कायरमैत से समस्त सभ्य संसार में यह प्रजर फल गई कि घेरी उत्तरी प्र ब पर संयुक्तराज्य अमेरिका की राष्ट्रीय पञ्जा नाड घोषा । बार सौ वर्षों का त्याग सामना घोट लपस्या साकष हुई । लोड के इतिहास में यह बिरस्मरणीय दिवस था ।

बीसवां परिच्छेद

दक्षिणी ध्रुव की यात्रा

वरी ने १९११ में अमेरिका की राष्ट्रीय प्रजा को उत्तरी ध्रुव पर पहुँचाया था। १९११ में एक नावनिवासी ने दक्षिणी ध्रुव को विजय कर उस पर अपने देश का राष्ट्रीय झंडा फहराया। परन्तु अन्तिम सफलता में पहले के खोजियों द्वारा किया हुआ काम और प्राप्त किया हुआ अनुभव बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ। इस कारण यहाँ स्काट और ईकिन्सन के प्रयत्नों का अन्तर्गत कर देना अप्रासंगिक नहीं हीवा।

१८७४ में शेलेजर अहाम के द्वारा ऐन्टार्कटिक लैंड (दक्षिणी ध्रुव रेखा) को पार कर लेने से दक्षिणी ध्रुव के बारे में खोजियों की रूचि बहुत बढ़ गई थी। बहुत सोच विचार के बाद यह विचार किया गया कि लोज के लिए विशेष रूप से उपयुक्त एक अहाम बनाया जावे। उसका नाम 'डिस्कवरी' रखा जावे और अन्टीन स्काट के नेतृत्व में दक्षिण ध्रुव को एक खोज अभियान भेजा जावे।

सन् १९११ में स्काट डिस्कवरी अहाम को लेकर इंग्लैंड से गया। न्यूजीलैंड होकर सन् ११ जनवरी १९१२ को दक्षिणी

व व रेखा को पार कर लिया । तीन सप्ताह के अंतरान्त वह उस बर्ष की शीतार के पास पहुंचा जिसने १८४ में रात को घाने बड़ने से रोक दिया था । एक सप्ताह तक स्कॉट उस बर्ष की शीतार के साथ साथ चलता रहा । वहाँ से माऊंड टेरबिस और टरर स्पेथ निचलाईं डेते थे किन्तु वेचो एहक कहीं दिखलाईं नहीं पकते थे । यह प्रबन्ध था कि दूर पर धूमि समुद्र से बहुत ऊंची दिखलाईं पकती थी । उसने उस धूमि का नाम किय-येडवर्ड-तातर्वे की धूमि रक दिया । स्कॉट अपने साथ एक मुन्बारा लाया था । उसके सहारे वह घाठ ली और ऊंचा चढ़ गया । वहाँ से उसे दिखलाईं पड़ा कि कुदुर बकिलु में एक विज्ञान डिमकांड बना हुआ है ।

यस बाड़ा अतीत करने के लिए खान को तयार करने की आवश्यकता थी । बाड़ का मौसम था गया था । अस्तु स्कॉट मुरखी की छाड़ी में बापत लीक गया । वहाँ बड़ने अपने भोपक बनाए और नाड़ा अतीत किया । वहाँ से वह दो नवम्बर १६ ९ को बकिलु के लिए लौज यात्रियां लेकर चल पड़ा । स्कॉट अपने तीन साबियों के साथ चार स्लेज बाकियां और अनीस कुरी लेकर बकिलु की ओर अतक बिज तक चलता गया । किन्तु बर्ष बहुत अधिक था । कुरी उस बर्ष को सहन नहीं कर सके और एक एक करके वे मरते गए । यहाँ तक कि एक कुता भी नहीं बचा और स्कॉट और उसके साबियों को लौज यात्रियां खींचनी पड़ीं । यही नहीं साथ साथी भी चुकने लगी अतएव विबध होकर स्कॉट को पकना पड़ा । यहाँ तक स्कॉट पहुंच सका था उससे दूर बहुत ऊंची

बसतमानाए दिखलाई पड़ती थीं। स्काट ने उस पर्वतनामा का नाम उस खोज अभियान के जामक मरखाम के नाम पर मान्य मरखाम रख दिया।

६ दिसम्बर को ऐसी भयानक बर्फोसी हुआ जमी कि उनका घावे बड़ना असम्भव हो गया। अत्यन्त शीत और भूख से पीड़ित वे लोग तारे दिन अपने घाल क लोम के बीचों में पड़े रहे। बापस जाने का कुछ ब विचार और उनकी निर्बलता उन्हें परेशान कर रही थी। अब मोहन सामरी केवल बीबड़ दिन की रह गई थी अतः अत्यन्त अनिच्छापूर्वक व बापस मौख पड़। किसी प्रकार वे पिरते पड़ते दिपौ तक पहुंचे। ईरिस्टन को स्कर्वो का रोग हो गया था और उसकी रक्षा बिगड़ती जा रही थी। अब किसी प्रकार हो परबरी की वे लोग जिन्हा जहाज तक पहुंच गए तो चिन्ता मिटी। यद्यपि वे लोग बसिली भूख तक नहीं पहुंच सके किन्तु उन्होंने बहुत दूर बसिल में प्रवेश किया जहाँ अभी तक कोई भी नहीं पहुंचा था। उन्होंने पात्रा के नए तरीकों का परीक्षण किया था और उन्होंने २९ भीत की दूरी को २३ दिनों में पार किया था। ईरिस्टन पात्रा के लिए बेकार हो गया था इस कारण उसकी स्वयं बापस भेज दिया गया किन्तु 'डिस्कवरी' जहाज को बंदरगाह में बर्थ में बन गया था वह २६ ४ में निकल सका।

ईरिस्टन २६ ३ में इंपरलंड मौख गया था परन्तु बसि भूख का बर्छेला रैगिस्तान उसकी पुनः बुला रहा था। अतएव 'मिरराड' जहाज को लेकर अगस्त २६ ७ में पुनः बसिल की।

बल पड़ा। उसको इंग्लैंड की महारानी ने एक पुनियोग बक (इंग्लैंड का राष्ट्रीय पक्ष) प्रबल किया और साबित किया कि वह बसिल्ल में किसनी दूर पहुँच सके वहाँ उसको बाड़ दे।

बहाज पर वैद्योत मोहरकार ऐतिकमो कुरो और मंभूरिया के टड्डु मेकर वह म्भुओलैंड से प्रथम जनवरी १९८ को बल पड़ा। उसको बिदा करने के लिए समयमय तीस हजार बैसबासी समुद्र तट पर एकत्रित हुए थे। तीस सप्ताह के बाद उन्हें म्भुल बर्ष की बीमार रिजलाई देने लगी। कुछ दिनों के बाद 'हरबस' और टंरर पहाड़ रिजने लगे। संकिस्वन को इन्घा भी कि वह बाड़ के दिन किंग ऐडवर्ड सप्तर्षी की मुनि पर व्यतीत करे। परन्तु एक बिजाल हिमबर्ष में उन्हें प्रागे बड़ने से रोक दिया। इत कारखु संकिस्वन ने पिसनी बार वहाँ डिस्कवरी को बाड़ में छहराया गया था। उससे बीस मील उत्तर का स्थान बाड़ा व्यतीत करने के लिए चुना। बहाज पर मंभूरिया के टड्डुओं को उतारा गया। बर्ष पर बतर कर वे टड्डु बहुत प्रसन्न थे। बहाज में उनको बहुत बकाबट ही गई थी। संकिस्वन एक बड़ा भौंपड़ा भी लाया था जो शीम ही बाड़ा कर दिया गया। बसिल्ल पृथ के बीरान बर्षिने प्रवेश में ऐसा सुम्बर और पारामबायक मकाम कभी नहीं बाड़ा किया गया था। फोरो पोरे के लिए घन्पेरा कमरा था रोहानी के लिए रंस का प्रबन्ध था एक बड़ा स्वीच परम करने को था और रहने के लिए पारामबायक छोटे छोटे कमरे थे जिन्में तस्वीरों के द्वारा लगभग की गई थी। फोरोबाकी का घन्पेरा

‘सबर्न गेटवे’ कहते हैं और जो सीधा बसिल्ली ट्राय को जाता था। लेकिन उनके टट्टुपों की बजा उस बर्धमि प्रदेश में बसने से बहुत सराब हो गई थी। उन्हें तीन टट्टुपों को बोली से मार देना पड़ा और सात विद्युत्-बल को पाकिरी इट्टु गिर कर मर गया। सब से नीचे एक बड़े फटार पर पहुंच गए थे जो कि समुद्रतल से सात हजार फीट ऊंचा था। वह बसिल्ली की ओर ऊंचा उठता गया था। बड़ दिन की उन लोगों ने बस ऊंचे प्रदेश में एक छोटे से क्षेत्र में पहुंचकर मनाया। अभी तक उन पट्टो प्रदेशों में किसी मनुष्य के पैर नहीं चढ़े थे। पड़तालीस डिग्री वाला बहुत बड़ा बर्फ, और बरीर की काट देने वाला ठंड बर्धमि हवा में से अपनी स्नेह पाकिरी को बीच रहे थे। सब उनके पास केवल एक नहीने का मोहन बच गया था। बर्धमि हवाओं का सामना करते हुए और कम जाना जाकर भी वे लोग बस हजार पचास फीट की ऊंचाई पर चढ़ गए। वह दिन ६ जनवरी का था और वे पड़ताली डिग्री बसिल्ली अक्षांश रेखा तक पहुंच गए थे। उसी समय एक भयंकर बर्धमि तुफान आया जिसके कारण उनका प्राण बचना अतन्मय हो गया। सात घण्टे तक वे सूखे घाटी बेहूब ठंड के कारण अपने लोहे के बंधों में बिपे हुए लपकते मरे हुए से पड़े रहे। बस घाटा में बैठे कठिन दिन कभी नहीं बीते। चारों पाकिरी की प्रगुत्तियां और बेहूरे ठंड के मारे मृत्यु पाए। उन्होंने यह निश्चय किया कि तुफान के कम होते ही दूसरे दिन वे ईपसीड का खंडा लेकर बसिल्ली की ओर बढ़ने और वह उनका अन्तिम पड़ाव होगा। वे ८ जनवरी

तक चलते चले गए जब वे बलिष्ठी घुब से केवल बरतानवे मील
 गए गए थे। वहाँ उन्होंने पुनियन बीरु पहराया और उस विस्तृत
 पत्थर पर अपने बाबघाहू के नाम से अभिकार कर लिया।

“हम केवल वर्ष ही वर्ष देख रहे थे वर्ष के प्रतिरिक्त वहाँ
 और कुछ नहीं था। उस पत्थर में कहीं ऊँचा नीचा प्रवेद्य नहीं है
 छारा पत्थर लखेर वर्ष का एक विशाल मेशान है जो बलिष्ठी घुब
 की ओर खँसा हुआ है। मुझे विश्वास है कि बलिष्ठी घुब उसी
 पत्थर पर स्थित है।

वहाँ से चारों पर की ओर लौटे। ईकिन्टन ने उदास होकर
 कहा कि बलिष्ठी व व तक न पहुँचने के लिए हमें चाहे कितना खेद
 क्यों न हो परन्तु हमें संतोष है कि हमने भरतक प्रयत्न किया।
 जबकि वे वापस चल रहे थे ती बर्छोला तुम्हण उनका पीछा कर
 रहा था। १८ जनवरी को वे महान वर्ष की बीमार के पास
 लुबे। उनकी प्रीजन सामग्री समयमय समाप्त हो चुकी थी। प्रतिदिन
 उनके जाने में १ विस्तृत और थोड़ा सा थोड़ा का मांस होता था।
 जिन मंथुरिया के टुकड़ों को पिछले नम्बर में गोली मार दी थी
 वहाँ का मांस घब खाया जा रहा था। परन्तु इस जाने से उनका
 स्वास्थ्य बराबर होता जा रहा था। गस्तु जब वे लौप करवरी
 ११ १ में 'मिनराड' अज्ञान पर लुबे तो वे चारों ही बहुत कमजोर
 और बीमार थे।

ईकिन्टन इ नलैड ११ १ के पतकड़ में पहुँचा तो उसे
 पान्थुन हुआ कि घपनी गरमियों में एक दूसरा खीब घनिपण्ड

बकिस्ली ग्राम को स्टाट' के मैतृत्व में जानेवाला है। उस
 अभियान के लिए बंसी चण्डी तैयारियाँ की गईं थीं बंसी तैयारियाँ
 पहले किसी भी जोख अभियान के लिए नहीं हुई थीं। उत्तरी
 के बर्क से इसके पठार पर चलने के लिए मोटर स्लेज याड़ी बन
 गई थी। जो गहरे बर्क में भी चल सकती थीं। सैक्सिस्टन
 मोटर याड़ी से क्या या वह गहरे बर्क में नहीं चल सकती थीं।
 स्टाट के साथ १५ ट्यूब-बोर १ कुरो थे।

जुलाई १९११ में चलकर स्टाट २६ जनवरी १९११ में
 मुर्डी साइड में जाड़ा स्थित करने के लिए छुट्ट पया। मन्मन्
 कहीं जाकर वह बकिस्ली ग्राम अभियान के लिए चल सका।

स्टाट में जाड़ के निवास स्थान को २ नवम्बर को छोड़ा
 साठ मील तक वह मोटर स्लेज याड़ियों की सफ़ीर पर चलते र
 जो कि पाँच दिन पहले ही खेज की गईं थीं। मोटर याड़ियों क
 इन उनकी क ॥ डिपरी बकिस्ली प्रशासन रेखा पर स्टाट की प्रतीक
 कर रहा था। मोटर स्लेज याड़ियों में सतौपजनक का
 दिया। जगहोंने बर्क की महान् बीबार की ऊबड़ जाक
 बर्कसी सतह पर मारी बोझ को पीचने का काम किया। जम्
 घाये इस कारण छोड़ना पड़ा कि ठंडी हवा से ठंडे ऐंजिन बहुत
 घबिहक बरम हो गए थे। स्टाट में हर बार नील पर बर्क क प्रोवे
 स्तूप बना दिए जिससे कि यात्रण गीठने बामे बस की रास्ते को
 जानने में आसानी हो। प्रत्येक प्रशासन रेखा पर एक
 मीजन सामग्री छोड़ दी गई। बँते बँते १

‘स्काट’ ने मरने से पूर्व जो तस्वीर अपने देसवासियों के लिए लिख कर छोड़ा वह कभी मुताबक नहीं जा सकता। ‘मुझे इस मर्यादर यात्रा के लिए तनिक भी खेद नहीं है जिसने यह लिख कर दिया कि पहले की तरह घाब भी घ घंघा घोर कम्ब सह सकते हैं एक दूसरे की विपत्ति में मदद कर सकते हैं और मृत्यु का प्रसन्नता-पुष्पक सामना कर सकते हैं। यदि हम जिंदा रहते तो मैं अपने साथियों की कष्ट-सहिष्णुता साहस और विपत्तियों का सामना करने की वह अपूर्व कहानी सुनाता कि बिसे पढ़ कर प्रत्येक प्रवेश के हृदय में रोमांच हो उठता। परन्तु अब तो यह मृत्यु के समय भिन्ना हुआ जेल और हमारे मृत शरीर ही वह कहानी कहेंगे। परन्तु मुझे विश्वास है कि हमारा महान और शत्रुघ्नकारी देश हमारे साथियों की बेचनता और उनके निर्वाह का तदुचित प्रबन्ध करेगा।”

स्काट १७ जनवरी १९१२ को बकिली झर पर पहुँचा था किन्तु कैप्टेन घामुण्डसन १४ दिसम्बर १९११ को ही बकिली झर पर पहुँच चुका था। घामुण्डसन नार्वे देश का निवासी था। अपने देशवासी ‘बालवेन’ के जबाहरण से प्रेरणा लेकर वह उत्तरी और बकिली झरों की यात्रा में बहि रहता था। केवल प्रकृतलीलत इन के छोड़ से बहाव और केवल अपने ६ साथियों को लेकर उत्तरी बुम्बकीय झर का सर्वेक्षण किया, विहृतिव स्टुट की वार किया और उत्तर पश्चिमी मार्ग को खोज निकाला। उसके लिए उसे राष्ट्रीय सुगोल समिति ने राष्ट्रीय पदक पुरस्कार में दिया था।

घाबमियों के वेर बर्षीसी ठंड से भूजस गए घोर कुरीं की बसा बहुत करार हो गई अतएव उसकी तापस भौटना पड़ा फिर वह २ अक्टोबर की बखिली प्रब के सिद् बसा । 'स्टाट' के बसने से वह ठीक एक सप्ताह पूर्व अपनी उस ऐतिहासिक यात्रा पर चल पड़ा था । उसके पास जाने की सामग्री परमेष्ठ थी । बाड़ी में छू ल तथा तीस मछमियां प्रचुर मात्रा में थीं । अनियान की व्यवस्था बहुत सज्जी थी । उसके साथ घाठ लोधी से घोर चार स्तेज पाड़ियां थीं जिनमें प्रत्येक में तेरह कुत्ते कुड़े हुए थे ।

ग्रामुग्घेन पञ्चव का नेता था उसकी नेतृत्व घोर संबलन अति दिनभरु भी वह कठिनाई जाने से पूर्व ही उसका अनुमान कर नेता था । उसके इस गुण के कारण उसको बखिली प्रब की यात्रा में सफलता मिली ।

जब ग्रामुग्घेन बखिली प्रब की घोर बड़ा तो अत्यन्त पहन कुहरा घावा हुआ था घोर भयंकर बर्षीना तुफान चल रहा था । परन्तु साहसी नाबीअियन यात्री उसमें घामे बड़े बसे जा रहे थे । एक में जो कहीं कहीं बरारें थीं वे बड़ी भयंकर थीं एक कुत्ता उनमें गिर गया घोर उसको वहीं छोड़ना पड़ा । दूसरे दिन कुत्ते तो बरार की पार कर गए किन्तु स्तेज पाड़ी उसमें गिर पड़ी । स्तेज पाड़ी को निकालने के लिए उस पड़ती बरार में कूबना पड़ा घोर स्तेज गाड़ी के सामान को एक एक करके ऊपर लेना पड़ा तब कहीं खाली स्तेज पाड़ी ऊपर खींची जा सकी । बाड़ा इतना भयंकर था कि बीतस में बागड़ी जब गई घोर उसके दुकड़े कर कर के सबों

की दी गई ।

क्रुरो स्लेज गाड़ियों को ठीक तरह से सँभलते थे । प्रत्येक बागी अपने कुत्तों की देखभाल का जिम्मेदार था । वही उनको जिम्मा भीर अपने से हिलाता था । इस प्रकार दसम्बर भर ही लीज बसिख की घोर चलते गए और इतत महान विस्तृत पठार पर पहुँचे जिसका अस्सेख वीकिस्तन में किया था । वहाँ एक पंखड़ हवार कीर ऊँची खोड़ी का घामुग्डेन में मानसेन पर्यंत नाम रख दिया ।

१४ दिसम्बर १९११ को घामुग्डेन अपने सब बसिखी प्रथम पहुँच गया । नीतम घण्टा या घोर भूमि स्लेज गाड़ियों के चलने के लिए बहुत घण्टी थी । इसमें घामुग्डेन में निजा है "हम १४ दिसम्बर १९११ को ३ बजे सार्वकाल बसिखी प्रथम पहुँच गए । सब साथी इकट्ठे हुए गए । सबों में अपने देशी राष्ट्रीय ध्वज को पकड़ लिया और एक साथ उसको गाड़ दिया । हमने उस विद्यालय पठार का नाम जिस पर बसिखी प्रथम स्थित है 'किन हाकीन समतबों के नाम पर रख दिया । वह पठार एक बिसाल मैदान के समान मीलों जैसा हुआ था ।"

वहाँ वह छोटा सा यात्री बस तीन दिन तक घिबिर सपाकर बका और उसने समीपवर्ती स्वान का निरीक्षण किया । सूर्य की रोशनी बहुत तेज की और भीतम घण्टा था । इस कारण वे लीज नहीं भाँति उस स्वान का निरीक्षण कर सके । १७ दिसम्बर की जल्होंने एक छोटा सा तेमा जमीन में गाड़ दिया और उस पर

गार्बे का झण्डा लनाकर और 'ग्राम' अहास का चिह्न लगाकर स्वदेश की ओर सौट पड़े ।

इस प्रकार बकिरु म्रुष भी विजय हो गया ।

उरारी म्रुष और बकिरु म्रुष की खोजों में बितने पर्यटकों ने अपने प्राण खंभाए हैं उतने व्यक्ति कितनी भी खोज में नहीं मरे और न भविष्य में किसी खोज में उतने लोगों के मरने की सम्भावना है ।

उन साहसी खोजियों ने पृथ्वी के प्रत्येक भाग की खोज निकाला और पृथ्वी को एक विशाल मानव परिवार का विवाह स्थान बनाने में सहायक हुए ।



इक्कीसवा परिच्छेद

डेविड लिबिगस्टन की घड़ीका की खोज

में या तो इस प्रदेश के भीतरी भाग में पहुंचने का मार्ग खोज निकालू या या नर मिटू या" (लिबिगस्टन)

घड़ीखोजी घण्टाकी के घड़ीका महाद्वीप को खोज निकालने वालों में सबसे महत्वपूर्ण खोजी डेविड लिबिगस्टन के ऊपर लिखे गए हैं ।

जब लिबिगस्टन इस कार्य का आरम्भ या तभी से उसमें बरिच की हड़ता प्रकट होने लपो की धीरे बह हड़ निश्चयी इतना था कि जिस बात का निश्चय कर लेता उसको पूरा करता । १० वर्ष की उम्र में बहुलकार्डमंड के सुती कबड़ों के कारखाने में काम करता था । उस समय उसने निश्चय लिया कि मैं बहू था । जब उसे पहले तसाह की मजदूरी मिली तो बहू लैटिन व्याकरण की एक पुस्तक पढ़ी कर लाया । खोजू पन्धे प्रतिदिन कारखाने में काम करने पर उसके बाल पड़ने की तकिक को समय नहीं बचता था । मरन्तु बहू जितना प्रयत्न करने के लिए धातुर था । अतएव बहू समय विराम ही लेता था । निरंतर बरिचम करते रहने से उसने जितना प्रयत्न करती ।

१९ वर्ष की आयु होने पर उसने बिबिस्टन मिशिनरी बनने का संकल्प कर लिया। लिबिस्टन जब मिशिनरी बना तो उसने बिबरसा द्वारा मानवीय कर्षों को दूर करने का कार्य अपने जीवन का मक्य बनाया। लंडन मिशिनरी सीसापदी ने उसकी सेवाओं को स्वीकार कर लिया और १८४४ में वह दक्षिण अफ्रीका में काम करने के लिए भेजा गया। तीन महीने की समुद्र यात्रा के बाद वह केप-टाउन पहुँचा और एक बीमगाड़ी से सात ती मील की यात्रा कर वह कुसमान पहुँचा। कुसमान में एक छोटा सा मिशन था जहाँ डाक्टर मोफ्ट बीस वर्षों से बेबुधाना लैंड में सेवा कार्य कर रहे थे। वहाँ उसने बहुत अच्छा कार्य किया जिससे प्रसन्न होकर उसको उत्तर में नया मिशन स्थापित करने के लिए भेजा गया। लिबिस्टन ने डाक्टर मोफ्ट की पुत्री से विवाह किया था और उसके तीन बच्चे थे। १८४९ में वह अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर एक बीमगाड़ी में उत्तर की यात्रा के लिए चल पड़ा। उत्तर का मार्ग कलाहारी की चिस्तुत मरुभूमि में से होकर जाता था। लिबिस्टन का परिवार कलाहारी रेगिस्तान की चार कदता हुआ जोबा नदी के पास पहुँचा। वही मार्ग में लिबिस्टन का परिवार घस सुम्बर नदी के मार्ग से 'नगामी' भील में पहुँचा। लिबिस्टन ने लिखा है 'मैं पहला योरोपियन था कि जो उस सुम्बर भील में नाच द्वारा आया। उस भील का जलवायु बहुत अस्वास्थ्यकर था। बच्चों को खर आने लगा और मच्छरों ने उनका जीवन संकटमय कर दिया। खर बिपपर मच्छरों ने घायल जोबा का कार्य अयत्न

कटिन बना दिया । अतएव सिबिग्टन का परिवार अपने मुख्य कार्यालय को वापस आ गया । सेजिन सिबिग्टन इससे संतुष्ट नहीं था अतएव १८२१ में वह अपनी श्री और बच्चों सहित फिर बेम्बती नदी की ओर में चल गया । अफ्रीका के रहनेवालों का यह विश्वास था कि 'बेम्बती' नदी मध्य अफ्रीका से निकलती है किन्तु पुर्तगाल वालों ने जो तक़्के बनाए थे उनमें बेम्बती का उद्गम स्थान पूर्व में दिखलाया गया था ।

सिबिग्टन लगातार पीछे करता रहा । शून्य १८२१ में वह बेम्बती का उद्गम स्थान पर पहुँचा तो उसको सात हज़ार दि बेम्बती मध्य अफ्रीका से निकलती है । यह एक महत्वपूर्ण क़ौब थी क्योंकि उस नदी का उद्गम स्थान नहीं माना जाता था । जब सिबिग्टन वहाँ पहुँचा तो उन गोरो को देखने के लिए भूँड के भूँड स्त्री-शुक्र (नटोमोला प्राति) एवं विरय कपड़ों में उगड़े बैठे थे । सिबिग्टन उस अपरिचित नदी के बारे में और अधिक ज़ोर करना चाहता था परन्तु उसने समुझ ही गया कि पत्नी और बच्चों के साथ छोड़ करना बहुत कठिन नहीं परन्तु कतरनाक भी है । अतएव वह समुझ तट की ओर सौटा घोर जाँहें इङ्गलड जानेवाले जहाज़ पर रावार बाराकर कबेना मध्य अफ्रीका में लौक करने के लिए लौट आया ।

११ नवम्बर १८२३ को सिबिग्टन मध्य अफ्रीका के सिनियाम्बी नगर से पश्चिम समुद्र तट की ओर बेम्बती नदी के सम्बन्ध में ज़ोर करने के लिए चल पड़ा । क्योंकि अफ्रीका में यह

कहसत प्रचलित की शकती नदी के बारे में बहु कोई नहीं जानता कि बहु कहां से आती है और कहां जाती है ।

सत्ताईस स्वामिभक्त मकीसोसो आदि के लोकरों की लेकर बोई से बिस्कुट बोई सी चाब बोई सी बकटर, बीस बीस कहुवा और तीन पुस्तकों एक कम्बल और भेड की जाल बिछाने के लिए एक सीरा ता तंबू और कनकर बिचमें एक बोई कभीब बतसुन और कुते के और कुध बंजामिक भीबार लेकर बहु अपनी पात्रा पर चल पड़ा । उसके आधीकी साथी नाचों में केम्बली की बारा में चल पड ।

त्रिबिम्बन ने तिका है 'यही बानी नहीं करता है इत कारल मरमी भयंकर पड़ रही है । जब पूर बिक्ततो है तो पूर के कारल और जब बारल होते हैं तो बमस के कारल बहुत परेशानी होती है ।' बारी माया में त्रिबिम्बन कर से पीड़ित रहा लेकिन उसके आधीकी साथियों ने उसको बहुत ठेका की । जैसे ही वे लोग कहीं करते त्रिबिम्बन के आधीकी नीकर उसके बिपीने के लिए घात काड कर बिछा देते और उसका तंबू बाड देते । तंबू में जब सम्बुक रल दिए जाते । उतक बाएँ और बाएँ आधीकी नीकर लोले और तंबू के लानने मुख्य नाम चलाने वाला नाबिक होता ।

जब हम आधी के आगे बईं तो बर्बा हो गई थी । समस्त बन प्रदेश सुम्बर और हरा भर हो गया था । सब जगह तरह तरह के फूल चिते हुए थे । प्रातःकाल बन-अरैब बिदियों के पशु लंपीठ से भर आता था ।

६ जनवरी १८२४ को बम्बई नदी को छोड़ दिया और
 वीलों पर चढ़ कर वे लघन बनों से व्याप्यारित उस प्रदेश में मुझे
 मिलने से हीकर उम्हें आना था। वर्षा तेज ही रही थी बलबल
 और नदियों को बार करते हुए वे लोग भले जा रहे थे। एक दिन
 लिबिस्टन के बेल ने उसको फिर दिया और वह पका सांवा बेल
 बनने लगा। वह कमजोर होता जा रहा था। उसके पास खाने
 को कम रह गया था। वह बरबस बर्बा में भीमता जा और ऊपर
 उठका पीछा नहीं छोड़ता था। इन कारणों से वह केवल हड्डियों
 का ढांचा मात्र रह गया था। २६ मार्च को वह उस ऊंची जूनि के
 तिरै पर पहुंचा बिल पर कि वह बाधा कर रहा था। वह इतना
 बलबा था कि मुझे वहाँ लवारी से नीचे उतरना पड़ा और बलबल
 बनने में मैं कहीं गिर न आऊँ इस कारण धीरे-धीरे साथी मुझे पकड़
 रहे थे। उसके नीचे 'बर्बा' की सुन्दर घाटी थी। पन्द्रह दिन
 की यात्रा के बाद वे कुतवाल के प्रदेश में बसित हुए। वहाँ
 लिबिस्टन को योरोपियन लोपों से मिलने का व्यवहार बिल्ला और
 एक छोटा सा कस्बा होने के कारण कुछ आवश्यकता की वस्तुएं भी
 मिल गईं। वहाँ बस बिल तक लिबिस्टन ने धाराम किया और
 ताजा होकर फिर बकिबम की ओर समुद्र तट को चल दिया। एक
 महीने की यात्रा के बाद ३१ मई १८२४ को वे 'सौभाग्या' नगर के
 पास पहुंचे। अब काने धड़ीकी धबड़ाने लगे क्योंकि गोरे लोप समुद्र के
 किनारे काने धड़ीकी लोपों को पकड़कर बास बना लेते थे।
 लिबिस्टन ने उम्हें भरोसा दिलाया कि तुमने मेरी इतनी सेवा की

है मैं तुम्हें थोला नहीं दूँगा । उस नगर में एक घण्टा का उसने अपना बिस्तर रोमी और चके हुए यात्री को दे दिया । लिबिस्टन ने सिखा है कि ६ महीने तक जमीन पर सोने के बाद एक झण्डे और गरम बिस्तर पर सोने के सुख को मैं कभी नहीं भूल सकूँगा ।

उसके झण्डेकी साधियों को अंग्रेजी जहाज पर भाराम से ठहराया गया । लिबिस्टन का स्वदेश लौटने की सुविधा भी उस घण्टा के देनी चाही किन्तु लिबिस्टन ने इस सुखदामक प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया । उसने अपने मकौसीतो साधियों को अपने घासक के पास से जाने का निश्चय किया कि जिससे वह वहाँ से अन्वसी नदी के मार्ग द्वारा पूर्वोप समुद्र तक रास्ता बनाते ।

इस उद्देश्य से उसने घर जाने का आलस और भाराम को छोड़ दिया और २ सितम्बर १८५४ को उसने सौभाग्या को तथा बीरे सोर्बो का समुद्र अर्थात् अटलांटिक महासागर को छोड़ दिया । उनका मार्ग 'य गोल्ला' देश में से होकर जाता था जिसमें जंगली कहवा बहुत पैदा होता था और कपास की खेती बहुत होती थी । मौसम पहले की तरह पराब था किन्तु लिबिस्टन बीरे बीरे पूर्व की तरफ बढ़ रहा था । उसकी रबर बराबर घा रहा था । एक वर्ष बाद सितम्बर १८५५ में वह तिनावुती मध्य अफ्रीका पहुँचा वहाँ से वह जाता था । जो कुछ सामान वह वहाँ छोड़ गया था वह सुरक्षित था और स्वदेश से बहुत से पत्र प्राप्त हुए थे । उसके इतनी राम्यो धारा से लौटने पर वहाँ सोर्बो की बहुत खुशी

हुई। उसके घालेकी ताबियों ने जो विभिन्न बरनें यात्रा में बेसी पों
 उन्हें उग्होंने अपने खाति माइयों में घुब फेलाया। निबिस्टम
 उनकी प्रायों में एक बीर पुस्य या घोर इसकी बया की बे बड़ी
 प्रशंसा करते थे। घटएव जब निबिस्टम सम्बती की गोये जाने
 वाली बारा के द्वारा समुद्र की यात्रा की तैयारियां कर रहा था तौ
 उसे साथ में जाने के लिए प्राबियों के मिलने में तनिक भी कठि-
 नाई नहीं हुई।

३ नवम्बर को वह घालीका की पार करने के लिए तैयार
 हो गया। उसके पास इस बार पहले की अपेक्षा अधिक सामन थे।
 बीच के इबात पर वह इस पार छोड़ पर या घोर उसका भाय
 र्थक सेकपुडू नदी की मली प्राति जानता था। पहली रात उन्हें
 पकर बर्पा घोर बिजली की लौ प घोर कड़क का सामना करना
 प। कुछ दिनों की यात्रा के पइचात वे लोग प्रतिद बंभवती जल
 प्रपात के पास आए। निबिस्टम ने इङ्गलड की महाराती क नाम
 पर उसका नाम "बिबडोरिया जलप्रपात" रख दिया। उत प्रपात
 को घालीकी लोग बंभवती कहते थे जहां पुर्मा पर्वत करता है
 निबिस्टम ने इस जल प्रपात का बड़ा सजीब घोर सुन्दर विष
 कींचा है।" भाय के समान असकए जिहें लोग ठीक ही पुर्मा कहते
 हैं की पांच पाराएँ ऊरर उठकर बाबलों में मिल जाती हैं। यह
 हस्य भायस्य सुन्दर घोर मनमोहक है। किसी भी यीरोविपन ने
 पहले उसे नहीं देखा था। जन प्रपात से जब मैं आया मीन दूर रह
 ना तब मैंने बड़ी नाव छोड़ पी घोर छोटी हन्डी डोंपी में बैठ

गया। मेरे साथ वहाँ के अनुमती नाविक थे जो कि उस स्थान के सभी कटरों से परिचित थे। वे मुझे वहीं के बीच में स्थित एक झुण्ड पर ले गए और उस स्थान के ठीक किनारे पर ले गए वहाँ गानी विरता था। घस शिला के किनारे तक बैठ के बल निरुद्ध कर मिने नीचे खड्ड में गिरा कर देखा। खैरती के एक किनारे से दूसरे किनारे तक वह गहरा चौड़ा भयंकर खड्ड था जिसमें खैरती नीचल गर्जना करती हुई गिरती थी। उस खड्ड में देखने पर केवल पहल लकड़े बाखल के समान बलकलों के सिवाय और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता है। उस बाखल से ऊपर की घोर गहरी घास उठती हुई प्रतीत होती है जो आकाश में तीन सौ फीट तक ऊँची जाती जाती है।”

निर्वासन से अपने ही आदिमियों के साथ उस कटरनाक श्रावण को जारी रखा। वह कौन किसी समय अब-सक्या से परिपूर्य या किन्तु उस समय बीरान था। ‘बकोरा जाति के लोग उबर रहते थे। वे निर्वासन के घाने की बात सुन कर बहुत प्रसन्न थे। वे उसके भुँड के भुँड मिलने वाले और उसके घाने से प्रसन्नता प्रकट करते। निर्वासन के लिए वे बहुत बड़ी मात्रा में घाने की सामग्री लाते। निर्वासन उनके बच्चों का जो बीमार होते इलाज करता। वे निर्वासन का बहुत धार करते और उसे शक्तिपून की शक्ति मानते थे।

अब निर्वासन समुद्र तट के समीप पहुँचा तो उसे बात हुआ कि उबर के लोग घोरोंविपों से प्रभुता रहते हैं। यह बात

तिबिम्ब्रन को एक पुर्तगाली बर्लसकर ने बतसाई। उसने तिबिम्ब्रन को बतसाया कि पिछले दो वर्षों से हम पुर्तगाली लोग वहाँ के प्रादिवासियों से लगातार युद्ध कर रहे हैं। फिर भी तिबिम्ब्रन विराघ नहीं हुआ उसने अपने बड़ने का निश्चय कर लिया। जबकि युद्ध से प्रघात सत्रों में पाया करता जोखिम और कठिनाई से जाली नहीं पा किन्तु तिबिम्ब्रन को वे अपने निश्चय से नहीं हुआ सही। यही नहीं तिबिम्ब्रन के साथ जो पशु ने उनको बियंती यत्नियों ने बुरी तरह बरनी कर दिया था। उन सघन संघर्षों में हाथी और मेंढा बहुत बड़ी में संख्या ने ठिकठा सर्वत्र मय बना रहता था। हम विपत्तियों के प्रतिरिक्त सकेर बीदी के कारल समी लोम परेमान थे। यह सब बतरे और कठिनाइयों के होते हुए भी तिबिम्ब्रन ने अपनी यात्रा जारी रखी।

३ मार्च को तिबिम्ब्रन डेड पशुबा की समुद्र तट से दो ली लम्ब मील था। सप्त की यात्रा बहुत ही सुन्दर और आश्चर्यक भी। डबेल और पीले संभरमर के ऊँचे पहाड बहुत सुन्दर दिखलाई पड़ते थे। नदियों का जल संभरमर की बहानों पर से बहता हुआ सतमस सुन्दर दिखलाई बहता था। नदी का सम्पूर्ण मार्ग संभरमर की बहानों पर से था। भाँति भाँति के रंगबिरंगे बच्ची नदी के जल में बिभोल करते थे और उल पर उड़ते थे। डेड पुर्तगाल की सन्निभ बीकी थी। वहाँ के पर्वतर ने तिबिम्ब्रन का यथोचित आदर बतकार किया। बरन्तु तिबिम्ब्रन बर से बीजित था इस कारल यह वहाँ तीन बराह बना घोर अब बहु स्वत्व होकर यात्रा के योग्य

होगया तब धामे बढ़ा। उसने अपने साथ के (मसोलो) धारमियों को वहीं छोड़ दिया और उनसे कहा कि वे वहीं रुके रहे। वह किसी दिन फिर लौटेगा और उन्हें उनके घर वापस लौटा से खलेगा। उन्हें लिबिस्टन पर इतना गहरा विश्वास था कि वे वहां तीन वर्ष उछड़ी प्रतीक्षा करते रहे जबकि वह अपने बचन के अनुसार वापस लौटा और उन्हें उनके बेश वापस से गया।

'टेट' से लिबिस्टन बीम्बती नदी के मार्ग से धामे बढ़ा। बीम्बती नदी का पानी बड़ा बड़ा हुआ था। वह नाव द्वारा 'सेना' पंच दिन में पहुँच गया। 'टेट' की बसा बहुत सराब भी किन्तु 'सेना' की बसा जराये बस मुनी सराब थी। लिबिस्टन में लिना है कि पुर्नगत के यह प्रदेश इतनी पवित्र और दयानीय स्थिति में पहुँच गए थे कि उसका बर्णन भी नहीं किया जा सकता। यद्यपि लिबिस्टन एकर से बहुत अधिक पीड़ित था परन्तु फिर भी वह बिना वके घागे बढ़ता गया। उसने बीम्बती की प्रमुख सहायक नदी 'आपर' की पार किया जिसको बार में उसने लोका और हिन्द महासागर के समुद्र तट पर पहुँच गया। वह समुद्र तट पर २ मई १२६ को पहुँचा। उस दिन से ठीक बार बप पूर्व वह 'केपटाउन' से जम सप्पी और जोखिम नदी नजान यात्रा के लिए बना था। उसने ग्यारह हजार मील की यात्रा सघन बनों शिबली परिवर्णों जयंठर बम्बुओं के प्रदेश में से होकर की थी और वह यात्रा मुबबत नदियों द्वारा की गई। उसका यह कार्य अद्वितीय था। ६ घण्टा लिबिस्टन हिन्द महासागर के समुद्र

तट पर स्थित 'स्विडिमेन' नामक स्थान पर ठहरा। वह स्थान बस-बस घोर रैते से बरा वा घोर उसके चारों ओर चाबल के सेत से। ६ सप्ताह तकने के बाद लिबिगस्टन 'ज्योतिक' नामक बग-बोट पर सवार होकर इंग्लैंड की ओर चल दिया। वह अपने साथ एक स्वामिमल्ल मकोलो 'सकेडू' को इंग्लैंड ले गया। उस स्वामिमल्ल निर्धन सेवक ने लिबिगस्टन से प्रार्थना की कि वह उसके साथ चलता चाहता है। लिबिगस्टन ने उससे कहा कि यदि तूम उस ठंडे देश में जाओगे तो मर जाओगे। उधर लाले सेवक ने कहा कि यदि मुझे मरना है तो आपके चरणों में ही मरूँगा।

उसने कभी समुद्र नहीं देखा था। समुद्र की लहरें उस तक से डकराती थीं जिस पर वह जा रहा था। वह बहुत भयभीत हो गया और मारिघल चहुँबते चहुँबते वह पापल ही गया और समुद्र में डूब कर मर गया।

१९ दिसम्बर १८३६ को लिबिगस्टन लौट चहुँपा। वह एक साधारण पादरी की भाँति धरतीका गया था उसे उस समय इंग्लैंड में कोई ज्ञानता भी नहीं था। जब वह लौटा तो उससे पहले ही वह देश में प्रसिद्ध हो गया था। राज्य भूपोल समिति ने उसे अपना स्वर्ण पदक प्रदान किया। जॉन और स्कॉटलैंड ने उसको मान और धार दिया। उसके स्वागत में बड़े बड़े आयोजन हुए और धन में वह लोभा सादा पादरी जिसका मुँह धरतीका की तेज रूप से झुलझ चुका था उसको इंग्लैंड की महारानी ने बिदतर महल में आमंत्रित किया। लिबिगस्टन द्वारा धरतीका में इतनी

लम्बी यात्रा के कारण उसका नाम इस नर में प्रसिद्ध हो गया। उससे उस्ताहित होकर और लोगों ने भी घड़ीका की खोज करनी प्रारम्भ की।

१० मार्च १८३८ को लिबिगस्टन फिर इंग्लैंड से चला। इस बार उसकी धारणा हुआ था कि वह घड़ीका के प्वालटिक भागों की खोज करे पूर्व तथा मध्य घड़ीका के सुवाल की जो जानकारी उसने प्राप्त की है उसका विस्तार करे और व्यापार को बढ़ाने का प्रयत्न करे। इंग्लैंड की सरकार ने उसे 'निबलिमेन' का खिदमत की सत्त निमुक्त कर दिया। यह प्रदेश बेम्बसी नदी के मुहाने पर था। इस बार लिबिगस्टन अपने साथ एक छोटी 'स्टीमसाफ' भी लाया था जिसे घड़ीकी लीय भीमती लिबिगस्टन के नाम पर 'मा-राबर्ट' कहते थे। राबर्ट उनकी सबसे बड़ी संतान थी अतएव घड़ीका जल स्टीम साफ को राबर्ट की मा कहकर पुकारते थे। जल स्टीमसाफ में 'निबलिमेन' से लिबिगस्टन भापर नदी तक गया जो बेम्बसी के मुहाने के पास उससे मिलती है।

लिबिगस्टन उस नदी में अपनी स्टीम साफ में दो सौ मील तक गया। उस सुन्दर प्रदेश में नदी की धारा के बिच्छु हो सौ मील की यात्रा बहुत ही आश्चर्यक और सुन्दर थी। परन्तु दो सौ मील के बाद नदी में इतने अधिक उतार बढ़ाव थे कि कोई भी नाव उसको पार नहीं कर सकती थी। लिबिगस्टन ने नाव को वहीं छोड़ दिया और वहाँ से पैदल यात्रा प्रारम्भ की। लिबिगस्टन जल भीम की खोज करना

बाहुता का जिसके घारे में घापीकन सोग बहुत सी बार्से कहते थे । एक गहोमे तक मयमार चलते रहने पर लिबिस्टन इस भीस के पास पहुँचा । वैदल का मार्ग बहुत कठिन था । जयन बनों में से होकर बयबंदियाँ गई हुई थीं जन्ही पर चलना पड़ता था । यह बयबंदियाँ बहाड़ों बनों बहानों और बाडियों में एक समान बनी थीं ।

१८ एजिल को जिरबा भील दिखलाई थी । लिबिस्टन ने देखा कि एक बिद्याल भील है जिसमें मगर मछलियाँ हियोपोर्डमी तथा लीच इत्यादि जालि भाँसि के जन्मु भरै पड़ै थे । उसके समीप का प्रदेश बहुत तरा धरा घोर सुन्दर था । उत भील की सहर्से एक बड़ी बट्टाल से धाकर टकराती थीं । उससे उस प्रदेश की सुन्दरता घोर अधिक बढ़ जाती है । उससे समीप ही मयनभुम्बी ऊँची पर्वत श्रेणियाँ मयना मस्तक ऊँचा किए पड़ी थीं ।

उस भील को चित्ती भी बोरे ममुप्य ने उससे बहने नहीं देना था । यद्यपि घापीका की भीलों में जिरबा भील छोटी थी किन्तु वह ईर्नलक की लव भीलों को जिना लिया जावे तो भी उनसे बड़ी थी । जिरबा भील की घोत्र करने के बाद लिबिस्टन 'वेड' लौट आया और 'नवासा भील' की यात्रा की तैयारियाँ करने लगा ।

शापर बरी के निगारे उती स्वान धर जहाँ कि वह बहने उतरा या उतर कर लिबिस्टन दलीक मकोनो कुतियों और दो मार्चबर्नकों को लेकर शापर के बहाड़ी प्रदेश में बहने लगा । बायू तो पीट बढ़ कर उसने उत पदायी को पार किया जिस पर

नयातल्लेख के ब्रिटिश कमिश्नर का प्राबन्धन सड़ा है। जब कि वे 'नयाता' भील से एक दिन की यात्रा की दूरी पर थे तब जगसे लोको ने बतलाया कि यहाँ तो ऐसी कोई भील कहीं प्राप्तपात्र नहीं है। हाँ धार मरी धाय खेतती जाती है और उसके अन्तिम सिरे तक पहुँचने में दो महीने लगेंगे। वहाँ खंची कट्टाने हैं जो आकास छूती हैं।

लिबिगस्टन के साथियों ने कहा कि हमें अब वापस अपने जहाज पर लौट जाना चाहिए। भील को बुझने का प्रयत्न करना व्यर्थ है।

लेकिन लिबिगस्टन नहीं माना। उसने कहा भील को बुझ निकालना आवश्यक है। वह अपने प्रयत्न में सफल हुआ। १६ दिसम्बर १८२६ को उसे एक बल का विशाल प्रवाह दिखाई दिया। वास्तव में वह नयाता भील का आरम्भ था।

लिबिगस्टन ने वहाँ के लोगों से पूछा कि इसका कितना सिरा कितनी दूर है। लोगों ने धारधर्मचक्रित होकर उत्तर दिया इस भील का कोई अन्त भी है हमने अपने जीवन में कभी नहीं सुना। एक बुढ़ ने कहा कि यदि कोई बालक इस भील के दूसरे सिरे के लिए बीजल बरो तो उस वह बुढ़ हो जायेगा तो सम्भव है कि दूसरे सिरे तक पहुँच जाये। लिबिगस्टन समझ गया कि इस बल मार्ग के द्वारा धरतीका के मध्य की जाता जा सकता है। उसने धरतीका के भीतरी भाग के लिए एक महान जल-मार्ग खोज निकाला था। उस भाग में वातों का व्यापार बहुत अधिक होता

या । बहुत से हाथों को हाथीदांत बरत के देशों से पूर्वी समुद्री
 तट तक लाने के लिए खरीदा जाता था । भुम्ब के भुम्ब यह खरीदे
 हुए हाथ हाथी दांत को लाने का काम करते थे । लिबिस्टन ने
 सोचा कि यदि 'नयाभ्रा' झील पर एक स्त्रीमर बला दिया जावे तो
 यह हाथों की खरीद का व्यापार ठण्डा ही लगता है क्योंकि
 घाटौऊन निवासियों से योरोप की बनी वस्तुओं के खरसे में हाथी
 दांत खरीदा जा सकेगा । जर्मन इंग्लैंड को इस सम्बन्ध में बच
 लिये । वहाँ की स्थिति के सम्बन्ध में पढ़कर बहुत से ईसाई
 परिवारों में उन हाथों के लिए ब्या का संचार हुआ और उनकी
 मुक्ति के लिए कार्य करने के लिए वे अफ्रीका में जाकर सागर नदी
 के किनारे बस गए । जिसमें नैकेबी और कुछ सहायक सागर नदी
 के उपनिवेश में जाकर बस गए । १८६२ में भीमती लिबिस्टन
 भी धा गईं और अपने साथ नयाभ्रा झील के लिए एक नया
 स्त्रीमर साथ लाईं । लेकिन वह भीतम बहुत ही अस्वास्थ्यकर था ।
 समीपवर्ती निचला प्रदेश जग और जनसंख्या से भरा हुआ था । वहाँ
 मलेरिया का विष अत्यन्त मात्रा में उत्पन्न होता था । भीमती
 लिबिस्टन धाते ही खबर से बीड़ित हो गईं और एक सप्ताह के
 खबर में ही वे मर गईं । जबको शत्रु था के समीप एक विद्यालय कुछ
 की छाया में बपना दिया गया । धात्र भी जब कोई यात्री उस खोर
 के निकसता है तो उस समाधि के बपन करना नहीं भूमता जिसमें
 वह महिला फिर निहा में सोई हुई है । भीमती लिबिस्टन को
 इस बात का संतोष होगा कि उन्हें इस प्रदेश में दफनाया गया

जिसे कि सबसे पहले उसके पति ने सभ्य संसार के लिए जीव निकासा था ।

पत्नी की मृत्यु का घायल त्रिबिंस्टन के लिए असहनीय था । वह एक बार तो किर्कर्सव्यविभूङ्ग ही गया । परन्तु उसने अपने मन को सम्हाला और मन की निराशा को दूर किया । उसने पुनः अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दिया और उस स्टीमर को 'लेडी नयासा' के नाम से नयासा मील में अज्ञाना प्रारम्भ किया । परन्तु उस कार्य में उसे निराशा और असफलता ही प्राप्त हुई । अन्त में अपनी प्रिय पत्नी की मृत्यु के ठीक दो वर्ष बाद रोकूमा नदी के पास वह 'लेडी नयासा' स्टीमर को बीजीबार से गया और वहाँ से वह उसी स्टीमर में बम्बई की ओर आया । उसके पास उस समय पैसे की बहुत कमी थी । उसको थाका भी कि बम्बई में स्टीमर बिक जायेगा ।

१ एप्रिल १८६४ को त्रिबिंस्टन उस अतरलाक यात्रा के लिए चल दिया । उसके मित्रों ने और जलद्वार लोगों ने उसे सचेत किया कि बहुत जल्दी ही मानसून हवाएं हिन्द महासागर में भीम बोग से बर्षा करेंगी और समुद्र बहुत अघात हो जायेगा । उस छोटे से स्टीमर में जो नवियों और भ्रिनों के लिए बनाया गया है प्रज्ञान महासागर में यात्रा करना बहुत जोखिम का काम है उसे इस पत्रे में नहीं पढ़ना चाहिए । जो जीवन भर अतरे से लेता हो उसे जसा यह धितापनी कही रोक सकती थी । त्रिबिंस्टन ने अतरे की सनिक भी परबाह न की और वह अपने उस स्टीमर में

बल पड़ा। कुछ दिनों बाद ही मानसून बरतने लगी। महासागर प्रध्वान्त हो गया, झंभी झंभी महुरें घटने लगीं। प्रतिकारण कठोर बढ़ने लगा। परन्तु सिबिगस्टन कुछ समुद्र से संघर्ष करता हुआ डाई हजार मील की यात्रा उस छोटे से स्टीमर में समुद्र के बम्बई के पास पहुंच गया। दूर से जब सिबिगस्टन ने बम्बई के बम्बरयाह में मस्तुओं का एक जगल सा देखा तो वह प्रसन्न हुआ क्योंकि वह भ्रम सुरक्षित था। कुछ दिन बम्बई में रुककर सिबिगस्टन ने अपनी छोटे लौक को वहीं छोड़ दिया और एक अहाल द्वारा इ प्लैज चला गया।

उक्त समय कितनी ने सिबिगस्टन की उल गई लौक के महत्व को नहीं समझा और न किसी ने नगराबालंड के महत्व को ही प्रांका को बाद में ब्रिटेन का संरक्षित राज्य बना। सिबिगस्टन ने एक बड़ी मील को दूध निष्कासना ना को समुद्र तल से १३० फीट ऊंचाई पर स्थित थी। जो ३३० मील लम्बी और ४० मील चौड़ी थी। जिस पर शायद विभिन्न स्टीमर चलते हैं और बहुत का व्यापार होता है। मील के पूर्वी किनारे पर जो ऊंची और लम्बी पर्वतमाला है जिसको सिबिगस्टन 'बर्बतमाला' के नाम से पुकारा करता है वह इस बात का प्रमाण है कि सिबिगस्टन ने एक बहुत बड़ी खोज की थी।

सिबिगस्टन की अंतिम यात्रा

१८६३ में अफ्रीका महाद्वीप का महान यात्री फिर अपनी प्रथम यात्रा पर चल पड़ा। चलते चलते इतने कहा का "बै

रोबूमा पर्वत पर बर्बूपा और नयासा भील के उत्तरी सिरे के पास से निकल कर हेमागिया भील के बजिस्ली सिरे का अन्तर लपाकर अग्नीका के उत्त भाग के अन्तर्विधातक का पता लपाया ।

सिबिगस्टन जनवरी १८६६ में बंबोबार पठुंवा और दो महीने के बाद रोबूमा नदी के मुहाने पर पठुंवा । धरे बंजल में होकर वह उसके किनारे किनारे उत्तर की ओर चला । उसके लोच अग्निबान में बम्बई के तैरह सिपाही एक मिस्त्र से भी हुक्मी बंजली से दो घाबमी 'तूली' और 'अमोवा' तथा कुछ अन्य लोच जो पहले बास थे और जिन्हें सिबिगस्टन ने मुक्त कराया था साथ में थे । बोज होने के लिए ६ इंच तीन मीसे दो अक्षर चार पद्धे थे । रोबूमा की खाड़ी से पत्र लिखते हुए सिबिगस्टन ने लिखा कि अब अब मैं अग्नीका की यात्रा के लिए चलने ही वाला हूँ तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है । एक अपरिचित बंजलों से घरे हुए बंस को लोच निकालने के लिए जो यात्रा की जाती है उसका आनन्द बही जान सकता है जिसे वह अक्षर मिला है । चलने से स्वास्थ्य ठीक रहता है और मनमें बिडबात और घासा जायत होती है ।

तबिब सिबिगस्टन को यात्रा में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । जैसे ही वे नदी के किनारे किनारे चले अहुरीली मखियों ने पशुओं को काट कर खानी कर दिया । एक के बाद दूसरा जानवर मर कर निरत्ता गया । सिबिगस्टन के साथी पशुओं के साथ ऐसी क्रूरता का व्यवहार करते थे कि उत्तको घासा सिहर

जखी थी। एक दिन जमने से कुछ लीय बीछे रह गए और धमिल
नेसे को मार कर जा गए। उन्होंने लिबिस्टन से घाबर कहा कि
बहु पर मया और एक सैर घाबर बसको जा गया।

लिबिस्टन ने बुझा कि क्या तुमने घेर के घरीर पर बारिया
और पहियां बेसी थी। लगी ने एक स्वर से कहा हाँ हमने घेर के
घरीर पर बारिया बेसी थी। बहु एक ऐसा मूठ था कि जो बिल
नहीं सकता था क्योंकि घड़ीका में बारीशर केर होता ही नहीं है।

११ घनस्त को एक बार फिर लिबिस्टन गयाता और
बहुना। गयाता भील खुंभ कर लिबिस्टन घाघलत प्रसन्न हुआ।
उसने लिखा है "गयाता भील खुंभकर मुझे ऐसी प्रसन्नता हुई
थी किती को अपने पुराने घर में खुंभ कर होती है बिलको जते
देख अपने को कभी घाघा नहीं थी। मैं उस लगे स्वच्छ मन में
लगाव कर बहुत प्रसन्नित हुआ।

भील के दूसरे तर पर स्थित कोटा-कोटा के घरव घाघक के
पास लिबिस्टन ने खबर मरी कि बहु नाच नैच है बिलो कि बहु
भील को पार कर सके। उसका कोई उत्तर न जाने पर बहु स्वल
के रास्ते बन दिया। उसने लखर नरी को पार कर भील के
बिलो सिरे का बचकर लयाया। जब बहु गयाता भील को
बिलो बिलो लगी के चारों ओर घाघा कर रहा था कुछ
लोचों के घाघमल की लहरें घाने लगीं। कुछ लोचों के घाघमल
से लिबिस्टन के घाघमो बघनीत हो गए। उन्होंने घाघे जाने से
एक हम इन्कार कर दिया। सब सामान बँक कर वे वापस लौट

अपने छिछार की खोज में बिकसलाई बेटे हैं। रात में तेंडे की चर्र चर्र की आवाज यही गमानक प्रतीत होती है।

यहां से लिबिगस्टन पश्चिम की ओर बढ़ा। यहाँ उस एक घरब इल मिला जिसके साथ वह तीन महीने तक रहा। वहाँ से वह म्योरो भीस की ओर चल पड़ा। सोसह दिन की लम्बी ओर कठिन यात्रा के उपरांत वह म्योरो भीस पहुँचा। म्योरो भीस एक बड़ी भीस है और उसके पूर्व ओर पश्चिम में पयत घणियाँ हैं। उसके किनारे इलवाँ ओर रैतीसे हैं। लिबिगस्टन वहाँ एक मछुयारे के न्द्रेपड़ में ठहरा।

उस भीस के समीपवर्ती प्रवेस में ६ सप्ताह ठहर कर वहाँ की आलकारी प्राप्त कर लिबिगस्टन पुनः घरब इल के पास सीट आया। १८६८ के वसंत में उसने 'बापबसो' भीस को पीछे निकालने का निवर्ण ठिया। उसकी इस यात्रा का उसके साथियों ने घोर विरोध किया और कई नौकर उसको छोड़ गए। परन्तु लिबिगस्टन ने इसकी तकलीफ भी परवाह न की। केवल पाँच नौकरों के साथ वह मध्य अफ्रीका की सबसे बड़ी भीसों में किनी जाने वाली उरा भीस पर पहुँचा। लिबिगस्टन १८ जुलाई को गील के किनारे पहुँचा था। उसका पानी महुरा हरे रंग का था और वहाँ ठंड बहुत अधिक थी क्योंकि वायु में नमी थी।

उरा नमी के कारण समीपवर्ती प्रवेस एक विशाल स्तंभ के समान बन गया था। जैसे इलदम या अल से बरिप्सावित भूमि प्रवेस वहाँ बहुत थ। सोस भीस की यात्रा में लिबिगस्टन को

जन्मीस ऐसे बलबल मिसे । प्रत्येक को पार करने में घाघा घस्टे का समय लग जाता था ।

लिविंगस्टन का ध्यान नील नदी के जड़पम स्वाम को खोज निकालने की ओर गया हुआ था । उसका कहना था कि नील नदी के जड़पम स्वाम को खोज निकालना उतना ही महत्वपूर्ण था जितना उत्तर पश्चिम का मार्ग ईश निकालना था । उसका अनुमान था कि उन दो बड़ी नदियों के बीच से बहनेवाली महानदी अपर नाइल हो सकती है ।

दिसम्बर में वह डंगलाइटा भीज के लिए चल पड़ा । १८६० का नया वर्ष उसके स्वास्थ्य के लिए अशुभा प्रमाणित नहीं हुआ । घाघे रास्ते वह बहुत अधिक बीमार हो गया । वह अनाहार भीम रहा था । उसे प्रतिदिन नामे नदियाँ कमर तक छत्पस्त ठंडे पानी में बल कर पार करनी पड़ती थीं । जब वह बहुत अधिक बीमार हो गया तो उसने अपनी जायरी में लिखा 'मैं अब बहुत अधिक बीमार हो गया हूँ अब मैं चल नहीं सकता मुझे बाहिने खेपड़े का निमोनिया हो गया है घीर में दिन रात जातता रहता हूँ । मुझे मेरे सेबक एक काद पर सेकर चलते हैं । सूर्य की किरणें इतनी तेज हैं कि शरीर का जो हिस्सा खुला रह जाता है वह खुलस जाता है । मैं पतियों के मुखे से अपने सर घोर मुह पर छाया किए रहता हूँ ।

१४ फरवरी १८६१ को वह ग्रीम के पश्चिमी तिनारे पर पहुँचा और इस समय वहाँ ठहरने के बाद उतकी जमीनी के लिए

नाम पर सवार करवा दिया गया। यद्यपि यह पहले से प्रख्यात था परन्तु फिर भी यह बहुत निर्बल था। उसने अपने लक्ष्मण में शायरी में लिखा 'घाफ़ा है कि 'उजीवी' पहुँचने तक धीबिल पहुँचा।

घाफ़ा में यह भीषण के दिगारे पर प्रारंभ बस्ती पहुँचा। वहाँ उसको यह वस्तुएं मिलीं जो पृथ्वी के रास्ते जैजीबार से आई थी। यद्यपि उनमें से बहुत सी वस्तुएं खोरी बनी गईं थी परन्तु फिर भी परम कपड़ों का घोर कहना मिल जाने से उसको बहुत आराम मिला और उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा। वहाँ तीन बहाने ठहरने से उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा। वहाँ से वह मनपूर्वक प्रवेश की ओर फिर यात्रा के लिए बल पड़ा जिसके बारे में उसने सुना था कि वहाँ बहुत बड़ी नदियाँ बहती हैं।

इस यात्रा में प्रारंभ उनका मार्ग प्रदर्शन कर रहे थे। उनका व्यापार मार्ग महानदी सीलाबा तक जाता था जो घाफ़ा के मध्य में जैजीबार के पश्चिम कुछ हजार मील दूरी पर थी। सितम्बर १८६६ में जब मिचिगन अपने प्रारंभ साधियों के साथ बन्दार पहुँचा तो वह पहला यूरोपियन था जिसने इस प्रदेश को देखा था।

वहाँ उसने प्रकृति तरह आराम किया। कुछ स्वस्थ हो जाने पर उसने सीलाबा के पश्चिम में जाकर उसकी रीढ़ करने के लिए एक बड़ी नाव खरीदने का निश्चय किया। मनपूर्वक प्रवेश सुन्दरता का मानो प्रतीक है। वहाँ पर्वतों पर घास के ढ़ँगे पूरा लड़ हैं और

वहाँ के जंगलों का सौन्दर्य अमूर्त्यनीय है। उन घड़ घोर ऊँची
 चुराओं पर बड़ी सुन्दर झेलें बड़ी रहती हैं। बहुत प्रकार के बंगभी
 कम वहाँ मिलते हैं। कुछ फल तो इतने पक्व होते हैं जैसे कि बन्ने
 का तर। उन जंगलों में घनेक प्रकार के सुग्गर वसु और एसी मो
 मिलते हैं।

घरक कारवा के साथ निर्विगस्टन मनबुना के विभिन्न और
 अत्यन्त सुग्गर प्रदेश में दूमता फिरा। एक बर्ष की यात्रा के पश्चात्
 वह सीमाबा (काँची) नदी के किनारे पहुँचा। ३१ मार्च १८७१
 को वह काँची (सीमाबा) नदी के किनारे पहुँचा था।

वह उसके जीवन में स्थापित दिन था क्योंकि वह सीमाबा
 (काँची) नदी के पास पहुँच गया था। निर्विगस्टन में उस नदी के
 बारे में सिद्धा है वह एक बहुत बड़ी नदी है। वह कम से कम तीस
 हजार एक बीड़ी और बहुत घण्टिक गहरी है। उसके किनारे गहरे
 घोर दलुवाँ है और समकी धारा बहुत तेज है। निर्विगस्टन समार
 की दूसरी समते बड़ी नदी की भीषणता होकर देखा रखा था। वह
 काँची नदी की वरम्बु वह जलको नीस नदी समझता था।

वह वहाँ एक गाँव (ग्यावबी) में चार महीने तक ठहरा।
 वहाँ के निवासी भयंकर मरमलर थे। एक दिन उन्होंने एक आरामी
 की दल बघड़ों की हथियों को रस्ती से बाँध कर अपने बंदों पर
 लटकाए देसा जिनके स्वामिनों को उतने मार कर ला लिया था।
 दूसरे दिन वहाँ एक भयंकर हरजाना हो गया। एक घुर्गे पर
 फनड़ा हो गया और उग्र भय में सपभा चार ती व्यक्ति मारे

पर । परन्तु भी प्रतीकन काले हृदयियों को पकड़ कर उनको बल बना लेते थे । इससे निबिम्बन को उनसे भी बुरा भी । अतएव उसने उनके साथ रहना उचित नहीं समझा । २० जुलाई १८७१ को वह वापस 'उबीजी' की घोर बल दिया और तीन महीने में लगत ली मील की यात्रा करके वह उबीजी पहुँच गया । परन्तु इस यात्रा में बलका स्वास्थ्य फिर बहुत बिर गया और अब वह उबीजी पहुँचा तो केवल हृदयियों का हाँचा मात्र रह गया था । वहाँ पहुँच कर उसे ज्ञात हुआ कि वह कुछ दिवसीय रोकभास में वह अपना चारा सामान छोड़ गया था उसे लेकर अल्पत हो गया है ।

निबिम्बन का स्वास्थ्य तो बहुत बिर ही गया था इस दुर्घटना से उसको और निराशा हुई । अब वह अल्पत चुली और निराश था तब उसे अनायास ही लक्ष्यता प्राप्त हो गई ।

डेमनाइका भील के किनारे निबिम्बन और स्टेनले की जेठ खोज के इतिहास में एक अल्पत हृदयस्पर्शी घटना है । उस घटना का वर्णन निबिम्बन के अर्थों में ही पढ़िये 'अब मैं अल्पत निराश और चुली था तब एक प्रातःकाल 'चुली' मेरा स्वामिपत्न सेबक बहुत तेजी से शौकता हुआ आया और हाँकता हुआ बोला "एक घ घंटा है" मैंने उसे देखा है और यह कह कर वह भाग कर बलसे मिलने आता गया । कारवाँ के आने अमेरिकन अर्थों को देखकर पात्रियों की राष्ट्रीयता का पता चलता था । निबिम्बन ने देखा कि उस कारवाँ के साथ डेर का डेर सामान था दिन के टब से कई बड़े बाला बकाने के वर्तन थे और बहुत सा विलासिता का

सामान था। उससे कम्पना की जितनी बहू कोई समझिषानी विनाशितापूर्वक मांगी होगी। उसकी तरह हीन मांगी नहीं है।

बहु 'म्यूचार्ड हेराल्ड' समाचारपत्र का भ्रमणशील सवादवस्ता "हीनार्थ मॉर्निंग-स्टेनले" का उसको समाचार पत्र में लिबिगस्टन के लही लही समाचार लाने के लिए, धीरे धीरे लिबिगस्टन मर गया हो तो उसकी खतिबया लाने के लिए भेजा था। समाचार पत्र में उसके लिए खर हबार पी ड ध्यय किये थे।

एक स्टेनले का हाल पड़िए। जब बहु उन्नीजी में घुसा तो लिबिगस्टन के स्वामिमरक सेवक से उसे खत हुआ कि लिबिगस्टन अभी जीवित है। बिबेधियों को बेसकर वहाँ एक भारी भीड़ एकत्रित हो गई थी। उसको धीरते हुए स्टेनले वहाँ धाया वहाँ एक दोरा धारमी बिलके लम्बी धुरी बाड़ी थी खड़ा था।

स्टेनले ने लिखा है "जैसे ही मैं घामे बढ़ा मैंने देखा कि लिबिगस्टन पीला, पका हुआ धीरे चिन्तित था। मैं घामे बढ़ा धीरे धीरे जपना टोप उतार कर धम्मर्षना करते हुए कहा कि मैं कल्पना करता हूँ कि आप डाक्टर लिबिगस्टन हैं। डाक्टर लिबिगस्टन ने अपनी बीबी को थोड़ा उठाकर मुस्कुराकर कहा—हाँ। तब हन दोनों ने एक दूसरे के हाथों को पकड़ लिया धीरे धीरे जोर से कहा, ईश्वर की धमैक बग्यबाह है कि मैं आपको देख सका। लिबिगस्टन ने पीली धावात्र में कहा कि तुम मेरे लिए तथा जीवन लाए हो।

कुछ दिनों तक स्टेनले लिबिगस्टन के मकान के कच्चे बरामदे में बैठकर उससे उसकी खोजों का धारधर्मजनक

बर्लिन मुफ्त रहा। कुछ दिनों के बाद लिबिस्टन प्रख्या होने लगा। स्वस्थ हो जाने पर उसने स्टेनले को साथ लेकर डीनलाइका मील के उत्तर में बहनेवाली नदी का सर्वेक्षण किया और यह मासूम कर लिया कि वह नील नदी नहीं है।

स्टेनले ने लिबिस्टन को बहुत समझाया और उस पर दबाव डाला कि वह घर लौट जाने और पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर फिर नील नदी के उद्गम स्थान को खोजने के लिए प्रयत्न करे। यद्यपि लिबिस्टन बहुत कमबोर और बका हुआ था। उसने इन्फर्नो जाने से इनकार कर दिया। उसने कहा कि अपने बैग में धाराम से रूबि के लिए मैं तभी आऊँगा जब मैं नील नदी के उद्गम स्थान को ढूँढ निकालूँगा।

२२ अगस्त १८७२ को वह अपनी अन्तिम यात्रा पर चल पड़ा। स्टेनले ने समुद्र तट से उसकी यात्रा से लिए उचित अनियाम व्यवस्था कर दी थी। उसके साथ साठ धारमी थे और पथिष्ठ चरहें तथा घाए थीं। लिबिस्टन बड़े उत्साह से यात्रा पर चला किन्तु चौड़े दिनों की यात्रा के बाद ही उसको अनुभव ही गया कि वह इतना निर्बल हो गया है कि यात्रा की कठिनाइयों को सहन नहीं कर सकता। दिन प्रतिदिन वह कमबोर होता गया। फिर भी वह किसी प्रकार अपने चरहों पर बड़े सेठा था। सित्तन नवम्बर में उसकी लवारी का पड़हा मर गया और उसको वैदल यात्रा करनी पड़ी। जब वह डीनबेलो मील के उत्तर में स्थित इमबल प्रदेश में उतर रहा था तो यात्रा की अय्यकरता और कठिनाई हृदय से ऊपर

पहुँच गई। वर्षा का मौसम बरस सीमा बर पा। समस्त धूमि दसदस बन गई थी और लिबिस्टन के हल के सामने झुकीं मरने की नीबत था गई थी। नोजन सामग्री समाप्त हो चुकी थी। ऊपर से रोप के मजदूरों विपैली मकिलयों तथा काटने वाली बीटियों के शीर्षी हल की परेद्यान कर रवदा था। इन सब कठिनाइयों का सामना करते हुए भी लिबिस्टन घाने बडता ही बबा। बड़ा दिन आया और बसा गया। १८७३ का नया वर्ष आया परन्तु लिबिस्टन नहीं रहा। एप्रिल में लिबिस्टन बिदा था और उसके स्वामिनस नौकर उसको उठ कर बसते थे। २७ एप्रिल १८७३ को उसने अपनी बापरी में अन्तिम वाक्य लिखा। "मैं लज्जत समाप्त हो चुका हूँ लेकिन हम 'मीलीमापो' नदी के किनारे पहुँच गए हैं।"

उसके स्वामिनस नौकरों ने उसको एक भोंपड़े में लिटा दिया। एक रात्रि को लिबिस्टन उसी भोंपड़े में अकेले मर गया। प्रातःकाल उसके स्वामिनस सेवकों ने उसे नरा पाया। हृदयियों ने अपने प्रिय स्वामी के हृदय को अंगरेजी भीत के निकट बसी स्थान पर बड़ी बह मरा था इतना ही जीव के दास्य बन में एक बड़े कुल के नीचे पाड़ दिया। फिर वे अपने स्वामी के धर को कुल की दास्य तथा बाल के पुराने कपड़े में लपेट कर समुद्र तट की ओर ले गये। उन बोड़े से स्वामिनस सेवकों में सुसी और चुपा भी थे। सिकड़ों भीत वे अपने बरम प्रिय तथा अज्ञात स्वामी के बापन मरीर को लेकर समुद्र के किनारे पहुँचे और उसके पवित्र धरीर को उम्होंने धर की सुरक्षित तो प दिया। बड़ी से लिबिस्टन का

अब इ बल्लेड भेजा गया और बड़े सम्मान के साथ इ पलैड के राष्ट्र पुरवों के साथ इसको 'बैस्ट मिनिस्टर लैवे' में बखलाया गया ।

किसी कवि ने उसके सम्बन्ध में ठीक ही लिखा है । 'उसके नाम की रक्षा करने के लिए किसी स्मारक की आवश्यकता नहीं है । बहु प्रच्छाई के लिए बिया और मरा यही उसका धमर मद्य है । संप्रमरमर की प्रअस्तियो जिन पर उसका नाम जुवा है कटक कर टूट जावैनी परम्तु उसका बद्य सर्वैष धमर रहेवा ।'

इसमें तनिक भी सम्यैह नहीं कि अब तक संसार में जोब का इतिहास विद्यमान है और लोगों में जोब की प्रवृत्ति बनी है । लिबिम्बलन का नाम धमर रहेगा ।



वाईसवा परिच्छेद

तिम्बत की खोज

प्रागुक्तिक काल में तिम्बत ने जितना पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है सम्भवतः किसी देश में नहीं किया। हीरोडोटस से लेकर पंचसहस्रबर्ष तक समय समय पर निम्न भिन्न देशों के खोजियों ने जतन रहस्यमय देश को खोज निकालने का प्रयत्न किया। तिम्बत की खोज में सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि तिम्बत के शासक बोरीनियम लोगों को तिम्बत में बुलाने नहीं देते थे। तिम्बत ऊँची पर्वतमालाओं से घिरा हुआ था। उक्त पर्वतीय ओर ऊबड़ साबड़ रहस्यमय देश के मध्य में उसकी राजधानी 'स्थासा' थी जिसे यहाँ के निवासी देवताओं का स्थान मानते थे और यहाँ बुद्ध का अवतार बसाईलामा निवास करता था। 'स्थासा' रहस्यमय बुधियाँ से दूर और पश्चिम था। तिम्बत के निवासी स्वतन्त्रताप्रिय थे। यद्यपि चीन ने तिम्बत पर अपना प्रभुत्व जमाने की भरसक कोशिश की परन्तु तिम्बतियों ने चीन के प्रभुत्व को कभी भी स्वीकार नहीं किया। यही कारण था कि सभी देशों के खोजी तिम्बत के लिए तालाबद्ध रहते थे।

अठारहवीं शताब्दी में भारत में प्रथम अवना प्रभुत्व

स्वाप्ति करने में सफल हो गए थे। वारेन हेस्टिंग्स की इच्छा थी कि महान हिमालय के पार तिब्बत से मित्रता कर सम्बन्ध स्थापित किया जाये। इस उद्देश्य से उसने एक तख्त अथवा जार्ज बोपले को तिब्बत भेजा। बोपले की हेस्टिंग्स ने नीचे लिखा आदेश दिया था "मेँ चाहता हूँ कि तुम 'शहाता' जाओ और तिब्बत और बचास के बीच व्यापार स्थापित करने का प्रयत्न करो। तुम इस देश की इन वस्तुओं के नमूने साथ से जाओ जो कि वहाँ बिक सकें और यह पता लगाओ कि तिब्बत में कौनसी वस्तुएं बनाई जाती हैं वहाँ के उद्योग कबसे बने हैं तुम यह भी पता लगाओ कि बंगाल से लूटाया तक सकें सँती हैं। तुम तिब्बत में अधिक समय तक रहना जितने कि तुम इस देश का अच्छी तरह से अध्ययन कर सको।

बोपले तख्त या तिब्बत के सम्बन्ध में उसकी तनिक भी जानकारी नहीं थी। वारेन हेस्टिंग्स की आज्ञानुसार वह मई १७७३ में तिब्बत यात्रा के लिए चल पड़ा। बोपले भुटान के रास्ते तिब्बत गया। वहाँ से उसने पूर्वी हिमालय को पार कर तिब्बत की ओर में प्रवेश किया। अक्टोबर के अन्त में वह तिब्बत के पहले कस्बे 'छरी' पहुँचा। वहाँ से वह 'भ्यांसी' की बड़ी मंडी पहुँचा और बहुरुम को पार किया। आगे बढ़कर वह 'ताशीलामा' के निवास स्थान तक पहुँच गया। ताशीलामा और उस तख्त अथवा जार्ज में बहुरी मित्रता ही गई। ताशीलामा बसाई लामा के बाद तिब्बत में सबसे अधिक प्रभावशाली और अज्ञात स्वयं वर्म हुए थे। बोपले ने ताशीलामा का वर्तन इस प्रकार किया है लोने के गुरुद्वारा

तिहासक में ऐसमी लकड़ियों के बीच लाठीकाया आसन लगाए बैठ
 था। वह पीले ऐसमी बस्त्र धारण किए था। उसके एक ओर
 पतका बंध बंदन की बसती हुई लकड़ियाँ पकड़े था और दूसरी
 ओर एक व्यक्ति उसका पात्र धामे था। बंदन की लकड़ियों से
 प्रत्यक्ष भीनी सुगन्ध निकल रही थी।”

ईश्वर के उक्त उद्धृत में बोगले से कहा ‘जिन किरणियों की
 महाव्यक्ति के बारे में तुना या परम्पु मेरा कार्य तो भगवान की
 प्रार्थना करना है अतएव मैं अपने देन में किरणियों को धुलने नहीं
 देना चाहता था। लेकिन मैंने तुना है कि किरणियों लकड़े और
 ग्यायप्रिय लोभ हैं।”

बोगले स्तुति आना चाहता था किन्तु उसकी प्रार्थना करने की
 प्राप्ति नहीं थी गई और उसे निवृत्त होकर लौटना पड़ा।

दामल गौतम बुद्धरा संप्रज था जो तिब्बत में घुसा परम्पु
 स्तुति पठनेवालों में वह सर्वप्रथम था। वह व्यक्तिगत रूप
 से तिब्बत की खोज करना चाहता था। वह चीन में रहु बसा था
 और उसने तिब्बती भाषा सीख ली थी। एक चीनी मीटर को लेकर
 और एक लम्बी बाड़ी लगाकर वह कलकत्ता से बसा और मुट्ठल
 होकर तिब्बत की लीला पर अक्टोबर १९११ में पहुंचा। वहाँ
 पहले नाथ के बहुमुख बरी को पार किया। ६ विसम्बर को वह
 पवित्र नगर ‘स्तुति’ में घुसा। दलाईलामा के भग्य और ऊँचे
 ‘बोडाला राजप्रताप को देखकर वह प्राश्चर्यचकित रह गया।

‘स्तुति’ के बड़ प्रवेश द्वार में वह घुसा। बोडाला राजप्रताप

स्थापित करने में सफल हो गए थे। वारेन हेस्टिंग्स की इच्छा थी कि महान हिमालय के पार तिब्बत से मित्रता का सम्बन्ध स्थापित किया जाये। इस उद्देश्य से उसने एक तरफ़ मयपन जार्ज बोमले को तिब्बत भेजा। बोमले को हेस्टिंग्स ने नीचे लिखा आदेश दिया था "मैं चाहता हूँ कि तुम 'शहाजा' जाग्रो और तिब्बत और बंगाल के बीच व्यापार स्थापित करने का प्रयत्न करो। तुम इस देश की उन वस्तुओं के नमूने छात्र ले जाओ जो कि वहाँ बिक लें और यह पता लगाओ कि तिब्बत में कौनसी वस्तुएँ बनाई जाती हैं वहाँ के प्रयोग किये क्या हैं। तुम यह भी पता लगाना कि बंगाल से क्हाता तक सड़कें कौसी हैं। तुम तिब्बत में अधिक समय तक रहना जिससे कि तुम उस देश का अच्छी तरह से अध्ययन कर सको।

बोमले तरफ़ का तिब्बत क सम्बन्ध में उसकी तनिक भी जानकारी नहीं थी। वारेन हेस्टिंग्स की आज्ञागुस्तार वह मई १७७२ में तिब्बत यात्रा के लिए चल पड़ा। बोमले भूटान के रास्ते तिब्बत गया। वहाँ से उसने पूर्वी हिमालय को पार कर तिब्बत की सीमा में प्रवेश किया। अक्टोबर के अन्त में वह तिब्बत के पहले कस्बे 'फारी' पहुँचा। वहाँ से वह 'प्यात्सी' की बड़ी मंडी पहुँचा और ब्रह्मपुत्र को पार किया। धीरे बड़कर वह 'तापीनामा' के निवास स्थान तक पहुँच गया। तापीनामा और उस तरफ़ प्रवेश में महुरी मित्रता हो गई। तापीनामा बनाई नामा के बाद तिब्बत में सबसे अधिक प्रभावशाली और शक्तिशाली धर्म गुरु था। बोमले ने तापीनामा का बर्तन इस प्रकार किया है सोने के नरकापीवार

तिहास में ऐसी तकियों के बीच तामीनामा बामन लपाए बैठे
 था। वह पीले रेशमी बरत धारण किए था। उसके एक ओर
 उसका श्रेष्ठ बंदन की बसती हुई लकड़ियां पकड़े था और दूसरी
 ओर एक व्यक्ति उसका पात्र बामे था। बंदन की लकड़ियों से
 अस्पृश भीनी सुलग्न निकल रही थी।”

ईश्वर के उस उपहृत ने बोकले से कहा 'मैंने फिरंगियों की
 बहाने अतिक्रम के बारे में सुना था परन्तु मेरा कार्य तो ममबाल की
 प्रार्थना करना है अतएव मैं अपने श्रेष्ठ में फिरंगियों को घूमने नहीं
 देना चाहता था। लेकिन मैंने सुना है कि फिरंगी लम्बे और
 म्यामप्रिय लोग हैं।

बोकले स्तुता जाना चाहता था किन्तु उसको प्राये बड़ने की
 भावा नहीं थी गई और उसे बिबस होकर झौटना पड़ा।

बामन मैनिंग दूसरा श्रेष्ठ बं बा जो तिम्बत में मुसा परन्तु
 रहता पुरुबनेबालों में बहु सर्वप्रथम था। वह व्यक्तिगत रूप
 से तिम्बत की खोज करना चाहता था। वह चीन में रहु चुका था
 और उसने तिम्बती भाषा सीख ली थी। एक चीनी बीकर को लेकर
 और एक सम्बी बाड़ी लपाकर वह कसकसे से बला और सुदम
 हीकर तिम्बत की लीमा पर अक्टोबर १८११ में पहुंचा। वहां
 उसने बाब से बहूपुत्र नदी को पार किया। २ दिसम्बर को वह
 पबिन बगर 'बहासा' में बुसा। बलाईताना के नम्य और इन्हे
 'पोदाला राजप्रासाद को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया।

'बहासा' के बड़े प्रवेश द्वार में बहु घुसा। बाराणा राज्यासार

को खाने वाली सड़क चौड़ी थी। स्थाला में जहाँ बैची वहाँ मिजारी और बौद्ध भिक्षु बिल्ललाई पढ़ते थे जो सूर्य की श्रुप खा रहे थे। वहाँ के लिखाती बंदि थे और बलियों में कुली घुमते थे। नगर की देखने के बाद मैनिंग पब्लिश बलाईलामा की ग्रन्थरचना करने पोखला राजप्रासाद में गया। वह अपने साथ ही सम्राज्य और ही मोमबलियाँ तथा लंबेडर का सुयंभित जल तथा बड़िया मालाकिय की चाय से गया। अब वह बलाई लामा (जो सप्त वर्ष का बालक था) के सामने से जाया गया तो उसने तिम्बत की प्रथा के अनुसार तीन बार घुम्बी बर घपना सिर झुकाकर उसकी ग्रन्थरचना की और घपना डोप उतार कर पब्लिश बलाई लामा का प्राप्तीर्वाह प्राप्त करने के लिए झुक गया। बालक बलाई लामा के बेहरे पर पब्लिश सुस्काज की और उसका असीम सुन्दर मुख बलिज धामा से बीठ था। मैनिंग स्थाला में चार महीने रहा। उसके बाद उसे वैक्तिम जुला लिया गया और उसे अनिच्छापूर्वक वहाँ से जाया पड़ा। वह उसी मार्ग से बिचसे तिम्बत प्रयाया था चीन लौट गया।

१८४६ में एक ईसाई मिशनरी धामे-हुक चीन से स्थाला पहुंचा। वह एक तिम्बती लामा के बेटे में था। वह स्वयं बौद्ध बर था उसका साथी मिशनरी 'बेडट' ऊट पर और तातार सेबक कासे कश्कर बर सवार था। उन्हें मार्ग में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अब वे पीसी नदी के पास पहुंचे तो पीसी नदी में बाढ़ घाई हुई थी। तातारों ने कहा कि नदी को पार कर सकना असम्भव है। बिद्राम पीसी नदी ने एक लमुइ का रूप धारण

को जाने वाली सड़क चौड़ी थी। स्हाछा में जहाँ देखो वहाँ मिछारी और बौद्ध मिल्दु दिखलाई पड़ते थे जो सूर्य को घुप जा रहे थे। वहाँ के निवासी बड़े थे और बलियों में कुरो घूमते थे। नगर को देखने के बाद मैनिम पबित्र बलाईलामा की धर्म्यर्चना करने पोटासा राजप्रासाद में गया। वह अपने साथ दो अमादान और दो मोमबत्तियाँ तथा लैबेडर का सुगंधित घेल तथा बड़िया मानकिव की चाय ले गया। जब वह बलाई लामा (जो साठ वर्ष का बालक था) के सामने ले जाया गया तो उसने तिम्बत की प्रथा के अनुसार तीन बार घुम्बी पर अपना सिर झुकाकर उछकी धर्म्यर्चना की और अपना डोप उतार कर पबित्र बवाई लामा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए झुक गया। बालक बलाई लामा के पैहरे पर पबित्र मुस्कान थी और उसके असीम सुन्दर मुख पबित्र आभा से ढीठ था। मैनिम स्हाछा में बार महीने रहा। उसके बाद उसे वैकिव बुला लिया गया और उसे अन्तिमपूर्वक वहाँ से जाना पड़ा। वह उसी मार्ग से बिलछे तिम्बत आया था जिन लौट गया।

१८४६ में एक ईसाई मिशनरी आबे-हुक चीन से स्हाछा पहुंचा। वह एक तिम्बती लामा के बेटा में था। वह स्वयं थोड़ पर था उसके साथी मिशनरी 'वेबट' ऊ ट पर, और तप्तार सैबक काले कचर पर सवार था। जहाँ मार्ग में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब वे पीली नदी के पास पहुंचे तो पीली नदी में बाढ़ आई हुई थी। तातारों ने कहा कि नदी को पार कर लकना असम्भव है। बिनाल पीली नदी में एक समुद्र का रूप धारण

कर लिया था। पाँच ऐसे प्रतीत होते थे मानो वे पानी पर तैर रहे हों और नदी का किनारा दिखाता नहीं देता था। 'हुक' ने कहा कि बापल सोचने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि मैंने सपथ ली है कि मैं प्रभु कृपा से स्थाता प्रबन्ध ही आऊँगा फिर चाहे कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े।

साहस के साथ उन्होंने ऊँटों पर सवार होकर पानी में चलना प्रारम्भ किया। उनके साहस से प्रभावित होकर कुछ पाँचवालों ने उन्हें अपनी नावों में दूसरे किनारे तक सुरक्षित पहुँचा दिया। जब वे तीव्र तिम्बत की सीमा तक आनेवाले कारबाँ मार्य पर पहुँच गए थे। पीलों तक आग पर ऊँटों के कारबाँ दिखाई पड़ते थे। बीसी नदी और कोकोनोर झील के बीच तीन बार उन्होंने महान बीसी बीवार को बार किया जो २१४ ईसवी में बनाई गई थी। बार नहींने की कठिन यात्रा के उपरान्त 'हुक' तिम्बत की सीमा पर तिम्बत कुनकुन मोनेस्ट्री में पहुँचा। उस मोनेस्ट्री में बार हजार बीड़ लम्बा निवास करते थे और वहाँ सातार और तिम्बत से प्राप्त हुए बीड़ यात्री यात्रा के लिए आते थे।

वहाँ के नैतपिच सीमर्य को देखकर वह बहुत आनन्दित हुआ। ऊँचे पहाड़ों से बिकरे हुए बनायावित मुग्ध श्रेय में पहाड़ों के ढालों पर लामायणों के सफेद निवास स्थान बने थे। उनके बीच में सोने के कलश बड़े हुए बीड़ मगिर बड़े थे। उन्हें वे यात्री तीन नहींने टहरे और फिर 'कोको-नोर' भीन की कल चल पड़े।

जैसे जैसे वे आगे बढ़ते गए भूमि अधिक उपजाऊ/मिसली गई। अब वे भीस की समीपवर्ती विशाल पोखर भूमि में पहुंच गए। वहां पास इतनी ऊंची भीस कि ऊंटों के पैर को छूती थी। प्रायः विशाल भीस प्रवाहित हो रही थी। प्रायियों ने उस भीस के समीप ही अपने डैरे लगा दिए। 'हुक' वहां एक महीने तक ठहरा। एक महीने के बाद उन्हें स्हासा खाने का एक अवसर मिल गया। बात यह थी कि स्हासा ले खो राजकुल पीछे गया था वह अपने बल बल सहित लौट रहा था। वह मार्ग मुठेरों और डाकुओं के घास्तक से पीड़ित था, इस कारण उस मार्ग पर यात्रा अत्यन्त खोचिम का काम था। हुक ने देखा यह अवसर उत्तम है और वह उस बल के साथ ही लिया। उस बल में पत्रह सी बीस बाटह सी बीड़ जतने ही ऊंच और लवजय हो हवार आरभी थे। राजकुल एक सुम्बर पालकी में बसता था।

कारवां जब सुरखान बुड पर्वतमाला को पारकर लजह हवार कीट ऊंचे झुपा बरें पर आया तो कठिनाई का सामना करना पड़ा। जब कारवां बसा तब प्राणाल स्वच्छ था और बम्बरा की आरभी बर्क से आन्धावित भूमि पर बिबर रही थी कारवां प्रातः होतै होतै खोटी बर पहुंच गया। यकामक प्राणाल पर काले बारन छा गए और हवा तेज हो गई। बहुत बर्क बिरा और बहुत से पनु मर गए। उन्हें उस बर्कीनी हवा के बिच्छ बसना पड़ रहा था। सांस लेना कठिन था। हिम बर्पा के कारण दिक्कत नहीं देता था। जब तक वे सोय पहाड़ से उतर कर नीचे आए 'बेकेट' की

बाक और कम ठंड के कारण मृत्यु हो गई। जब वे प्रायः बड़े ली
घोस और तीव्र हो गया। हिम बाध, और पीत से सभी लोग
बुरी तरह से प्रसन्न हो गए। 'हुक' ने लिखा कि ऐसे धर्मकर देश की
कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

ठंड के कारण केवल पशु ही नहीं मर रहे थे मनुष्य भी मर
कर पिर रहे थे। तापसा पठार को बार करते करते बालीस
मनुष्य मर गए। पशुओं के मर कर पिरने के कारण कारवां के
पीछे बड़े बड़े मित्र मंडराले चलते थे। वहाँ का प्राकृतिक दृश्य
अत्यन्त आश्चर्यक था। सूर्य की किरणें बहुत से हिमाच्छादित
पहाड़ों की ओरियां चमक रही थीं। जतार बहुत लम्बा और पहरा
का मानो वे एक मीनकाय सीढ़ी से उतर रहे हों। नीचे पठारों पर
हिम समाप्त हो गया और वे लीग 'रहासा' के पवित्र नगर के पास
पहुँच गए।

'हुक' ने लिखा है 'जब हम विद्याल मैडल में पहुँचे तो सुन
प्रसन्न ही रहा था। शायद हाथ भर बौद्ध संसार का पवित्र नगर
'रहासा' था। पठारहीने की कठिन और ओषिमपूर्ण यात्रा के
बाद हम अपने लक्ष्य स्थल पर पहुँच गए।"

'हुक' ने नगर का जो वर्णन किया है वह मैनिंग से मिलता
सुमना है। उसने लिखा है कि रत्नाई लामा का राजप्रसाद अत्यन्त
अप्य और आश्चर्यक है। पवित्र बौद्ध पक्ष पर रत्नाई लामा के
भक्तों ने उसके लिए जो महान राजप्रसाद बनाया है उसमें जीवित
बुद्ध रहता है। रत्नाई लामा का राजप्रसाद बहुत से लम्बियों का

नामा के समाधि स्थान का वर्तन इस प्रकार किया है "बहु लोने का है और उस पर बहुमूर्त्य फलर बढ़े हैं। समाधि स्थल पर लोने के पात्र रखे थे। यह खोजी इन कुर्ना पर्वत पर बढ़ा बहा। बहु बहुपुत्र और वंश के बल बिनाजक को बैल सका। वहाँ से बीरीवाकर की संसार भर में सबसे ऊँची खोड़ी स्पष्ट दिखलाई देती थी। बिच प्रकार बीनों में भूमिकाय मनुष्य दिखलाई पड़ता है। उची प्रकार बीरीवाकर का पर्वत अपना मस्तक ऊँचा किए बढ़ा था।

इस बाग़ में सिंगासे से उसके उद्गम स्थान तक बहुपुत्र बर का सर्वेक्षण किया गया। सततज नदी का भी उसके उद्गम स्थान से भारत की सीमा तक सर्वेक्षण हुआ और सिप नदी की परदोक आधा का भी सर्वेक्षण हुआ। डैसीडैरी की यह सम्मान प्राप्त हुआ कि वह बहुपुत्र के माप से सर्व प्रथम ल्हासा पहुँचा वरन्तु बसिए और बसिए पश्चिम तिब्बत का सर्वेक्षण रंग हुसबेड के बल ने बहुत ही कठिन परिस्थितियों में किया।

तिब्बत की राजधानी पर जो अभी तक घाबरल पड़ा हुआ था वह उठ गया। उस नगर का नक़्शा तैयार किया गया। पोटाला के राजघासाल का फोटो लिया गया और बनाई नामा के भी बिच लिए गये। रहस्यमय तिब्बत संसार के लिए पहुँचाना हो गया।

घास समय बरस गया है। कम्युनिस्ट लोग ने तिब्बत को पराजित कर तिब्बत के बीजन को बरस दिया है। बनाई नामा भाग कर भारत आ गए हैं। तिब्बतियों पर धीरे धीरे आयाचार दिए जा रहे

हैं। किन्तु अभी भी तिब्बती कम्युनिस्ट चीनसे परावर संघर्ष कर रहे हैं।



साम्राज्य के समाधि स्थान का वर्तमान इस प्रकार किया है। बहू सोने का है और इस पर बहुमुख्य पत्थर बड़े हैं। समाधि स्थल पर सोने के पात्र रखे थे। यह खोजी इन कुर्ता पर्वत पर बड़ा बर्तन। यह बहुमुख्य घोर गंगा के बल विनाशक की देख सका। वहाँ से पीरीसंकर की संसार भर में सबसे ऊँची खोड़ी स्पष्ट दिखलाई देती थी। चित्त प्रकार बौनों में भीमकाय मनुष्य दिखलाई पड़ता है। उसी प्रकार पीरीसंकर का पर्वत प्रथम मस्तक ऊँचा किए बड़ा था।

इस यात्रा में सिंगासे से इसके उद्गम स्थल तक बहुमुख्य नदी का सर्वेक्षण किया गया। सतलज नदी का भी उसके उद्गम स्थल से भारत की सीमा तक सर्वेक्षण हुआ और सिंध नदी की बरडोक शाखा का भी सर्वेक्षण हुआ। डैसीडैरी को यह सम्मान प्राप्त हुआ कि यह बहुमुख्य के माथ से सर्व प्रथम झाँसा पहुँचा परन्तु बलित्त घोर बलित्त पश्चिम तिब्बत का सर्वेक्षण यंग हसबेंड के बल ने बहुत ही कठिन परिस्थितियों में किया।

तिब्बत की राजधानी पर जो प्रती तक आकर पड़ा हुआ था वह बँट गया। उस नगर का नक्शा तैयार किया गया। पोहाला के रामप्रसाद का फोटो लिया गया और बसाई नामा के भी चित्र लिए गये। रहस्यमय तिब्बत संसार के लिए पड़ना ही गया।

यात्रा समय बरत गया है। कम्युनिस्ट चीन ने तिब्बत की पराधीन कर तिब्बत के जीवन को बरत दिया है। बसाई नामा भाग कर भारत आ गए हैं। तिब्बतियों पर जोर आयाचार किए जा रहे

हैं। किन्तु सभी भी तिब्बती कम्युनिस्ट चीनसे बराबर संघर्ष कर रहे हैं।

